राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

वार्षिक रिपोर्ट 1996-97

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

वार्षिक रिपोर्ट

एन सी ई आर टी

1996 - 97

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

नवंबर 1997
कार्तिक 1919
PD 5H GR

प्रकाशन सहयोग

डा. पूर्ण चन्द, *अध्यक्ष,* प्रकाशन प्रभाग
सुरेश चन्द, *नोडल अधिकारी,* प्रकाशन प्रभाग
जे.पी. शर्मा, *सम्पादक* कल्याण बैनर्जी, *उत्पादन अधिकारी*
गोबिन्द राम, *सम्पादन सहायक* प्रमोद रावत, *सहायक उत्पादन अधिकारी*
अतुल सक्सेना, *उत्पादन सहायक*

सज्जाकार : कल्याण बैनर्जी

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**बैंगलूर 560085**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा डाटाविजन, डी 2, एम.सी.डी. फ्लैट्स, आर ब्लाक, ग्रेटर कैलाश पार्ट I द्वारा लेज़र टाइपसैट होकर बंगाल ऑफसेट वर्क्स, 335, खजूर रोड़, करौल बाग, नई दिल्ली 110 005 द्वारा मुद्रित।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.), परामर्श और मार्गदर्शन के लिए श्री एस.आर. बोम्मई, परिषद् के अध्यक्ष और केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री मुही राम सैकिया, राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रति आभारी है। परिषद् विद्यालयी शिक्षा के गुणात्मक सुधार के कार्यक्रमों में गहन रुचि लेने और समर्थन प्रदान करने के लिए अपने सामन्य निकाय, कार्यकारिणी समिति, कार्यक्रम सलाहकार समिति और अन्य कार्यक्रम कार्यविधि समितियों के विशिष्ट सदस्यों के प्रति कृतज्ञ है।

परिषद् उन विशेषज्ञों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करती है, जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर इसकी विभिन्न समितियों में कार्य किया तथा अनेक प्रकार से सहायता प्रदान की। राज्य शिक्षा विभागों, राज्य शिक्षा संस्थानों, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों/माध्यमिक शिक्षा बोर्डों और विश्वविद्यालयों सहित सभी संगठन और संस्थान भी धन्यवाद के पात्र है, जिन्होंने शिक्षा की विकास प्रक्रिया में भागीदारी के उद्देश्य की भावना से परिषद् को सहयोग देकर उसके कार्यकलापों को कार्यान्वित करने में पूरी सहायता की है।

परिषद् यूनेस्को, यूनीसेफ, यू.एन.डी.पी., यू.एन.एफ.पी.ए., विश्व बैंक आदि अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के प्रति भी सम्मान व्यक्त करती है, जिन्होंने अपने प्रायोजित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सहयोग प्रदान किया। परिषद् सभी स्तरों के अपने स्टॉफ के सदस्यों के प्रति भी आभार प्रकट करती है, जिनके सहयोग और निष्ठा के बिना कार्यक्रम का कार्यान्वयन असंभव था। परिषद् उन हजारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और ऐसे अनेक व्यक्तियों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करती है, जिन्होंने परिषद् के 1996-97 के प्रकाशनों और कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए परिषद् के विभिन्न संघटकों को पत्र भेजे और निरंतर बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरणा के स्रोत बने रहे।

इस रिपोर्ट का प्रारूप योजना, कार्यक्रम, अनुवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग के संकाय सदस्य प्रो. एम.एस. खापर्डे, प्रभागाध्यक्ष, डा. जे.पी. मित्तल, रीडर और डा. जे.डी. शर्मा, रीडर ने तैयार किया। इसका प्रकाशन कार्य प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संपन्न हुआ। इस रिपोर्ट को यह कलेवर प्रदान करने में सभी का बहुमूल्य सहयोग रहा है।

विद्या से अमरत्व मिलता है

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

मोनोग्राम में परस्पर आवेष्टित हंस,
रा.शै.अ.प्र.प. के कार्य के तीनों पहलुओं
के एकीकरण के प्रतीक हैं
अर्थात (i) अनुसंधान और विकास
(ii) प्रशिक्षण और (iii) विस्तार और प्रसार।
यह डिज़ाइन, कर्नाटक के रायचूर जिले
में मस्के के निकट हुई खुदाई से प्राप्त
ईसा पूर्व तीसरी सदी के अशोक युगीन भग्नावशेष
के आधार पर बनाई गई है।

'विद्ययाऽमृतमश्नुते' आदर्श वाक्य ईशावास्य
उपनिषद् से लिया गया है जिसका अर्थ है
विद्या से अमरत्व मिलता है।

विषय सूची

स्वाधीनता के पहले दिन जवाहरलाल नेहरू का संदेश

हमें अब और कड़ा परिश्रम करना है। हममें से अब कोई भी तब तक चैन से नहीं बैठ सकता जब तक हम अपनी प्रतिज्ञा पूरी न कर लें और जनता का वह भविष्य न बन जाए, जिसकी वह हकदार है। हम एक महान देश के नागरिक हैं, हम एक निर्भीक प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं और हमें अपने आपको उच्च स्तर पर प्रतिष्ठित होने के योग्य बनाना है। हम चाहे किसी भी धर्म को मानते हों, हम अब एक ही महांन देश की संतान हैं, हम सभी के अधिकार, प्राधिकार और कर्तव्य बराबर हैं। हमें सांप्रदायिकता अथवा संकीर्ण मानसिकता को बढ़ावा नहीं देना है, क्योंकि कोई भी देश जिसकी जनता विचारों अथवा कृत्यों से संकीर्ण हो, महान नहीं बन सकता।

एन.सी.ई.आर.टी.: विद्यालयी शिक्षा का शीर्षस्थ संसाधन संगठन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) एक शीर्षस्थ संसाधन संगठन है। इसकी स्थापना विद्यालयी शिक्षा से संबंधित शैक्षिक विषयों पर केन्द्र और राज्य सरकारों को सहायता और परामर्श देने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। परिषद् विद्यालयी शिक्षा में सुधार के लिए अपने घटकों के माध्यम से शैक्षिक और तकनीकी सहायता करती है

1

एन.सी.ई.आर.टी. : विद्यालयी शिक्षा का शीर्षस्थ संसाधन संगठन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई. आर.टी.) एक शीर्षस्थ संसाधन संगठन है। इसकी स्थापना विद्यालयी शिक्षा से संबंधित शैक्षिक विषयों पर केन्द्र और राज्य सरकारों को सहायता और परामर्श देने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है। परिषद् विद्यालयी शिक्षा में सुधार के लिए अपने निम्नलिखित घटकों के माध्यम से शैक्षिक और तकनीकी सहायता करती है:

1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) नई दिल्ली
2. केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई. ई.टी.) नई दिल्ली
3. पं. सुन्दरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) भोपाल
4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई) अजमेर
5. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) भोपाल
6. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) भुवनेश्वर
7. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) मैसूर
8. उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन-ई.आर. आई.ई.) शिलाँग
9. राज्यों में क्षेत्र सलाहकार कार्यालय

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान अपने विभिन्न विभागों, प्रभागों के माध्यम से पाठ्यचर्या के विभिन्न शैक्षिक पक्षों से संबंधित क्षेत्रों में शोध और विकास कार्य करता है, आद्यपाठ्यचर्यात्मक और दूसरी पूरक अनुदेशी सामग्री तैयार करता है, विद्यालयी शिक्षा से संबंधित आंकड़ा-आधार विकसित करता है तथा विद्यालय-पूर्व, प्रारंभिक तथा माध्यमिक स्तरों पर छात्रों के चौमुखी विकास के लिए प्रायोगिक कार्य करता है। एन.आई.ई. केन्द्र द्वारा प्रायोजित विद्यालय सुधार योजनाओं के कार्यान्यवन से संबद्ध प्रमुख संसाधन व्यक्तियों और अध्यापक शिक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभाग और उनके कार्यक्षेत्र निम्नलिखित हैं :
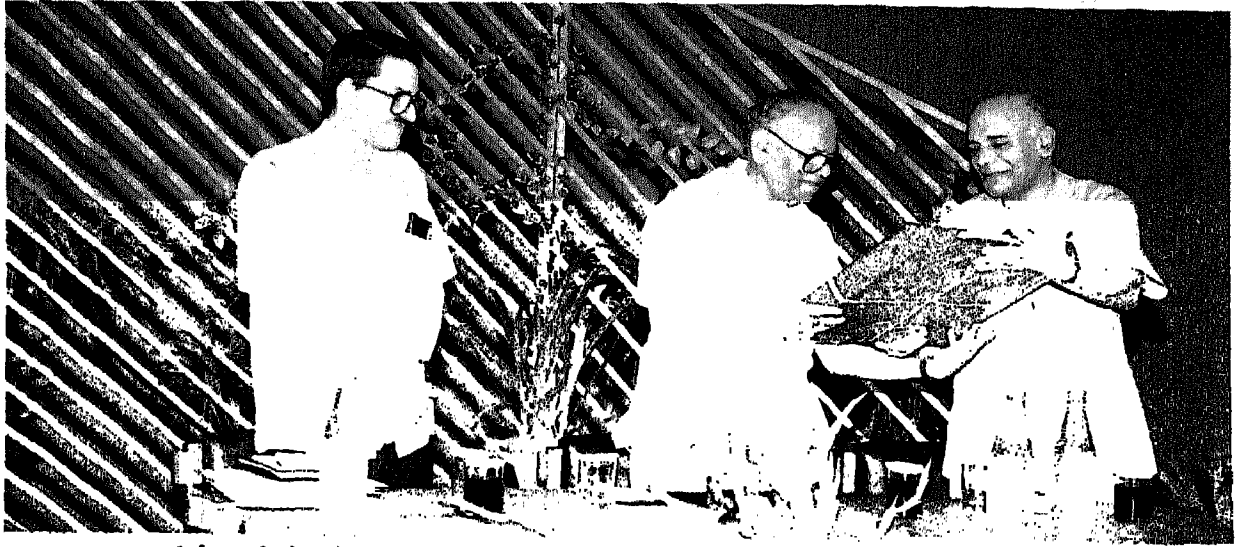
एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक मानव संसाधन विकास मंत्री के परिषद् में प्रथम आगमन पर पुस्तक भेंट करते हुए।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के शैक्षिक कार्यक्षेत्र

विभाग/प्रभाग	शैक्षिक कार्यक्षेत्र
विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)	विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा संबंधी मुद्दे और समस्याएं जिनमें शिक्षण अध्यापन सामग्री और शोध एवं विकास कार्य तथा जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के एक भाग के रूप में अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग के साथ मिलकर राष्ट्रीय संसाधन समूह के रूप में अध्यापक प्रशिक्षण, अध्यापन और पाठ्यचर्या संबंधी कार्यकलाप शामिल हैं।
अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षा विभाग (डी.ई.एन.एफ.ए.एस.)	गैर-नामांकित और विद्यालय त्यागी बच्चों से संबंधित मुद्दे और समस्याओं सहित अनौपचारिक शिक्षा तथा वैकल्पिक शिक्षण के आद्य-माडलों के लिए अनुसंधान और उनका विकास और अनौपचारिक शिक्षा तथा वैकल्पिक शिक्षण के लिए खुला विद्यालय संबंधी अध्ययन अनुदेशी सामग्री और अनोपचारिक शिक्षा के कार्मिकों के प्रशिक्षण की कार्यनीतियों का अध्ययन और निर्धारण।
विशेष-आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)	अनुसूचित जाति तथा अनु. जनजाति (अ.जा./अ.ज.जा.) अल्प संख्यक, विकलांग और अन्य विशेष जरूरतमंद समूहों की शिक्षा से संबंधित मुद्दे और समस्याएं।
महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)	बालिकाओं की शिक्षा से संबंधित मुद्दे और समस्याएं तथा संबंधित अनुसंधान और विकास के कार्यकलाप।
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)	विज्ञान और गणित शिक्षा के मुद्दे और समस्याएं आद्य पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री पर अनुसंधान और विकास, विज्ञान उपकरणों की डिजाइन और विकास संबंधी कार्य।
अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)	राज्य/क्षेत्र के अध्यापक शिक्षा संस्थानों की क्षमता के विकास के कार्यक्रम और अध्यापक शिक्षा की केन्द्रीय प्रायोजित योजना को शैक्षिक समर्थन, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग के साथ संयुक्त रूप से प्रशिक्षण, शिक्षाशास्त्र ओर पाठ्यचर्या के विकास के लिए राष्ट्रीय संसाधन समूह के रूप में कार्य करना, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के साथ समन्वय तथा विस्तार शिक्षा से संबंधित विषयों पर अध्ययन।
सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)	सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा से संबंधित मुद्दे और समस्याएं आद्यपाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री पर अनुसंधान और विकास राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) के एक भाग के रूप में जनसंख्या शिक्षा संबंधी गतिविधियां।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के शैक्षिक कार्यक्षेत्र

विभाग/प्रभाग	शैक्षिक कार्यक्षेत्र
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)	शिक्षा के मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और दार्शनिक आधारों तथा तुलनात्मक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा में उनके निहितार्थों से संबंधित अध्ययन।
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)	विद्यालयी शिक्षा से संबंधित मापन और मूल्यांकन, परीक्षा सुधार सहित सतत और व्यापक मूल्यांकन पर अनुसंधान और विकास संबंधी कार्यकलाप।
नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ (एन.वी.सी.)	जवाहर नवोदय विद्यालयों में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों के चयन हेतु नवोदय विद्यालय समिति को तकनीकी सहायता प्रदान करना।
शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा प्रक्रियन विभाग (डी.ई.एस.डी.पी.)	अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण और कंप्यूटर संसाधान केन्द्र के कार्यकलाप सहित आवधिक विषयक शैक्षिक अध्ययन।
शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग (डी.ई.आर.पी.पी.)	शिक्षा में नीतिगत अनुसंधान को बढ़ावा देना, "विचार टैंक" को कारगर बनाने के लिए उससे संबंधित कार्यकलाप आयोजित करना। विद्यालयी शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार से संबंधित अध्ययन शुरू करना, उनका समन्वय करना ओर उन्हें प्रायोजित करना तथा ऐरिक सचिवालय का कार्य संचालित करना।
कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग (डी.सी.ई.टी.ए.)	कंप्यूटर शिक्षा संबंधी मुद्दे और समस्याएं तथा आधुनिक तकनीकी सहायता बहुमाध्यमी शैक्षिक समर्थन के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास कार्य।
योजना, प्रोग्रामिंग, अनुवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)	एन.सी.ई.आर.टी. के घटकों को शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रतिपादन का समन्वयन कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण लक्ष्य-समूहों द्वारा कार्यक्रम के उपयोग का मूल्यांकन और कार्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन।
अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)	अन्य देशों के शैक्षिक संस्थानों के साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का समन्वयन करना और राष्ट्रीय विकास समूह के लिए शैक्षिक सचिवालय के रूप में कार्य करना।
प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)	विद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तकों, पत्रिकाओं, अनुसंधान मोनोग्राफों और पूरक सामग्री को प्रकाशित करना।
पुस्तकालय (डी.एल.डी.आई.)	प्रलेखन और सूचना प्रभाग शैक्षिक सूचनाओं का प्रलेखन और पुस्तकालय सेवा।

सी.आई.ई.टी.

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) भी नई दिल्ली में स्थित है। यह संस्थान शैक्षिक माध्यमों से संबंधित अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, उत्पादन और विस्तार संबंधित कार्यक्रम संचालित करता है तथा राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों को अकादमिक व तकनीकी सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

मानव संसाधन विकास मंत्री और एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक पुस्तक का अवलोकन करते हुए।

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.

पण्डित सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) भोपाल में स्थित है। यह संस्थान विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित अनुसंधान और विकास कार्य आयोजित करता है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं। ये संस्थान राज्य और जिला स्तर के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों को विद्यालयी शिक्षा संबंधी सेवाकालीन प्रशिक्षण में सहायता प्रदान करते हैं। ये संस्थान एक सीमा तक विज्ञान और गणित के अध्यापन के लिए विद्यालय अध्यापक तथा प्रारंभिक अध्यापक—प्रशिक्षण संस्थानों के लिए अध्यापक प्रशिक्षक को सेवा-पूर्व प्रशिक्षण भी प्रदान करते हैं। उत्तर-पूर्व के राज्यों (असम, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर नागालैण्ड, त्रिपुरा और सिक्किम) की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से दिसम्बर 1995 में शिलांग में एक नया क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान स्थापित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. के अधिकतर क्षेत्रीय कार्यालय राज्यों की राजधानियों में स्थित हैं। ये राज्यों में विद्यालयी शिक्षा की समस्याओं और मुद्दों पर शिक्षा विभागों और अन्य संबंधित संस्थाओं के साथ शैक्षिक संबंध स्थापित करते हैं तथा राज्यों को परिषद् की गतिविधियों और कार्यक्रमों की जानकारी देते हैं।

कार्यक्रम और गतिविधियां

एन.सी.ई.आर.टी. निम्नलिखित कार्यक्रमों और गतिविधियों का संचालन करती है।

अनुसंधान

विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्था होने के नाते परिषद् अनुसंधान का संचालन और समर्थन करती है तथा शैक्षिक अनुसंधान पद्धति संबंधी प्रशिक्षण भी देती है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.), और पंडित सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पक्षों से संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान कार्यक्रमों का संचालन और समर्थन करते हैं।

अनुसंधान का स्वयं संचालन करने के अतिरिक्त एन.सी.ई.आर.टी. अन्य संस्थाओं/संगठनों को वित्तीय सहायता और अकादमिक परामर्श देकर उनके अनुसंधान कार्यक्रमों को सहायता प्रदान करती है। पी.एच.डी. शोध प्रबंधों के प्रकाशन के लिए परिषद् द्वारा विद्वानों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। परिषद् विद्यालय शिक्षा संबंधी अध्यापनों को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान अध्येता-वृत्तियां भी प्रदान

करती है ताकि विकास प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों के लिए शोध का मजबूत आधार प्रदान किया जा सके और दक्ष शोधकर्ताओं का कार्यबल विकास किया जा सके।

एन.सी.ई.आर.टी. देश में शैक्षिक अनुसंधान का आयोजन भी करती है। परिषद् में आंकड़ों का भंडारण, प्रक्रियन एवं उन्हें पुनः प्राप्त करने के लिए कंप्यूटर सुविधाएं हैं। परिषद् अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाओं में अंतर्राष्ट्रीय ऐजेंसियों के साथ सहयोग करती है।

विकास

विद्यालयी शिक्षा के विकास संबंधी गतिविधियां परिषद् के महत्वपूर्ण कार्यों में से एक हैं। परिषद् के इन विकास संबंधी मुख्य कार्यों में बच्चों तथा समाज की बदलती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा को नवीन रूप देना शामिल है। परिषद् के नवाचार संबंधी विकास के कार्यकलापों में विद्यालय-पूर्व शिक्षा, औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा, शिक्षा का व्यावसायीकरण और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री का विकास भी सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त शैक्षिक प्रौद्योगिकी, जनसंख्या शिक्षा और विकलांगों तथा विशेष वर्गों की शिक्षा के विकास के लिए अपेक्षित कार्य किए जाते हैं।

प्रशिक्षण

परिषद् का एक प्रमुख कार्य पूर्व-प्राथमिक, प्रारंभिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर तथा व्यावसायिक शिक्षा मार्गदर्शन परामर्श तथा विशेष शिक्षा के क्षेत्रों में अध्यापकों को सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करना है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) के सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में विषय-वस्तु और शिक्षण विधि का एकीकरण, वास्तविक कक्षा अध्यापन व्यवस्था और समुदायिक कार्यों में अध्यापक छात्रों की प्रतिभागिता जैसे नवाचारी विधियों को भी शामिल किया गया है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, राज्यों तथा राज्य स्तरीय संस्थानों के प्रमुख कार्मिकों और अध्यापक प्रशिक्षकों तथा सेवारत शिक्षकों का प्रशिक्षण भी करते हैं।

विस्तार

परिषद् व्यापक शैक्षिक विस्तार कार्यक्रम संचालित करती है। इस क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, पं० सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान तथा राज्यों में स्थित क्षेत्रीय सलाहकार के कार्यालय विभिन्न प्रकार से कार्यरत हैं। परिषद् राज्यों के विभिन्न संगठनों तथा संस्थाओं के साथ घनिष्ट रूप से मिलकर कार्य करती है और विभिन्न वर्ग के कार्मिकों, जैसे—अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों, प्रश्नपत्र तैयार करने वाले विशेषज्ञों, पाठ्य-पुस्तक लेखकों आदि को सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से विस्तार सेवा विभागों, विद्यालयों और महाविद्यालयों के अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ व्यापक रूप से कार्य करती है।

विस्तार कार्यों के अंतर्गत नियमित रूप से सम्मेलन, संगोष्ठियों, कार्यशालाएं एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि जहाँ विशेष समस्याएं हैं तथा जिनके लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है वहाँ तक संबंधित शिक्षा कर्मी पहुँच सकें। परिषद् समाज की सुविधाविहीन वर्गों की शिक्षा के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित करती है। देश के सभी राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों में विस्तार कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

प्रकाशन और प्रसार

एन.सी.ई.आर.टी. कक्षा 1 से 12 तक के विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित करती है। परिषद् अभ्यास पुस्तिकाएं, अध्यापक निर्देशिकाएं, पूरक पाठमालाएं तथा अनुसंधान रिपोर्टें आदि भी प्रकाशित करती है। इसके अतिरिक्त यह अध्यापक प्रशिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों तथा सेवारत अध्यापकों के लिए उपयोगी शिक्षा सामग्री भी प्रकाशित करती है। निरंतर शोध और विकास कार्य के द्वारा तैयार अनुदेशी सामग्री राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों के विभिन्न संगठनों के लिए आदर्श सामग्री के रूप में प्रयुक्त की जाती है ये राज्य स्तरीय संगठनों को अपनाने एवं/या आवश्यकतानुसार अनुकूलन हेतु उपलब्ध कराई जाती है। पाठ्यपुस्तकें अंग्रेजी, हिंदी और उर्दु में प्रकाशित की जाती हैं।

शैक्षिक सूचनाओं के प्रचार-प्रसार के लिए परिषद् 6 पत्रिकाएं भी प्रकाशित करती है **प्राइमरी टीचर** अंग्रेजी और हिंदी दोनों में प्रकाशित की जाती है और इसका उद्देश्य

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों को कक्षा में सीधे उपयोग के लिए सार्थक एवं उपयुक्त सामग्री प्रदान करना है। **स्कूल साईंस** विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के लिए एक खुला मंच प्रदान करती है। **जर्नल ऑफ इण्डियन एजूकेशन** समकालीन शैक्षिक विषयों पर चर्चा के माध्यम से शिक्षा में मौलिक और आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करती है। **इंडियन एजूकेशनल रिव्यू** में शोध लेख प्रकाशित होते हैं और यह पत्रिका शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधानकर्ताओं को एक मंच प्रदान करती है। **भारतीय आधुनिक शिक्षा** हिंदी में प्रकाशित की जाती है तथा समकालीन विषयों में आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करने तथा शैक्षिक समस्याओं और व्यवहारों को प्रसारित करने के उद्देश्य से एक मंच प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त परिषद् का न्यूज लेटर **एन.सी.ई.आर.टी. न्यूज लेटर** के नाम से हर मास अंग्रेजी और हिंदी में प्रकाशित किया जाता है। इसका हिंदी संस्करण "शैक्षिक दर्पण" के नाम से निकलता है।

आदान-प्रदान कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन तथा विकासशील देशों के कार्मिकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करने के लिए यूनेस्को, यूनिसेफ, यू.एन.डी.पी., यून.एन.एफ.पी.ए. और विश्व बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर कार्य करती है। यह एपिड (ए.पी.ई.आई.डी.) के सहयोगी केन्द्रों में से एक है। यह शैक्षिक नवाचार के लिए राष्ट्रीय विकास दल (एन.डी.जी.) के सचिवालय के रूप में कार्य करती है। परिषद् विकासशील देशों के शैक्षिक कार्यकर्ताओं के लिए संबद्ध कार्यक्रमों तथा कार्यशालाओं में भागीदारी के माध्यम से प्रशिक्षण सुविधाएं प्रदान करती है।

परिषद् विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार तथा अन्य राष्ट्रों के सरकारों के बीच निर्धारित द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए मुख्य अधिकरण के रूप में कार्य करती है। इस क्षेत्र में परिषद् भारतीय आवश्यकताओं से संबद्ध विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करने के लिए अन्य देशों में अपने प्रतिनिधि मंडल भेजती है तथा अन्य देशों के विद्वानों के लिए प्रशिक्षण और अध्ययन दौरों की व्यवस्था करती है। अन्य देशों के साथ शैक्षिक सामग्री का आदान-प्रदान भी किया जाता है। इसके अलावा दूसरे देश व संगठनों के अनुरोध पर परिषद् अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, बैठकों, परिसंवादों आदि में भाग लेने के लिए अपने संकाय सदस्यों को भेजती है।

राज्यों की भागीदारी

परिषद् के विभिन्न घटकों के कार्यक्रमों के नियोजन, क्रियान्वयन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन की पूरी प्रक्रिया में परिषद् और राज्यों का परस्पर सहयोग या संयुक्त प्रयास होता है।

परिषद् के लगभग सभी कार्यक्रमों में राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों के विद्वानों और व्यावसायिक व्यक्तियों की भागीदारी विभिन्न स्तरों पर कार्यक्रमों के नियोजन से लेकर प्रणाली के परिणामों के प्रचार-प्रसार तक होती है। यह पूरी प्रक्रिया परिषद् के संकाय को राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों के लिए पूरे सहयोग व प्रतिबद्धता से काम करने का अवसर प्रदान करती है।

सांगठनिक संरचना

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री परिषद् के सामान्य निकाय के अध्यक्ष हैं। सभी राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री इस निकाय के सदस्य होते हैं। इस निकाय के अनन्य सदस्य हैं : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय में शिक्षा विभाग के सचिव, चार विश्वविद्यालयों के उपकुलपति (प्रत्येक क्षेत्र से एक), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष, केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरों के निदेशक, श्रम मंत्रालय के प्रशिक्षण और रोजगार निदेशालय के निदेशक (प्रशिक्षण), योजना आयोग के शिक्षा प्रभाग का एक प्रतिनिधि, परिषद् की कार्यकारी समिति के सभी सदस्य (जो उपर्युक्त में सम्मिलित नहीं हैं) तथा भारत सरकार द्वारा नामित अधिकं से अधिक अन्य छह व्यक्ति (जिनमें कम से कम चार सदस्य विद्यालयों के अध्यापक हों)। सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. इस सामान्य निकाय के संयोजक के रूप में कार्य करते हैं।

कार्यकारी समिति परिषद् का मुख्य शासी निकाय है। केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री इसके अध्यक्ष (पदेन) और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के राज्य मंत्री (पदेन) उपाध्यक्ष हैं। कार्यकारी समिति के अन्य सदस्य हैं: भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) के सचिव, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, विद्यालयी शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षा शास्त्री (जिनमें दो विद्यालय अध्यापक हों) संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., परिषद् संकाय के तीन सदस्य (जिनमें से कम से कम दो प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष स्तर के होने चाहिए), मा.सं.वि. मंत्रालय का एक प्रतिनिधि और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जो एन.सी.ई.आर.टी. का वित्तीय सलाहकार हो)। सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. कार्यकारी समिति का संयोजक होता है।

कार्यकारी समिति के कार्यों में निम्नलिखित समितियां सहायता करती हैं :

1. वित्त समिति
2. स्थापना समिति
3. भवन एवं निर्माण समिति
4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियां
5. केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का सलाहकार बोर्ड
6. पं० सुंदरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान का सलाहकार बोर्ड
7. एन.आई.ई. की शैक्षिक समिति
8. एन.आई.ई. के विभागों के सलाहकार बोर्ड

परिषद् मुख्यालय में निम्नलिखित शामिल हैं :

1. परिषद् सचिवालय
2. लेखा शाखा

परिषद् में पाँच वरिष्ठ पदाधिकारियों—निदेशक, संयुक्त निदेशक, संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.), संयुक्त निदेशक (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) और सचिव की नियुक्ति भारत सरकार द्वारा की जाती है। रिपोर्ट की अवधि के दौरान इन पदों को निम्नलिखित अधिकारियों ने संभाला :

एन.सी.ई.आर.टी. के वरिष्ठ पदाधिकारी

पद		नाम
निदेशक	:	प्रो. ए.के. शर्मा
संयुक्त निदेशक	:	प्रो. ए.एन. माहेश्वरी
संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.)	:	श्रीमती कुसुम नागिया
संयुक्त निदेशक (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)	:	प्रो. ए.के. मिश्रा
सचिव	:	रिक्त

अन्य कार्यों के साथ-साथ शैक्षिक कार्यों में निदेशक की सहायता के लिए तीन संकाय अध्यक्ष हैं। रिपोर्ट की अवधि के दौरान निम्नलिखित व्यक्तियों ने यह पद संभाला:

एन.सी.ई.आर.टी. के संकायाध्यक्ष

पद		नाम
डीन (अनुसंधान)	:	प्रो. ए.एन. माहेश्वरी
डीन (अकादमिक)	:	प्रो. अर्जुन देव
डीन (समन्वय)	:	प्रो. एम.एस. खापर्डे

संकायाध्यक्ष (अकादमिक) एन.आई.ई. के विभागों के शैक्षिक कार्यों का समन्वय करते हैं। संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वयन करते हैं और शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) के कार्यों की देखभाल भी करते हैं। संकाय अध्यक्ष (समन्वय) सेवा/उत्पादक विभागों, क्षेत्रीय कार्यालयों और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के कार्यकलापों का समन्वय करते हैं।

कार्यक्रमों का नियोजन और अनुवीक्षण

एन.सी.ई.आर.टी. के घटक अपने कार्यक्रमों के निरूपण में अन्य बातों के साथ-साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) के प्रावधानों और राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की अपेक्षित सहायता को ध्यान में रखते हैं। राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान मुख्य रूप से राज्य समन्वय समिति (एस.सी.सी.) की कार्यप्रणाली के माध्यम से की जाती है। यह समिति एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय और राज्य शिक्षा विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच परस्पर अनुक्रिया के लिए एक मंच प्रदान करती है। इस समिति का अध्यक्ष शिक्षा सचिव होता है और संबंधित

परिषद् के शैक्षिक सलाहकार राज्यों के शिक्षा अधिकारियों से परामर्श करके राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान करते हैं जिनको राज्य समन्वय समितियों द्वारा संसाधित किया जाता है। इसके बाद इन संसाधित आवश्यकताओं को क्षेत्रीय समन्वय समितियां संसाधित करती हैं। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियां उनके अकादमिक कार्यक्रमों को संसाधित करती हैं।

परिषद् के घटकों तथा विश्वविद्यालयों के विभागों और स्वयंसेवी संगठनों सहित दूसरे संगठनों या संस्थाओं द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान कार्यक्रमों पर शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति विचार करती है।

ए सी, आर ए बी, एम सी और एरिक द्वारा संसाधित कार्यक्रमों में पुनरावृत्ति कमियों आदि की जांच के लिए कार्यक्रम सलाहकार समिति की एक उपसमिति कार्यक्रमों की छानबीन करती है।

उप समिति की छानबीन के बाद परिषद् की कार्यक्रम सलाहकार समिति कार्यक्रमों पर विचार करती है।

पी ए सी द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों को अंततः परिषद् की कार्यकारिणी समिति द्वारा स्वीकृति दी जाती है।

पी ए सी और कार्यकारिणी समिति द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम परिषद् के घटकों द्वारा कार्यान्वित किए जाते हैं

कार्यक्रम के कार्यान्वयन की प्रगति का अनुवीक्षण प्रति माह घटक/विभाग के अध्यक्ष द्वारा और प्रत्येक चौथे माह निदेशक की अध्यक्षता में गठित अनुवीक्षण समिति द्वारा किया जाता है।

शिक्षा प्रणाली में विद्यालयी शिक्षा के गुणात्मक सुधार की दृष्टि से कार्यक्रमों के परिणामों के व्यापक प्रसार के लिए उनका मूल्यांकन घटक/विभाग या पी पी एम ई डी द्वारा किया जाता है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के परामर्श, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, राज्यों के शिक्षाधिकारियों के संपर्क, केन्द्रीय शैक्षिक संगठनों (सी ए बी ई, के वी एस, एन वी एस, सी बी एस ई आदि) द्वारा मांगी गई सहायता तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से प्राप्त ज्ञानों के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के सलाहकार बोर्ड इसके बाद इन विभागों के अकादमिक कार्यक्रमों को संसाधित किया जाता है और तदुपरांत संस्थान की शैक्षिक समिति (ए सी) इन पर विचार करती है।

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का सलाहकार बोर्ड (आइ ए बी) शिक्षा प्रणाली के लिए अपेक्षित संचार माध्यम सहायता परिषद् के घटकों और एस आई ई टी की आवश्यकताओं के आधार पर इस संस्थान के कार्यक्रमों को संसाधित करता है।

केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान के कार्यक्रम उस संस्था में सलाहकार बोर्ड द्वारा संसाधित किये जाते हैं।

परिषद् के स्तर पर राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं, राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं और अंतर्राष्ट्रीय विकासक्रमों को प्रतिबिंबित करते हुए शैक्षिक कार्यक्रमों के निरूपण, विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए कार्यक्रमों का कार्यान्वयन, कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण अंतिम उत्पादों/परिणामों का मूल्यांकन तथा शिक्षा प्रणाली के सुधार में उनकी उपयोगिता से संबंधित कार्य प्रणाली को प्रदर्शित करने वाला चार्ट।

...य शिक्षा संस्थानों का प्राचार्य सदस्य संयोजक होता है। राज्यों की जिन शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान की जाती है उन पर आर.आई.ई. की प्रबंध समितियां (एम.सी.) विचार करती हैं। इनमें से अनेक शैक्षिक आवश्यकताओं को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान अपने स्तर पर पूरा कर देते हैं। जिन शैक्षिक आवश्यकताओं के लिए परिषद् के घटकों से सहायता अपेक्षित होती है उन्हें संबंधित घटकों को आवश्यक कार्यवाही के लिए भेज दिया जाता है। एन.आई.ई. के विभागों के शैक्षिक कार्यक्रमों को संबंधित विभागों के विभागीय सलाहकार बोर्ड (डी.ए.बी.) संसाधित करते हैं और उसके बाद एन.आई.ई. की शैक्षिक समिति (ए.सी.) उस पर विचार करती है। सी.आई.ई.टी. के कार्यक्रम शिक्षा प्रणाली की जरूरतों के अनुसार संचार माध्यम पर आधारित हैं। इनके कार्यक्रमों का संसाधन संस्थान का सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.) करता है। पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) के कार्यक्रमों का संसाधन भी संस्थान का सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.) करता है। एन.सी.ई.आर.टी. के घटकों और अन्य संस्थानों/संगठनों द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान कार्यक्रमों पर शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ऐरिक) विचार करती है। शैक्षिक समितियों, संस्थान सलाहकार बोर्डों, आर.आई.ई. की प्रबंध समितियां और शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समितियों से संसाधित कार्यक्रमों की पुर्नावृत्ति और अन्य कमियों की जांच के लिए कार्यक्रम सलाहकार समिति की एक उपसमिति (एस.सी.पी.ए.सी.) उनकी छानबीन करती है।

विभिन्न कार्यक्रमों की समितियों द्वारा संसाधित और संस्तुत कार्यक्रमों पर अंतिम रूप से कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) विचार करती है। इसके साथ ही परिषद् की कार्यकारी समिति को पी.ए.सी. यह भी सिफारिश करती है कि किन विषयों पर अनुसंधान, प्रशिक्षण विस्तार और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए और देश में विद्यालयी शिक्षा को उन्नत बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने के सर्वोत्तम माध्यम कौन से होंगे।

वर्ष 1996-97 के दौरान 26 मार्च 1997 को कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक हुई और इसमें विभिन्न सलाहकार बोर्डों/समितियों की सिफारिशों पर विचार किया गया।

कार्यक्रम के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण

कार्यक्रम के कार्यान्वयन का अनुवीक्षण करने का दायित्व मुख्यत: एन.सी.ई.आर.टी. के प्रत्येक घटक विभाग के अध्यक्ष पर ही होता है। एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक/संयुक्त निदेशक, समय-समय पर घटकों/विभागों के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा करते हैं।

परिषद् के विभिन्न घटकों के कार्यक्रमों के नियोजन, कार्यान्वयन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन की पूरी प्रक्रिया परिषद् और राज्यों के संयुक्त प्रयास और सहयोग पर निर्भर है। परिषद् के लगभग सभी शैक्षिक कार्यक्रमों में राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों के अकादमिक सदस्यों व शिक्षा कर्मियों तथा व्यावसायिकों को सभी स्तरों पर शामिल किया जाता है अर्थात् कार्यक्रम की योजना से लेकर परिणामों के व्यापक प्रचार-प्रसार तक में इनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाती है। इस संपूर्ण प्रक्रिया से एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों को राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों के साथ घनिष्ठ सहयोग व प्रतिबद्धता से कार्य करने का अवसर मिलता है। शैक्षिक कार्यों के योजना कार्यान्वयन के अनुवीक्षण और मूल्यांकन की प्रक्रिया को कारगर बनाने के लिए इसकी अंतिम रूपरेखा एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार की जा रही है। इसका एक प्रारूप, टिप्पणी और सुझावों के लिए राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों के शिक्षा सचिवों को भेजा गया था।

रिपोर्टें और विवरणिकाएं

एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न प्रयोजनों से समय-समय पर अपने कार्यक्रमों तथा गतिविधियों के प्रतिवेदन तथा विवरणिकाएं तैयार कीं। निम्नलिखित रिपोर्ट तथा विवरणिकाएं मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम.एच.आर.डी.) को भेजी गई:

1. प्रमुख गतिविधियों और महत्वपूर्ण परिणामों की मासिक रिपोर्ट
2. प्रमुख गतिविधियों और महत्वपूर्ण परिणामों का मासिक सारांश
3. मंत्रिमंडल सचिवालय के लिए महत्वपूर्ण परिणामों की रिपोर्ट

4. सांप्रदायिक्ता को समाप्त करने तथा अल्पसंख्यकों के कल्याण हेतु किए गए कार्यों की त्रैमासिक कार्यवाई रिपोर्ट
5. राष्ट्रीय एकता परिषद् की संस्तुतियों के कार्यान्वयन के लिए की गई कार्रवाई की त्रैमासिक रिपोर्ट
6. एन.सी.ई.आर.टी. की वार्षिक रिपोर्ट
7. बजट का प्रस्तुतिकरण

प्रशासन

31 मार्च 1997 को एन.सी.ई.आर.टी. के संस्वीकृत स्टॉफ की संवर्गवार स्थिति परिशिष्ट-2 में दी गई है।

वित्त

एन.सी.ई.आर.टी. के वर्ष 1996-97 से संबंधित वार्षिक प्राप्ति और भुगतान लेखा संबंधी सूचना परिशिष्ट-3 में दी गई है।
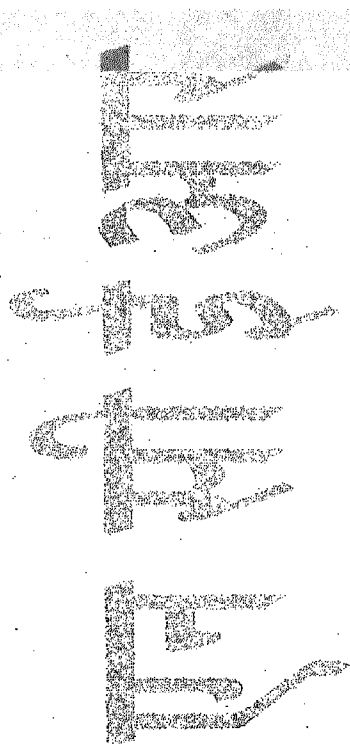
प्रमुख गतिविधियां और कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. ने अपने कार्यकलापों को नया रूप देने के लिए विद्यालयी शिक्षा में राष्ट्रीय सरोकारों को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों की प्राथमिकता के क्रम में परिवर्तन किया। प्रारंभिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) पर आधारित कार्रवाई योजना (पी.ओ.ए.) के कार्यान्वयन की गति को त्वरित किया गया

2

प्रमुख गतिविधियां और कार्यक्रम

वर्ष 1996-97 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. ने अपने कार्यकलापों को नया रूप देने के लिए विद्यालयी शिक्षा में राष्ट्रीय सरोकारों को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों की प्राथमिकता के क्रम में परिवर्तन किया। प्रारंभिक शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) पर आधारित कार्रवाई योजना (पी.ओ.ए.) के कार्यान्वयन की गति को त्वरित किया गया।

कुछ चुने हुए जिलों में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के कार्यान्वयन में शामिल राज्य और जिला स्तर की एजेंसियों को शैक्षिक सहायता और परामर्शकारी सेवाएं प्रदान की गई। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में विद्यालय शिक्षा के विकास के लिए आवश्यक कदम उठाए गए। दिसम्बर, 1995 में शिलाँग में एक नया क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान स्थापित किया गया। देश में शैक्षिक अनुसंधानों के पांचवें सर्वेक्षण तथा छठे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण को समायानुकूल बनाने के लिए कंप्यूटर पर संसाधित किया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) के माध्यम से राज्य स्तरीय आगतों सहित एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों विभागों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में चलाए गए कार्यक्रमों और गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण इस भाग में प्रस्तुत किया गया।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा

आई.सी.सी.एस. के घटक के रूप में विद्यालय-पूर्व शिक्षा के अध्ययन और इसके निहितार्थ तथा समुदाय द्वारा इसके प्रयोग के विस्तार से संबंधित एक अध्ययन किया गया। पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए पठन, लेखन और अंक ज्ञान पर तीन कार्यकलाप पुस्तिकाएं तैयार की गईं। मुख्य संसाधन व्यक्तियों के ई.सी.ई. प्रशिक्षण के समर्थन के लिए पांच ऑडियो कैसेट और वीडियो फिल्म सहित एक प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया गया। विद्यालय-पूर्व और प्राथमिक विद्यालयों के बीच की कड़ी को मजबूती प्रदान करने के लिए किए गए मध्यवर्ती अध्ययन के अंतर्गत नियोजित मध्यस्थता का परीक्षण किया गया। भारतीय विद्यालय-पूर्व शिक्षा संस्था, भारतीय बाल-स्वास्थ्य अकादमी, तथा ओ.एम.ई.पी. (भारत) ने "विद्यालय-पूर्व बच्चे पर दबाव : व्यावसायिक संगठनों की भूमिका" शीर्षक से आयोजित एक दिवसीय परामर्शकारी कार्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न पक्षधारियों के पक्षों की कार्यसूची तैयार की गई और इस पर चर्चा की गई। केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय संस्थान के मुख्य कार्यकर्ताओं के लिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक मानव संसाधन विकास मंत्री जी को कुछ विषय स्पष्ट करते हुए।

प्राथमिक शिक्षा

एम.एल.एल तथा ई.सी.ई. के लिए सूचनाएं एकत्र करने, इन्हें सूचीवद्ध करने और कंप्यूटर में संग्रह करने का कार्य राष्ट्रीय प्रलेखन एकक (एन.डी.यू.) में किया जा रहा है। "ग्लिंप्सिज" नामक त्रैमासिक समाचार पत्रिका नियमित रूप से निकाली जा रही है और इसका व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार हो रहा है। राष्ट्रमंडल द्वारा प्रायोजित "गणित शिक्षण में नवाचारी

कार्यक्रमों का प्रलेखन" नामक परियोजना अध्ययन चलाया गया। एन.सी.ई.आर.टी. की प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा तीन की अंग्रेजी गणित और पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों का भाषा वैज्ञानिक सैद्धांतिक विश्लेषण पूर्ण किया गया। तीन स्थानीय केन्द्रीय विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाओं में क्रियाकलाप पर आधारित शिक्षा को आरंभ करने से संबंधित परीक्षण किया जा रहा है। ये तीन विद्यालय एन.सी.ई.आर.टी., जे.एन.यू. और आई.ई.टी. परिसरों में स्थित हैं और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षणार्थियों और प्रतिनिधियों को इस प्रविधि के प्रत्यक्ष: प्रमाण उपलब्ध करवाने और अनुसंधान तथा प्रशिक्षण के लिए ये विद्यालय प्रायोगिक और प्रदर्शन विद्यालयों के रूप में विकसित किए गए हैं। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान चिंता पर प्रकाश डालने के लिए, विशेषकर संपूर्ण और बहु-स्तरीय परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता के संबंध में, प्राथमिक शिक्षा की प्राथमिकताओं की समीक्षा के लिए एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में यह सुझाव दिया गया कि प्राथमिक शिक्षा के लिए एक ऐसा प्रलेख तैयार किया जाए जो एम.एल.एल. के संबंध में फैली गलत धारणाओं का निराकरण करे और इस दिशा में मार्गदर्शी निर्देश उपलब्ध करवाए। भाषा गणित में बच्चों द्वारा की जाने वाली सामान्य भूलों की पहचान करने और उन्हें सूचीबद्ध करने के लिए दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया ताकि ऐसी समस्याओं को पाठ्यक्रम में खोजा जा सके। इस पुनर्निवेशन का प्रयोग प्राथमिक शिक्षा के प्रस्तावित प्रलेख को तैयार करने के लिए किया जा रहा है। बहु-श्रेणी और और बहु-स्तरीय शिक्षण से संबंधित विषयगत अध्ययन किए गए जिससे बहु-स्तरीय और बहु-श्रेणी शिक्षण में नवाचारी कार्यक्रमों की प्रमुख विशेषताओं का प्रलेखन कार्य किया जा सके। इस परियोजना की प्रमुख विशेषताओं के साथ-साथ अध्यापकों और बच्चों की बोधात्मकता को एक रिपोर्ट के रूप में समेकित किया गया। "यू.ई.ई. के संदर्भ में प्रारंभिक शिक्षा में अनुसंधानकर्त्ताओं की आलोचनात्मक समीक्षा" नामक परियोजना के अंतर्गत पत्राचार और व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं। प्राथमिक स्तर पर चुनिंदा अवधारणाओं सक्षमताओं के वर्गीकरण पर एक अनुभवजन्य अनुसंधान अध्ययन की रूपरेखा को अंतिम रूप दिया गया। यशपाल समिति (जो विद्यालयी विद्यार्थियों पर शैक्षिक बोझ कम करने के लिए सुझाव देने हेतु गठित की गई थी, की सिफारिशों के कार्यान्वयन के मानकीकरण के लिए साधन विकसित किए गए और राज्यों को भेजे गए। इन अध्ययनों में समय-समय पर सुधार किया जाता रहा है।

त्रैमासिक पत्रिकाएं "प्राइमरी टीचर" (अंग्रेजी में) और "प्राइमरी शिक्षक" (हिंदी में) प्राथमिक अध्यापकों की विद्यालय अनुभवों/कक्षा गतिविधियों के संबंध में सूचनाओं और अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए एक मंच उपलब्ध करवा रही हैं ताकि नवीनतम विकास और अनुसंधानों का अधिकाधिक व्यापक प्रचार-प्रसार हो सके। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) पर 'उजाला शीर्षक' से 28 दृश्यों के रूप में एक प्रदर्शनी तैयार की गई जो व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयासों को बढ़ावा देगी। इन दृश्यों में विद्यालय छोड़कर जाने वाले बालकों, बालिकाओं, अध्यापकों की भूमिका और आनन्दायक शिक्षा से संबंधित विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण

राज्य स्तरीय संगठनों के साथ-साथ स्वयंसेवी संगठनों के लिए क्षेत्रीय प्रगति अभिमुख कार्यक्रमों के माध्यम से एक मजबूत संसाधन आधार तैयार करने की दिशा में प्रयास किए गए। एन.एफ.ई. कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण के लिए राज्यों में स्थित स्वयंसेवी संगठनों को सहायता प्रदान की गई। बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, सिक्किम तथा नागालैण्ड के एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों के लिए उनकी आवश्यकताओं पर आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। असम के डी.आर.यू. के संकाय के लिए तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम और विभिन्न राज्यों में स्थित स्वयंसेवी एजेंसियों के साथ कार्यरत डी.आर.यू. के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। केन्द्र द्वारा प्रायोजित एन.एफ.ई. योजना के कार्यान्वयन के लिए सहायता प्राप्त स्वयंसेवी संगठनों की मदद के लिए तीन प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की गईं। स्वयंसेवी संगठनों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी इन संगठनों की सहायता की गई। "अनाथ फुटपाथी और कामकाजी बच्चों के लिए शिक्षार्थी विशेष कौशल पर आधारित सामग्री का विकास" नामक परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित पांच अनुदेशी पैकेज तैयार किए गए : 1. कृषि गतिविधियां; 2. मरम्मत कर्मशाला; 3. सड़कों के किनारे ढाबे, चाय की दुकानें और रेस्टोरेन्ट; 4. कबाड़ी; और 5. विभिन्न प्रकार के घरेलू कामकाज करने वाली बालिकाएं।

"मिलकर सीखें" नामक शृंखला के अंतर्गत एम.एल.एल. पर आधारित 12 अध्यापन अधिगम सामग्रियों के विकास के लिए एक ढांचा तैयार किया गया जिसमें प्राथमिक स्तर के एन.एफ.ई. कार्यक्रमों के चार सत्र शामिल थे। पर्यावरण अध्ययन पर एक सचित्र पुस्तक को अंतिम रूप दिया गया।

प्रसिद्ध लोक कथाओं, बाल-खेलों, पहेलियों, गीतों, कहावतों और चुटकुलों पर आधारित चार विशिष्ट पुस्तकें मुद्रणाधीन हैं। प्राथमिक स्तर पर उत्साहवर्धक और आनन्ददायक शिक्षण के लिए गणित विषय में अनुपूरक सामग्री तैयार करने के संदर्भ में एक क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित की गई।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आग्रह पर, एन.सी.ई.आर.टी. ने एन.एफ.ई. सहित प्रारंभिक शिक्षा में नवाचारी कार्यों और अनुभवों वाली स्वयंसेवी ऐजेंसियों की गतिविधियों की समीक्षात्मक बैठकें आयोजित करने का दायित्व संभाला है ताकि ये एजेंसियों आपस में मिलकर एक-दूसरे से विचार विमर्श कर सकें। नवाचारी प्रयासों के बारे में क्षेत्रीय स्तर के आंकड़ों को एकत्र करने के लिए अपेक्षित उपकरणों को अंतिम रूप देने के उद्देश्य से एक दो-दिवसीय कार्यशाला अयोजित की गई।

समवाय दल की एक दो-दिवसीय बैठक भी आयोजित की गई ताकि नवाचारी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की कार्यनीतियों और जवाबदेही के अनुभवों का आदान-प्रदान किया जा सके। अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण के आयोजित वार्षिक सम्मेलन में नए उभरते हुए इन मुद्दों पर ध्यान आकृष्ट किया गया। 1. यू.ई.ई. के संदर्भ में अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण की संकल्पना, 2. वैकल्पिक शिक्षण, अनौपचारिक शिक्षा और औपचारिक शिक्षा के बीच तुलना सुनिश्चित करने के लिए पद्धति का विकास करना, 3. अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में पंचायती राज संस्थानों की भूमिकाएं और कार्य।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा

कोंध और सओरा जनजातियों के जीवन और संस्कृति पर आधारित अनुपूरक पठन सामग्री उड़िया लिपि में तैयार की जा रही है। बिहार राज्य के लिए देवनागरी लिपि में कक्षा 2 की पाठ्य पुस्तकें संथाली, मुन्दारी, कुरुका, खारिया और दो भाषाओं में तैयार की गई। गुजराती लिपि में गुजरात की बार्ली और रथवा जनजाति के दो प्रवेशिकाओं का प्रारूप तैयार किया गया।

अ.जा./अ.ज.जा. और अल्पसंख्यकों के प्रतिकूल सामग्री को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक स्तर पर अध्यापन-अधिगम सामग्री के विश्लेषणात्मक अध्ययन का कार्य चल रहा है। आश्रम विद्यालयों की दक्षता के मापन के लिए एक अध्ययन प्रगति पर है। मकतबों/मदरसों में पाठ्यचर्या के विश्लेषण पर अध्ययन का कार्य आरंभ किया गया। अल्पसंख्यक संस्थानों के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पैकेज की अंतिम रूप रेखा तैयार की जा रही है।

विकलांग बच्चों की शिक्षा

अपने-अपने राज्यों में आई.ई.डी.सी. को मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से कार्य योजना बनाने के लिए सात राज्यों के कार्मिकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। एकीकृत विद्यालयों में बधिर बच्चों को हिन्दी भाषा पढ़ाने के संदर्भ में प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए एक पुस्तिका तैयार की जा रही है। प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों से बच्चों की विशेष आवश्यकताओं के अनुरूप परीक्षा प्रणाली का विकास करने के उद्देश्य से परीक्षा प्रणाली में संभवतः लचीलापन लाने संबंधी परियोजना का कार्य प्रगति पर है। विकलांग बच्चों को पढ़ाने वाले प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया जा रहा है। विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दक्षिणी क्षेत्र के गैर-सरकारी संगठनों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। आई.ई.डी.सी. के कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से, विकलांगों के लिए एकीकृत शिक्षा हेतु तैयार करने के लिए विकलांगों की एकीकृत शिक्षा परियोजना पी.आई.ई.डी. के अनुभवों का उपयोग करते हुए शैक्षिक प्रशासकों का एक राज्य स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया गया और आई.ई.डी.सी. के क्रियान्वयन के लिए योजनाएं बनाई गई।

जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.)

डी.पी.ई.पी. कार्यक्रम 1994 में 7 राज्यों के 42 जिलों में आरम्भ किया गया। दूसरे चरण में इस कार्यक्रम का 6 नए राज्यों के और 80 जिलों में विस्तार किया गया है। इस परियोजना के अंतर्गत पिछले 7 वर्षों के दौरान डी.पी.ई.पी. जिलों में किए गए कार्यों और व्यापक विस्तार अवबोधन और संतोषजनक सामर्थय के विकास के साथ-साथ अधिगम की गुणवत्ता के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रयास किए गए। इस कार्यक्रम के प्रमुख सरोकारों में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना एक महत्वपूर्ण सरोकार है। इसका मुख्य उद्देश्य कक्षा में बाल-केन्द्रित क्रियाकलाप आधारित अध्यापन-अधिगम के शिक्षा शास्त्रीय दृष्टिकोण स्थापित करना है। एन.सी.ई.आर.टी. ने डी.पी.ई.पी. केन्द्रीय संसाधन समूह को निम्नलिखित के संदर्भ में डी.पी.ई.पी. के दूसरे चरण में समर्थनकारी सेवाएं प्रदान की।

1. कक्षा अवलोकन अनुसूची को अन्तिम रूप देना,
2. गुजरात और उड़ीसा में शिक्षाशास्त्रीय नवीकरण प्रक्रिया
3. बिहार और हिमाचल प्रदेश में बुनियादी मुल्यांकन अध्ययन (बी.ए.एस.) का संचारेक्षण
4. उड़ीसा में सहभागिता कार्यशाला और प्रशिक्षण कार्यनीति को अन्तिम रूप देना।

डी.पी.ई.पी. पाठ्चर्या संसाधन समूह

एन.सी.ई.आर.टी. ने बहुश्रेणी अध्यापन पर एक विस्तृत प्रलेख तैयार किया जिसमें अनुसंधान लेखों के संबंध में सूचना और इस क्षेत्र में उपलब्ध रिपोर्टों के सारसंक्षेप शामिल हैं। बहु श्रेणी अध्यापन में अच्छे अनुप्रयोगों के संबंध में 4 संगठनों अर्थात् दिगान्तर, बोध, सिद्ध और ऋषि घाटी के आधारों पर विषयगत अध्ययन किया गया। श्रेणीबहुल अध्यापकों पर एक अन्य विषयगत अध्ययन जो बिना किसी संगठन की सहायता के अपने आप ही संबंधित समस्याओं के समाधान ढूँढते हैं, किया जा रहा है। पठन और गणित से संबंधित अनुसंधानों और अच्छे व्यवहारों का प्रलेखन किया गया। कक्षा-1 में दाखिल छात्रों के पठन स्तर की पहचान के लिए एक अध्ययन पूरा किया गया। भाषाओं और गणित में आदर्श सामग्री विकसित की गई। कक्षा-1 तथा 2 के लिए गणित विषय पर अनुपूरक अधिगम सामग्री तैयार की गई। पठन कौशल और समझ में वृद्धि (आर.ए.सी.ई.) का एक पैकेज विकसित किया गया। प्रथम-चरण में डी.पी.ई.पी. राज्यों द्वारा तैयार की गई अनुदेशी सामग्री के मूल्यांकन का कार्य किया गया। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (ई.सी.ई.) के मुद्दों और प्राथमिकताओं पर डी.पी.ई.पी. कार्मिकों का अभिविन्यास किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. के डी.पी.ई.पी. अध्यापन प्रशिक्षण संसाधन समूह ने सेवाकालीन अनुभवों को समेकित किया। प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों और अन्य कार्यकर्ताओं के लिए एक प्रशिक्षण डिजाइन तैयार किया गया। आदर्श प्रशिक्षण सामग्री तैयार की गई और प्रशिक्षण पैकेजों का अन्य भाषाओं में अनुवाद किया गया। प्रशिक्षण सामग्री का क्षेत्रीय परीक्षण और समीक्षा करके इसे अंतिम रूप दिया गया। प्रशिक्षण की गुणवत्ता के संचारेक्षण, कक्षा अनुभवों का अनुप्रयोग तथा शिक्षुओं की अधिगम संप्राप्ति के प्रभाव का अध्ययन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संगोष्ठियां

अनुसंधान गतिविधियों पर डी.पी.ई.पी. के संसाधन समूह ने एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 24-26 जुलाई 96 तक "प्राथमिक स्तर पर विद्यालय प्रभाविता और कक्षा प्रक्रियाएं" विषय पर दूसरी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी में 65 लेख प्रस्तुत किए गए और उन पर चर्चा की गई।

इनमें से डेनमार्क, हांग-कांग, मैक्सिको, नीदरलेंड, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमरीका आदि देशों के शिक्षाविदों ने 10 लेखों का योगदान दिया। यूरोपीय आयोग, विश्व बैंक, यू.एन.डी.पी., ओ.डी.ए., डी.पी.ई.पी. ब्यूरो, गैर-सरकारी संगठनों, भारतीय विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधियों और एन.सी.ई.आर.टी. के वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने भी इसमें भाग लिया। संगोष्ठी की निम्न प्रमुख सिफारिशें थीं :

1. शैक्षिक प्रबंध सूचना प्रणाली का विकास
2. विकेन्द्रीकरण और व्यष्टि स्तरीय नियोजन
3. सामुदायिक प्रतिभागिता को बढ़ाना
4. प्रत्याशित अधिगम परिणामों से संगत पाठ्यचर्या में संशोधन
5. सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा में सुधार

6. पाठ्यपुस्तकों में संशोधन
7. बहु-श्रेणी कक्षा का प्रयोग
8. राष्ट्रीय परीक्षा की व्यवस्था में सुधार करना तथा
9. अध्यापक प्रोत्साहन।

तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में डी.पी.ई.पी. कार्यकर्ताओं की क्षमता बढ़ाने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की गई। श्रेत्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से जुड़े हुए 25 अनुसंधान अध्ययन करने का काम हाथ में लिया गया और इन्हें पूरा किया गया। संगोष्ठी की कार्यवाही "प्राथमिक स्तर पर कक्षा प्रक्रियाओं की समझ" नामक शीर्षक से प्रकाशित की गई। 1997 में प्राथमिक स्तर पर अध्यापक सक्षमता और विद्यालय प्रभावशीलता विषय पर होने वाली अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संगोष्ठी की पूर्व तैयारी के रूप में "अध्यापक सक्षमता" विषय की तैयारी के लिए देश में चार क्षेत्रीय संगोष्ठियां आयोजित करने संबंधी कार्रवाई आरंभ कर दी गई है।

क्षेत्रीय गहन शिक्षा परियोजना (ए.आई.ई.पी.)

मानव संसाधन विकास के लिए क्षेत्रीय गहन शिक्षा परियोजना का उद्देश्य "सबके लिए शिक्षा" (ई.एफ.ए.) का एक व्यवहार्य और जवाबदेह मॉडल विकसित करना है जो चुने हुए भौगोलिक क्षेत्रों में विद्यालय-पूर्व, प्राथमिक, अनौपचारिक और प्रौढ़ शिक्षा में सुधार लाने पर केन्द्रित होने के साथ-साथ इन कार्यक्रमों के बीच समन्वयकारी संबंध स्थापित करें और नियोजन और प्रबंधन में समुदाय की सहभागिता, लचीलापन, विकेन्द्रीकरण जैसे क्षेत्रीय और समुदायोन्मुख विशिष्टताओं को अपनाए और अंत:क्षेत्रीय समन्वय को प्रोत्साहित करें। यह परियोजना महाराष्ट्र, मिजोरम, उड़ीसा, तमिलनाडु, उत्तर-प्रदेश तथा दादरा और नगर हवेली में चलाई गईं।

परियोजना के परिणाम विभिन्न राज्यों में अलग-अलग है किन्तु फिर भी उनमें कुछ समानताएं हैं जो इस प्रकार हैं:

1. प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के दाखिला तथा अवरोधन में वृद्धि
2. विद्यालय-पूर्व, प्राथमिक, अनौचारिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के बीच समन्वयकारी संबंध
3. अंत:क्षेत्रीय समन्वयन
4. सामुदायिक शिक्षा और विकास केन्द्रों की शैक्षिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने वाले केन्द्र बिन्दु बनना
5. एम.एल.एल. के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आनन्द दायक, खेल-खेल में अधिगम के लिए अध्यापन प्रक्रिया का आरम्भ किया जाना।

इस परियोजना के अंतर्गत विकसित व्यष्टि स्तरीय—नियोजन, सामुदायिक संघटन आदि जैसे मॉडलों को राज्यों ने डी.पी.ई.पी. तथा अन्य कार्यक्रमों के लिए अपनाया। इस परियोजना का एक प्रमुख नवाचार यह है कि यह वर्तमान राज्य प्रणाली में ही कार्य करती है। "पीपल ऑन द मूव" नामक एक प्रलेख प्रकाशित कर इसका व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया। ए.आई.ई.पी. परियोजना का अभ्यास और अनुभव, विशेषकर व्यष्टि स्तरीय नियोजन और सामुदायिक सहभागिता, अंत:क्षेत्रीय समन्वय, जनजातीय शिक्षा और आनन्ददायक शिक्षण आदि डी.पी.ई.पी. और ई.एफ.ए. के कार्यक्रमों के संगत कार्यक्रम हैं।

यूनिसेफ द्वारा बंद की गई वित्तीय सहायता को ध्यान में रखते हुए, प्रतिभागी राज्यों को यह सलाह दी गई है कि वे परियोजना प्रतिनिधियों को सीमित करें और इसे अपने शैक्षिक कार्यक्रमों के साथ मुख्यधारा में ही शमिल करने की योजना बनाएं। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.पी.ई.) के संदर्भ मे प्रचार-प्रसार की व्यापकता को ध्यान में रखते हुए ए.आई.ई.पी. की समीक्षा की गई। इस बात पर भी बल दिया गया कि ए.आई.ई.पी. को केन्द्र और राज्य सरकारों के शैक्षिक कार्यक्रमों के समान रूप से चालू रखने के उपाय करने हेतु सिफारिश की जाए। इस समीक्षा रिपोर्ट से परियोजना गतिविधियों को सकरात्मक प्रतिपुष्टि मिली। यह भी सिफारिश की गई कि कुछ चुने हुए जनजातीय। उत्तर-पूर्वी राज्यों/क्षेत्रों में चल रहे "प्राथमिक शिक्षा नवीकरण समर्थन कार्यक्रम" (सुपर) के अंतर्गत "संपूर्ण रूप से समुदाय अभिमुख कार्यवाहीं (सी.सी.ए) की दिशा में ए.आई.ई.पी. के अनुभवों का प्रयोग किया जाए।

बालिकाओं की शिक्षा

छ: सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम "महिला शिक्षा और सक्षमता की प्रविधियां" में 18 महिला तथा 15 पुरुष प्रतिभागियों ने भाग लिया। अन्य बातों के साथ-साथ प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयोग के लिए एक प्रशिक्षण मैन्युअल भी तैयार किया गया।

मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान में "ग्रामीण क्षेत्रों में महिला अध्यापिकाओं की भर्ती तथा तैनाती से संबंधित घटकों की पहचान" नामक अध्ययन पूरा कर लिया गया है।

छठे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के आंकड़ों का लिंगवार विश्लेषण किया गया और एक पर्चा तैयार किया गया। दिल्ली में बालिकाओं और महिलाओं की स्थिति पर तिन्नारी (दिल्ली राज्य के लिए तीसरी दुनियां की महिलाओं के अध्ययन के लिए केन्द्र) के सहयोग से एक रिपोर्ट तैयार की गई।

लिंगभेद और लैंगिक समानता के आधार पर एन.सी.ई.आर.टी. की उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन किया गया।

बालिकाओं की अर्ध-दशकीय समीक्षा पर सार्कदेशों की कार्यशाला के लिए "भारत में बालिकाओं की स्थिति" पर एक पत्र तैयार करके प्रस्तुत किया गया। सिडनी विश्वविद्यालय, आस्ट्रेलिया में तुलनात्मक शिक्षा पर हुई नौवीं विश्व कांग्रेस में पत्र प्रस्तुत किए गए। एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा और राजस्थान तथा अन्य कई संगठनों द्वारा आयोजित लैंगिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में संसाधन सहायता उपलब्ध करवाई गई।

विज्ञान और गणित शिक्षा

माध्यमिक स्तर पर सिद्धान्तों और प्रयोगशाला कार्य से संबद्ध विषयों पर संशोधित विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार किया गया। गणित में माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों के पाठ्यक्रम के प्रारूप की समीक्षा की गई। "न्यूनतम अधिगम स्तरों के पहचान और उच्च प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या मार्गदर्शिका के विकास" पर एक परियोजना कार्य प्रगति पर है। "गणित प्रयोगशाला के संदर्भ में गणित के वर्तमान पाठ्यक्रम में से उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों पर बहुत सी गतिविधियों की पहचान की गई। बहुत से चार्ट तीन फलकीय मॉडल और उदाहरणों सहित लगभग 100 कार्य पत्र तैयार किये। मिडल विद्यालय स्तर के कमजोर बच्चों के लिए अंकगणित विषय के अध्यायों के आधार पर निदानात्मक परीक्षण और उपचारात्मक सामग्री तैयार की गई। वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान में प्रयोगशाला कौशल पर सामग्री तैयार की गई। भौतिकी रसायन के औपचारिक स्तरीय अध्यायों में 30 प्रयोग विकसित किए गए और इनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए इनका परीक्षण किया गया। बोधात्मक विज्ञान के क्षेत्र में नवीनताओं के आधार पर भौतिकी की नई प्रायोगिक पाठ्यचर्या का डिजाइन तैयार किया गया और उसे विकसित किया गया जिसमें एक अनुदेशी दिशा, प्रयोगशाला पाठ्यक्रम कार्य के लिए आदर्श अभ्यास और भौतिकी में प्रायोगिक कार्य के मूल्यांकन के लिए एक नया ढांचा तैयार करना शामिल था। भौतिकी विषय में प्रोत्साहन कार्यक्रम के अंतर्गत वरिष्ठ माध्यमिक स्तर की कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए मॉडलों की रूपरेखा और अन्य कई सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक अध्ययन मार्गनिर्देश विकसित किए गए। कक्षा 11 के लिए रसायन विज्ञान की चुनौतीपूर्ण समस्याओं का कुछ मेधावी छात्रों पर परीक्षण किया गया और समस्याओं की कठिनाई के स्तर का मूल्यांकन किया गया। कक्षा 12 की चुनौतीपूर्ण समस्याएं भी विकसित की गई जिनका विद्यालयों में परीक्षण किया जाएगा। वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के लिए गणित में 100 से भी अधिक चुनौती भरी समस्याएं विकसित की गई। "पढ़े और सीखें" परियोजना के अंतर्गत 1996-97 के दौरान निम्नलिखित दो पुस्तकें निकाली गई :

1. प्राचीन भारतीय गणित की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक झलकियां
2. मध्यकालीन भारतीय गणित की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक झलकियां

इन पुस्तकों के सोलर एनर्जी (सौर ऊर्जा), 2. हमारा आकाश मैला क्यों ? 3. मरुस्थल जीवन एवं विज्ञान की पाण्डुलिपियां भी तैयार की गईं। "रसायन विज्ञान के कुछ रुचिकर अध्याय" परियोजना के अंतर्गत "भारी लौह प्रदूषण" का एक मॉडयूल विकसित किया गया और इसका प्रचार-प्रसार किया गया। 28 फरवरी 1997 को "राष्ट्रीय विज्ञान दिवस" के समारोह के अवसर पर विद्यालयों के बच्चों के लिए एक खुला सदन आयोजित किया गया। "नव-जैवकी के चमत्कार" और "प्राथमिक गणित पर वक्तव्य दिए गए।" 13 से 19 जनवरी 1997 तक उड़ीसा सरकार के सहयोग से भुवनेश्वर में बच्चों के लिए तेइसवीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का मुख्य विषय था, "विज्ञान और विकास के लिए सस्ती प्रौद्योगिकी।" इससे पूर्व 28 राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों और केन्द्रीय विद्यालय

संगठन के विद्यालयों में राज्यस्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। इन प्रदर्शनियों के आयोजन के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा 12.05 लाख का सहायता अनुदान उपलब्ध करवाया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. पिछले तीन वर्षो से "विद्यालयी शिक्षा के पर्यावरण अभिविन्यास" नामक परियोजना के अंतर्गत, शैक्षिक कार्यकताओं के बीच क्षमता बढ़ाने के एक भाग के रूप में, राज्यों के विद्यालय शिक्षा बोर्डो और गैर-सरकारी संगठनों की पाठ्यचर्या तैयार करने वाले शिक्षाकर्मियों के प्रशिक्षण के लिए कार्य करना, एन.सी.ई.आर.टी. का एक नियमित कार्य है। एन.सी.ई.आर.टी. तथा अन्य संस्थाओं को शामिल करने के लिए इसका दायरा बढ़ाया जा रहा है। एक ओर विद्यालय व्यवस्था, शैक्षिक नियोजकों, पाठ्यचर्या तैयार करने वालों और अध्यापक प्रशिक्षकों तथा दूसरी ओर विशेषज्ञता प्राप्त संस्थानों के बीच अधिकाधिक अनुक्रिया को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एन.सी.ई.आर.टी. के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) में पर्यावरण शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र (एन.आर.सी.ई.ई.) गठित किया गया। यह केन्द्र पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर पर्यावरण शिक्षा आंकड़ा बैंक भी विकसित कर रहा है।

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

सामाजिक विज्ञान की संपूर्ण स्थिति पर एक अध्ययन पूरा किया गया और इसकी रिपोर्ट के मसौदे को अंतिम रूप दिया गया। सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों तथा वाणिज्य की विषयवार स्थिति के अध्ययन के कार्य प्रगति पर हैं। नवोदय विद्यालयों की कक्षा 9 तथा 10 के सामाजिक विज्ञान विषयों को हिन्दी माध्यम से पढ़ाने की परिस्थितियों पर एक अध्ययन पूरा किया गया। "कक्षा 5 के अंत में अरूणाचल प्रदेश के छात्रों द्वारा हिन्दी में प्राप्त की गई भाषावैज्ञानिक क्षमताओं के मूल्यांकन" पर एक अध्ययन आरम्भ किया गया। अध्यापकों और छात्रों से प्राप्त पुनर्निवेशन और मूल्यांकन के आधार पर सामाजिक विज्ञान और भाषाओं की कुछ पुस्तकों में संशोधन किया गया। कला शिक्षा के क्षेत्र में संगीत (मिट्टी और मृतिका) मिट्टी के मॉडल बनाने के संबंध में अध्यापकों के लिए दो मोनोग्राफ तैयार किए गए। उपभोक्ता शिक्षा और मानव अधिकार शिक्षा पर अनुदेशी सामग्री तैयार की जा रही है। राष्ट्रीय अखंडता को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तकों के मुल्यांकन के कार्यक्रम में मानव अधिकारों के पहलू को शामिल किया गया है। मूल्य/नैतिक शिक्षा पर तैयार की गई नमूना सामग्री का मूल्यांकन किया जा रहा है। एन.सी.ई.आर.टी. की सामाजिक विज्ञान की चार पाठ्यपुस्तकों (इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिक शास्त्र प्रत्येक की एक-एक) के अनुभव सिद्ध मूल्यांकन (परीक्षण) ,आर.आई.ई. में संबद्ध चार प्रदर्शन विद्यालयों में किए गए और रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

उन्तीसवीं राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता 19 भाषाओं में आयोजित की गई। 28 पुस्तकों/पाण्डुलिपियों को पुरस्कार के लिए चुना गया। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जन्मशती समारोह के संदर्भ में भी माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। लंदन विश्वविद्यालय के शिक्षा संस्थान के बहु-सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र द्वारा प्रायोजित, चार राष्ट्रीय अध्ययन के एक भाग के रूप में "युवाओं में मानव अधिकारों की समझ" का एक अध्ययन आयोजित किया गया। इस अध्ययन के भारतीय भाग में पाठ्यचर्या और सामग्री की समीक्षा, और विद्यार्थियों में मानव अधिकारों के बोध पर अध्ययन शामिल था।

शैक्षिक मनोविज्ञान

इसमें 1. भारत में मार्गदर्शन अनुसंधान; 2. प्रतिष्ठा और विकास के निर्माण में परामर्शी; 3. परामर्शी प्रशिक्षण कार्यक्रम में चयन प्रक्रियाओं के निष्पादन की अनुमानित संभावनाएं और काम के समय कार्य निष्पत्ति; 4. भारत में शैक्षिक मनोविज्ञान के भारतीयकरण के अनुसंधानिक रुझान और सामाजिक मूल्यों के संबंध में किशोरों के विचार आदि पर अध्ययन कार्य प्रगति पर हैं। एन.सी.ई.आर.टी. की विज्ञान की माध्यमिक स्तर की पाठ्यपुस्तक के मूल्यांकन के लिए विश्लेषणात्मक योजना बनाई गई। "भारत में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा की शैक्षिक मनोविज्ञान की पाठ्यचर्या का समीक्षात्मक अध्ययन" नामक परियोजना के अंतर्गत वर्तमान पाठ्यक्रमों का विभिन्न पहलुओं से विषयगत विश्लेषण किया गया। श्री अरविन्द के दर्शनशाला चिंतन पर आधारित एक विद्यालय पर "स्कूलिंग इन मीरांबिका" नामक विषयगत अध्ययन पूर्ण

किया गया। राष्ट्रीय परीक्षण पुस्तकालय के लिए 2। भारतीय और विदेशी परीक्षण तैयार किए गए। भारतीय मानसिकता के मापन के लिए दो पुस्तिकाओं एक "व्यक्तित्व" पर और दूसरी "मूल्यों, व्यवहार और रुचि" को अंतिम रूप दिया गया।

"भारत में वृत्तिका विकास, परामर्शियों के लिए एक संसाधन पुस्तक" को तैयार करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। परामर्श प्रशिक्षार्थियों, परामर्श शिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और अध्यापकों के लिए "मार्गदर्शी सिद्धान्त और अनुप्रयोग" नामक संसाधन पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार कर ली गई है। "काउंसेलिंग केस मैनेजमेंट: ए प्रेक्टिल गाइड" नामक पुस्तक में शामिल करने के लिए मामलों की पहचान कर ली गई है। परामर्श और मार्गदर्शन का 35वां स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलनाया गया। शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. में वृत्तिका सूचना केन्द्र गठित किया गया है। जिसे डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों के साथ-साथ एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्य और अन्य संस्थाएं। संगठन भी प्रयुक्त कर रहे हैं। जैव-प्रौद्योगिकी और "कंप्यूटर में आजीविका पर दो मोनोग्राफ पूरे होने वाले हैं। डी.आई.ई.टी. कार्मिकों के अध्यापन—अधिगम के लिए मनोविज्ञान में एक सवृद्धि पाठ्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। प्रारंभिक शिक्षा के तीन क्षेत्रों—1. भारतीय परिदृश्य; 2. बच्चे को समझना; और 3. अध्यापक और अध्यापन प्रक्रिया, में 29 स्व-अधिगम मॉड्यूल विकसित किए गए जो सवृद्धि पाठ्यक्रम के अध्यापन अधिगम के आधार हैं।

परीक्षा सुधार

कक्षा 12 के छात्रों की जैविकी, भौतिकी और रसायन विज्ञान विषयों में "बोर्ड की परीक्षा में की गई भूलों" के गुणात्मक विश्लेषण की विषयवार रिपोर्ट तैयार की गई और इसे विद्यालय शिक्षा बोर्ड/माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को भिजवाया गया। विद्यालयों में निरंतर और विस्तृत मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की योजना का परीक्षण किया गया। सतत और विस्तृत मूल्यांकन योजना की पुस्तिका का प्रारूप तैयार किया गया। मेघालय और मध्यप्रदेश के प्रश्न-पत्र तैयार करने और मूल्यांकन करने वाले कार्मिकों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। "परीक्षा सुधार बुलेटिन" का पहला अंक निकाला गया और इसका प्रचार-प्रसार किया गया। इस बुलेटिन में अन्य बातों के साथ-साथ विकास कार्यों और परीक्षा सुधार पर भी प्रकाश डाला गया।

अध्यापक शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों के अधिकांश कार्यक्रम अध्यापकों के अभिविन्यास प्रशिक्षण से संबद्ध है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) अध्यापकों के लिए सेवा-पूर्व तथा सेवाकालीन, दोनों प्रकार के प्रशिक्षण चला रहे हैं। अध्यापकों की सेवा-पूर्व व्यावसायिक शिक्षा के अग्रणी संस्थान के रूप में आर.आई.ई., विज्ञान शिक्षा में चार-वर्षीय सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम तथा प्रारंभिक शिक्षा में विशेषज्ञता सहित एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम चला रहे हैं। अन्य सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम, जैसे चार-वर्षीय बी.ए.बी.एड. विज्ञान और वाणिज्य में एक वर्षीय बी.एड. तथा जीव विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान तथा गणित में एम.एस.सी. (शिक्षा) के पाठ्यक्रम में प्रवेश पर वर्ष 1996-97 के सत्र से रोक लगा दी गई है और ये पाठ्यक्रम समाप्त कर दिए गए हैं। सभी आर.आई.ई. अपने भौगोलिक क्षेत्राधिकार के अनुसार राज्यों और संघ-शासित प्रदेशों के विद्यालयी शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों के सभी पक्षों को शैक्षिक और संसाधन संबंधी सहायता उपलब्ध करवाते हैं। जहाँ तक अध्यापकों के सेवाकालीन शिक्षण का संबंध है, आर.आई.ई. सहित एन.सी.ई.आर.टी. के सभी संघटक सामान्यत: अध्यापकों के प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं की खोज से संबद्ध कार्यक्रमों, प्रशिक्षण पैकेजों के विकास और दूरस्थ साधनों के माध्यम से प्रशिक्षण के प्रसार के लिए राज्यों के मुख शीर्ष/संसाधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण आदि कार्यों को निष्पादित करते हैं। वर्ष 1996-97 के दौरान अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.) तथा आर.आई.ई. संस्थानों द्वारा सेवा कालीन अध्यापक शिक्षण कार्यक्रमों की शैक्षिक आगतों का सिंहावलोकन नीचे दिया गया है। इस अध्याय के एक अन्य अनुच्छेद में एन.सी.ई.आर.टी. के अन्य संघटकों द्वारा चलाए गए सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की आगतों को प्रतिबिंबित किया गया है। डी.आई.ई.टी. संकाय के लिए एक स्व: अनुदेशी पैकेज की समीक्षा की गई और इसे अंतिम रूप दिया गया। 11 राज्यों के डी.आई.ई.टी. प्राचार्यों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

और 12 राज्यों के डी.आई.ई.टी. संकाय सदस्यों के लिए प्रवेश स्तरीय सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। "एस.सी.ई.आर.टी. संस्थानों के सुदृढ़करण विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा में राज्य स्तरीय आर. एवं डी. केन्द्रों को सुदृढ़ करने के लिए संस्तुति की गई। एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं की पहचान के लिए की गई बहुत सी कार्यशालाओं के बाद प्रशिक्षण पैकेज सहित एक प्रशिक्षण डिजाइन तैयार किया गया और एक आठ-दिवसीय अभि-विन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

"विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवाचारों को प्रोत्साहन" कार्यक्रम के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। "विद्यालय शिक्षा में नवीन प्रयोग और अभ्यासों" के संदर्भ में, 1994-95 में हुए राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में चुने गए विद्यालयी अध्यापकों के नवाचारी पत्रों के मूल्यांकन के लिए मूल्यांकन-कर्ताओं की एक पैनल बैठक आयोजित की गई। विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक स्तर पर पुरस्कार प्रदान करने हेतु 47 लेखों की संस्तुति की गई और माध्यमिक स्तर पर पुरस्कार देने के लिए 14 पत्रों का चयन किया गया। वर्ष 1995-96 की प्रतियोगिता के लिए प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों से प्राप्त नवाचारी प्रविष्टियों के मूल्यांकन के लिए मूल्यांकनकर्ताओं की एक पैनल बैठक आयोजित की गई। वर्ष 1996-97 की प्रतियोगिताओं के लिए प्राथमिक विद्यालयों और माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए 220 नवाचारी प्रविष्टियां प्राप्त हुईं।

"अध्यापक शिक्षा में नव प्रयोगों और अभ्यासों के संदर्भ में 17 नवाचारी लेख पुरस्कार के लिए चुने गए। पुरस्कृत व्यक्तियों द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी में लेख प्रस्तुत किए गए और उन पर चर्चा की गई और इनमें सुधार के लिए सुझाव दिए गए। वर्ष 1996-97 में हुई प्रतियोगिता में अध्यापक शिक्षकों द्वारा दिए गए 63 नवाचारी लेखों में से प्रारंभिक अध्यापक शिक्षकों के 10 लेख और माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के 7 लेख चुने गए। इन सभी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में चर्चा की गई।

एन.सी.ई.आर.टी. और एन.सी.टी.ई. (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्) के संयुक्त प्रयासों से अखिल भारतीय अध्यापक शिक्षा सर्वेक्षण प्रारंभ किया गया। सर्वेक्षण की प्रश्नावली को एन.सी.टी.ई. से सलाह लेकर अंतिम रूप दिया जा रहा है।

अध्यापकों के लिए एक नीतिपरक वृत्तिक कोड को अंतिम रूप दिया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के लिए एम. एड., (प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम) हेतु पाठ्यचर्या के पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार किया गया। एक कार्य दल ने अध्यापकों की सेवा-शर्तों का आदर्श कोड विकसित किया। डी.आई.ई.टी. संस्थानों का एच.आर.टी. पर्यावरण के विशिष्ट संदर्भ में अध्ययन प्रगति पर है। राजस्थान के आठ प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के विषयी अध्ययन के आधार पर एक लेख "एम्पॉवरमैनट ऑफ प्राईमरी स्कूल टीचर्स : प्रोफाइल ऑफ सिलेक्टिड इन्नोवेटिव टीचर्स" तैयार किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने प्राथमिक स्तर पर निम्नलिखित प्रशिक्षण पैकेज तैयार किये : 1. प्राथमिक स्तर पर गैर-शैक्षिक क्षेत्रों सहित, हिन्दी, गणित और पर्यावरण अध्ययन में सतत विस्तृत मूल्यांकन (सी.सी.ई.) को चलाने के लिए नीतियां निर्धारित करना; 2. उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान शिक्षण; 3. उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण; और 4. उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण। पर्यावरण अध्ययन में कुछ चयनित एम.एल.एल. आधारित दक्षताओं के मूल्यांकन का साधन तैयार किया गया, उसका परीक्षण किया गया और अंतिम रूप दिया गया। माध्यमिक स्तर के लिए (1) सामाजिक विज्ञान के शिक्षण (हिमाचल प्रदेश हेतु); और (2) उर्दू शिक्षण (जम्मू-काश्मीर हेतु) प्रशिक्षण के पैकेज तैयार किए गए।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर हुए विकासात्मक कार्यक्रमों में 1. गणित (राजस्थान के लिए); 2. रसायन विज्ञान (राजस्थान के लिए); 3. भौतिकी (राजस्थान के लिए); और 4. जैविकी (हिमाचल प्रदेश के लिए) के कुछ चुने हुए अध्यायों पर विषय संवर्धन पैकेज तैयार करना शामिल है। राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के हाल ही में तैयार किए गए एकांउटेन्सी (व्यावसायिक) के लेखांकन के अभ्यासों के संपूर्ण पाठ्यक्रम का परीक्षण किया गया। +2 स्तर पर (हरियाणा के लिए) गणित और रसायन विज्ञान के विशिष्ट एककों का प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया गया और राज्य के शीर्ष व्यक्तियों का अभिविन्यास किया गया। हरियाणा राज्य के पाठ्यक्रम के अनुसार भौतिकी के विशिष्ट एककों पर भी प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया गया।

प्राथमिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के संदर्भ में राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, और जम्मू और काश्मीर राज्यों के डी.आई.ई.टी. संकाय के लिए अनुसंधान कार्यों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. राजस्थान, उदयपुर के सहयोग से राजस्थान के लिए प्राथमिक अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या में संशोधन किया गया और उसे पूर्ण किया गया। प्रशिक्षण पैकेज तैयार करने और उसका परीक्षण करने के लिए प्राथमिक अध्यापकों की पर्यावरण अध्ययन (1 और 2), हिन्दी (मातृभाषा) और गणित विषयों में प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान करने के उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित किए गए।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल निम्नलिखित अनुसंधान अध्ययन चला रहा है: 1. गुजरात और मध्यप्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में श्रेणीबहुल शिक्षण का अनुप्रयोग और परीक्षण; 2. गुजरात के डी.आई.ई.टी. संस्थानों का विषयी अध्ययन—ढांचागत और कार्यात्मक विश्लेषण तथा मूल्यांकन; 3. मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड की विज्ञान में माध्यमिक स्तर पर सामान्य गलतियों की पहचान के लिए उत्तर आलेखों का विश्लेषण; और 4. मध्य प्रदेश बोर्ड की सामाजिक अध्ययन में माध्यमिक स्तर की सामान्य गलतियों की पहचान के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण। माध्यमिक स्तर पर विज्ञान और गणित में शिक्षण की खामियों को जानने के लिए निंदानात्मक परीक्षण सामग्री विकसित की गई।

वर्ष 1996-97 के दौरान चलाए गए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निम्नलिखित शामिल हैं: 1. प्रश्न पत्र तैयार करने और उनका मूल्यांकन करने की तकनीक पर डी.आई.ई.टी. संकाय का प्रशिक्षण; 2. अनौपचारिक शिक्षा में डी.आई.ई.टी. के संकाय का प्रशिक्षण; 3. डी.पी.ई.पी. और एम.एल.एल. पर आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए जिला और ब्लॉक स्तर के पर्यवेक्षक कार्मिकों का प्रशिक्षण; 4. गुजरात में सी.एम.डी.ई. में डी.आई.ई.टी. कार्मिकों का प्रशिक्षण; 5. महाराष्ट्र गुजरात और गोवा में कार्यवाही अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करने के लिए डी.आई.ई.टी. के स्टॉफ का अभिविन्यास; 6. सी.टी.ई./आई.ए.एस.ई. में मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला के प्रचालन के लिए शीर्ष संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास; 7. महाराष्ट्र और गोवा में सी.एम.डी.ई. में डी.आई.ई.टी. कार्मिकों का प्रवेश प्रशिक्षण; 8. अनौपचारिक शिक्षा और शैक्षिक प्रौद्योगिकी सहित वैकल्पिक शिक्षण में डी.आई.ई.टी. के डी.आर.यू. संकाय का प्रशिक्षण; 9. विज्ञान में बी.एड. महाविद्यालय स्तर पर विषय/प्रविधि में शीर्ष संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) का अभिविन्यास; 10. प्रारंभिक शिक्षा में डी.आई.ई.टी. के संकाय का अभिविन्यास।

डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत किए गए अन्य सहचरी कार्यकलापों में शामिल हैं: 1. किए गए अनुसंधानों और श्रेणीबहुल अध्यापन के क्षेत्र में तैयार की गई सामग्री का प्रलेखन; 2. प्रारंभिक श्रेणियों में पठन और गणित शिक्षण के क्षेत्रों में अनुसंधानों और सुव्यावहारिक कार्यों का प्रलेखन; 3. कक्षा 1 में प्रविष्ट हुए बच्चों की पठन तैयारी के स्तर और अंकज्ञान स्तर की पहचान करना; 4. कक्षा 1 तथा 2 के लिए भाषा और गणित में आदर्श सामग्री (पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएँ और अध्यापक पुस्तिकाएँ) को विकसित करना; 5. कक्षा 1 तथा 2 के लिए गणित में अनुपूरक शिक्षण सामग्री तैयार करना; 6. विभिन्न राज्यों द्वारा तैयार की गई अनुदेशी सामग्री का मूल्यांकनपरक अध्ययन; और 7. रेस पैकेज का क्षेत्रीय परीक्षण के लिए विकास करना।

अध्यापक प्रशिक्षण तत्वों के अंतर्गत आने वाली डी.पी.ई.पी. गतिविधियों में शामिल हैं: 1. सेवाकालीन प्रशिक्षण विधियों का प्रलेखन; 2. प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों और अन्य कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रशिक्षण नमूने का विकास (एन.सी.ई.आर.टी. के स्तर पर); 3. विभिन्न राज्यों में उपलब्ध प्रशिक्षण सामग्री एकत्र करना और उसका मूल्यांकन करना; 4. आदर्श सामग्री का विकास; 5. क्षेत्रीय स्टाफ के लिए प्रशिक्षण सामग्री को अंतिम रूप देना; 6. पहचानी गई नवाचारी सेवाकालीन प्रशिक्षण पद्धतियों का क्षेत्रीय परीक्षण आदि। वर्ष 1996-97 के दौरान पूर्ण किए गए डी.पी.ई.पी. अनुसंधान अध्ययनों में निम्नलिखित शामिल हैं : 1. डी.पी.ई.पी. जिलों में प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान के लिए आवश्यकता निर्धारण सर्वेक्षण तकनीक की वैद्यता और विकास; 2. द्वि-अध्यापकीय प्राथमिक विद्यालयों के लिए उपयोग सामग्री और सक्षमता आधारित शिक्षण अधिगम कार्यनितियों का विकास और क्षेत्रीय परीक्षण; 3. कक्षा 2 के अंत में अधिगम अक्षमताओं के प्रकार और कारणों का अध्ययन जिसमें उपचारात्मक कार्यनीतियां भी शामिल हैं; 4. कक्षा 1 के छात्रों के लिए

पठन तैयारी कार्यक्रम का विकास और क्षेत्रीय परीक्षण जिसमें आधारभूत संज्ञानात्मक योग्यता शामिल हैं; 5. बोधात्मक योग्यता के प्रोत्साहन के लिए भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन में श्रेणी 1, 2 और 3 के लिए विशिष्ट स्थानीय शिक्षण अधिगम सामग्री की पहचान करना; 6. 6-14 वर्ष आयु वर्ग के विद्यालयों से बाहर कार्यरत बच्चों के नामांकन को बढ़ाने के लिए उत्साहवर्धक कार्यनीतियों का विकास; 7. मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के डी.पी.ई.पी. अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अध्ययन; 8. विभिन्न गणितीय कौशलों का प्रयोग करते समय विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली गलतियों का अध्ययन और गणित शिक्षण में गुणात्मक सुधार के लिए बोधात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए नियंत्रणात्मक और उपचारात्मक शिक्षण कार्यनीतियों का विकास करना। प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशिष्ट अभिविन्यास कार्यक्रम (सॉप्ट) के अंतर्गत एक टेलि-कांफ्रेंसिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें एन.सी.ई.आर.टी., आर.आई.ई. और प्रदर्शन विद्यालय से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डी.आई.ई.टी. संस्थानों सहित 56 प्रतिभागियों ने सॉप्ट कार्यक्रमों के तीसरे चरण में भाग लिया।

माध्यमिक विद्यालयों के बच्चों के लिए कैशोर्य शिक्षा पर अधिगम सामग्री तैयार करने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई। महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात के डी.आई.ई.टी. के डी.आर.यू. संकाय के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए। यह संस्थान ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों के अनुरूप वैकल्पिक शिक्षण प्रणाली के विकास पर कार्य कर रहा है। राजीव गांधी प्राइमरी शिक्षा मिशन के आग्रह पर मध्य प्रदेश के छह जिलों में वैकल्पिक शिक्षण परियोजना का ढांचागत मूल्यांकन किया गया। एम.एल.एल. के परीक्षण के लिए एक अध्ययन भी किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूर ने प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रशिक्षण सामग्री तैयार की, इसका परीक्षण किया और उसे अंतिम रूप दिया गया। जनसंख्या शिक्षा, कार्यानुभव, शैक्षिक अनुसंधान प्रविधि, सतत और विस्तृत मूल्यांकन (सी.सी.ई.) में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। यू.ई.ई. के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षा में अनुसंधान कार्यवाही परियोजना आरंभ की गई। प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के अंतर्क्रियात्मक साधन के रूप "वन-वे वीडियो और टू-वे वीडियो" को शैक्षिक सहायता व समर्थन प्रदान किया गया। टेलि-मैथॅस कार्यक्रम के माध्यम से कर्नाटक के प्राथमिक विद्यालयों के गणित के अध्यापकों के लिए बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश में "कक्षा व्यवहार पर सॉप्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रभाव" का कार्य प्रगति पर है।

कक्षा 1 में प्रविष्ट हुए बच्चों के अंकज्ञान और पठन की तैयारी का डी.पी.ई.पी. के संदर्भ में मूल्यांकन किया गया। राज्यों द्वारा तैयार की गई प्रशिक्षण सामग्री और पाठ्य सामग्री का मूल्यांकन किया गया और राज्यों को आवश्यक प्रतिपुष्टि प्रदान की गई। कक्षा 1 और 2 के लिए गणित और कन्नड़ में आदर्श पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएं और अध्यापक पुस्तिकाएं तैयार की गईं। कर्नाटक के डी.पी.ई.पी. जिलों में अनुदेशी सामग्री के परीक्षण का कार्य प्रगति पर है।

संस्थान द्वारा तैयार किए गए प्रशिक्षण पैकेज की सहायता से क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने डी.आई.ई.टी. संकाय सदस्यों को भाषा और गणित शिक्षण, विशेष शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा; श्रेणीबहुल शिक्षण, मूल्यांकन, अनुसंधान कार्यवाही और शैक्षिक प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया। गणित में कमजोर बच्चों के लिए उपचारात्मक अनुदेश, नमूना सर्वेक्षण विधियां, पर्यावरण अध्ययन में सक्षमता पर आधारित शिक्षण, और सतत तथा विस्तृत मूल्यांकन के प्रशिक्षण पैकेज तैयार किए गए। अधिगम में विशिष्ट प्रकार की खामियों वाले बच्चों की पहचान करने और उनके साथ कक्षा में प्रयोग की जाने वाली कार्यनीतियों में अध्यापकों की सहायता करने के लिए प्रशिक्षण सामग्री तैयार की गई। उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित में कमजोर बच्चों के लिए उपचारात्मक अनुदेशों का प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया गया। गणित, भौतिकी, रसायन विभाग और जैविकी के +2 स्तर के अध्यापकों के लिए पुनचर्या पाठ्यक्रम चलाया गया। कर्नाटक की कक्षा 10 की गणित की पाठ्यपुस्तक के शिक्षण के कठिन बिन्दुओं की पहचान करने के पश्चात एकं अध्यापक प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया गया। केरल राज्य की कक्षा 10 के लिए गणित की संशोधित पाठ्यचर्या के आधार पर प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया गया। कर्नाटक के विश्वविद्यालय पूर्व छात्रों की गणित, रसायन विज्ञान और भौतिकी और जैविकी में होने वाली सामान्य गलतियों की पहचान के लिए अनुसंधान अध्ययन चलाए गए और इन

अध्ययनों की रिपोर्ट तैयार की गई। मैसूर शहर के अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित कर इसका परीक्षण किया गया।

सेवा-पूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों के एक भाग के रूप में निम्नलिखित क्षेत्रों में अनुसंधान किए गए जैसे: 1. एम.एल.एल. की उपलब्धियां; 2. सक्षमता आधारित शिक्षण; 3. अध्यापकों का सेवाकालीन शिक्षण; 4. पाठ्यचर्या और कक्षा व्यवहार; और 5. बच्चों की अधिगम संबंधी कठिनाइयां/कमियां। आई.ए.सी.ई., सी.टी.ई. और डी.आई.ई.टी. संकाय के लिए क्षमता संवर्धन हेतु सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। आर.आई.ई. मैसूर का शैक्षिक प्रौद्यागिकी प्रकोष्ठ कन्नड़ और तमिल में ऑडियो कार्यक्रम तैयार कर रहा है जिसमें इस प्रकार के विषय शामिल हैं जैसे: 1. पर्यावरण की रक्षा; 2. सामाजिक बंधनों को हटाना; तथा 3. भारतीय सांस्कृतिक धरोहर/तमिलनाडु/पांडिचेरी के अनुरोध पर तमिल में 50 ऑडियो कार्यक्रम और 17 कविताएं रिकार्ड की गईं।

आर.आई.ई. "यूटिलाइजेशन ऑफ रेडियो कम-कैसेट प्लेयर इन प्राइमरी स्कूल इन कर्नाटका" के मूल्यांकन अध्ययन में कर्नाटक सरकार को सहायता प्रदान की। जनसंख्या शिक्षा से संबंधित गतिविधियों के आयोजन में राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों द्वारा प्रयोग की जाने वाली सामग्री विकसित की गई। माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए जनसंख्या शिक्षा में अभिविन्यास किया गया। "एनवायरमेंटल ओरिएन्टेशन टू स्कूल एजूकेशन" नामक स्रोत पुस्तक तैयार और विकसित की गई प्रशिक्षण सामग्री के माध्यम से पर्यावरण अध्ययन में प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के संप्राप्ति स्तर को बढ़ाने की दृष्टि से कक्षा 3 में कठिन विन्दुओं की पहचान की गई।

मालदीव के मुख्य अध्यापकों के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया 15 माह का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आर.आई.ई., मैसूर में आयोजित किया जा रहा है। अंग्रेजी में एक सेतु पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया जिसके अंतर्गत स्वनिम, मौलिक भाषाविज्ञान, व्याकरण और पठन के विकास और लेखन कौशलों पर विशेष प्रशिक्षण दिया गया। अध्यापकों को विभिन्न शिक्षा शास्त्रीय क्षेत्रों में पाठ्यक्रम पढ़ाए जा रहे हैं जिनमें शैक्षिक नियोजन तथा प्रबंधन सम्मिलित है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने पर्यावरण अध्ययन (1 तथा 2) में कक्षा 3 तथा 4 के लिए एम.एल.एल. क्षमता आधारित परीक्षण मद पूल (टी.आई.पी.) विकसित किया। कक्षा 1 तथा 2 में एम.एल.एल. को प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रथम भाषा (उड़िया) के लिए शिशु केन्द्रित कार्यकलाप, कार्यान्वयन और चलने योग्य रूप से, तैयार किए गए। शरीरिक शिक्षा के महत्व और नियोजन, प्राथमिक स्तर पर शारीरिक शिक्षा की गतिविधियों की पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करने के उद्देश्य से अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के एक संयुक्त समूह का अभिविन्यास किया गया।

डी.पी.ई.पी. के तत्वाधान के अंतर्गत, आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने अध्यापन को लक्ष्य मान कर बहुआयामी अनुसंधान अध्ययन का कार्य किया जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं: 1. अध्यापक प्रभावशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए उत्साहवर्धक पैकेज तैयार करना; 2. पर्यावरण अध्ययन पर एम.एल.एल. आधारित शिशु-केन्द्रित शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए विशिष्ट स्थानीय क्रियाकलाप आधारित संसाधन सामग्री विकसित करना; 3. क्षमता आधारित एम.एल.एल. पद्धति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए न्यूनतम सहायक सुविधाओं की पहचान करना; 4. श्रेणीबहुल और बड़े आकार की कक्षा की स्थितियों के प्रबंध के लिए मध्यस्थता कार्यनीतियों को लागू करना; 5. पर्यावरण अध्ययन (2) में शिक्षण दक्षता को बढ़ावा देने के लिए मध्यस्थता क्षेत्रों की पहचान हेतु निदानात्मक माध्यमों साधनों की तैयारी और प्रशासन करना। इनके अतिरिक्त छात्र को लक्ष्य मानकर, कक्षा 1 तथा 2 के विद्यार्थियों की गणितीय भाषागत आवश्यकताओं की पहचान की गई और समस्याओं का हल करने की प्रक्रियाओं में सहायता प्रदान करने के लिए नवीन अनुदेशी कार्यनीतियों का क्षेत्रीय परीक्षण किया गया। डी.पी.ई.पी. पाठ्यचर्या और प्रशिक्षण तत्व के अंतर्गत चलाए गए अध्ययनों में शामिल हैं: 1. भाषा और गणित में अभ्यास पुस्तिका और अध्यापक पुस्तिका का विकास जिनमें पाठ्यपुस्तक संदर्भ के रूप में प्रयुक्त की जाएगी; 2. गणित में अनुपूरक पठन सामग्री का विकास और परीक्षण; 3. पठन कौशलों और विस्तारण व्यापकता (रेस) पैकेज का विकास और परीक्षण; और 4. क्षेत्रीय स्टॉफ के लिए आदर्श प्रशिक्षण सामग्री का विकास करना और उसे अंतिम रूप देना। पूर्वी क्षेत्र के विभिन्न डी.पी.ई.पी. राज्यों द्वारा विकसित विभिन्न अनुदेशी

सामग्रियों के मूल्यांकन के लिए कदम उठाए गए और विभिन्न राज्य शिक्षा संस्थानों और संगठनों द्वारा अपनाई गई विभिन्न नवीन सेवाकालीन प्रशिक्षण विधियों की जांच की गई तथा उनका विश्लेषण व क्षेत्रीय परीक्षण किया गया। संप्रेषणात्मक पद्धति को अपनाते हुए अंग्रेजी शिक्षण पर एक अध्ययन पूरा किया गया। गणित शिक्षण के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया गया और उसका परीक्षण किया गया। अर्थशास्त्र में एक संसाधन पुस्तक तैयार की गई। रुचिकर और ज्ञानवर्धन प्रयोगों के माध्यम से विज्ञान शिक्षण पर एक पैकेज विकसित किया गया। कक्षा 10 की बोर्ड की परीक्षा में गणित में विद्यार्थियों द्वारा की गई सामान्य गलतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण पूर्ण किया गया। सी. एच.एस.ई. उड़ीसा द्वारा प्रायोजित वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा भौतिकी, रसायन, जैविकी और गणित में की गई सामान्य गलतियों की पहचान की गई और उन्हें सूचीबद्ध कर वर्गीकृत किया गया। इसके परिणामों के आधार पर उपचारात्मक सामग्री के प्रारूप की योजना बनाई गई। अध्यापकों के विषयों और प्रविधियों के आधार को बढ़ाने के लिए एक तीन सप्ताह का प्रशिक्षण पैकेज पाठ्यक्रम तैयार किया गया और उसका परीक्षण किया गया। असम, बिहार और उड़ीसा के डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए पांच क्षमता निर्माण कार्यक्रम चलाए गए। शिक्षा के व्यावसायीकरण के विषयों, रूझानों और क्रियान्वयन की कार्यनीतियों पर इन राज्यों के मुख्य कार्यकर्ताओं के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उड़ीसा के प्रश्न पत्र तैयार करने वालों के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर. आई.ई.) की स्थापना 27 दिसम्बर 1995 को शिलाँग में हुई। इसका उद्देश्य अरूणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैण्ड, त्रिपुरा और सिक्किम की राज्य सरकारों को विद्यालयी शिक्षा की नीतियों और कार्यक्रमों के समस्त पहलुओं पर सहायता और परामर्श देना है इस संस्थान का सबसे पहला लक्ष्य उस क्षेत्र में राज्य और जिला स्तर के संस्थानों में अध्यापक शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उनमें क्षमता निर्माण करना है इस क्षेत्र में मानव संसाधन विकास के लिए सुविधाएं प्रदान करना एन.ई.आर.आई.ई. की दूरगामी भूमिका होगी ताकि इन राज्यों को विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता प्रदान की जाए। यह संस्थान इस क्षेत्र के जनसंख्यात्मक सामाजिक-शैक्षिक और सांस्कृतिक उतार-चढ़ावों को ध्यान में रखकर स्थापित किया गया। इससे इस क्षेत्र की विशेष समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट होगा जिनमें अयोग्य और अप्रशिक्षित अध्यापक, विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों की अधिक संख्या और बच्चों में संप्राप्ति क्षमता का निम्न स्तर, सम्मिलित हैं। अन्य बातों में, यह शैक्षिक प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करने में समुचित सहायता प्रदान करेगा और विद्यालयी शिक्षा में सुधार के लिए अनुसंधान पर आधारित मध्यस्थता का कार्य करेगा।

एन.ई.आर.आई.ई. शिलाँग द्वारा इन राज्यों, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और एन.सी.ई.आर.टी. के अन्य ज्वलंत विषय और विचार शीर्षक से एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। इस संगोष्ठी में "मूल्य शिक्षा" "गणित शिक्षा" "पर्यावरण शिक्षा" "मार्गदर्शन और परामर्श शिक्षा का सार्वजनीकरण" और "उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लिए एन.ई.आर. आई.ई. की अपेक्षा" जैसे विषयों पर सूचनाओं और विचारों का आदान-प्रदान किया गया। विद्यालयी शिक्षा के विविध आयामों को शामिल कर, उत्तर पूर्वी राज्यों में, विशेषकर मेघालय के संदर्भ में विद्यालयी शिक्षा का भविष्य नामक शीर्षक से एक विवरणिका निकाली गई। मेघालय के शीर्ष व्यक्तियों के लिए गणित में कार्यशाला-सह-प्रशिक्षण आयोजित किया गया। एन.ई.आर.आई.ई. ने राज्यों को शैक्षिक सहायता और सलाह प्रदान की। इसने केन्द्र द्वारा प्रायोजित विभिन्न योजनाओं के लिए योजना प्रस्ताव तैयार करने हेतु कार्य बल समितियां गठित कीं और उनका नेतृत्व किया। एन.सी.ई. आर.टी. के संघटकों से सहायता की अपेक्षा रखने वाले राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान के संदर्भ में अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, त्रिपुरा और सिक्किम में राज्य समन्वय समितियां (एस.सी.सी.) गठित की गईं।

प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (सॉप्ट)

एन.सी.ई.आर.टी. को केन्द्र द्वारा प्रायोजित सॉप्ट परियोजना के नियोजन, प्रोग्रामिंग, आयोजन तथा मानिटरिंग का कार्य सौंपा गया। वर्ष 1993-94 में व्यापक स्तर पर चलाई गई इस योजना के अंतर्गत देशभर के 18 लाख अध्यापकों को

शामिल किया गया। विभिन्न स्तरों के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण उपलब्ध करवाने के लिए प्रशिक्षण के प्रपाती साधनों को अपनाया गया। राज्यों की नोडल एजेंसियों ने प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए। हिन्दी और अंग्रेजी में एक विशिष्ट "स्व-अनुदेशी पैकेज" तैयार किया गया जिसमें प्राथमिक शिक्षा से संबद्ध विभिन्न संदर्भगत विषय और शिक्षण क्षेत्रों के 16 माड्यूल शामिल थे जिससे प्रदर्शनात्मक कार्य के उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकें और कौशल अभिमुख अध्यापन अधिगम स्थिति तैयार की जा सके। मुद्रित सामग्री की आपूर्ति ई.टी.वी. पैकेज द्वारा की गई जिसमें 47 वीडियो कार्यक्रम और मुद्रित सामग्री को समझने के लिए ई.टी.वी. के प्रभावशाली प्रयोग हेतु प्रयोक्ता गाइड शामिल थी। इस प्रशिक्षण पैकेज का राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं में रूपान्तरण किया गया। "सॉप्ट प्रशिक्षण का प्रभाव" नामक अध्ययन प्रगति पर है।

अध्यापकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण देने के लिए अंतर्क्रिया संचार प्रौद्योगिकी के प्रयोग को सॉप्ट के अंतर्गत ही प्रदर्शित किया गया। इस टेलि-कान्फ्रेंसिंग कार्यक्रम में टू-वे आडियो और वन-वे आडियो अंर्तक्रियाओं की प्रशिक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया। अंर्तक्रियात्मक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम का डिजाइन सॉप्ट के स्व-अनुदेशी पैकेज के आधार पर तैयार किया गया था। सॉप्ट के अंतर्गत, मध्य प्रदेश में अगस्त 1996 में एक अंर्तक्रियात्मक प्रशिक्षण प्रयोग आयोजित किया गया जिसमें 45 प्रशिक्षण केन्द्रों में 1336 प्राथमिक अध्यापकों को सम्मिलित किया गया। एक अन्य अंर्तक्रियात्मक "टेलि-मैथ्स" कार्यक्रम फरवरी 1997 में कर्नाटक में आयोजित किया गया जिसमें 20 डी.आई.ई.टी. के 700 प्रतिभागी शामिल थे। इन अंर्तक्रियात्मक सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रयोगों का क्रियान्वयन इसरो, आई.जी.एन.ओ.यू., एस.सी.ई.आर.टी. और एन.सी.ई.आर.टी. के संबद्ध संघटकों के सहयोग से किया गया।

व्यावसायिक शिक्षा

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान, मार्केटिंग और सेल्समैन शिप, पौध संरक्षण, परिवार के लिए कपड़े सिलना, रेशम उत्पादन, यात्रा और पर्यटन तकनीकें, प्लास्टिक प्रौद्योगिकी आदि की पाठ्यचर्या को संशोधित किया गया। व्यावसायिक मार्गदशन और परामर्श, कृषि-जंगली उत्पादों का प्रक्रियन और जल विभाजन प्रबंधन के नए पाठ्यक्रम तैयार किए गए। नव-साक्षरों और व्यस्कों के लिए, उद्यमिता विकास, फसल उत्पादन, बेकरी और खानपान, खाद्य संरक्षण, मैकेनिकल इंजीरियरिंग प्रौद्योगिकी, मछली पालन, रेशम उत्पादन और व्यावसायिक मार्गदर्शन तथा परामर्श के क्षेत्रों में व्यावसायिक और पूर्व-व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए अनुदेशी सामग्री तैयार की गई। नर्सरी बढ़ाने, कृषि, वीड प्रौद्योगिकी, बायोउर्वरक, हथकरघा, बच्चों के वस्त्रों के डिजाइन और सिलाई, फुटकर व्यापार और आशुलिपि में भी पूर्ण-व्यावसायिक अनुदेशी सामग्री तैयार की गई। वर्ष 1996-97 के दौरान विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में 31 पाण्डुलिपियां तैयार की गई हैं जिन्हें अनुवर्ती कार्रवाई के लिए राज्यों को भिजवाया जा रहा है।

कृषि (बागवानी), गृह विज्ञान और सामान्य आधारभूत पाठ्यक्रमों के क्षेत्र में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के व्यापक प्रचार के लिए चार वीडियो फिल्में बनाई गईं।

इनमें से कुछ फिल्में दूरदर्शन नेटवर्क पर प्रदर्शित की गईं। उद्यम विकास, भवन अनुरक्षण, घरेलू मछली पालन, बेकरी और खान-पान, कंप्यूटर विज्ञान, कार्यालय प्रबंधन, मार्गदर्शन और परामर्श तथा एकाउन्टेन्सी के क्षेत्रों में नौ अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कृषि उत्पादन खाद्य प्रक्रियन और उद्योग तथा सूचना प्रौद्योगिकी में कार्यरत कर्मचारियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा की तीन राष्ट्रीय बैठकें आयोजित की गईं। स्वरोजगार, समर्थन और रोजगार जुटाने के लिए (प्लेसमेंट) के लिए प्रशिक्षु प्रशिक्षण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया और प्रशिक्षुता प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए मार्गदर्शन मसौदा उपलब्ध करवाया गया। आठ राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों के 372 शीर्ष कार्यकर्ताओं के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर आठ अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। उत्तर-पूर्वी राज्यों की पूर्व व्यावसायिक शिक्षा पर भी अभिविन्यास कार्यक्रम चलाए गए। छमाही पत्रिका "इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजूकेशन" का पहला अंक निकाला गया। त्रैमासिक बुलेटिन "वोकेशनल एजूकेशन" के तीन अंक प्रकाशित हुए।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा, स्वयं सेवी संगठनों के कार्यों के मूल्यांकन के लिए गठित "संयुक्त मूल्यांकन दल (जेट) ने 12 राज्यों के स्वयं सेवी संगठनों का दौरा

किया। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. भारत में यूनिवोक के केन्द्र के रूप में, व्यवस्था विकास, ढांचागत विकास और सूचना संचार नेटवर्क के क्षेत्रों में सूचनाओं के आदान-प्रदान और द्विपक्षीय सहयोग कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रीय संस्थानों और केन्द्रों के नेटवर्क में सक्रीय रूप से भाग ले रहा है। वर्ष 1996-97 के दौरान पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. ने छह सामान्य प्रकाशन निकाले, 12 व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यचर्या को विकसित/संशोधित किया, 5 राष्ट्रीय बैठकों/संगोष्ठियों की रिपोर्ट तैयार कीं और 46 पाठ्यपुस्तकें/प्रायोगिक मैन्युअल विकसित किए तथा पांच पूर्व-व्यावसायिक आदर्श सामग्रियां तैयार की गईं।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

एन.सी.ई.आर.टी. का एक प्रमुख कार्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी विशेष रूप से देश में शिक्षा में सुधार और प्रसार के लिए जनसंचार माध्यमों और शिक्षा की वैकल्पिक प्रणालियों के विकास को प्रोत्साहित करना है। शैक्षिक प्रौद्योगिकी में एक शीर्ष संस्था के रूप में एन.सी.ई.आर.टी. का केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) वीडियो और आडियो कार्यक्रमों के विकास, 16 एम.एम. फिल्मों और अन्य अधिगम सामग्री के विकास और शैक्षिक प्रौद्योगिकी, मीडिया नियोजन, आलेख लेखन, कार्यक्रम निर्माण और तकनीकी प्रचालन के क्षेत्र में कार्मिकों के प्रशिक्षण से संबद्ध रहा है। सी.आई.ई.टी. हिन्दी में प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए प्रतिदिन "तरंग" नामक शैक्षिक दूरदर्शन सेवा उपग्रह के माध्यम से उपलब्ध करवा रहा है। आकाशवाणी के साथ हुए समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) के अंतर्गत यह संस्थान आकाशवाणी के 10 केन्द्रों से "उमंग" नामक आडियो कार्यक्रम (सप्ताह में एक बार) प्रसारण हेतु उपलब्ध करवा रहा है।

वर्ष 1996-97 के दौरान, प्राथमिक स्तर के अध्यापकों और विद्यार्थियों को लक्ष्य बनाकर 83 ई.टी.वी. कार्यक्रम तैयार किए गए। पाठ्यचर्या के वहुत से क्षेत्रों में बाहरी लेखकों के आलेख भी प्राप्त किए गए। ई.टी.वी. कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य, बच्चों द्वारा न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.) प्राप्त करने को केन्द्र ध्यान में रखकर, प्राथमिक विद्यालय पाठ्यचर्या को संपुष्टि प्रदान करना है। सेवा-पूर्व प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रयोग के लिए कार्यक्रमों की एक शृंखला तैयार की जा रही है। वर्ष 1996-97 के दौरान लगभग 110 ऑडियो कार्यक्रम तैयार किए गए जिनमें अन्य बातों के साथ-साथ शिक्षा योग्य मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए एक शृंखला, प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास पर कार्यक्रम, प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों के लिए संस्कृत शिक्षण और ज्ञान विज्ञान को बढ़ावा देने वाले 24 कार्यक्रमों की शृंखला सम्मिलित है।

"कोरेनेशन आफ द सन" और इसका हिन्दी रूपान्तर "सूरज की ताजपोशी" (सूर्य ग्रहण) "वाइब्रेन्ट रेंजिज" और इसका हिन्दी रूपान्तर "संवेदनशील पर्वतमाला" अरावली पर्वत शृंखला पर, "ट्राइब्स ऑफ गढ़वाल" और इसका हिन्दी रूपान्तर "गढ़वाल की जनजातियां" "लेटन्स-ड्रीम-मुगल गार्डन्स" और "टेकनीक्स ऑफ फोटोग्राफी" आदि फिल्में पूर्ण की गई। "बीर भूमि", "देव भूमि", "कोयम्बटूर प्लेन्स", तथा "प्रिन्सेस एण्ड द मून" समापन के विभिन्न चरणों में है।

चिल्ड्रन्स वीडियो फेस्टिवल

वर्ष 1996-97 कै दौरान सी.आई.ई.टी. ने अहमदाबाद में "चिल्ड्रन्स वीडियो फेस्टिवल" का आठवीं बार आयोजन किया जिसमें अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए आडियो और वीडियो कार्यक्रम शामिल किए गए "एक जतन और" शीर्षक से शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम को एन.एच. के द्वारा चलाए गए 23वें जापान पुरस्कार में नामित किया गया और उसे विशेष प्रशस्ति पुरस्कार प्रदान किया गया। अक्तूबर 1996 में अहमदाबाद में हुए आठवें बाल वीडियो समारोह में "घर" और केंचुआ" कार्यक्रमों को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। प्राथमिक स्तर के लिए एम.एल.एल. पर आधारित गणित, भाषा, पर्यावरण अध्ययन, कला शिक्षा और कार्यानुभव के संक्षेपी कार्यक्रम तैयार किए गए। विशेष शिक्षा (शिक्षा योग्य मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए) अध्यापक शिक्षा (श्रेणीबहुल शिक्षण और महिलाओं संबंधी मुद्दों का एकीकरण) तथा पर्यावरण अध्ययन आदि क्षेत्रों में भी संक्षेपी कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम "सॉप्ट" के अंतर्गत उपग्रह के माध्यम से प्रशिक्षण केन्द्रों की

वन-वे वीडियो और टू-वे आडियो को शामिल कर नेटवर्किंग की गई जिसमें प्रशिक्षण का टेलिकान्फ्रेंसिंग साधन शामिल था। 13 छोटे-छोटे वीडियो कार्यक्रमों की शृंखला तैयार की गई। मध्य प्रदेश में डी.आई.ई.टी. के ई.टी. संकाय के लिए "कंप्यूटर के प्रयोग" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई. और डी.आई.ई.टी. के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम "कॉन्सेप्ट्स एण्ड एप्लीकेशन्स ऑफ एजूकेशनल टेक्नॉलोजी" आयोजित किया गया।

कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता

द्रव्य को अलग-अलग करने पर एक काल (सी.ए.एल.) पैकेज विकसित किया गया और इसका विद्यालयों में परीक्षण किया गया। इसी प्रकार से मापन पर भी एक ऐसा ही पैकेज तैयार किया जा रहा है। अनुसंधान और विकास में अग्रता क्षेत्रों की पहचान के लिए "कंप्यूटर एण्ड द एजूकेशनल प्रॉसेस" पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। एक कंप्यूटर संसाधन केन्द्र गठित किया जा रहा है। इन्टरनेट की सुविधाएं आरंभ की गई हैं। एन.सी.ई.आर.टी. का एक होम पैकेज तैयार किया गया और इसे एन.आई.सी. को वेब साइट बनाने के लिए भेजा गया। माइक्रो प्रोसेसर पर आधारित कार्य आरंभ किया गया वोल्टेज और तापक्रम के मापन के लिए उचित विधियां निकाली गईं। कंप्यूटर के माध्यम से अधिगम की कठिनाइयों पर एक परियोजना आरंभ की गई है। कंप्यूटर साक्षरता पर एक पुस्तक का परीक्षण किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए वर्तमान विज्ञान किट की लगातार समीक्षा की जा रही है और बहुत सी किट मदों में परिवर्तन किया जा रहा है। कक्षा 6 से 8 के लिए टीचर्स हैण्डबुक ऑफ साइन्स एक्टिविटीज तैयार की जा रही है। वर्ष 1996-97 के दौरान 186 एकीकृत विज्ञान किट, 29 प्राथमिक विज्ञान किट और 9 मिनि टूल किट विभिन्न राज्यों को उनकी मांग के अनुसार भेजे गए। 700 एकीकृत विज्ञान किट तैयार किए जा रहे हैं।

जनसंख्या शिक्षा

जनसंख्या शिक्षा के पुन: अवधारित ढांचे का पहला प्रारूप तैयार किया गया। पापुलेशन एजूकेशन बुलेटिन के दो अंक निकाले गए। राज्य परियोजना कार्मिकों के लिए एक गहन प्रशिक्षण आयोजित किया गया। यौवन शिक्षा पर दो क्षेत्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। जनसंख्या शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता के राष्ट्रीय घटक के अंतर्गत भारत की एक प्रविष्टि ने विश्व स्तर का पुरस्कार जीता। 11 जुलाई 1996 को विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर व्याख्यान और प्रदर्शनियां आयोजित की गईं।

जनसंख्या शिक्षा के लिए भावी कार्यनीतियों के विकास की आवश्यकता के संदर्भ में एक स्थिति अध्ययन किया गया। जनसंख्या शिक्षा पर तीन अनुसंधान अध्ययनों को प्रायोजित किया गया। इसमें से एक अध्ययन पूर्ण हो चुका है। चार क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में जनसंख्या शिक्षा क्रियाकलापों का मूल्यांकन अध्ययन किया गया। एन.पी.ई.पी. के कार्यान्वयन के लिए एजेंसियों की वर्ष 1997 की कार्ययोजना को अंतिम रूप दिया गया। राज्यों की त्रैमासिक रिपोर्टों की समीक्षा करके, उसे समेकित कर संबद्ध एजेंसियों को भेजा गया। परियोजना गतिविधियों के कार्यान्वयन की मॉनीटरिंग के लिए दौरे भी किए गए। किशोरावस्था शिक्षा पर संदर्भ सूची भी तैयार की गई।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

इस योजना का उद्देश्य कक्षा 10 के अंत में मेधावी छात्रों की पहचान करना और उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त करने की दिशा में वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि उनकी प्रतिभा और विकसित हो सके। 750 छात्रवृत्तियों, जिनमें अनु.जा./अ.ज.जा. के अभ्यर्थियों की 70 छात्रवृत्तियां भी शामिल हैं, वर्ष 1996-97 के दौरान प्रदान की गई। इसका चयन दो चरणों में किया जाता है। पहले चरण में राज्यों द्वारा लिखित परीक्षा के माध्यम से चयन किया जाता है। दूसरे चरण में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा चयन किया जाता है।

जवाहर नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा (जे.एन.वी.एस.टी.)

वर्ष 1996-97 के दौरान, जे.एन.वी. में प्रवेश के लिए दो चयन परीक्षाएं आयोजित की गई। पहली चयन परीक्षा में मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, जम्मू-कश्मीर, अरूणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार के 23,752 अभ्यर्थी पंजीकृत किए गए। इनमें से 18,629 बच्चे विभिन्न केन्द्रों में आए। दूसरे जे.एन.वी.एस.टी. में आन्ध्र प्रदेश, असम, बिहार, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश,

कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, राज्यों तथा अंडमान नीकोबार द्वीप समूह, चण्डीगढ़, दादरा और नगर हवेली, दमन, दीव, लक्षद्वीप और पाण्डिचेरी, संघ-शासित क्षेत्रों के 3,69,586 बच्चे पंजीकृत किए गए जिनमें से 3,41,632 बच्चे चयन परीक्षा के लिए केन्द्रों में उपस्थित हुए।

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचारों को प्रोत्साहन

एन.सी.ई.आर.टी. अनुसंधान कार्यों के अतिरिक्त बाहरी संस्थाओं/संगठनों को अनुसंधान के अग्रणी क्षेत्रों में वित्तीय सहायता भी प्रदान करती है। वर्ष 1996-97 के दौरान शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) द्वारा समर्पित आठ अनुसंधान परियोजनाएं पूर्ण हुईं। एरिक के अंतर्गत वर्ष 1996-97 के दौरान 38 अनुसंधान परियोजनाएं चल रही हैं। वर्ष 1996-97 के दौरान एरिक की सहायता से पांच पी.एच.डी. शोध प्रबंध प्रकाशित हुए और आठ पी.एच.डी. शोध प्रबंधों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशन अनुदान मंजूर किए गए। विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्रों में अनुसंधान, नवाचारों और अन्य विकास कार्यों का: (1) जर्नल ऑफ इण्डियन एजूकेशन; (2) भारतीय आधुनिक शिक्षा; और (3) इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया गया। वर्ष 1988-92 की अवधि तक के पांचवें शैक्षिक अनुसंधान सर्वेक्षण की रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है। इस सर्वेक्षण में 38 क्षेत्रों में वर्गीकृत 1800 सारांश शामिल हैं। शैक्षिक अनुसंधान के छठे सर्वेक्षण के लिए, जिसमें 1993 से आगे की अवधि शामिल है, अध्ययनों के पूरा होने और उनके व्यापक प्रचार-प्रसार के बीच समय अंतराल को न्यूनतम करने के लिए नई प्रविधियां अपनाई जा रही हैं। एक छमाही पत्रिका "इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्ट्स" आरंभ की गई है। वर्ष 1996-97 के दौरान इस पत्रिका के दो अंक प्रकाशित हुए।

नीति से सबंधित तीन अध्ययन जैसे—(1) बोर्ड की परीक्षा के उपरान्त परीक्षार्थियों को मूल्यांकित उत्तर पुस्तिकाएं वापिस करना; (2) तिहत्तरवें और चौहत्तरवें संविधान संशोधनों जिनमें पंचायती राज संस्थानों द्वारा पंचायती राज द्वारा चलाए जा रहे विद्यालयों के संबंध में अध्यापकों के दृष्टिकोण और द्विभाषी माता-पिता के बच्चों उनकी निष्पादन क्षमता और व्यक्तित्व पर, अध्ययन पूर्ण किए गए और इन्हें संगोष्ठियों में प्रस्तुत किया गया। एन.आई.ई. व्याख्यान माला के अंतर्गत तीन व्याख्यान आयोजित किए गए। एन.सी.ई.आर.टी. के प्रदर्शन विद्यालयों के प्राथमिक अध्यापकों के दूसरे सम्मेलन में जिन अध्यापकों ने कार्रवाई अनुसंधान अध्ययन का कार्य किया था, उन्होंने भाग लिया। कार्यवाही अनुसंधान अध्ययन चलाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्राथमिक स्तर के राज्य, जिला और उप-जिला स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाएं चलाई गईं।

शैक्षिक सर्वेक्षण

दिसम्बर 1995 के दौरान छठे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के अन्तिम आंकड़े जारी किए गए। इस सर्वेक्षण आंकड़े का प्रयोग दोपहर के भोजन के कार्यक्रम के नियोजन में मूल आगत के रूप में किया गया। प्रमुख परिवर्तनों के आधार पर 24 सारणियां, प्रत्येक राज्य से एक तैयार की गई और इन्हें भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय को नवीं पंचवर्षीय योजना को लागू करने हेतु प्रयोग के लिए भेजा गया।

राज्यों के सर्वेक्षण अधिकारियों और राज्य सूचना अधिकारियों का, छटनी और सारणियों के औचित्य के संबंध में तथा राज्यों की सर्वेक्षण रिपोर्ट तैयार करने के लिए, अभिविन्यास किया गया। अध्यापक सूचना फार्म के सॉफ्टवेयर को अंतिम रूप दिया गया। विद्यालय सूचना फार्म और शिक्षा वित्त फार्म के साफ्टवेयर की जांच करके इसे अंतिम रूप दिया जा रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की एक प्रमुख एजेन्सी के रूप में कार्य करती रही। वर्ष 1996-97 के दौरान, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों के अंतर्गत परिषद् द्वारा मारिशस, क्यूबा, फिनलेन, टर्की, चीन और जर्मनी गणराज्य की सरकारों को शैक्षिक सामग्री भिजवाई गई। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में टर्की और जर्मनी गणराज्य से शैक्षिक सामग्री प्राप्त की गई और इसे एन.सी.ई.आर.टी.

मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित डी.एल.डी.आई. के अंतर्राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र में रखा गया।

एन.सी.ई.आर.टी. के बहुत से संकाय सदस्यों को अन्य देशों में, यूनेस्को द्वारा और कुछ अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों/देशों द्वारा प्रायोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भेजा गया। एन.सी.ई.आर.टी. संकाय ने भारत में आए बहुत से देशों के प्रतिनिधि मंडलों, शिक्षाविदों और अध्यापकों से विचार विमर्श किया। यूनेस्को द्वारा प्रायोजित संबद्ध कार्यक्रमों के अंतर्गत कुछ देशों से आए अध्येताओं को प्रशिक्षण/मार्गदर्शन उपलब्ध करवाया गया।

क्षेत्रीय सेवाएं

एन.सी.ई.आर.टी. के क्षेत्रीय सलाहकारों ने परिषद्, एम.एच.आर.डी. और राज्य शिक्षा विभागों आदि द्वारा किए गए कार्यक्रमों और कार्यकलापों के कार्यान्वयन संबंधी कार्यकलापों के लिए निरंतर संपर्क जारी रखे। आर.आई.ई. के विस्तार शिक्षा विभागों ने राज्य समन्वयन समितियों (एस.सी.सी.) के माध्यम में राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान और एन.सी.ई.आर.टी. से अपेक्षित सहायता से संबंधित कार्यक्रमों के लिए क्षेत्र सलाहकारों द्वारा आर.आई.ई. को सहायता प्रदान की गई।

एन.सी.ई.आर.टी. के क्षेत्रीय सलाहकारों ने राज्य शिक्षा विभागों को राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए अध्यापकों के चयन पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के विकास, कार्मिकों के प्रशिक्षण और नीति निर्धारण आदि कार्यों से सहयोग दिया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय को अन्य कार्यों के साथ-साथ: (1) राज्यों की केन्द्रीय प्रायोजित योजनाओं का अनुवीक्षण किया; (2) अनौपचारिक शिक्षा की स्वयंसेवी एजेंसियों द्वारा अनौपचारिक शिक्षा पर प्रस्तुत प्रस्तावों का स्वीकृति पूर्व मूल्यांकन किया; और (3) संयुक्त मूल्यांकन दल के माध्यम से चल रहे अनौपचारिक केन्द्रों की स्वयं सेवी एजेंसियों के कार्यों का निर्धारण किया।

पुस्तकालय और प्रलेखन सेवाएं

परिषद् का पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग (डी.एल.डी.आई) एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न घटकों के अनुसंधान और विकास कार्यकलापों में सहायता देता रहा है। परिषद् के अन्य घटकों ने भी अपने-अपने परिसरों में पुस्तकालय बनाए हुए हैं। वर्षों से यहां शिक्षा शास्त्रियों, अध्यापक शिक्षकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों आदि के लिए शिक्षा और संबंधित विषयों पर पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का व्यापक संग्रह है। उड़ीसा के माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों और पुस्तकालयाध्यक्षों हेतु पुस्तकालय और सूचना विज्ञान में अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए उड़ीसा के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को एन.सी.ई.आर.टी. के डी.एल.डी.आई. द्वारा पाठ्यक्रम सामग्री और संसाधन व्यक्तियों से संबंधित सहायता प्रदान की गयी। डी.एल.डी.आई. ने मध्य प्रदेश में आर.आई.ई., भोपाल द्वारा डी.आई.ई.टी. के पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी संसाधन व्यक्तियों संबंधी सहायता प्रदान की।

हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहन

एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न घटकों के दिन-प्रतिदिन के कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए "हिन्दी प्रयोग सहायिका" नामक पुस्तिका दो खंडों में तैयार की गई। राजभाषा नीति, नियमों, विनियमों, अधिनियमों और राजभाषा संबंधी दायित्वों और कर्तव्यों आदि से संबंधित सूचना प्रदान करने के लिए एक फोल्डर तथा कुछ अन्य सामग्री विकसित की जा रही है। हिन्दी के प्रयोग में सुविधाएं बढ़ाने के दृष्टि से हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा 57 वाक्यांश और संक्षिप्त द्विभाषी टिप्पणियां तथा 100 द्विभाषी शब्द सभी फाइलों में मुद्रित करवाने की योजना है। एन.सी.ई.आर.टी. में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रयास करने हेतु नीतियां निर्धारित की गईं तथा महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार विमर्श किया गया। 6 से 20 सितम्बर 1996 तक परिषद् में "हिन्दी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी टिप्पण, प्रारूपण, पत्र-लेखन, टंकण, अनुवाद तथा कविता प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए राजभाषा विभाग से प्राप्त पोस्टर एवं चार्ट परिषद् के सभी संघटकों को भिजवाए गए। राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष के सहयोग से हिन्दी कंप्यूटर प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें हिंदी सॉफ्टवेयर बनाने वाली चार प्रमुख कंपनियों के लिए हिन्दी टंकण तथा आशुलिपि के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। परिषद् के विभिन्न संघटकों के प्रशासनिक क़ागजपत्रों के हिन्दी

अनुवाद संबंधी सहायता भी हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा ही प्रदान की गई।

कार्यक्रम, योजना, अनुवीक्षण और मूल्यांकन

एन.सी.ई.आर.टी. के घटकों/विभागों के अध्यक्षों ने अनुमोदित कार्यक्रमों के कार्यान्वयन पर निगरानी जारी रखी। कुछ घटकों के कार्यक्रमों की निगरानी परिषद् के निदेशक/संयुक्त निदेशक द्वारा की गई। परिषद् के विभिन्न घटकों द्वारा कार्यक्रमों के नियोजन और कार्यान्वयन की समस्त प्रक्रिया एक तरह से परिषद् और राज्यों का सामूहिक प्रयास है। कार्यक्रमों की योजना कार्यान्वयन की निगरानी और मूल्यांकन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के उद्देश्य से तैयार की गई रूपरेखा को 8-11 अक्तूबर 1996 तक आर.आई.ई., मैसूर में हुई दूसरी क्षेत्रीय बैठक-सह-कार्यशाला में अंतिम रूप दिया गया। रूपरेखा सहित इस कार्यशाला की रिपोर्ट सभी राज्यों के शिक्षा सचिवों को टिप्पणी और सुझावों के लिए भेजी गई ताकि इसे अपनाया जा सके।

एन.सी.ई.आर.टी. अपने कार्यक्रमों और कार्यकलापों की आवधिक रिपोर्ट एम.एच.आर.डी. को निरंतर भेजती रही। "स्कूल कॉम्प्लेक्स एप्रोच फार इम्प्रूविंग दि क्वालिटी ऑफ स्कूल एजुकेशन" नामक अध्ययन की रिपोर्ट तैयार कर जारी की गई। डी.आई.ई.टी. की योजना और प्रबंध शाखाओं द्वारा आयोजित अनुसंधान विकास प्रशिक्षण और विस्तार कार्यकलापों का स्थिति अध्ययन प्रगति पर है।

प्रकाशन

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विद्यालयी शिक्षा के लिए आदर्श अनुदेशी सामग्री, पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास पुस्तकें, अनुपूरक पुस्तकें, अध्यापक मार्गदर्शिकाएं, व्यावसायिक शिक्षा में अनुकरणीय अनुदेशी सामग्री, शोध प्रतिवेदन प्रबंध, और शैक्षिक पत्रिकाओं के प्रकाशन का कार्य निरंतर जारी है। वर्ष 1996-97 के दौरान 316 प्रकाशन निकाले गए। सभी पत्रिकाओं के पिछले अंक भी निकाले गए। अब ये सभी पत्रिकाएं समय पर निकल रही हैं जिसके कारण इसके सदस्यों की संख्या बढ़ गई है। वर्ष 1996-97 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों की बिक्री से कुल रु 30,34,28,626.23 की प्राप्ति हुई। एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशनों की बिक्री 52 थोक एजेंटों के माध्यम से की गई। उर्दू प्रकाशनों की बिक्री और उनका वितरण उर्दू अकादमी दिल्ली प्रशासन, दिल्ली के माध्यम से किया गया। परिषद् का प्रकाशन प्रभाग सीधे विद्यालयों और व्यक्तियों को पुस्तकों की आपूर्ति करता रहा।

परिषद् के प्रकाशन प्रभाग के क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्रों प्रत्येक क्षेत्र में एक—अहमदाबाद, बैंगलूर और कलकत्ता, ने परिषद् के प्रकाशनों की बिक्री और वितरण का कार्य अपने-अपने क्षेत्रों में निरंतर जारी रखा। इन केन्द्रों को और अधिक प्रभावशाली और क्रियाशील बनाने की दिशा में उनकी पुनर्मुद्रण क्षमता में पिछले वर्षों की अपेक्षा चार गुणा वृद्धि की गई। प्रकाशन प्रभाग के प्रकाशनों से संबंधित सूचनाओं के प्रचार के संबंध में एन.सी.ई.आर.टी. ने (1) दिल्ली पुस्तक मेला अगस्त 1996 में; (2) दिसम्बर 1996 में हैदराबाद राष्ट्रीय पुस्तक मेला; (3) दिसम्बर 1996 में पटना पुस्तक मेला; (4) जनवरी-फरवरी 1997 में कलकत्ता अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला; और (5) फरवरी 1997 में इन्दौर राष्ट्रीय पुस्तक मेला में भाग लिया। एन.सी.ई.आर.टी. ने नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया के माध्यम से कुछ चुनिंदा प्रकाशन भेजकर, बहुत से अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों/प्रदर्शिनियों में भी भाग लिया।

वर्ष 1996-97 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निम्नलिखित राज्य विद्यालय शिक्षा बोर्डों/एजेंसियों को कुछ पाठ्यपुस्तकों के अभिग्रहण/अनुकूलन/पुनर्मुद्रण आदि की कापीराइट स्वीकृति भी प्रदान की गई : (1) हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी को कक्षा 1 से 12 तक की पाठ्यपुस्तकों के संबंध में; (2) हिमाचल विद्यालय शिक्षा बोर्ड को कक्षा 1 से 10 तक की पाठ्यपुस्तकों और हिन्दी की कक्षा 11 तथा 12 की पाठ्यपुस्तकों के संबंध में; और (3) दिल्ली ब्यूरो ऑफ टैक्स्टबुक, दिल्ली को कक्षा 1 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकों के संबंध में कापीराइट स्वीकृति दी गई। अरूणाचल प्रदेश, नवोदय विद्यालयों और मेघालय बोर्ड तथा गोवा बोर्ड को भी आवश्यकतानुसार एन.सी.ई. आर.टी. की पुस्तकों की आपूर्ति की गई। एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों का विवरण परिशिष्ट 4 में दिया गया है।

कल्याण गतिविधियां

एन.सी.ई.आर.टी. के स्टॉफ हेतु मकानों को बनाने के लिए पप्पन कला (द्वारिका) में बनाई गई योजना को दिल्ली विकास प्राधिकरण ने अनुमोदन दे दिया है इस हेतु रू. 1.91 करोड़ की राशि जारी की गई। टाइप 1 तथा 2 के

मकान अप्रैल 1997 में बनने शुरू हो जाएंगे। भारतीय जीवन बीमा निगम की सामूहिक बचत बीमा योजना (जी.एस.एल.आई.एस.) एन.सी.ई.आर.टी. के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों पर लागू है। 20.1.97 को हुए इसके वार्षिक नवीकरण के समय परिषद् के 234 अधिकारी/कर्मचारियों को जी.एस.एल.आई. योजना के अंतर्गत नामांकित किया गया। इनमें से 200 मामले पदोन्नति/वेतनमान में संशोधन आदि से संबंधित थे। एन.सी.ई.आर.टी. के 1200 नियमित अधिकारी/कर्मचारी सी.जी.एच.एस. योजना की सुविधाओं का लाभ उठा रहे हैं। वर्ष 1996-97 के दौरान सेवानिवृत्त हुए 30 व्यक्तियों को उपहार प्रदान किए गए। दिल्ली सरकार के सहयोग से परिषद् में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चों के लिए परिषद् ने परिसर में ही बालगृह (क्रेच) खोला गया है।

29 अक्तूबर से 1 नवंबर 1996 तक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में वार्षिक खेल आयोजित किए गए। एन.सी.ई.आर.टी. के स्थापना दिवस के अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। एन.सी.ई.आर.टी. ने अपनी बागवानी के ठेकेदार के माध्यम से फरवरी 1997 में दिल्ली पर्यटक निगम की ओर से आयोजित फूलों की प्रतियोगिता प्रदर्शनी में भाग लिया और इसे प्रथम पुरस्कार स्वरूप तीन ट्राफियां प्रदान की गईं। मार्च 1997 में दिल्ली एग्रो हार्टिकल्चर सोसायटी, पूसा द्वारा आयोजित फूल प्रतियोगिता प्रदर्शनी में भी परिषद् द्वारा प्रथम पुरस्कार (ट्राफी) जीता गया।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (ई.सी.ई.) के दौहरे लाभ, बच्चों के विकास पर पड़ने वाले प्रत्यक्ष प्रभाव तथा प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) में इसके योगदान को ध्यान में रखते हुए राज्य स्तरीय विशेषज्ञता का विकास करने तथा इस क्षेत्र में कार्यक्रमों को सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ विद्यालय-पूर्व तथा पूर्व-प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए शैक्षिक और मनोरंजक मूल्यों के सस्ते और प्रभावशाली अनौपचारिक साधनों की खोज और विकास को ई.सी.ई. परियोजना में केन्द्रित किया जाता रहा है

3

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (ई.सी.ई.) के दौहरे लाभ, बच्चों के विकास पर पड़ने वाले प्रत्यक्ष प्रभाव तथा प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) में इसके योगदान को ध्यान में रखते हुए राज्य स्तरीय विशेषज्ञता का विकास करने तथा इस क्षेत्र में कार्यक्रमों को सुदृढ़ बनाने के साथ-साथ विद्यालय पूर्व तथा पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों के लिए शैक्षिक और मनोरंजक मूल्यों के सस्ते और प्रभावशाली अनौपचारिक साधनों की खोज और विकास को ई.सी.ई. परियोजना में केन्द्रित किया जाता रहा है। विभिन्न स्तरों पर कार्मिकों को प्रशिक्षण देकर तथा क्षेत्रीय भाषाओं में बच्चों तथा अध्यापकों के लिए समुचित अध्यापन शिक्षण सामग्री विकसित करके क्षमता निर्माण का कार्य किया जा रहा है। विद्यालयपूर्व शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, संगत संसाधन सामग्री के विकास, प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रमों के आयोजन तथा अनुसंधान अध्ययन आयोजित करने आदि के माध्यम से एन.सी.ई.आर.टी. पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (ई.सी.ई) को शैक्षिक सहायता और महत्वपूर्ण आगतें उपलब्ध करवा रही है।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा विषय पर केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय संघ के प्रतिभागी।

आई.सी.डी.सी. के विद्यालय-पूर्व शिक्षा घटक का अध्ययन और इसके अवबोधन तथा समुदाय द्वारा इसके प्रयोग की सीमाएं

इस अध्ययन का उद्देश्य (1) विद्यालय पूर्व शिक्षा (पी.एस.ई) कार्यक्रम की अवधि (2) उपस्थिति के संदर्भ में पी.एस.ई. की उपयोगिता (3) आंगनवाड़ी और प्राथमिक विद्यालयों में अंत: संबंध (4) पी.एस.ई. कार्यक्रमों की गुणवत्ता और (5) पी.एस.ई. के संबंध में माता-पिता की भावनाओं का मूल्यांकन करना था। यह अध्ययन 10 राज्यों में किया गया। 8% आई.सी.डी.सी. परियोजनाएं और 8% आंगनवाड़ियों को नमूने के रूप में लिया गया। साधनों के प्रयोग और आंकड़ों को एकत्र करने के लिए क्षेत्रीय स्टाफ को प्रशिक्षण दिया गया। आंकड़े एकत्र करने के उपरान्त, एक सामान्य रूपाकार, विश्लेषण और रिपोर्ट योजना तैयार की गई। अध्ययन की रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

पठन लेखन और अंक ज्ञान के लिए क्रियाकलाप पुस्तकें

पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के लिए पठन, लेखन और अंकज्ञान पर तीन क्रियाकलाप पुस्तिकाओं के प्रारूप तैयार किए गए। निम्नलिखित पुस्तिकाएं पहले ही प्रकाशित हो चुकी हैं:

1. ए मैन्युअल फार ए मिनिमास किट ऑफ प्ले मैटिरियल फार ई.सी.ई. प्रोग्राम
2. स्कूल रेडिनैस प्रोग्राम
3. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए चार चित्र कथा पुस्तकें। ये पुस्तकें इस वर्ग के बच्चों की सकारात्मक भूमिका प्रस्तुत करती है।
4. विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए छह चित्रात्मक पुस्तकें (मुद्रणाधीण)
5. "प्रेशर्स ऑन द प्री-स्कूल चाइल्ड" पर एक पुस्तिका

पूर्व प्राथमिक शिक्षा (ई.सी.ई.) में अल्पावधि प्रशिक्षण हेतु शीर्ष संसाधन व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण पैकेज

ई.सी.ई. प्रशिक्षण को समर्थन प्रदान करने वाली पांच आडियो कैसेट और एक वीडियो फिल्म तैयार की गई।

ई.सी.ई. परियोजना का समन्वय

पूर्व वर्षों की गतिविधियों का लेखा-जोखा रखने और 1997 की योजना तैयार करने के उद्देश्य से 12 राज्यों की ई.सी.ई. परियोजनाओं के समन्वयकों के लिए दो दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया।

विद्यालय-पूर्व और प्राथमिक विद्यालय के बीच की कड़ी के सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए मध्यस्थता अध्ययन

नियोजित मध्यस्थता का हरियाणा गुड़गांव के कुछ चुनिंदा विद्यालयों में परीक्षण किया गया। अध्यापकों के अभिविन्यास के उपरान्त, तैयारी कार्यक्रम के क्रियान्वयन का कार्य प्रगति पर है।

भारतीय विद्यालय-पूर्व शिक्षा संघ इण्डियन एकेडमी ऑफ पैडियाट्रिक्स और ओ.एम.ई.पी. (इण्डिया) ने "प्रेशर्स ऑन प्री-स्कूल चाइल्ड" रोल ऑफ प्रोफेशनल आर्गेनाइजेशन्स" के संदर्भ में आयोजित एक दिवसीय परामर्श कार्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न संस्थाओं के विचारों को कार्यसूची में प्रस्तुत किया गया और उन पर चर्चा हुई।

केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय संघ के शीर्ष कार्यकर्ताओं के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा में प्रशिक्षण कार्यक्रम

एक 12 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम जिसमें प्रतिभागियों को खेल-खेल में प्रविधि सिखाने और इस प्रकार के विषय शामिल किए गए जैसे : 1. ई.सी.ई. कार्यक्रमों के नियोजन का महत्व, 2. व्यक्तिगत-सामाजिक विकास, 3. भाषा विकास, 4. बोधात्मक विकास, 5. कंठपुतली बनाना, 6. सृजनात्मक कला गतिविधियां और 7. स्वास्थ्यवर्धक भोजन तथा बच्चों का मूल्यांकन आदि। इसमें जिन प्रशिक्षण कार्यनीतियों का प्रयोग किया गया वे थीं : प्रतिभागिता चर्चा, आई.आई.टी. नर्सरी विद्यालय में इन्टर्नशिप, वीडियो फिल्म दिखाना, शैक्षिक संस्थाओं का दौरा और सामग्री का निर्माण।

प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) की व्यापक रूपरेखा के अंतर्गत, प्राथमिक शिक्षा से जुड़े हुए मुद्दों और समस्याओं पर काफी जोर दिया जा रहा है संगत संसाधन सामग्री के विकास, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन और सरोकारों के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसंधान अध्ययनों के द्वारा प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के प्रयास तेज़ किए गए

4

प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) की व्यापक रूपरेखा के अंतर्गत, प्राथमिक शिक्षा से जुड़े हुए मुद्दों और समस्याओं पर काफी जोर दिया जा रहा है संगत संसाधन सामग्री के विकास, प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन और सरोकारों के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसंधान अध्ययनों के द्वारा प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के प्रयास तेज किए गए।

एम.एल.एल. तथा ई.सी.ई के लिए राष्ट्रीय प्रलेखन एकक (एन.डी.यू.)

न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.) तथा पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (ई.सी.ई.) के लिए सूचना एकत्र करने, इसे सूचीबद्ध करने और कंप्यूटर में डालने का कार्य प्रगति पर है। एन.डी.यू. पर एक सूचना विवरणिका तैयार की जा रही है। "ग्लिम्सिज" नामक तिमाही समाचार पत्रिका नियमित रूप से निकाली जा रही है और इसका व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

गणित शिक्षण में नवाचारी कार्यक्रमों का प्रलेखन

राष्ट्रमंडल सचिवालय द्वारा प्रायोजित एक अध्ययन को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक स्तर पर गणित अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए पाठ्यचर्या तथा विद्यालयी शिक्षा के लिए गणित विषय में पाठ्यचर्या के विकास के क्षेत्रों में कार्यरत राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय ऐजेंसियों और गैर-सरकारी संगठनों को शामिल कर एक विशेष कार्यदल गठन किया गया।

पत्रिकाएं : "प्राईमरी टीचर" और "प्राईमरी शिक्षक"

"प्राइमरी टीचर" और प्राइमरी शिक्षक" नामक पत्रिकाएं हर तिमाही निकाली जा रही है। ये पुस्तकें कार्यरत अध्यापकों को अपने विद्यालय/कक्षा के अनुभवों और गतिविधियों के संबंध में अनुभवों का आदान-प्रदान करने के लिए एक मंच उपलब्ध करती है और नवीन विकास तथा अध्ययनों के परिणामों के व्यापक प्रचार-प्रसार को सुविधा प्रदान करती हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. की प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 3 की अंग्रेजी, गणित और पर्यावरण अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों का साधनों और क्षेत्रीय कार्य सहित भाषा वैज्ञानिक और सैद्धान्तिक विश्लेषण पूर्ण किया गया। इस परियोजना की रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

दिगांतर संगठनः प्राथमिक शिक्षा के ग्रामीण विद्यार्थियों के साथ संकाय सदस्य

के.वी.एस. प्राथमिक विद्यालयों में प्रायोगिक कार्यक्रम

प्राथमिक स्तर पर क्रियाकलाप आधारित अध्यापन कार्यक्रम को केन्द्रीय विद्यालय संगठन (के.वी.एस.) दिल्ली के तीन विद्यालयों में आरम्भ किया गया। ये विद्यालय एन.सी.ई.आर.टी., जे.एन.यू. तथा आई.आई.टी. के परिसरों में स्थित हैं और

परिषद् के विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग की अनुसंधान और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रदर्शन और प्रायोगिक विद्यालयों के रूप में विकसित किए गए हैं। इन विद्यालयों की मानीटरिंग और मध्यस्थता का कार्यक्रम निरंतर जारी हैं। ये विद्यालय अब प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में इस प्रविधि को शिष्टमंडलों और प्रशिक्षणार्थियों के प्रत्यक्ष प्रदर्शन हेतु प्रायोगिक व प्रदर्शन विद्यालय बन गए हैं।

प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या की समीक्षा और अग्रताओं पर संगोष्ठी

यह संगोष्ठी यूनिसेफ के सहयोग से आई.आई.ई., पुणे में आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में शामिल जिन तीन प्रमुख क्षेत्रों पर पैनल चर्चा हुई वे हैं : 1. व्यापक पर्यावरण शिक्षा, जिसके अंतर्गत स्वास्थ्य शिक्षा का महत्व और प्रत्यक्ष अधिगम पद्धति का प्रयोग करते हुए इसके एकीकरण पर चर्चा की गई; 2. बच्चों में संचार कौशल का विकास : प्राथमिक स्तर पर भाषा और कला को प्रस्तुतीकरण को एक साधन मानते हुए दोनों के प्रोत्साहन के महत्व और पाठ्यचर्या में इसके एकीकरण, पर बल दिया गया; और 3. प्राथमिक स्तर पर गणित की पाठ्यचर्या का विषयगत संदर्भ। इस संगोष्ठी में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कुछ वर्तमान सरोकारों/चिंताओं पर प्रकाश डाला गया, विशेषकर संपूर्ण और बहु-स्तरीय परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता। इस संगोष्ठी में यह सिफारिश की गई कि एन.सी.ई.आर.टी. को प्राथमिक शिक्षा पर एक प्रलेख तैयार करना चाहिए जो एम.एल.एल. के संबंध में फैली भ्रान्तियों का निराकरण करे और इसे उचित दिशा उपलब्ध करवाए। इस प्रलेख की प्रमुख बातें और इसकी रूपरेखा के बारे में आम राय बनाने हेतु चर्चा के लिए विशेषज्ञों के एक कोर ग्रुप की बैठक आयोजित की गई। इस बैठक से पूर्व, हरियाणा, बिहार और दिल्ली राज्य के प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के विचार जानने के लिए उनके साथ कई दौर की बातचीत की गई। पाठ्यक्रम के क्षेत्रों में समस्याओं को जानने के लिए, बच्चों द्वारा गणित और भाषा में की जाने वाली आम गलतियों की पहचान करके उन्हें सूचीबद्ध करने के लिए दो कार्य-शालाएं आयोजित कीं। इस प्रकार प्राप्त प्रतिपुष्टि का प्रयोग प्राथमिक शिक्षा के लिए प्रलेख तैयार करने हेतु किया जा रहा है।

मालदीव के प्राथमिक विद्यालयों के मुख्य अध्यापकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

प्रारंभिक शिक्षा में डिप्लोमा पाठ्यक्रम की रूपरेखा सहित एक पाठ्यक्रम डिजाइन, मालदीव के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत मुख्य अध्यापकों के लिए तैयार किया गया। यह 15 महीने का पाठ्यक्रम आर.आई.ई., मैसूर द्वारा आयोजित किया जा रहा है।

श्रेणीबहुल और बहु-स्तरीय अध्यापन पर विषयी अध्ययन

इस परियोजना के उद्देश्यों में शामिल है—1. बहु-स्तरीय और श्रेणीबहुल अध्यापन में कुछ नवाचारी कार्यक्रमों की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन; 2. श्रेणीबहुल और एकल श्रेणी गठन के लिए पाठ तैयार करना; और 3. अनुभवों का व्यापक प्रचार। यह अध्ययन क्षेत्र पर आधारित था और इसमें विस्तृत विषयी अध्ययन, अवबोधन और साक्षात्कार की तकनीकों के माध्यम से गुणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया। इस परियोजनाओं की मुख्य विशेषताओं के साथ-साथ अध्यापकों और बच्चों की मान्यताओं की रिपोर्ट को दो खण्ड के रूप में प्रलेखबद्ध किया गया है।

प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण (यू.ई.ई.) के संदर्भ में प्रारंभिक शिक्षा में अनुसंधानों की आलोचनात्मक समीक्षा

इस अध्ययन के उद्देश्यों में शामिल हैं—1. वर्ष 1996-97 के दौरान यू.ई.ई. के संदर्भ में अनुसंधानों का प्रलेखन; 2. अध्ययन के परिणामों का विश्लेषण करना; 3. यू.ई.ई. के असन्न घटकों की पहचान; और 4. नए पैदा होते हुए रूझानों का विस्तार करना। विभिन्न स्थानों पर पत्राचार और व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए जा रहे हैं।

प्राथमिक स्तर पर चयनित अवधारणाओं/सक्षमताओं के श्रेणीकरण पर एक अनुभवजन्य अध्ययन

इस अनुभवजन्य अध्ययन के लिए अनुसंधान के डिजाइन को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

यशपाल समिति की सिफारिशों के कार्यान्वयन की मानीटरिंग

इस समिति की सिफारिशों के कार्यान्वयन के लिए साधन विकसित किए गए और उन्हें राज्यों को भिजवाया गया। स्थिति रिपोर्ट बनाई गई है और इसे समय-समय पर अद्यतन किया जाता है।

"उजाला" यू.पी.ई. के संदर्भ में प्रदर्शनी

व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु "उजाला" नामक एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। यह 20" × 24" आकार के 28 दृश्यों की एक शृंखला के रूप में है। इन दृश्यों में विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों, बालिकाओं, अध्यापकों की भूमिका और आनन्ददायक शिक्षा जैसे विषयों के संबंध में प्रकाश डाला गया है। इस प्रदर्शनी का आई.आई.ई., पुणे में दिसम्बर 1996 में उद्घाटन किया गया।

प्राथमिक शिक्षा की क्षेत्रीय स्तर पर आगतें

आर.आई.ई., अजमेर ने प्रारंभिक स्तर पर ये प्रशिक्षण पैकेज विकसित किए : 1. हिन्दी, गणित और पर्यावरण अध्ययन में, प्राथमिक स्तर पर गैर-शिक्षा शास्त्रीय क्षेत्रों सहित सतत और व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) करने की प्रविधियां; 2. उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक अध्ययन का शिक्षण; 3. उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान का अध्यापन; 4. उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी का अध्यापन। कुछ चुनिंदा एम.एल.एल. आधारित सक्षमताओं में सामाजिक अध्ययन पर साधनों का मूल्यांकन विकसित किया गया इसका परीक्षण किया गया और इसे अंतिम रूप दे दिया गया।

प्रशिक्षण पैकेज तैयार करने और उनका क्षेत्रीय परीक्षण करने के लिए पर्यावरण अध्ययंन (1 तथा 2), हिन्दी (मातृभाषा) और गणित में प्राथमिक अध्यापकों की प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। आर.आई.ई., भोपाल निम्नलिखित अध्ययन कर रहा है। 1. गुजरात और मध्य प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में श्रेणीबहुल अध्यापन का प्रयोग और परीक्षण; तथा 2. गुजरात के डी.आई.ई.टी. संस्थानों का विषयी अध्ययन: ढांचागत और कार्यात्मक विश्लेषण तथा मूल्यांकन/एम.एल.एल. के परीक्षण पर भी अध्ययन आयोजित किया गया। आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने कक्षा 3 और 4 के लिए पर्यावरण अध्ययन (1 तथा 2) में एम.एल.एल. आधारित परीक्षा मद पूल (टी.आई.पी.) विकसित किया। कक्षा 1 तथा 2 में एम.एल.एल. की संप्राप्ति के लिए प्रथम भाषा (उड़िया) में शिशु केन्द्रित गतिविधियों का क्रियान्वयन योग्य और सुदृढ़ रूप से डिजाइन तैयार किया गया। शारीरिक शिक्षा के महत्व और नियोजन केन्द्र तथा शारीरिक शिक्षा में पाठ्यचर्या गतिविधियों के ढांचे पर अध्यापकों और अध्यापन शिक्षकों के मिले-जुले समूह का अभिविन्यास किया गया।

आर.आई.ई., मैसूर द्वारा प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षा कार्यवाही अनुसंधान परियोजना चलाई गई।

वर्ष 1996-97 के दौरान निकाली गई रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. रिपोर्ट ऑन स्टडी ऑफ रिडेबिलिटि ऑफ टेक्स्टबुक्स कक्षा 2-5 ऑफ एन.सी.ई.आर.टी.(टंकित)
2. रिपोर्ट ऑफ सेमिनार ऑन रिव्यूइंग प्रायोरिटीज इन प्राइमरी लेवल करीकुलम (फोटोप्रति)

3. इन्नोवेशन्स इन मैथेमैटिक्स टीचर एजूकेशन इन इण्डिया (टंकित/अनुलिखित)
4. रिपोर्ट ऑन ए ओरिएन्टेशन इन ई.सी.ई. ऑफ डी.पी.ई.पी. प्राजेक्ट डायरेक्टर्स (फोटोप्रति)
5. सिन्थेसिस रिपोर्ट ऑन न्यूमेरेसी एण्ड रीडिंग रेडिनैस लेवल आफ क्लास I एन्ट्रेन्ट्स (फोटोप्रति)
6. लिस्ट ऑफ कामन एरर्स इन लेंग्वेज़ एण्ड मैथेमैटिक्स मेड बाई चिलड्रन एट प्राइमरी स्टेज (समेकित की जा रही है)
7. एग्जेम्पलर मैट्रियल ऑफ टेक्स्टबुक, वर्कबुक एण्ड टीचर्स हैण्डबुक इन मैथेमैटिक्स फार क्लास I एण्ड 2 (टंकित)
8. टूल्स फार फील्ड ट्रेलिंग ऑफ टेक्स्टबुक्स (टंकित)
9. एग्जीबिट्स इन कान्टेक्स्ट ऑफ़ यूनिवर्सलाइजेशन आफ प्राईमरी एजूकेशन (फोटोग्राफ/पोस्टर 20" × 24" आकार में)

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण

अनौपचारिक शिक्षा (एन.एफ.ई.) को सक्षम बनाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. संसाधनों के विकास, अध्यापन अधिगम सामग्री के विकास और वैकल्पिक शिक्षण की कार्यनीतियों की पहचान की ओर ध्यान दे रही है। क्षेत्रीय प्रक्रिया अभिमुख प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य स्तरीय संगठनों के साथ-साथ स्वयंसेवी संगठनों के संसाधन आधार को सुदृढ़ करने की दिशा में प्रयास किए गए

5

अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण

अनौपचारिक शिक्षा (एन.एफ.ई.) को सक्षम बनाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. संसाधनों के विकास, अध्यापन अधिगम सामग्री के विकास और वैकल्पिक शिक्षण की कार्यनीतियों की पहचान की ओर ध्यान दे रही है। क्षेत्रीय प्रक्रिया अभिमुख प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य स्तरीय संगठनों के साथ-साथ स्वयंसेवी संगठनों के संसाधन आधार को सुदृढ़ करने की दिशा में प्रयास किए गए। विभिन्न राज्यों के स्वयंसेवी संगठनों को, उनके राज्यों के लिए संसाधन दलों के रूप में कार्य करने हेतु एन.एफ.ई. कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण में सहायता उपलब्ध करवाई गई। उन्हें एम.एल.एल. पर आधारित एन.एफ.ई. सामग्री की समीक्षा और विश्लेषण के लिए प्रशिक्षित किया गया और एन.एफ.ई. केन्द्रों में अध्यापन-अधिगम के प्रभावशाली कार्यों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण

एन.सी.ई.आर.टी. के एन.एफ.ई., संकाय का प्रशिक्षण

बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, सिक्किम और नागालैण्ड के एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों का, उनकी आवश्यकताओं के साथ-साथ प्रारंभिक शिक्षा में शैक्षिक नियोजन प्रक्रिया के अद्यतन विकास के आधार पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। अन्य बातों में, पाठ्यक्रमों के विश्लेषण और समीक्षा का क्रिया कलाप केन्द्रित कार्य तथा अनुदेशी सामग्री, एम.एल.एल. आधारित विशिष्ट स्थानीय सामग्री के विकास की कार्यनीतियां बनाना तथा क्षेत्र आधारित अनुसंधान अध्ययन आयोजित करना शामिल है।

डी.आई.ई.टी./डी.आर.यू. का प्रशिक्षण

असम के डी.आर.यू. संकाय के तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम और विभिन्न राज्यों में स्थित स्वयंसेवी एजेंसियों के डी.आर.यू. के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान डी.आर.यू., कार्मिकों के लिए एक प्रशिक्षण मैन्युअल प्रयुक्त किया गया जिसमें सबके लिए शिक्षा, विशेषकर डी.पी.ई.पी. के संदर्भ में एन.एफ.ई. कार्यक्रमों की कार्यनीतियों की नई दिशाओं पर प्रकाश डाला गया। अध्यापन अधिगम सामग्री का विश्लेषण और विभिन्न क्षेत्रीय सामग्रियों का प्रदर्शन, डी.आई.ई.टी./डी.आर.यू. के लिए आयोजित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएं रहीं।

राज्यों और स्वयंसेवी संगठनों के संसाधनों का विकास

एम.एच.आर.डी. की केन्द्रीय प्रायोजित एन.एफ.ई. की योजना के क्रियान्वयन हेतु सहायता अनुदान प्राप्त करने वाले स्वयं सेवी संगठनों की सहायता के लिए एस.आर.टी., मद्रास; रायलसीमा खेल समिति, आन्ध्र प्रदेश; और सीमेट, इलाहाबाद में तीन प्रशिक्षण कार्यशालाएं आयोजित की गई। राजस्थान, हरियाणा, मणिपुर, महाराष्ट्र और बिहार के एन.एफ.ई., कार्यकर्ताओं के विभिन्न स्तरों पर प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम आयोजित करने हेतु स्वयंसेवी संगठनों को भी सहायता प्रदान की गई।

विकास

गली-कूचों में रहने वाले और कामकाजी बच्चों के लिए विशिष्ट प्रशिक्षु कौशलों पर आधारित अध्यापन अधिगम सामग्री

भारत में गलियों में घूमने वाले और छोटे-मोटे काम करने वाले बच्चों के लिए शैक्षिक कार्यक्रम तैयार करने हेतु पाठ्यचर्या तैयार करना एक कठिन कार्य है विभिन्न संगठनों के विचारों के आधार पर सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) के स्तर पर बहुत सी कार्यनीतियां बनाई गईं। इस परियोजना के अंतर्गत गलियों में घूमने वाले और बाल श्रमिक के रूप में कार्यरत बच्चों के पाँच वर्गों के लिए पाँच अनुदेशी सामग्रियों के पैकेजों के प्रारूप गलियों में घूमने वाले और बाल श्रमिक बच्चों के लिए "प्रशिक्षु केन्द्रित कौशलों पर आधारित सामग्री के विकास हेतु निम्नलिखित कार्यों में लगे बच्चों के लिए परियोजना बनाई गई: 1. कृषि गतिविधियों हेतु; 2. मरम्मत कार्यशाला (साइकिल, स्कूटर

कार इत्यादि) में कार्यरत बच्चों के लिए; 3. सड़कों के किनारे ढाबों, चाय की दुकानों और खानपान गृहों में कार्यरत बच्चों; 4. कागज-कूड़ा उठाने वाले; तथा 5. विभिन्न घरेलू किस्म के कार्यों में कार्यरत लड़कियों के लिए यह कार्य किया गया।

चार प्राईमर और 72 पाठ विकसित किए गए। इन पाठों को पांच पैकेजों में क्रमानुसार लगाया गया। यह सामग्री निम्नलिखित के आधार पर तैयार की गई: 1. आपसी बातचीत के माध्यम से बच्चों के पाँच समूहों की शब्दावली की पहचान करके तैयार की गई; 2. संबंधित समूहों की दिन-प्रतिदिन के जीवन की स्थितियों और विद्यमान वातावरण का विश्लेषण और समीक्षा करके; 3. प्राथमिक स्तर पर एम.एल.एल. के अंतर्गत पहचानी गई सक्षमताओं के अंतर्गत; 4. बच्चों के सरोकारों और एम.एल. पर विशिष्ट रूप से केन्द्रित विषय क्षेत्रों के प्रस्तुतिकरण के लिए कार्यनीतियों के नमूने तैयार करके की गई।

यह पाठ विभिन्न प्रकार की रूपरेखा और शैली, नाम, कहानी, कविता, गीत, संवाद, आपसी बातचीत, खेल, चित्रात्मक रूपरेखा और आपसी चर्चा, कार्ड और पोस्टर उपलब्ध करवाकर तैयार किए गए। आनन्ददायक अधिगम पर अधिक बल दिया गया। इस अधिगम स्थिति ने इन बच्चों द्वारा महसूस की जा रही समस्याओं के समीक्षात्मक विश्लेषण के लिए उपयुक्त आधार उपलब्ध करवाया। एकीकृत पैकेज के रूप में तैयार सामग्री का इस समय परीक्षण कार्य चल रहा है।

पर्यावरण अध्ययन में एम.एल.एल. आधारित चित्रात्मक सामग्री

मिलकर सीखें श्रृंखला के अंतर्गत प्राथमिक स्तर के एन.एफ.ई. कार्यक्रम के चार सत्रों के लिए एम.एल.एल. आधारित 12 अध्यापन-अधिगम सामग्रियों को तैयार करने हेतु डिजाइन बनाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा कार्य किया गया। चित्रात्मक रूपरेखा पर आधारित पर्यावरण अध्ययन की एक पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस पुस्तक का उद्देश्य प्रशिक्षकों में अधिगम पूर्व आधारभूत कौशलों का विकास करना है। (अर्थात् पर्यावरण और कार्य स्थल में वस्तुओं को ध्यान से देखना, उनमें अंतर स्पष्ट करना और उनका वर्गीकरण करना)।

विशिष्ट स्थानीय सामग्री

मिलकर सीखें श्रृंखला के अंतर्गत चार और शीर्षक प्रकाशनाधीन है। यह सामग्री लोकप्रिय लोक कथाओं, बाल खेलों, पहेलियों, कविताओं, गीतों और कहावतों तथा चुटकुलों पर आधारित है।

प्राथमिक स्तर पर उत्साहवर्धक और आनन्ददायक शिक्षण के लिए गणित विषय में अनुपूरक सामग्री

इस कार्यक्रम के अंतर्गत, गणितीय नियमों, संकल्पनाओं, सिद्धान्तों, प्रक्रिया व भाषा को आपसी बातचीत के माध्यम से समझने की क्षमता द्वारा एन.एफ.ई. के तीसरे और चौथे सत्रों के स्तरों की पहचान की गई। इस उद्देश्य में दिल्ली के दो एन.एफ.ई. केन्द्रों तथा दो औपचारिक प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया।

संपूर्ण अनुपूरक सामग्री के विकास के लिए दो क्षेत्रीय कार्यशालाएं (जिसमें दक्षिणी क्षेत्र शामिल है) आयोजित की गई। इसी प्रकार की सामग्री क्षेत्रीय कार्यशालाओं में भी तैयार करने की योजना है।

मूल्यांकन

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम.एच.आर.डी.) अपनी सहायता अनुदान योजना के अंतर्गत विभिन्न स्वयंसेवी एजेंसियों (बी.ए.) को एन.एफ.ई. सहित प्रारंभिक शिक्षा में नवाचारों और अनुप्रयोगों के लिए शत-प्रतिशत वित्तीय सहायता उपलब्ध करता रहा है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आग्रह पर एन.सी.ई.आर.टी. ने समीक्षा बैठकें आयोजित करने के दायित्व को अपने ऊपर लिया है, जहां शैक्षिक नवाचारों के संबंध में ऐसी सभी स्वयंसेवी ऐजेंसियां एक साथ मिलकर विचारों का आदान-प्रदान करें व सूचनाओं के व्यापक प्रचार के लिए कदम उठाए जाएं।

एन.एफ.ई. में नव प्रयोगों/नवाचारों में 34 प्रमुख स्वयंसेवी संगठन कार्यरत हैं। इन एजेंसियों के क्रियाकलापों में पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के लिए नवाचारी कार्यनीतियों के विकास, अध्यापन अधिगम कार्यनीतियों की पहचान तथा विभिन्न विकासात्मक और सामुदायिक विकास अभिमुख संगठन शामिल हैं आपसी अनुभव बांटने और कार्यक्रम के नवाचारी अनुभवों की पहचान के लिए एक-दो दिवसीय

कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें नवाचारी उद्यमों के बारे में क्षेत्रीय स्तर के आंकड़े एकत्रित करने के लिए साधनों को अंतिम रूप दिया गया। नवाचारी कार्यक्रम के क्रियान्वयन की कार्यनीतियों, क्षमताओं और आपसी विकास के क्षेत्रों में अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए दो दिवसीय विशेष दल की बैठकें भी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में नवाचारी एन.एफ.ई. और अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से शैक्षिक मध्यस्थता के क्षेत्रों में सूचना उपलब्ध करवाई गई। इसमें जिन प्रमुख मुद्दों पर चर्चा हुई वे थे : 1. नवाचारी कार्यनीतियों को राज्य के शैक्षिक कार्यक्रमों के साथ मिलाना; और 2. विभिन्न राज्यों और स्वयंसेवी संगठनों में क्षमता निर्माण के लिए तकनीकी समर्थन व्यवस्था तैयार करना।

विस्तार

एन.एफ.ई. और वैकल्पिक शिक्षण की एक वार्षिक संगोष्ठी दिनांक 26 से 28 फरवरी 1997 तक आयोजित की गई। इसमें निम्नलिखित उभरते हुए मुद्दों पर वक्तत्व दिए गए जैसे: 1. यू.ई.ई. के संदर्भ में वैकल्पिक शिक्षण की अवधारणा; 2. वैकल्पिक शिक्षण, एन.एफ.ई. और औपचारिक विद्यालय में तुलना सुनिशिचित करने के लिए कार्यनीति बनाना; तथा 3. अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका और कार्य।

एन.सी.ई.आर.टी. के संगठनात्मक स्तर के कार्यक्रमों और गतिविधियों के अतिरिक्त, एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. सहित बहुत से सरकारी संगठनों और स्वयंसेवी संगठनों को कार्यानुभव के क्षेत्र में एम.एल.एल. पर आधारित शैक्षिक कार्यक्रमों के डिजाइन तैयार करने के लिए परामर्श उपलब्ध करवाया गया।

अनौपचारिक शिक्षा की क्षेत्रीय स्तर पर आगतें

आर.आई.ई., भोपाल, ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों की स्थिति के अनुरूप वैकल्पिक शिक्षण व्यवस्था के विकास पर कार्य कर रहा है। वैकल्पिक शिक्षण परियोजना की रूपरेखा का मूल्यांकन, राजीव गांधी प्राइमरी शिक्षा मिशन के तहत मध्य प्रदेश के छह जिलों में आयोजित किया गया।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति से निपटाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. विशेष आवश्यकता वाले समूहों जैसे अनुसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा से जुड़े मामलों पर विशेष बल दे रही है। कोंध और साओरा जनजातियों के जीवन और संस्कृति के आधार पर उड़िया लिपि के माध्यम से अनुपूरक पठन सामग्री विकसित की जा रही है

6

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की प्रक्रिया को तीव्र गति से निपटाने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. विशेष आवश्यकता वाले समूहों जैसे अनुसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों की शिक्षा से जुड़े मामलों पर विशेष बल दे रही है। कोंध और साओरा जनजातियों के जीवन और संस्कृति के आधार पर उड़िया लिपि के माध्यम से अनुपूरक पठन सामग्री विकसित की जा रही है। बिहार राज्य के लिए देवनागरी लिपि में संथाली, मुन्दारी, कुरूका, खारिया तथा हो भाषाओं में कक्षा 2 के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार की गई। गुजरात की वारली और रथवा जनजातियों के लिए वारली और रथवा भाषाओं में गुजराती लिपि के माध्यम से दो प्राइमरों के प्रारूप तैयार किए गए। अनुसूचित जाति व जनजाति और अल्पसंख्यक समुदायों के प्रति प्रतिकूल भावनाओं को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक स्तर की अध्यापन अधिगम सामग्री का विश्लेषणात्मक अध्ययन जारी रखा गया। जनजातीय शिक्षा में राज्य स्तरीय कार्यकर्ताओं के अग्रणी अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। आश्रम विद्यालयों की दक्षता के निर्धारण का एक अध्ययन प्रगति पर है। मकतबों/मदरसों जैसे पारम्परिक संस्थानों में पढ़ने वाले बच्चों को अन्य विद्यालयों के बच्चों के समकक्ष लाने के लिए एम.एल.एल. के संदर्भ में, पाठ्यचर्या में सुधार लाने हेतु पाठ्यचर्या के विश्लेषण पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। मध्य प्रदेश राज्य से पाठ्यचर्या तथा अनुदेशी सामग्री एकत्रित की जा रही है। केरल और उत्तर प्रदेश से सामग्री और आंकड़ों आदि को एकत्र करने का कार्य प्रगति पर है। अल्पसंख्यक संस्थानों में पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए "प्रशिक्षण पैकेज" की अंतिम रूपरेखा तैयार की जा रही है। अल्पसंख्यक संस्थानों के अध्यापकों की भूमिका पर एक परिप्रेक्ष्य पत्र तैयार किया जा रहा है।

डी.ई.जी.एस.एन. द्वारा वर्ष 1996-97 के दौरान निकाली गई रिपोर्ट तथा अन्य सामग्री

जनजातिय छात्रों के लिए अनुपूरक पठन सामग्री

1. साओरा संस्कृति
2. कोंध संस्कृति
3. साओरा लोक कथाएं
4. कोंध लोक कथाएं (गाग्डुलिपि)

जनजातीय बोलियों में पाठ्यपुस्तकें

1. संथाली भाषा (बिहार) में कक्षा 2 के लिए प्राइमर पाठ्यपुस्तक
2. मुन्दारी भाषा (बिहार) में कक्षा 2 के लिए प्राइमर पाठ्यपुस्तक
3. कुरुख भाषा (बिहार) में कक्षा 2 के लिए प्राइमर/ पाठ्यपुस्तक

4. खारिया भाषा (बिहार) में कक्षा 2 के लिए प्राइमर/पाठ्यपुस्तक
5. हो भाषा (बिहार) में कक्षा 2 के लिए प्राइमर/पाठ्यपुस्तक
6. वार्ली भाषा (गुजरात) में कक्षा 1 के लिए प्राइमर/पाठ्यपुस्तक
7. रथवा भाषा (गुजरात) में कक्षा 1 के लिए प्राइमर/पाठ्यपुस्तक

(सभी पाण्डुलिपि के रूप में)

विकलांग बच्चों की शिक्षा

विषय विशेषज्ञों, अध्यापकों, अभिभावकों, प्रशासकों और कें.मा.शि.बोर्ड के अधिकारियों के एक समूह ने प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए परीक्षा प्रणाली में संभावित लचीलापन लाने पर विचार किया

7

विकलांग बच्चों की शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बहुत से कार्यक्रम/परियोजनाएं चला रही है। वर्ष 1996-97 के दौरान चलाए गए कार्यक्रमों/परियोजनाओं का विवरण निम्नलिखित हैं :

विकलांग बच्चों के लिए एकीकृत शिक्षा के सफल कार्यान्वयन के लिए उनमें क्षमता पैदा करने हेतु राज्यों में आई.ई.डी.सी. को सुदृढ़ बनाना

सात राज्यों के कार्मिकों को अपने-अपने राज्यों में आई.ई.डी. सी. को मजबूती प्रदान करने के लिएं कार्रवाई योजना तैयार करने हेतु एक कार्यशाला आयोजित की गई। अध्यापक प्रशिक्षण, पाठ्यचर्या समायोजन और उसे अपनाने तक अध्ययन शिक्षण सामग्री के विकास के लिए सहायता व उपकरण उपलब्ध करवाने हेतु शैक्षिक आवश्यकताओं का मूल्यांकन किया गया। आई.ई.डी.सी. में शामिल संकाय को कक्षा की स्थिति में विकलांग बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को जानने के लिए, प्रशिक्षण दिया गया। इन बच्चों को कक्षा में पढ़ाने के लिए संगत शिक्षण कार्यनीतियाँ भी तैयार की गई।

एकीकृत विद्यालयों में बधिर बच्चों को हिन्दी भाषा का शिक्षण

बधिर बच्चों को कठिनता से समझ में आने वाले विभिन्न शब्दों संकल्पनाओं, उक्तियों तथा भावों को जानने के लिए संकाय ने अध्यापकों और विशेषज्ञों से विचार-विमर्श किया। कुछ विद्यालयों द्वारा तैयार की गई साक्षात्कार अनुसूचियों और अवलोकन अनुसूचियों को तैयार किया तथा कुछ विद्यालयों का दौरा भी किया गया। इस अध्ययन के परिणामों के आधार पर, प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों और अनुसंधानकर्ताओं के लिए एक पुस्तिका निकाली जा रही है। इसमें 1. प्रारंभिक कक्षाओं में बधिर बच्चों को दी जाने वाली पाठ्यचर्या; और 2. एकीकृत विद्यालयों में बधिर बच्चों के लिए प्रभावी भाषा विकास कार्यक्रम के दिशानिर्देशों को भी शामिल किया गया।

प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए परीक्षा प्रणाली

विषय विशेषज्ञों, अध्यापकों, अभिभावकों, प्रशासकों और कें. मा.शि.बोर्ड के अधिकारियों के एक समूह ने प्रारंभिक और माध्यमिक स्तरों पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए परीक्षा प्रणाली में संभावित लचीलापन लाने पर विचार किया। इसके लिए अभिभावकों अध्यापकों और बच्चों के विचारों को उपयुक्त उपकरणों के माध्यम से एकत्र किया गया। एकत्रित सूचना के विश्लेषण के आधार पर पहचान की प्रक्रियाओं, प्रावधानों के प्रमाणीकरण ओर प्राधिकरण पर विचार-विमर्श किया गया और उसे अन्तिम रूप दिया गया। कक्षा 1-5 और 6-10 के निम्न अधिगम स्तर वाले बच्चों के लिए विशिष्ट परीक्षा प्रावधानों को तैयार किया गया।

अधिगम में असमर्थ बच्चों को पढ़ाने वाले प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पैकेज

सेवाकालीन और सेवा-पूर्व अध्यापकों के लिए वर्तमान अध्यापन अधिगम प्रणालियों के अनुकूल प्रशिक्षण सामग्री विकसित करने हेतु अध्ययन किया जा रहा है। कक्षा के अलग-अलग केसों का अवलोकन किया जा रहा है। आँकड़ा विश्लेषण के आधार पर एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया जाएगा।

गैर-सरकारी संगठनों के लिए अभिविन्यास कार्य

विकलांगों की समेकित शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दक्षिण क्षेत्र के गैर-सरकारी संगठनों के लिए केरल में एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। विकलांगों की शिक्षा और पुनर्वास के क्षेत्र में कार्यरत कार्मिकों को इस क्षेत्र के अद्यतन विकास से अवगत कराया गया और आई.ई.डी. सी. की संशोधित योजना की संस्तुतियों के बारे में जानकारी

दी गई। आई.ई.डी.सी. योजना के कार्यान्वयन और इस क्षेत्र में कार्यरत अन्य विभिन्न संस्थानों/संगठनों के साथ समन्वय करने की कार्यविधि का पता लगाने के प्रयास किए गए।

विकलांगों के लिए समेकित शिक्षा (आई.ई.डी.) के अनुभवों (यूनीसेफ) का लाभ उठाते हुए आई.ई.डी. के कार्यान्वयन की योजनाओं के विकास के लिए शैक्षिक प्रशासकों का राज्य स्तरीय सम्मेलन

आई.ई.डी.सी. के कार्यान्वयन को सुदृढ़ बनाने के यूनीसेफ सहायता प्राप्त विकलांगों के लिए समेकित शिक्षा परियोजना (पी.आई.ई.डी.) के अनुभवों का लाभ उठाते हुए विकलांगों की समेकित शिक्षा हेतु योजनाएं विकसित करने के लिए शैक्षिक प्रशासकों का एक राज्य स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के भागीदारों ने आई.ई.डी.सी. के कार्यान्वयन के लिए अपेक्षित योजनाओं का विकास किया।

विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए क्षेत्रीय स्तर पर निवेश

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने अध्यापकों को अधिगम में बच्चों की असमर्थता की पहचान करने और तत्संबंधी तथा कार्यप्रणाली का विकास करने के लिए अध्यापकों को सक्षम बनाने हेतु प्रशिक्षण सामग्री का विकास किया। उच्च प्राथमिक स्तर पर मन्द अधिगम के बच्चों के लिए गणित में उपचारी अनुदेश का एक प्रशिक्षण पैकेज भी विकसित किया।

1996-97 में विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. प्रोजैक्ट इन्टीग्रेटिड एजूकेशन फार डिसेबल "ए हैंडबुक"
2. इवेल्यूऐशन स्टडी ऑफ दि ट्रेनिंग प्रोग्राम फार आई.सी.डी.एस. फंक्शनरीज फार मीटिंग अर्ली आईडैटिफिकेशन एण्ड इन्ट्रवेन्शन फॉर चिल्ड्रन विद स्पेशल नीडस

भारतीय आधुनिक शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने महिला समानता और अधिकार के लिए शिक्षा के संबंध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (1992 में किए गए संशोधन) के कार्यान्वयन के क्षेत्र में केन्द्र और राज्य सरकारों की सहायता और परामर्शकारी सेवा देना जारी रखा

बालिका शिक्षा

8

बालिका शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने महिला समानता और अधिकार के लिए शिक्षा के संबंध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (1992 में किए गए संशोधन) के कार्यान्वयन के क्षेत्र में केन्द्र और राज्य सरकारों की सहायता और परामर्शकारी सेवा देना जारी रखा। इस क्षेत्र में परिषद् के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं : 1. महिला शिक्षा के राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ तथा कुछ अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को परामर्शकारी सेवा प्रदान करता है; और 2. सार्क में कार्यकलापों के अंतर्गत महिला शिक्षा के लिए एक नोडल संगठन के रूप में कार्यरत है। लिंग असमानता और लिंग भेदभाव को मिटाने के लिए नीति, नियोजन, पाठ्यचर्या और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्रों में अपेक्षित हस्तक्षेप किये जाते हैं।

महिला शिक्षा और विकास की कार्यप्रणाली पर सातवां प्रशिक्षण कार्यक्रम

महिला शिक्षा और अधिकार की कार्यप्रणाली पर सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में 18 महिला और 15 पुरूष भागीदारों ने भाग लिया। ये प्रतिभागी 18 राज्यों और संघ-शासित क्षेत्र जैसे—मिजोरम, नागालैंड, मणिपुर, असम, केरल, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, पांडिचेरी, गोवा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, राज्स्थान, बिहार, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू और काश्मीर से थे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की कार्यप्रणाली में सहभागिता और विविध सांस्कृतिक समूहों के बीच पूर्णतः पारस्परिक परिसंवाद पर अत्यधिक बल था। कार्यक्रम में प्रयोग के लिए एक प्रशिक्षण मार्गदर्शिका और अन्य सामग्री विकसित की गई।

महिला अधिकार के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण पर कार्यसमूह की रिपोर्ट

केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड द्वारा गठित कार्य समूह ने 15-35 आयु-वर्ग की महिलाओं की शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण का विश्लेषण किया और संक्षिप्त पाठ्यक्रम के पुनर्गठन के संबंध में अपनी संस्तुतियाँ दी। अध्यक्ष, महिला शिक्षा अध्ययन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. इस समूह की संयोजक थी।

महिला शिक्षा से संबंधित अध्ययन

चार मुख्य उत्तरी राज्यों—मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान के "ग्रामीण क्षेत्रों" में महिला शिक्षकों की भर्ती और तैनाती से संबंधित घटकों की पहचान पर एक अध्ययन पूरा किया। इस अध्ययन में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार की तकनीकों का प्रयोग किया गया और सहभागिता की पद्धति को अपनाया गया। इसे दो भागों में पूरा किया गया: 1. प्रणाली विश्लेषण (ग्रामीण क्षेत्रों में प्रारंभिक विद्यालयों के अध्यापकों की भर्ती, तैनाती और स्थानान्तरपत्र; 2. अध्यापकों और माता-पिता के बीच प्रचार-प्रसार तथा साक्षात्कार कार्यक्रमों और सामूहिक चर्चा के माध्यम से एकत्रित सूचनाओं का विश्लेषण। इस अध्ययन के निष्कर्ष और संस्तुतियां राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला अध्यापकों की भर्ती और तैनाती की पद्धतियों और प्रक्रियाओं के पुनर्गठन में सहायक होंगी। जिला प्राथमिक शिक्षा

कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के अंतर्गत आने वाले बीस जिलों की रिपोर्टों में लिंग अध्ययनों को संशोधित किया गया। आठ राज्यों के जिलों की एक राष्ट्रीय रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया गया।

छठे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के आंकड़ों का लिंग की दृष्टि से विश्लेषण किया गया और पाण्डुलिपि को मुद्रण के लिए तैयार किया गया। तिन्नारी (टी.आई.एन.एन.ए.आर.आई.) (दिल्ली राज्य आयोग के लिए तृतीय विश्व महिला अध्ययन केन्द्र) के सहयोग से दिल्ली में बालिकाओं/महिलाओं की स्थिति पर एक रिपोर्ट तैयार की गई।

लिंग समानता और लिंग रूढ़िबद्धता पूर्वाग्रह की दृष्टि से एन.सी.ई.आर.टी. की उच्च प्राथमिक स्तर की पुस्तकों का मूल्यांकन किया गया।

संसाधन सहयोग और परामर्शकारी सेवा

हरियाणा और राजस्थान राज्यों के शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों (एस.सी.ई.आर.टी.) तथा अन्य संगठनों जैसे—नीपा, आई.ए.एम.आर., दिल्ली विश्वविद्यालय, भारतीय परिवार नियोजन संघ, लोक जुम्बिश (राजस्थान) मीडिया समर्थन समूह, दिल्ली द्वारा आयोजित लिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम में संसाधन सहयोग प्रदान किया गया।

"भारत में बालिकाओं की स्थिति" शीर्षक से एक राष्ट्रीय पत्र तैयार किया और इसे "बालिका की मध्य-दशक समीक्षा" पर आयोजित सार्क कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया। सिडनी, आस्ट्रेलिया में आयोजित तुलनात्मक शिक्षा की उन्नीसवीं विश्व कांग्रेस में आलेख प्रस्तुत किए गए।

भारत सरकार और ब्रिटेन द्वारा लाल बहादुर शास्त्री अकादमी, मसूरी में लिंग नियोजन प्रशिक्षण परियोजना शीर्षक के अंतर्गत आयोजित एक छः सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी के लिए एक संकाय सदस्य को भेजा गया। इस प्रशिक्षण के बाद की अनुवर्ती निष्णात पाठ्यक्रम कार्यशाला और परियोजना संगोष्ठी के समापन पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

1996-97 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. मैनुअल एंड रिपोर्ट ऑफ द सेवन्थ ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन मैथोडोलोजी ऑफ वुमेनज़ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट (फोटोप्रति)
2. रिपोर्ट ऑन द इवेल्यूएशन ऑफ अपर प्राइमरी टेक्सबुक इन प्रीपेयर बाय एंन.सी.ई.आर.टी. फरोम जेनडर बायस प्वाइंट आफ व्यू (टंकित)
3. वूमेन हु क्रिएटेड हिस्ट्री (मुद्रणाधीन)
4. लीगल लिटरेसी फार एजुकेशनल परसोनल विद फोकस ऑन गर्ल एण्ड वूमैन रिसोर्स मैटिरियल (मुद्रणाधीन)
5. सिचुएशन ऑफ गर्ल्स एण्ड वूमैन इन दिल्ली
6. वूमैन्स इक्वैलिटी एंड इम्पावर थ्रू कुरीकुलम हैंडबुक फार टीचर्स एट अपर प्राइमरी स्टेज
7. रिपोर्ट ऑफ द सेन्ट्रल सोशल वेलफेयर बोर्ड वर्किंग ग्रुप ऑन एजुकेशन एण्ड ट्रेनिंग फॉर वूमेन्स इम्पावर (फोटोप्रति)
8. बालिका में सकारात्मक आत्मबोध का विकास (मुद्रणाधीन)
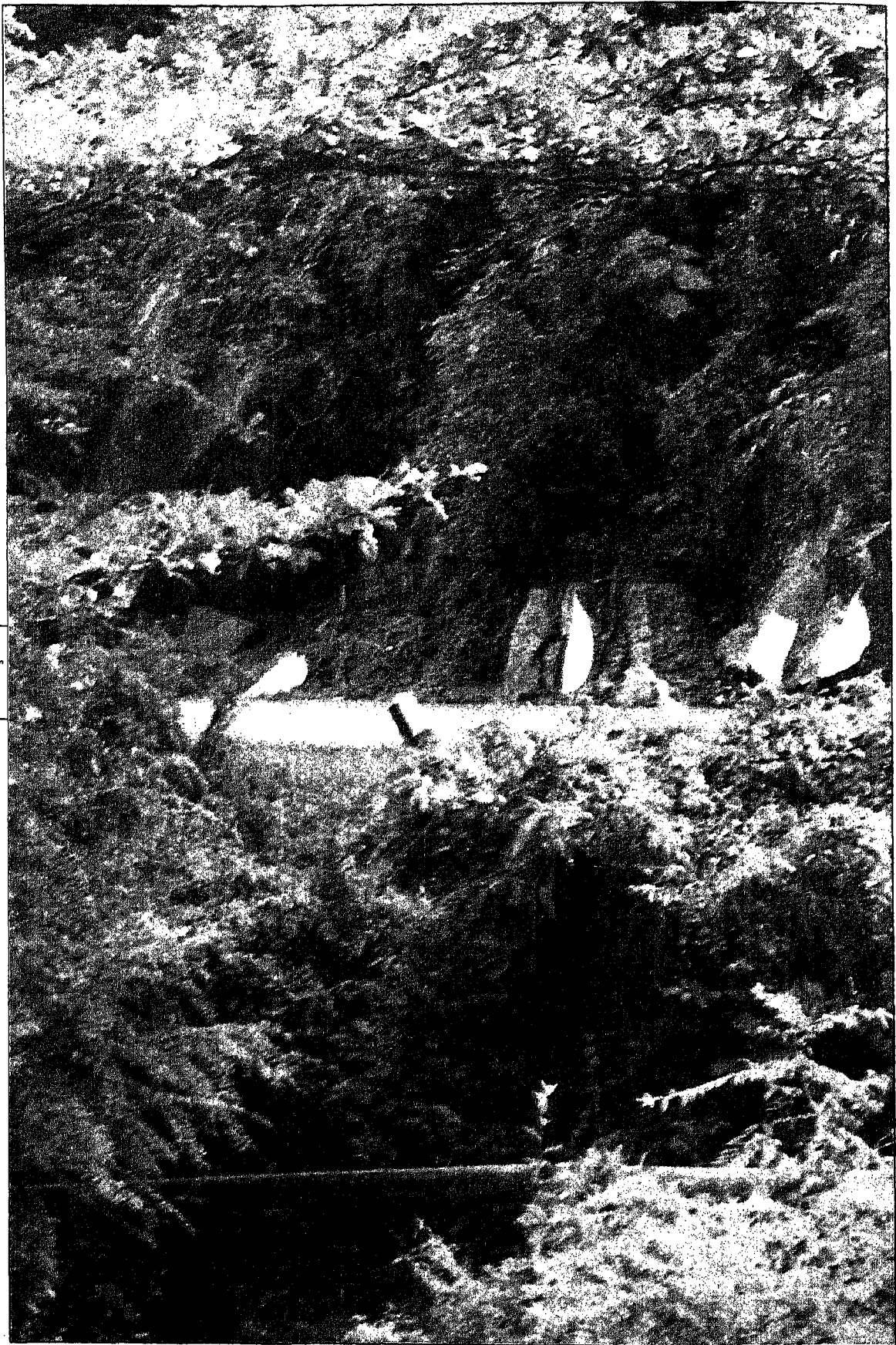
एन.सी.ई.आर.टी. विज्ञान और गणित शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए सतत एवं संपोषित प्रयास कर रही है। यह गुणात्मक सुधार के लिए विचार टैंक की भूमिका निभा रही है तथा अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, मूल्यांकन और विस्तार कार्य करती है

विज्ञान और गणित शिक्षा

9

विज्ञान और गणित शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. विज्ञान और गणित शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए सतत एवं संपोषित प्रयास कर रही है। यह गुणात्मक सुधार के लिए विचार टैंक की भूमिका निभा रही है तथा अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, मूल्यांकन और विस्तार कार्य करती है। इसके मुख्य विकासात्मक कार्यकलाप हैं : 1. विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों के लिए विज्ञान और गणित में पाठ्यचर्या का विकास; 2. छात्र-छात्राओं और अध्यापकों के लिए विज्ञान और गणित में आदिरूप पाठ्यचर्यात्मक सामग्री का विकास; और 3. विज्ञान और गणित में मूल पाठ्यसामग्री। समस्त पाठ्यचर्या के माध्यम से पर्यावरण शिक्षा के तत्वों को समाविष्ट किया जाता है।

नई-विधियों और प्रौद्योगिकी के साथ अध्ययन अधिगम की कार्यनीतियों के प्रयोग किए जाते हैं। विज्ञान और गणित की संकल्पनाओं के प्रभावी अध्यापन अधिगम के लिए तीन विमितीय अभिमुख कार्यकलाप मॉडलों और प्रयोगशाला कौशलों की रूपरेखा बनाई गई और उन्हें विकसित किया गया। उपयुक्त मॉडलों के डिजाइन के जरिए प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के 'पोषण कार्यक्रम करने के भी कदम उठाए गए। इस पोषण कार्यक्रम को आयोजित करने हेतु विभिन्न शिक्षणों में विकसित अध्ययन निर्देशिकाओं और चुनौतीपूर्ण समस्याओं का प्रयोग किया गया। मंद गति के विद्यार्थियों के लिए निदानात्मक परीक्षण और उपचारी सामग्री का भी विकास किया गया। गणित और विज्ञान शिक्षा के अन्य महत्वपूर्ण कार्यकलाप है: रूचिकर पठन सामग्री और पूरक पुस्तकों के उत्पादन द्वारा विज्ञान को लोकप्रिय बनाना, विद्यालयेत्तर कार्यकलापों को बढ़ावा देना जिसमें विज्ञान प्रदर्शनी और "स्कूल सांइस" पत्रिका के जरिए वैज्ञानिक नवाचारों, संकल्पनाओं का प्रचार-प्रसार शामिल है।

विज्ञान में पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) 1986 के अनुसरण में पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का संशोधन/पुनर्लेखन किया गया। तत्पश्चात विभिन्न स्रोतों—विद्यार्थियों, अध्यापकों और प्रयोक्ता अभिकरणों, जैसे: केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) शिक्षा निदेशालय से विज्ञान में पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के विभिन्न पहलुओं पर पुनर्निदेशन प्राप्त किया गया। वर्तमान सामग्री की क्षमता और कमियों को ध्यान में रखते हुए पुनर्निदेशन का विश्लेषण किया गया। यह अनुभव किया गया कि पहचानी गई पाठ्यचर्या के 1. प्रकृति की दुनिया के बारे में जानकारी; 2. विज्ञान की संकल्पनाओं और सिद्धान्तों की जानकारी; 3. विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज के अन्यौन्याश्रय को बढ़ावा देना; और 4. विद्यार्थियों को अर्थपूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए कुछ मूल्यों और आदतों को आत्मसात करने जैसे पहलुओं पर ध्यान रखने के लिए पाठ्यचर्या को पर्याप्त रूप से लचीला बनाया जाना चाहिए।

1996-97 में माध्यमिक स्तर के लिए सैद्धान्तिक और प्रयोगशाला कार्य के संशोधित विज्ञान पाठ्यविवरणों का प्रारूप तैयार किया गया। कक्षा 9 और 10 के लिए विषय-वस्तु की पहचान करते समय सैद्धान्तिक और अनुपयुक्त पहलुओं के बीच संतुलन बनाए रखा गया। तदनुसार कक्षा 9 के लिए विषय-वस्तु में 9 और कक्षा 10 के लिए इकाइयों को क्रमबद्ध किया गया। कक्षा 9 के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों को विकसित करने के लिए कदम उठाए गये।

गणित में पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री

विज्ञान पाठ्यपुस्तकों की भांति, विद्यालयी शिक्षा स्तर के लिए गणित की पुस्तकें पिछले 8-9 वर्षों में प्रयोगरत हैं। प्रयोगकर्ताओं (विद्यार्थियों, अध्यापकों आदि) से बहुत से पश्चपोषण प्राप्त हुए थे। विभिन्न राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों के पाठ्य विवरण का विश्लेषण किया गया। इन्टरनेट और पुस्तकालयों के जरिए कुछ विकसित देशों की गणित पाठ्यचर्या को एकत्रित किया गया। विश्लेपण और उपलब्धियों के आधार पर अध्यापकों और विषय-विशेषज्ञों द्वारा माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के गणित पाठ्यविवरण के पारूप की समीक्षा की गई। माध्यमिक स्तर पर वर्तमान पाठ्यचर्या में अन्तर यह है कि प्रस्तावित पाठ्यविवरण में

वाणिज्यक गणित के वास्तविक भाग को शामिल किया गया है। कक्षा 10 में प्रायिकता की प्रारम्भिक संकल्पना को शामिल किया जाना है। वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के लिए गणित पाठ्य विवरण के प्रारूप में केन्द्रिक और वैकल्पिक संकल्पनाएं प्रस्तावित हैं।

उच्च प्राथमिक स्तर पर गणित में न्यूनतम अधिगम स्तर

उच्च प्राथमिक स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तर की पहचान और पाठ्यचर्या निर्देशिका का विकास परियोजना पर दो चरणों में कार्य किया गया। प्रथम चरण में, अध्यापकों और विद्यार्थियों (कक्षा 7,8 और 9) की संकल्पनात्मक कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान पाठ्य विवरण का विश्लेषण किया गया। इस प्रयोजन के लिए 27 विद्यालयों जिसमें प्रायोगिक विद्यालयों, केन्द्रीय विद्यालय संगठन के विद्यालयों, सरकारी विद्यालयों और पब्लिक स्कूलों में एक प्रश्नावली भेजी गई। विषय-वस्तु के विश्लेषण से वर्तमान पाठ्यविवरण में कठिन संकल्पनाओं की सूची तैयार की गई जिस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता थी। दूसरे चरण में उन विषयों की विस्तृत रूपरेखा की पहचान की गई जिन्हें उच्च प्राथमिक स्तर पर एम.एल.एल. के लिए आधार बनाया जाएगा।

गणित प्रयोगशाला के लिए कार्यकलाप

बच्चों के लिए कुछ संक्षिप्त संकल्पनाओं के बोध को सुगम बनाने के लिए यह वांछनीय है कि इनका ठोस क्रियात्मक स्तर निकाला जाए। जहाँ बच्चे कार्यकलापों के माध्यम से संकल्पनाओं की जांच कर सकें और उनकी प्रमाणिकता को सत्यापित कर सकें। इसे ध्यान में रखते हुए. गणित में वर्तमान पाठ्यविवरण से उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तरों पर कुछ कार्यकलापों की पहचान की गई। विभिन्न चार्ट और तीन आयामी मॉडल विकसित किए गए। इसके अतिरिक्त कैल्कुलेटर/कंप्यूटर का प्रयोग करके विभिन्न विषयों पर उदाहरण सहित लगभग 100 कार्यपत्र विकसित किए गए।

गणित में कमजोर विद्यार्थियों के लिए सामग्री

माध्यमिक स्तर के कमजोर विद्यार्थियों के लिए बीजगणित के बेसिक विषयों पर निदानात्मक परीक्षण और उपचारी सामग्री का विकास तथा उपचारी अनुदेशी सामग्री की प्रभाविता का अध्ययन। परियोजना के अंतर्गत दिल्ली में पॉच विद्यालयों के कक्षा 6 के विद्यार्थियों की बीजगणितीय अभिव्यक्ति के विषयों का संप्राप्ति परीक्षण किया गया। विषयों की उन उप-संकल्पनाओं की पहचान के लिए विद्यार्थियों के संप्राप्ति अंकों का विश्लेषण किया जिनमें उनके संप्राप्ति अंक कम थे। इसके लिए उपचारी सामग्री का विकास किया गया और विषय के अध्यापकों से उसकी समीक्षा करवायी गई। एक अन्य समानान्तर संप्राप्ति परीक्षण पत्र तैयार करके विद्यार्थियों को दिया गया। इसके आधार पर एकत्रित अंकों का विश्लेषण किया जा रहा है।

विज्ञान में प्रयोगशाला अभिमुख कार्यक्रम

रसायनशास्त्र में प्रयोगशाला कौशल

संज्ञानात्मक ज्ञान और हस्तकौशल अर्जित करने के लिए विद्यार्थियों को प्रयोगशाला में प्रयोगात्मक कार्य करना चाहिए। वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान में प्रयोगशाला कौशल पर सामग्री तैयार की गई।

मॉडलों और प्रयोगों का विकास

भौतिकशास्त्र और रसायनशास्त्र के औपचारिक स्तर के विषयों में तीस प्रयोग (रसायनिक समतुल्यता, विद्युत रसायन और रसायनिक ऊर्जा, रसायनिक गति की और रिडेक्स क्रियाएं विकसित किए गए और उनकी प्रभाविका के मूल्यांकन के लिए उनका परीक्षण किया गया।

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के लिए भौतिकशास्त्र की प्रायोगिक पाठ्यचर्या

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा हाल ही में किए गए अध्ययन बताते हैं कि बोर्ड द्वारा निर्धारित वर्तमान भौतिकशास्त्र की प्रायोगिक पाठ्यचर्या के लिए विकसित दो महत्वपूर्ण प्रायोगिक कौशल—1. नियोजन और डिजाइन; तथा 2. अनुप्रयोग समुचित रूप से पर्याप्त नहीं है। अतः 1996-97 में संज्ञानात्मक विज्ञान के क्षेत्र में अद्यतन प्रगति पर आधारित एक नई भौतिकी प्रायोगिक पाठ्यचर्या की रूपरेखा विकसित की गई। इसमें भौतिकी में अनुदेशी उपागम, एक प्रयोगशाला पाठ्यक्रम कार्य के निर्धारण के लिए अनुकरणीय अभ्यास और भौतिकी के प्रायोगिक कार्यों के मूल्यांकन के लिए एक नई संरचना शामिल है।

विज्ञान और गणित में प्रतिभा का पोषण

1. कक्षा 11 और 12 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भौतिकी में एक मॉडल पोषण कार्यक्रम आरंभ किया गया है। मॉडल की रूपरेखा और कक्षा 11 की पाठ्यचर्या से संबंधित पूर्व-परीक्षण और परीक्षणोत्तर सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक अध्ययन निर्देशिकाएं विकसित की गई हैं।
2. दिल्ली के कुछ चुनिंदा केन्द्रीय विद्यालयों के कक्षा 11 के कुछ प्रतिभाशाली विद्यार्थियों पर रसायनशास्त्र में चुनौतीपूर्ण प्रश्नों का परीक्षण किया गया। विद्यार्थियों से प्राप्त पुनर्निवेशन के आधार पर समस्याओं की कठिनाई के स्तर पर आकलन किया गया। कक्षा 12 के चुनौतीपूर्ण प्रश्नों का विकास किया गया और विद्यालयों में उनका परीक्षण किया जाएगा।
3. वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के लिए गणित में चुनौतीपूर्ण प्रश्नों का विकास किया गया और एक कार्यशाला में उनमें अनुकूलतम संशोधन किया गया।

विज्ञान और गणित की लोकप्रियता

विज्ञान और गणित को रूचिकर और लोकप्रिय बनाने के लिए "रीडिंग टू लर्न" परियोजना जिसका उद्देश्य बच्चों को विज्ञान और गणित के महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध कराना है। इन पुस्तकों को पाठ्यचर्या में सामान्यत सम्मिलित नहीं किया जाता है किन्तु विज्ञान के क्षेत्र में ये समसार्थक विषय के रूप में चर्चित हो रहे हैं। इन परियोजना के अंतर्गत 1996-97 के दौरान दो पुस्तकें प्रकाशित की गई :

1. प्राचीन भारतीय गणित की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक झलकियाँ
2. मध्यकालीन भारतीय गणित की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक झलकियाँ

निम्नलिखित पुस्तकों की पाण्डुलिपियाँ तैयार की गई :

1. सोलर एनर्जी (सौर ऊर्जा)
2. हमारा आकाश मैला क्यों ?
3. मरूस्थल जीवन एवं विज्ञान

इसके अलावा निम्नांकित शीर्षकों: दूरवर्ती संवेदन "कार्बन-60", संचार, बहुमाध्यम, भूकम्प विज्ञान और भूकम्प, "भौगोलिक पुर्वेक्षण", "अंगुली छाप", "हरगोविंद खुराना और गुण सूत्र", और "डा० साहा और उनका सूत्र" के लिए सामग्री का विकास कार्य प्रगति पर है। "रीडिंग टू लर्न" परियोजना के अंतर्गत 25 से भी अधिक पुस्तकें तैयार करके सममूल्य प्रकाशनों के रूप में उन्हें प्रकाशित किया गया है।

दूसरी परियोजना "सम इन्ट्रेस्टिंग टॉपिक्स इन केमिस्ट्री: डवेलपमेंट ऑफ माड्यूल" के अंतर्गत पूर्व वर्षो में तीन मॉड्यूल विकसित किए गए थे। 1996-97 में एक माड्यूल "हेवी मेटल पॉल्यूशन" विकसित किया गया और उसका प्रचार-प्रसार किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, 28.2.1997

खुले सदन के माध्यम से प्रचार-प्रसार

28 फरवरी 1997 को "राष्ट्रीय विज्ञान दिवस" के अवसर पर निम्मलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :

1. स्कूली बच्चों के लिए खुला सदन आयोजित किया गया जिसमें दिल्ली के विद्यालयों के बच्चों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में जिन बच्चों ने भाग लिया उन्होंने एन.सी.ई.आर.टी. के

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग की रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान और जीव विज्ञान की प्रयोगशालाओं में नवाचारी प्रयोगों का अवलोकन किया और उनमें गहरी रुचि ली।

2. "इंडिया ऑफ माई ड्रीम" के अंतर्गत "वंडर ऑफ न्यू बॉयोलोजी" पर सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफेसर जी.पी. तलवार ने व्याख्यान किया। प्राइमरी मेथमेटिक्स पर तमिलनाडु के श्री एन.सी. रेड्डी ने व्याख्यान किया।

स्कूल साइंस

यह त्रैमासिक पत्रिका अध्यापकों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को विज्ञान और गणित के विभिन्न पहलुओं से संबंधित उनके दृष्टिकोणों के प्रचार-प्रसार, अनुभवों और नवाचारों के लिए एक मंच प्रदान करती है। यह पत्रिका विज्ञान और गणित के क्षेत्र में अद्यतन विकास विषय-वस्तु संवर्धन और विज्ञान और गणित के अध्यापन/अधिगम से संबंधित सामग्री की विस्तृत संग्रह को भी शामिल कर लेती है। शीर्षस्थ वैज्ञानिकों का एक-एक संपादकीय सलाहकार बोर्ड इस पत्रिका के संपूर्ण सुधार के लिए दिशानिर्देश प्रदान करता है। पत्रिका में आगामी सुधार के लिए अनुशंसा करने के अतिरिक्त पत्रिका की प्रगति की समीक्षा के लिए बोर्ड की वार्षिक बैठक होती है। वर्ष 1996-97 में पत्रिका के न केवल पिछले अंकों को निकाला गया अपितु पत्रिका के प्रकाशन को अद्यतन बनाया गया।

विद्यालेत्तर कार्यकलाप : विज्ञान प्रदर्शनी

बच्चों के लिए जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी: राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी को आयोजित करने के मुख्य उद्देश्य हैं: 1. बच्चों की वैज्ञानिक प्रतिभा का प्रदर्शन करना और उन्हें प्रोत्साहन देना; 2. बच्चों को समाज में विज्ञान की प्रासंगिकता और भावी वैज्ञानिक के रूप में उनके उत्तरदायित्वों से अवगत कराना; 3. बच्चों में सृजनात्क चिंतन और अन्वेषण की प्रकृतिक विकसित करना और उनमें अपने आप मॉडल और साधारण उपकरण बनाने के हस्तशिल्प-कौशल को बढ़ावा देना; 4. युवा पीढ़ी में विज्ञान के प्रति रुचि जागृत करना और उनमें वैज्ञानिक चेतना विकसित करना; 5. विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में समस्या-समाधान उपागम और अनुकूल प्रौद्योगिकी के विकास के लिए प्रोत्साहित करना तथा दैनिक जीवन की परिस्थितियों से संबंधित वैज्ञानिक विचारधाराओं का समायोजना करना; 6. प्रतिभागियों में सौंदर्यबोध और दल भावना विकसित करना; 7. जनसाधारण में विज्ञान को लोकप्रिय बनाना और देश की सामाजिक-आर्थिक उन्नति में विज्ञान की भूमिका की जानकारी देना; और 8. विज्ञान के संप्रेषण और प्रचार-प्रसार के लिए उपयुक्त तकनीकों का विकास करना।

जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी 1997

बच्चों के लिए 23वीं जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी उड़ीसा सरकार के सहयोग से 13 से 19 जनवरी 1997 तक भुवनेश्वर में आयोजित की गई। प्रदर्शनी का मुख्य विषय *विकास के लिए विज्ञान और सस्ती प्रौद्योगिकी* था। इस प्रदर्शनी को छह उप-विषयों—भोजन, स्वास्थ्य और पोषण, ऊर्जा, पर्यावरण, उद्योग, परिवहन और संचार तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी में वर्गीकृत किया गया था। देश के विभिन्न भागों के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों से प्राप्त प्रदेशों को प्रदर्शित किया गया। एन.सी.ई.आर.टी. सहित देश की अन्य सरकारी और गैर-सरकारी एजेंसियों ने अपने स्टॉल लगाए। प्रतिभागी विद्यार्थियों, अध्यापकों और आगन्तुकों के लिए निम्नांकित निःशुल्क सूचनात्मक सामग्री प्रकाशित की गई थी: 1. फोल्डर (अंग्रेजी/हिंदी/उड़िया) जिसमें विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित करने के उद्देश्यों और लक्ष्यों सहित प्रदर्शनी की प्रमुख विशेषताओं को बताया गया था; 2. प्रदेर्शों की सूची (अंग्रेजी/हिंदी); और 3. विज्ञान मॉडलों की संरचना और कार्य के साथ कुछ मॉडलों की विशिष्टता का वर्णन किया गया था।

राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी

प्रमुख विज्ञान लोकप्रियता कार्यक्रमों में बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन एक है। वर्ष 1996-97 में 28 राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों और केन्द्रीय विद्यालय संगठन के विद्यालयों में विज्ञान प्रदर्शनियाँ आयोजित की गई। इन प्रदर्शनियों के आयोजन के लिए एन.सी.ई.आर.टी. ने रु. 12.50 लाख की सहायता प्रदान की।

राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों में मण्डलीय, जिला और क्षेत्रीय स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियों का संगम है। बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी

जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी, भुवनेश्वर: प्रतिभागी अपने-अपने प्रदर्शन दर्शाते हुए।
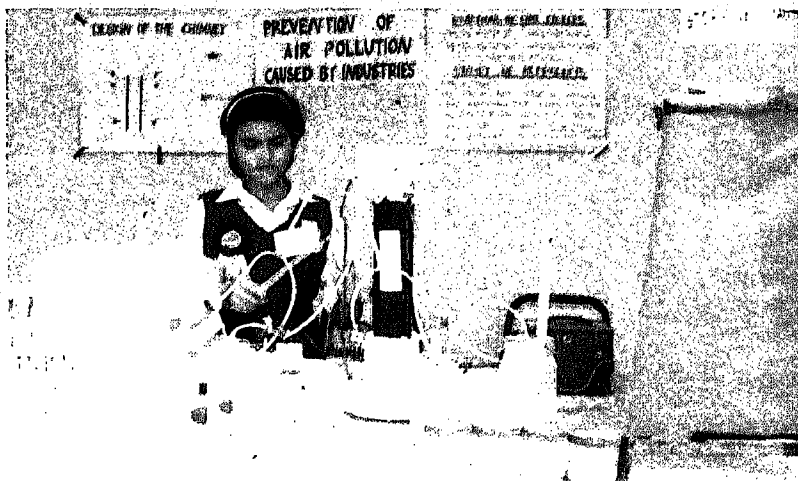
1996-97 का केन्द्रीय विषय "उत्कृष्ट जीवन के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी" था। एन.सी.ई.आर.टी. ने केन्द्रीय विषय और उप-विषय से संबंधित मॉडलों को तैयार करने के लिए दिशा-निर्देश प्रदान किए।

विद्यालयी शिक्षा का पर्यावरण अभिविन्यास

पाठ्यचर्या विकसित करने वाले शिक्षा कर्मियों के लिए पर्यावरण शिक्षा प्रशिक्षण

पर्यावरण समस्याओं के बढ़ने से समाज में उभरते पर्यावरण सरोकार बहुत तेजी से शैक्षिक सरोकार बनते जा रहे हैं और पाठ्यचर्चाएँ और अन्य शैनिक कार्यकलापों में पर्यावरण घटकों का पुन: अभिविन्यास और उनका मजबूतीकरण आवश्यक होता जा रहा है। इसके लिए शैक्षिक कार्यकर्ताओं को सतत प्रशिक्षण और पुन: प्रशिक्षण देना अपेक्षित है।

शैक्षिक कार्यकर्ताओं में क्षमता विकसित करने के एक भाग के रूप में एन.सी.ई.आर.टी. में पिछले तीन वर्षो से पाठ्यचर्चा विकसित करने वाले शिक्षा कर्मियों के लिए पर्यावरण शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस प्रशिक्षण के लिए चयनित लक्ष्य समूह राज्यों के माध्यमिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालयी शिक्षा बोर्डों और गैर-सरकारी संगठनों से पाठ्यचर्या विकास से संबंधं शिक्षाकर्मी हैं। एस. सी.ई.आर.टी. और अन्य संस्थानों को शामिल करके इस प्रशिक्षण के लक्ष्य समूह का दायरा विस्तृत किया जा रहा है।

प्रशिक्षण की विषय-वस्तु के उद्देश्य हैं—1. प्रतिभागियों को पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में हाल में हुए विकास से अवगत कराना; 2. पाठ्यचर्या में पर्यावरण घटकों को समाविष्ट करने के लिए कार्यप्रणालियां बनाना; 3. पर्यावरण शिक्षा की भूमिका के विस्तार और अपेक्षाओं की जानकारी देना; 4. पर्यावरणीय आयामों के मूल्यांकन सहित पाठ्चर्या विकास की कार्यविधि की जानकारी देना और मार्गदर्शन।

पर्यावरण शिक्षा के लिए राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र (एन.आर.सी.ई.ई.)

पर्यावरण शिक्षा विद्यालयी पाठ्यचर्या का एक अभिन्न अंग है। विद्यालय स्तर की पाठ्यचर्याओं और शैक्षिक कार्यकलापों में पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक सरोकार विशेषकर विकास से संबंधित सरोकारों पर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। पर्यावरण समस्याओं और संजीदा पर्यावरण और विकास के मुद्दों के उभरने के साथ बहुत से सरकारी और गैर-सरकारी दोनों संगठन विद्यालय प्रणाली से संबंधित पर्यावरण शिक्षा के कार्यकलापों के लिए कार्यरत है। अत: इस दिशा में नेटवर्क के माध्यम से बेहतर अन्योन्यक्रिया और परिसंवाद के इन प्रयासों को सूत्रबद्ध करने की आवश्यकता है। एक ओर विद्यालय प्रणाली शैक्षिक नियोजकों, पाठ्यचर्या विकास करने वाले शिक्षाकर्मियों और अध्यापक-प्रशिक्षणार्थियों तथा दूसरी ओर विशेषज्ञ संस्थानों के बीच अन्योन्यक्रिया और परिसंवाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1996-97 में एन.सी.ई.आर.टी., राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग में पर्यावरण शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र (एन.आर.सी.ई.ई.) का गठन किया है।

यह केन्द्र पर्यावरण शिक्षा से संबंधित सूचना और सामग्री एकत्र करता है, कार्यविधि को वर्गीकृत करता है तथा विद्यालयी शिक्षा और पर्यावरण के क्षेत्र में विशेष कार्यकलापां से संबद्ध विभिन्न संस्थानों में इनका प्रचार-प्रसार करता है। यह केन्द्र पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित पर्यावरण शिक्षा आंकड़ा बैंक भी विकसित कर रहा है।

विज्ञान और गणित शिक्षा के लिए क्षेत्रीय स्तर पर सहयोग

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने निम्नांकित विषयों के लिए विषय-वस्तु संबंधी पैकेज विकसित किए: 1. गणित के चुनिंदा विषय (राजस्थान के लिए); 2. रसायन शास्त्र (राजस्थान के लिए); भौतिक शास्त्र (राजस्थान के लिए) और जीव विज्ञान (हिमाचल प्रदेश के लिए) +2 स्तर (हरियाणा के लिए) पर गणित और रसायन-शास्त्र की विशिष्ट इकाईयों पर एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया गया और राज्य के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास किया गया। हरियाणा राज्य के पाठ्य-विवरणों के अनुसार भौतिकशास्त्र की विशिष्ट-इकाईयों पर एक प्रशिक्षण पैकेज भी विकसित किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने माध्यमिक स्तर पर विज्ञान और गणित में अधिगम अंतराल की पहचान के लिए निदानात्मक परीक्षण सामग्री विकसित की।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने गणित अध्यापन के लिए प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया और उसका परीक्षण किया रोचक एवं प्रेरणादायक प्रयोग के माध्यम से विज्ञान अध्यापन के लिए एक पैकेज विकसित किया गया। कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में विद्यार्थियों द्वारा गणित में की गई सामान्य गलतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया। सी.एच.सी.डी. उड़ीसा द्वारा वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर आयोजित परीक्षा में भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, प्राणी विज्ञान और गणित में विद्यार्थियों द्वारा की गई सामान्य गलतियों की पहचान की गई उन्हें सुव्यवस्थित करके वर्गीकृत किया गया। निष्कर्षों पर आधारित उपचारी सामग्री के प्रारूपण कार्य को नियोजित किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने माध्यमिक स्तर के गणित भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और प्राणी विज्ञान के अध्यापकों के लिए एक इक्कीस दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया। इन अध्यापकों को अतिरिक्त विषय-वस्तु सहयोग, अध्यापन-अधिगम कार्यप्रणाली और मूल्यांकन की पद्धतियों से सर्वद्धन करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण सामग्री को विशेष रूप से विकसित किया गया। प्रतिभागियों को उनकी योग्यताएँ और कौशल को उन्नत बनाने के लिए विस्तृत प्रयोगशाला अभिविन्यास प्रशिक्षण भी दिया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने कर्नाटक राज्य की कक्षा 10 की गणित पाठ्यपुस्तकों के अध्यापन में कठिन विषयों की पहचान की। गणित के अध्यापकों के लिए इन कठिन विषयों से निपटने के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया गया। केरल राज्य की कक्षा 10 के लिए संशोधित गणित पाठ्यचर्या पर आधारित एक प्रशिक्षण पैकेज बनाया गया और उसका परीक्षण किया गया।

1996-97 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. प्रेक्टिकल इन केमिस्ट्री फार क्लासेज 11 और 12
2. प्रोबल्म बुक इन मेथमेटिक्स फार क्लास-10
3. प्राचीन भारतीय गणित की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक झलकियां
4. मध्यकालीन भारतीय गणित की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक झलकियां
5. स्टेटस ऑफ डिसेक्श ऑफ ऐनिमल इन सीनियर सेकेण्डरी बॉयलोजी प्रेक्टिकल क्लास : ए स्टडी
6. क्वाटरली जर्नल "स्कूल सांइस" (4 अंक)
7. माड्यूल ऑन "हैवी मेटल पॉलूशन (फोटोप्रति)
8. लेबोरेट्री स्किल इन केमिस्ट्री एट सीनियर सैकेण्डरी स्टेज (फोटोप्रति)।

समाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

सामाजिक विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र में, एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यक्रम और कार्यकलाप पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री में अनुसंधान और विकास, अध्यापकों और अध्यापक- प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण और अभिविन्यास तथा विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए पाठ्यचर्या अनुदेशी सामग्री और अध्ययनों के विकास और मूल्यांकन में राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों के शिक्षा संस्थानों को परामर्शकारी और शैक्षिक सहयोग पर केन्द्रित रहे

10
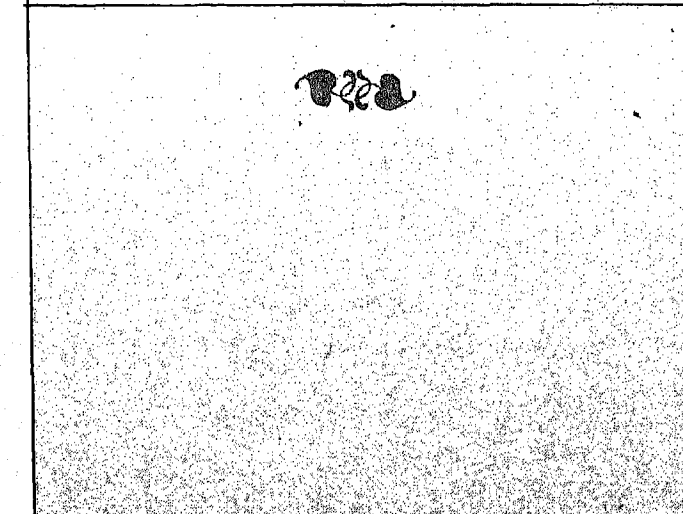
समाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

सामाजिक विज्ञान और मानविकी के क्षेत्र में, एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यक्रम और कार्यकलाप पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री में अनुसंधान और विकास, अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण और अभिविन्यास तथा विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए पाठ्यचर्या अनुदेशी सामग्री और अध्ययनों के विकास और मूल्यांकन में राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों के शिक्षा संस्थानों को परामर्शकारी और शैक्षिक सहयोग पर केन्द्रित रहे।

पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री का विकास

अध्यापकों और विद्यार्थियों से प्राप्त पुनर्निवेशन और पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के आधार पर कुछ पाठ्यपुस्तकों के संशोधित संस्करण तैयार किए गए।

हिन्दी भाषा में कक्षा 8-10 के लिए किशोर-भारती भाग-3 तथा *मानक हिंदी व्याकरण और रचना* का संशोधन कार्य आरंभ किया गया। कक्षा 7 की पाठ्यपुस्तक *"किशोर भारती"* और दो पूरक पाठमालाओं के संस्करणों को अन्तिम रूप दिया गया। संस्कृत में *सुक्ति सौरभ* का प्रारूप तैयार किया गया। अंग्रेजी के विशेष संदर्भ में द्वितीय भाषा शिक्षण के लिए पाठ्यचर्या का एक संशोधित ढांचा तैयार करने का कार्य प्रगति पर है। सामाजिक विज्ञानों में कक्षा 8, 10 और 12 के लिए भूगोल की पाठ्यपुस्तक और कक्षा 9-10 के लिए नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों का संशोधन कार्य शुरू किया गया तथा कक्षा 11 की पाठ्यपुस्तक *मेडिवल इंडिया* का हिन्दी रूपांतरण और कक्षा 11 की *ऐंसियन्ट इंडिया* का उर्दू रूपान्तरण तैयार किया गया। कला शिक्षा के क्षेत्र में, कला और चिकनी मिट्टी की मॉडलिंग पर अध्यापकों के लिए मोनोग्राफ तैयार किए गए। नए विषय के रूप उपभोक्ता शिक्षा और मानव-अधिकार शिक्षा को लिया गया है। विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए साधारण शिक्षा को एक सामान्य ढाँचे के विकास के संबंध में कई मुद्दों पर चर्चा की गई। इस क्षेत्र में आगामी कार्य के लिए यह चर्चा एक आधार होगी। मानव अधिकार शिक्षा के लिए, *ह्यूमन राइटस ए सोर्स बुक* शीर्षक पहले ही प्रकाशित पुस्तक के हिंदी और उर्दू रूपान्तरण का कार्य शुरू किया गया। वर्ष 1997-98 में पाठ्यचर्या का संशोधन कार्य करते समय मानवाधिकार से संबंधित विभिन्न विषयों को ध्यान में रखा जाएगा।

अध्ययनों की स्थिति

देश के विभिन्न भागों में विद्यालयी पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों की स्थिति के अध्ययनों को उच्च प्राथमिकता दी जा रही है। सामाजिक विज्ञानों की संपूर्ण स्थिति का अध्ययन कार्य पूरा किया गया और अध्ययन की रिपोर्ट के प्रारूप को अन्तिम रूप दिया गया। वर्ष 1995-96 के दौरान शुरू किए गए सामाजिक विज्ञान के विषयों और वाणिज्य की विषयवार स्थिति के अध्ययन कार्य को जारी रखा गया। देश में छठे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण में "त्रिभाषा सूत्र" के कार्यान्वयन की स्थिति के संबंध में आंकड़े एकत्र किए गए हैं। भाषा पाठ्यचर्या, पाठ्यविवरण, पाठ्यपुस्तक और परीक्षा में पारस्परिक संबद्धता, प्रणाली को केन्द्र में रखकर भारत में विद्यालयी पाठ्यचर्या में भाषा की स्थिति के अध्ययन के लिए एक कार्यक्रम भी आरंभ किया गया। नवोदय विद्यालयों की कक्षा 9-10 में सामाजिक विज्ञान के विषयों के लिए माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति पर एक अध्ययन पूरा किया गया तथा अरूणाचल प्रदेश के विद्यार्थियों द्वारा कक्षा 5 के अन्त में अर्जित हिन्दी भाषा के ज्ञान में भाषायी सक्षमता का मूल्यांकन कार्य आरंभ किया गया।

पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

राष्ट्रीय एकता के दृष्टिकोण से पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का कार्य जारी रहा। इस कार्य में मानवाधिकारों के पहलुओं को समाविष्ट किया गया। देश के विभिन्न भागों में प्रयोग की जानेवाली मूल्य/नैतिक शिक्षा की सामग्री के नमूने का मूल्यांकन किया गया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, और मैसूर के संबद्ध चार प्रायोगिक विद्यालयों में सामाजिक विज्ञान की एन.सी.ई.आर.टी. की चार पाठ्यपुस्तकों-इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और नागरिक शास्त्र के अनुभवाश्रित मूल्यांकन की एक रिपोर्ट को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

एक प्रश्नावली के आधार पर इन पाठ्यपुस्तकों का अध्यायवार परीक्षण किया गया। पुनर्निवेशन की आधार-सामग्री के विश्लेषण के आधार पर मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जन्म शताब्दी समारोह

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जन्म शताब्दी समारोह के एक भाग के रूप में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए एक अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में देश भर के विद्यार्थियों की अच्छी-खासी भागीदारी रही। इस प्रतियोगिता के लिए 2681 विद्यार्थियों ने प्रविष्टियाँ भेजी। पुरस्कार के लिए आठ निबंधों का चयन किया गया। (प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए एक-एक और पाँच निबन्धों के लिए सान्त्वना पुरस्कार)। सुप्रसिद्ध इतिहासकार प्रोफेसर गौतम चट्टोपाध्याय द्वारा रचित सुभाष चन्द्र बोस की एक जीवनी प्रकाशित की गई। कलकत्ता पुस्तक मेला में इस पुस्तक का विमोचन किया गया।

राष्ट्रीय बाल साहित्य पुस्तक प्रतियोगिता

29वीं राष्ट्रीय बाल साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता (संविधान की आठवीं सूची में सम्मिलित सभी 18 भाषाओं सहित) 19 भाषाओं और अंग्रेजी में बाल साहित्य को बढ़ावा देने के साथ-साथ उत्कृष्ट बाल साहित्य को मान्यता देने और पुरस्कृत करने के उद्देश्य से दो वर्षों में एक बार आयोजित की जाती है। इस प्रतियोगिता के लिए "बच्चों की दुनिया—उनके अधिकार सुख शान्ति और गौरव, शीर्षक पर तैयार पांडुलिपियां तथा 1993 और 1994 के दौरान प्रकाशित बाल पुस्तकें आमंत्रित की गई। विभिन्न भाषाओं की 969 प्रविष्टियों में से 28 पुस्तकों और पांडुलिपियों को पुरस्कार के लिए चुना गया। पुरस्कार विजेताओं में अल्प आयु वर्ग 5-8 वर्ष के लिए रचित इन 28 पुरस्कृत पुस्तकों और पाण्डु-लिपियों के लेखक तथा कलाकार/चित्रकार थे।

मानवाधिकार शिक्षा पर राष्ट्रमंडल परियोजना

लंदन शिक्षा संस्थान विश्वविद्यालय के बहुसांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र द्वारा प्रायोजित चार देशों के अध्ययन के एक भाग के रूप में "युवाओं में मानवाधिकार की समझ" पर एक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में भाग लेने वाले अन्य राष्ट्रमंडल देश थे—बोतस्वाना, जिम्मबाबवे और ब्रिटेन का दक्षिण आयरलैंड। अध्ययन के भारतीय भाग पर पाठ्यचर्या और शैक्षिक सामग्री का मूल्यांकन तथा एक प्रश्नावली के द्वारा मानवाधिकारों के बारे में विद्यार्थियों के दृष्टिकोणों का सर्वेक्षण शामिल था। यह प्रश्नावली देश के विभिन्न भागों में आठ चुनिंदा विद्यालयों में वितरित की गई और विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा प्रशासकों के साक्षात्कार लिए गए।

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा के लिए क्षेत्र स्तरीय सहयोग

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने 1. सामाजिक विज्ञान शिक्षण (हिमाचल प्रदेश के लिए), और 2. उर्दू शिक्षण (जम्मू और कश्मीर के लिए) प्रशिक्षण पैकेज विकसित किए। राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के लेखाशास्त्र (व्यावसायिक) के सभी पाठ्य विवरणों पर बही खाता (बुक कीपिंग) के पहले से विकसित अभ्यास सेटों का क्षेत्र परीक्षण किया गया। संपेक्षा विधि का प्रयोग करके अंग्रेजी शिक्षा पर एक अध्ययन किया गया। अर्थशास्त्र में एक स्रोत पुस्तक विकसित की गई।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने संप्रेषण विधि का प्रयोग करके अंग्रेजी शिक्षण के तकनीकों का विकास किया और इनका परीक्षण किया। अंग्रेजी के अध्यापकों को सी.बी. एस.ई. नीति के एक सेट के संबंध में समझाने के लिए प्रशिक्षण भी दिया गया। अध्यापकों के लिए एक स्रोत पुस्तक भी तैयार की गई।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने मैसूर नगर के अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज का विकास किया और उसका परीक्षण किया। माध्यमिक विद्यालयों के अंग्रेजी अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रयोग करने के लिए इस पैकेज को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

1996-97 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. हिंदी शिक्षण पाठ्य योजनाएं
2. जवाहर नवोदय विद्यालय की नौवीं और दसवीं कक्षाओं में सामाजिक विज्ञान के विषयों के लिए माध्यम भाषा के रूप में हिंदी भाषा के प्रयोग की स्थिति शिक्षा-सत्र 1994-95 के आधार पर (टंकित)
3. बाल-भारती, भाग 1
4. बाल-भारती, भाग 2
5. सुभाप चन्द्र वोस—ए वायोग्राफी
6. विजनेस स्टडिज, पार्ट 2
7. यंग पीपुल्स, अंडर स्टेंडिंग ऑफ ह्यूमन राइट्स—ए फोर कन्ट्री स्टडी (एक राष्ट्रीय मण्डल परियोजना) कन्ट्री रिपोर्ट : इंडिया (चर्चा के लिए प्रारूप) (कंप्यूटर मुद्रित)

29वीं बाल साहित्य पुस्तक प्रतियोगिता की कुछ पुरस्कृत पुस्तकें।

परीक्षा सुधार

एन.सी.ई.आर.टी. परीक्षा सुधार के क्षेत्र में मापन और मूल्यांकन से संबंधित विभिन्न कार्यकलापों से संबद्ध हैं। इस क्षेत्र के कार्यक्रम विशेष रूप से छात्रों के संज्ञान तथा विकास के प्रभावी और क्रियात्मक पक्षों के मूल्यांकन और निर्धारण के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों, साधनों और प्रविधियों की रूपरेखा बनाने, उनका विकास तथा मानकीकरण करने, शैक्षिक परीक्षण और मापन एवं मूल्यांकन तथा प्रमुख संसाधन कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए अनुसंधान को बढ़ावा देने तथा अनुसंधान कार्य आयोजित करने, परीक्षा सुधार के क्षेत्र में परामर्शकारी सेवाएं और समन्वय तथा शोधन-गृह संबंधी कार्यकलापों को करने की ओर निर्देशित हैं

11

परीक्षा सुधार

एन.सी.ई.आर.टी. परीक्षा सुधार के क्षेत्र में मापन और मूल्यांकन से संबंधित विभिन्न कार्यकलापों से संबद्ध हैं। इस क्षेत्र के कार्यक्रम विशेष रूप से छात्रों के संज्ञान तथा विकास के प्रभावी और क्रियात्मक पक्षों के मूल्यांकन और निर्धारण के लिए वैज्ञानिक पद्धतियों, साधनों और प्रविधियों की रूपरेखा बनाने, उनका विकास तथा मानकीकरण करने, शैक्षिक परीक्षण और मापन एवं मूल्यांकन तथा प्रमुख संसाधन कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए अनुसंधान को बढ़ावा देने तथा अनुसंधान कार्य आयोजित करने, परीक्षा सुधार के क्षेत्र में परामर्शकारी सेवाएं और समन्वय तथा शोधन-गृह संबंधी कार्यकलापों को करने की ओर निर्देशित हैं।

कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षा में प्राणी विज्ञान, भौतिक विज्ञान में बच्चों की परीक्षा में अशुद्धियों का गुणात्मक विश्लेषण

सभी प्रकार के विद्यालयों के कक्षा 12वीं के प्राणी विज्ञान, भौतिक विज्ञान, और रसायन विज्ञान के विषयों की सी.बी.एस.ई. की उत्तर पुस्तिकाओं के नमूने का यादृच्छिक चयन करने के उपरान्त एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें अध्यापकों और मूल्यांकन विशेषज्ञों ने आवृत्ति सहित त्रुटियों की पहचान की और उन्हें रिकार्ड किया। इन त्रुटियों का एक संक्षिप्त विवरण तैयार किया गया। इस प्रकार की त्रुटियों के संभावित कारणों और इन त्रुटियों को दूर करने के उपायों का उल्लेख किया गया। प्राणी विज्ञान, भौतिक विज्ञान, और रसायन विज्ञान में छात्रों की अशुद्धियों के गुणात्मक विश्लेषण की विषयवार रिपोर्ट तैयार की गई और इसका विद्यालय शिक्षा बोर्डों में प्रचार-प्रसार किया गया ताकि वे इस प्रकार के अध्ययन के लिए तत्पर हो सकें।

विद्यालयों में सतत बृहत मूल्यांकन योजना का परीक्षण

विद्यालय स्थिति में सतत वृहत मूल्यांकन (सी.सी.ई.) योजना की व्यावहारिकता का पता लगाने के उद्देश्य से इस योजना के परीक्षण के लिए एक कार्यक्रम आरंभ किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत दिल्ली के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के 25 विद्यालयों को प्रतिदर्श के रूप में शामिल किया गया। इस कार्य के लिए अपेक्षित आंकड़े: 1. साक्षात्कार; 2. मूल्यांकन पद्धति की प्रश्नावली; 3. कक्षा 3 के प्रश्नपत्र; और 4. रिपोर्ट कार्ड के माध्यम से एकत्र किए गए आंकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त परीक्षण रिपोर्ट तैयार की गई।

शैक्षिक मूल्यांकन में प्रमुख कार्मिकों का प्रशिक्षण

मेघालय विद्यालय शिक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र निर्माताओं के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें मेघालय बोर्ड के प्रतिभागियों को शैक्षिक मूल्यांकन में प्रशिक्षित किया गया। माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्य प्रदेश और विद्यालय शिक्षा बोर्ड, मेघालय के लिए मूल्यांकन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

परीक्षा सुधार के लिए क्षेत्र स्तर पर सहायता

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने: 1. सामान्य अशुद्धियों की पहचान के लिए मध्य प्रदेश बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विज्ञान की उत्तर पुस्तिकाओं; और 2. मध्य प्रदेश के माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान की उत्तर पुस्तिकाओं का विश्लेषण किया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने पिछले वर्ष की परीक्षा की 500 उत्तर पुस्तिकाओं के विश्लेषण से कक्षा 9 की बोर्ड परीक्षा के विद्यार्थियों द्वारा गणित में की गई सामान्य अशुद्धियों का विश्लेषण किया। सी.एच.एस.ई. उड़ीसा द्वारा आयोजित + 2 स्तर की परीक्षा में भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्राणी विज्ञान, और गणित में छात्रों द्वारा की गई सामान्य अशुद्धियों की प्रत्येक विषय लगभग 500 उत्तर पुस्तिकाओं की विश्लेषण द्वारा पहचान की गई और उन्हें व्यवस्थित करके वर्गीकृत किया गया। इसके निष्कर्षों के आधार पर उपचार सामग्री का प्रारूप तैयार करने की योजना बनाई गई। उड़ीसा के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र निर्माताओं के लिए एक सात-दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के निम्नांकित उद्देश्य थे: 1. उन्हें

वस्तुनिष्ठ आधारित परीक्षण और वस्तुनिष्ठ परीक्षण में अभिमुख किया गया; 2. मापदंड-निर्देश-परीक्षण और मानक-निर्देश-परीक्षण से अवगत कराना; 3. निदानात्मक परीक्षण और संप्राप्ति परीक्षण की रूपरेखा बनाने में उनकी क्षमता का विकास करना; 4. भागीदारों को सूचित करना कि प्रश्नपत्रों में सम्मिलित विभिन्न आयामों को भारमान (वेटेज) कैसे किया जाए; 5. एक उत्तम प्रश्नपत्र कैसे बनाया जाए पर एक अभ्यास पुस्तिका प्रदान करना; और 6. अनुकरणीय प्रश्नपत्र का एक सेट तैयार करने में भागीदारों की सहायता करना।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर ने कर्नाटक के विश्वविद्यालय-पूर्व के विद्यार्थियों द्वारा गणित, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, और प्राणी विज्ञान में की गई सामान्य अशुद्धियों की पहचान के लिए शोध अध्ययन किए।

परीक्षा-सुधार बुलिटिन

"परीक्षा सुधार बुलिटिन" का प्रथम अंक प्रकाशित किया गया और इसे विद्यालयी शिक्षा से संबद्ध 80 संगठनों को भेजा गया। इसमें अन्य बातों के अलावा अन्य संगठनों में परीक्षा सुधार के क्षेत्र में हुए विकासों को भी उजागर किया गया है।

सतत और वृहत मूल्यांकन की पुस्तिका

इस पुस्तिका की प्रारूप पाण्डुलिपि तैयार की गई और पुनरीक्षण कार्यशाला में इसकी आलोचनात्मक रूप से समीक्षा करके अन्तिम रूप दिया गया। इस पुस्तिका को वितरित करने के लिए इसका संपादन किया जा रहा है।

1996-97 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. डवलपमेंट ऑफ ट्रेनिंग पैकेज इन एजूकेशनल इवेल्यूएशन (मिमियोग्राफ)
2. क्वालिटेटिव एनालिसिस ऑफ क्वशचन पेपरर्स आफ द क्लास 10 इन सोशल स्टडीज ऑफ फोर बोर्डस ऑफ स्कूल एजूकेशन (1995) (मिमियोग्राफ)
3. ट्राइ आउट ऑफ दी स्कीम आफ कान्टीन्यूवस एंड काम्प्रीहेंसिव इवेल्यूएशन एट स्कूल्स (मिमियोग्राफ)
4. कोओरडिनेशन, डाकुमेंटेशन एंड डिसेमिनेशन आफ रिसर्च इन एग्जामिनेशन रिफार्म एट स्कूल लेवल (मिमियोग्राफ)

शैक्षिक मनोविज्ञान

शैक्षिक मनोविज्ञान परामर्श और मार्गदर्शन के क्षेत्रों में अनुप्रयोगों के द्वारा मार्गदर्शन के जरिए विशेषकर प्राथमिक माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर शिक्षा का गुणात्मक सुधार करना परिषद् के प्रमुख सरोकारों में से एक है। इस क्षेत्र के कार्यक्रमों के परिणामों का विद्यालय छात्रों के शैक्षिक विकास पर ही नहीं बल्कि उनके चहुँमुखी विकास तथा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर उनके सामाजिक, भावात्मक एवं जीवनवृत्तिक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है

12

शैक्षिक मनोविज्ञान

शैक्षिक मनोविज्ञान परामर्श और मार्गदर्शन के क्षेत्रों में अनुप्रयोगों के द्वारा मार्गदर्शन के जरिए विशेषकर प्राथमिक माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर शिक्षा का गुणात्मक सुधार करना परिषद् के प्रमुख सरोकारों में से एक है। इस क्षेत्र के कार्यक्रमों के परिणामों का विद्यालय छात्रों के शैक्षिक विकास पर ही नहीं बल्कि उनके चहुँमुखी विकास तथा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर उनके सामाजिक, भावात्मक एवं जीवनवृत्तिक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है। वर्ष 1996-97 में इस क्षेत्र में आयोजित कार्यक्रमों के उल्लेखनीय विवरण नीचे दिए गए हैं :

1. *राष्ट्रीय शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुस्तकालय का विकास*

परीक्षण पुस्तकालय के लिए 21 भारतीय और विदेशी परीक्षणों का एक सेट का प्रबंध किया गया। दो इंडियन मेंटल मिजरमेंट हैंडबुक जिनमें एक "पर्सनलिटी" और दूसरी वेल्यू, एट्टीच्यूट एंड इन्ट्रेस्ट पांडूलिपियों को अंतिम रूप देकर प्रकाशन के लिए भेजा गया।

2. *भारत में मार्गदर्शन शोध—एक गहन अध्ययन*

एम.फिल और पी.एच.डी. शोध अध्ययनों में मार्गदर्शन के क्षेत्र में हुए शोध अध्ययनों पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित संबंधित शोध अध्ययनों को एकत्रित किया गया। भारत में मार्गदर्शन के क्षेत्र में शोध और मार्गदर्शन की पद्धति के लिए दिशा निर्देश की स्थिति के बारे में पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराने के लिए एक गहन अध्ययन की योजना बनाई गई है।

3. *बालिकाओं में वैयक्तिक और वृत्तिक चेतना का विकास*

इस पुस्तक की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देकर प्रकाशन के लिए भेजा गया है। इस पुस्तक को विकसित करने का उद्देश्य बालिकाओं में वैयक्तिक और वृत्तिक अभिमुखता को बढ़ावा देने की आवश्यकता के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करना है ताकि उनमें लाभप्रद जीवन-संदर्श विकसित किया जा सके।

4. *भारत में वृत्तिक विकास : परामर्शदाताओं के लिए एक स्रोत पुस्तिका*

इस स्रोत पुस्तक की पाण्डुलिपि में 12 अध्याय हैं जिनमें मार्गदर्शन शास्त्र के सैद्धांन्तिक और अनुभवाश्रित पक्षों पर चर्चा की गई है यह पुस्तक भारत में परामर्शदाता तैयार करने की आवश्यकताओं के प्रबन्धन के लिए तैयार की गई है।

5. *मार्गदर्शन सिद्धांत और व्यवहार : एक स्रोत पुस्तक*

यह स्रोत पुस्तक मार्गदर्शन प्रशिक्षणार्थियों, मार्गदर्शक प्रशिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और अध्यापकों के प्रयोग के लिए विकसित की गई है। इस पुस्तक की समीक्षा के बाद इसमें अपेक्षित संशोधन किया जा चुका है और अब प्रकाशन के लिए भेजी जा रही है।

6. *परामर्शकारी के सप्रबंधन : एक व्यावहारिक संदर्शिका*

इस परियोजन का मुख्य उद्देश्य परामर्शदाताओं और परामर्शदाता प्रशिक्षणार्थियों द्वारा सफलतापूर्वक सुलझाए गए मामलों पर परामर्शकारी केस प्रबंधन पर एक पुस्तक तैयार करना है। यह पुस्तक एक निदर्शी पुस्तक के रूप में होगी जिसमें भारतीय परिस्थितियों के सापेक्ष समस्याओं और मामलों को प्रस्तुत किया जाएगा तथा अपने सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण के दायरे में ही उन्हें सुलझाने की विधि बताई जाएगी। इस पुस्तक में सम्मिलित करने हेतु केसों की पहचान कर ली गई है। पांडुलिपि का संपादन और समीक्षा कार्य किया जा रहा है।

7. *परामर्शदाता का प्रशिक्षण : स्थिति और विकास*

इस अध्ययन का उद्देश्य एन.सी.ई.आर.टी. के मार्गदर्शन और परामर्श डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षित परामर्शदाताओं के प्रशिक्षण की प्रभाविता का मूल्यांकन करना है। इस अध्ययन से प्रशिक्षित परामर्शदाताओं के रोजगार की स्थिति और सेवा की प्रभाविता से संबंधित सूचना एकत्रित की जाएगी और कार्यक्रम में अपेक्षित सुधार लाने के लिए सुझाव दिए जाएंगे। इस प्रयोजन के लिए परामर्शदाताओं के साथ तीन बैठकें बुलाकर आमने-सामने बैठकर चर्चा के माध्यम से आंकड़े एकत्रित किए गए है। परामर्शदाता जहाँ कार्यरत है उन विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, अध्यापकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों से आंकड़ें एकत्रित किए जा रहे हैं। इसके साथ ही प्राप्त आंकड़ों की गणना और सारणीबद्ध करने का कार्य भी किया जा रहा है।

8. *वृत्तिक सूचना केन्द्र*

एन.सी.ई.आर.टी. के शैक्षिक मनोविज्ञान और आधार-शिक्षा विभाग में संकाय और मार्गदर्शन और परामर्श डिप्लोमा के विद्यार्थियों के प्रयोग के लिए एक वृत्तिक सूचना केन्द्र स्थापित है। संगठनों और संस्थानों को वृत्तिक सूचना और मार्गदर्शन के रूप में परामर्श दिए गए। दो मोनोग्राफ "कैरियर इन वायोटेक्नोलोजी" और कंप्यूटर" लगभग पूरे होने वाले हैं।

9. *परामर्शदाता प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कार्यनिष्पादन और सेवा के लिए चयन प्रक्रिया की भावी संभावना का अध्ययन*

इस अध्ययन का उद्देश्य एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा चलाए जा रहे मार्गदर्शन और परामर्श डिप्लोमा पाठ्यक्रम के लिए अभ्यार्थियों के चयन के लिए प्रयोग की जाने वाली चयन प्रक्रिया की अभिपुष्टि करना है। इस कार्य के लिए आंकड़े हेतु विद्यालयों और गैर-विद्यालयों में कार्यरत परामर्शदाताओं का पता लगाने के प्रयास किए गए। इस कार्य के लिए परामर्शदाताओं की व्यावसायिक संतुष्टि के बारे में जानकारी प्राप्त करने से प्रशिक्षित परामर्शदाताओं के कार्य निष्पादन के बारे में प्रधानाचार्यों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को जानने हेतु एक प्रश्नावली तैयार की गई।

10. *भारत में शैक्षिक मनोविज्ञान में अनुसंधान और देशज मौलिकता की प्रवृत्ति : पत्रिका आलेखों और रिपोर्टों का विश्लेषण*

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं : 1. शैक्षिक मनोविज्ञान में शोध की प्रवृत्ति को प्रकाश में लाने की दृष्टि से पिछले 10 वर्षों के दौरान प्रकाशित भारतीय अध्ययनों और राष्ट्रीय संगठनों को प्रेषित रिपोर्टों की अलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करना; 2. सैद्धान्तिक और अनुभावाश्रित शीर्षक वाले आलेखों की संरचनात्मक विशेषाताओं, लेखकीय पद्धति प्रविधि और अध्ययन के दायरे में आने वाली आबादी का विश्लेषण करना; 3. भारत में शैक्षिक शोधकर्ताओं के शोध में भारतीय मौलिकता की प्रगति का आकलन करना। इस अध्ययन के दौरान शैक्षिक मनोविज्ञान के 675 अध्ययनों को एकत्रित किया गया। शोध की प्रवृत्ति और भारतीय मौलिकता के संबंध मे 450 अध्ययनों का विश्लेषण किया गया।

11. *मीराम्बिका में शिक्षण : एक केस अध्ययन*

"मीराम्बिका" पर एक परियोजना अध्ययन शुरू किया गया। मीराम्बिका श्री अरविंद के दर्शन सिद्धांतों पर आधारित एक विद्यालय है। इस परियोजना अध्ययन का उद्देश्य विद्यालय के अनुभावातीत और क्रियात्मक लक्ष्यों के संबंध में एक व्यापक अध्ययन करना है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यालय के संगठन संस्कृति (आर्दर्शों और मूल्यों) और अध्यापन-अधिगम प्रक्रियाओं के सम्यक दृष्टिकोण का पता लगाना है। अध्ययन के प्रथम चरण की रिपोर्ट का प्रारूप तैयार हो चुका है। इसके दूसरे चरण के लिए आंकड़े एकत्रित किए जा रहे हैं।

12. *सामाजिक मानदंडों के प्रति किशोरों के दृष्टिकोण का अध्ययन*

इस अध्ययन का उद्देश्य माता-पिता के आदर्शों तथा किशोरों के विशिष्ट व्यवहार संबंधी अपेक्षाओं की प्रकृति और माता-पिता के आर्दशों और अपेक्षाओं के प्रति किशोरों के दृष्टिकोण के बीच अंतर्विरोधों की प्रकृतिक का पता लगाना है। इस अध्ययन के लिए दो प्रश्नावलियां तैयार की गई। इनमें से एक प्रश्नावली किशोरों की उचित और अनुचित व्यवहार के संबंध में माता-पिता की संकल्पना और अपेक्षिओं की जांच पड़ताल करती है और दूसरी प्रश्नावली माता-पिता के अपेक्षाओं के प्रति किशोरों के दृष्टिकोण का अध्ययन करने के लिए बनाई गई।

13. *माध्यमिक विद्यालय की विज्ञान पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण*

विद्यालयी स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों की विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करने के लिए एक विश्लेषण योजना का चयन किया गया। विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के स्वतंत्र विश्लेषण के लिए दो योग्यता निर्धारकों के आधार पर परस्पर योग्यता निर्धारक विश्वसनीयता स्थापित की गई।

14. *भारत में प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा के शैक्षिक मनोविज्ञान की पाठ्यचर्या का आलोचनात्मक अध्ययन*

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार है: 1. देश के विभिन्न राज्यों द्वारा लागू की गई शैक्षिक मनोविज्ञान की पाठ्यचर्या की प्रकृति और संरचना का विश्लेषण करना और कुछ मानदण्डों के आधार पर विषय-वस्तु की पर्याप्तता का मूल्यांकन करना; 2. विभिन्न राज्यों में पाठ्यक्रम की

विषय-वस्तु के विकास में अपनाई जाने वाली पद्धति की पड़तान करना; 3. पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के मामले में अध्यापक प्रशिक्षकों के दृष्टिकोणों का पता लगाना। विविध आयामों को ध्यान में रखकर वर्तमान पाठ्यक्रमों की विषय-वस्तु का विश्लेषण किया गया। मौजूदा पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु की प्रासंगिकता पर आम सहमति कायम करने के लिए आयोजित कार्यशाला में विशेषज्ञ समूह को विषय-वस्तु के विश्लेषण के नतीजों से अवगत कराया गया और नए अभिविन्यास के साथ प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या के एक ढांचे की योजना बनाई गई।

15. *डी.आई.ई.टी. के कार्मिकों के अध्यापन-अधिगम के लिए मनोविज्ञान में संवर्धन पाठ्यक्रम*

सात डी.पी.ई.पी. राज्यों—असम, मध्य प्रदेश, हरियाणा, तमिलनाडु महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल के डी.आई.ई.टी. कार्मिकों के लिए दो-सप्ताह का एक संवर्धन कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रारंभिक शिक्षा के निम्नांकित तीन क्षेत्रों में पाठ्यक्रम सामग्री के रूप में 29 स्वतः अधिगम माड्यूल विकसित किए गए: 1. भारतीय परिदृष्य; 2. बच्चे को समझना; 3. अध्यापक और अध्यापन प्रक्रिया। ये पाठ्यक्रम सामग्री संवर्धन पाठ्यक्रम में अध्यापन के बेसिक आधार थे।

16. *वर्ष 1996-97 में मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम डिप्लोमा*

आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, पश्चिमी बंगाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश और दिल्ली से आए प्रशिक्षणार्थियों को नौ मास का मार्गदर्शन और परामर्श डिप्लोमा पाठ्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया।

इस पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु में सैद्धान्तिक और व्यवहारिक पक्ष शामिल थे। विद्यालयों में किए गए प्रायोगिक कार्य का मूल्यांकन भी किया गया।

1996-97 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. चेंजिंग पर्सपेक्टिव ऑन अंडरस्टेंडिंग इंटेलिजेंस: *एक अप्रेजल, इन इंडियन साइकॉलोजिकल एब्स्ट्रेक्टस एंड रिव्यु* 1996-3-31
2. द स्टेट्स ऑफ इटेलिजेंस टेस्टिंग इन इंडिया: ए प्रीलिमिनरी एनालिसिस, *इंडियन एजूकेशनल रिव्यू*, 1996-1-11
3. एजूकेशनल साइकालोजी इन इंडिया: चेलेंजेस एण्ड प्रोस्पेक्ट्स (टंकित) स्कूल साइकोलोजी इंटरनेशनल फार पब्लिकेशन को प्रकाशनार्थ प्रेषित
4. इनरिचमेंट कोर्स इन साइकोलोजी फार टीचिंग लर्निंग आफ डाइट पर्सनल—सेल्फ लर्निंग मॉड्यूल्स (फोटोप्रति)
5. हैंडबुक ऑफ प्रसनालिटी मिजरमेंट इन इंडिया (मुद्रणाधीन)
6. हैंडबुक आन मिजरमेंट आफ वेल्यूज, एटीच्यूटस, इंटेरस्ट्स इन इंडिया (टंकित)
7. बिल्डिंग परसनल एंड केरियर कान्शसनेस इन गर्ल्स (टंकित)
8. केरियर डवलपमेंट इन इंडिया ए रिसोर्स बुक फार काउंसिलर्स (टंकित)
9. गाइडेंस नीड्स आफ दि स्कूल गोइंग स्टूडेंटस, ए रिव्यू (सबमिटेड फार पब्लिकेशन)
10. हाउ वैलिड आर दि एडमिशन क्राइटिरिया यूजड इन काउंसलर ट्रेनिंग प्रोग्राम (प्रकाशनार्थ प्रस्तुत)
11. ए रिसोर्स बुक : गाइडेन्स प्रिंसिपल्स एण्ड प्रेक्टिसिस (टंकित)
12. ट्रेन्ड रिपोर्ट ऑफ रिसर्च इन गाइडेंस एण्ड काउंसिलिंग फार दी फिफ्थ सर्वे ऑफ ऐजुकेशनल रिसर्च (प्रेस में)

अध्यापक शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा में सुधार लाने में अध्यापक शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। इस क्षेत्र में कार्यकलाप सामान्यत: जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण और प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (सॉप्ट) सहित राज्यों में प्रशिक्षण को प्रभावशाली रूप से पूरा करने के लिए अध्यापक शिक्षा की केन्द्र प्रायोजित योजनाएं, जैसे—डी.आई.ई.टी., ई.ए.एस.ई., और एस.सी.ई.आर.टी. को अकादमिक समर्थन देने पर केंद्रित हैं

13

अध्यापक शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा में सुधार लाने में अध्यापक शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। इस क्षेत्र में कार्यक्रम और कार्यकलाप सामान्यत: जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण और प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (सॉप्ट) सहित राज्यों में प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं को प्रभावशाली रूप से पूरा करने के लिए राज्यों की क्षमता विकसित करने, अध्यापक शिक्षा की केन्द्र प्रायोजित योजनाएं, जैसे—जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (डी.आई.ई.टी.) उच्च शैक्षिक अध्यापन संस्थानों (ई.ए.एस.ई.) और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थानों (एन.सी.ई.आर.टी.) को अकादमिक समर्थन देने पर केंद्रित हैं। अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए कार्यरत परिषद् के मुख्य घटक इस प्रकार हैं : राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली में अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग और अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूर और शिलॉग में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.)।

प्रत्येक आर.आई.ई. अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर—दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा संघ-शासित क्षेत्र चंडीगढ़ की अध्यापक शिक्षा और संबंधित शैक्षिक आवश्यकताओं का ध्यान रखता है। क्षे.शि.सं., भोपाल अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले राज्यों—गोवा, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और संघ-शासित क्षेत्र दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव की आवश्यकताएं पूरी करता है। अरूणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, बिहार, उड़ीसा, पश्चिमी बंगाल, राज्य और संघ-शासित क्षेत्र अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह की तत्संबंधी आवश्यकताएं इस समय क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर द्वारा पूरी की जाती हैं। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल ओर तमिलनाडु राज्य और संघ-शासित क्षेत्र लक्षद्वीप और पांडिचेरी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर के क्षेत्राधिकार में हैं। उत्तर-पूर्वी राज्यों—असम, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, त्रिपुरा और सिक्किम जो इस समय क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर में आते हैं, की सेवाकालीन शिक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दिसम्बर 1995 में नया क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान शिलॉग में स्थापित किया गया है। वर्ष 1996-97 में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में किए गए कार्यक्रमों और कार्यकलापों के संक्षिप्त विवरण नीचे दिए गए हैं :

सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

परिषद् के प्रमुख कार्यों में से एक कार्य सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा के नवाचारी कार्यक्रमों का विकास और संचालन करना है। अत: क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में विज्ञान शिक्षण में चार वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम और प्रारम्भिक शिक्षा में विशेषज्ञता सहित एक वर्ष का एम.एड् पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

चार-वर्षीय बी.एस.सी., बी.एड/बी.एस.सी. एड. पाठ्यक्रम

इस पाठ्यक्रम का मुख्य बल गुणवत्ता पर है यानी विषय-वस्तु पद्धति और शिक्षाशास्त्र तथा सह-पाठ्य-चर्यात्मक कार्यकलापों में पूर्णतया दक्ष अध्यापक तैयार करने पर मुख्य बल है।

एक-वर्ष का एम.एड. (प्रारम्भिक शिक्षा) पाठ्यक्रम

शिक्षा के सार्वजनिकरण के लिए किए जा रहे प्रयासों के एक भाग के रूप में परिषद् ने सामान्यत: राज्यों के विभिन्न संस्थानों और विशेषतया डी.आई.ई.टी./एस.सी.ई.आर.टी. की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए 1995-96 से प्रारम्भिक शिक्षा में विशेषज्ञता के साथ एक वर्ष का एम.एड. डिग्री पाठ्यक्रम आरंभ किया। यह एक उत्कृष्ट समेकित और नवाचारी एक वर्षीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम है जो प्राथमिक शिक्षा के मुद्दों और सरोकारों और अनुसंधान आधारित आगतों पर पर्याप्त बल देता है। इस पाठ्यक्रम के छात्र-अध्यापकों ने अन्य कार्यों के साथ-साथ प्रारम्भिक शिक्षा के प्राथमिकता वाले विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान अध्ययन किए।

1996-97 में चार क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के सेवाकालीन पाठ्यक्रमों में 1423 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया।

सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

1. *डी.आई.ई.टी. को शैक्षिक सहयोग*

डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए एक स्वत: अनुदेशी पैकेज की समीक्षा भी की गई और उसे अन्तिम रूप दिया गया। असम, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और जम्मू तथा कश्मीर के डी.आई.ई.टी. के प्राचार्यों के लिए एक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। असम, दिल्ली, हरियाणा, महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर गोवा, केरल, पांडिचेरी, त्रिपुरा, अरूणाचल प्रदेश, राजस्थान और गुजरात राज्यों के डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए एक प्रारंभिक सेवाकालीन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

2. *एस.सी.ई.आर.टी. की सक्षमता का निर्माण*

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में एस.सी.ई.आर.टी. का सुदृढ़ीकरण विषय पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में राज्य स्तरीय अनुसंधान और विकास केन्द्रों के सुदृढ़ीकरण के लिए विशेष सिफारिशें दी गई। इस सम्मेलन में सुझाव दिया गया कि एस.सी.ई.आर.टी. को प्रशासनिक, अकादमिक और वित्तीय स्वायत्ता प्रदान की जाए। एस.सी.ई.आर.टी. को ऐसे भर्ती-नियम बनाने चाहिए जिससे योग्य और उपयुक्त व्यक्तियों को आकर्षित किया जा सके। यह भी सुझाव दिया गया कि एस.सी.ई.आर.टी. की क्षमता के सुदृढ़ीकरण के लिए एन.सी.ई.आर.टी., नीपा, और अन्य राष्ट्रीय संस्थानों को अभिविन्यास/प्रशिक्षण की जिम्मेदारियां लेनी चाहिए।

एस.सी.ई.आर.टी. के अध्यापक प्रशिक्षकों की प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं की पहचान के लिए दो कार्यशालाएं आयोजित करने के उपरान्त एस.सी.ई.आर.टी. के नवनिर्वाचित संकाय सदस्यों के लिए एक प्रारंभिक स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई गई और एक प्रशिक्षण डिजाइन और प्रशिक्षण पैकेज भी विकसित किए गए। एक आठ दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न एस.सी.ई.आर.टी. के 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। एस.सी.ई.आर.टी. की भूमिका, कार्य और अपेक्षाओं पर विचार-विमर्श करने के अलावा प्रारंभिक शिक्षा और प्रारंभिक अध्यापक शिक्षा की नई प्रवृत्तियों और समस्याओं पर भी चर्चा की गई। प्रतिभागियों को कार्यक्रम प्रस्तावों और क्रियात्मक अनुसंधान प्रस्तावों का अनुभव विकसित करने के लिए व्यावहारिक अनुभव कराया गया।

प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास (सॉफ्ट)

देशभर के लगभग 18 लाख अध्यापकों को व्यापक स्तर पर अभिविन्यास करने के लिए 1993-94 में केंद्र द्वारा प्रायोजित प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास (सॉफ्ट) आरंभ किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत आठवीं पंचवर्षीय योजना अर्थात् 1993-97 तक के पिछले चार वर्षों के दौरान प्रति वर्ष 4.5 लाख प्राथमिक विद्यालयों का अभिविन्यास किया जाना था। इस कार्यक्रम में एन.सी.ई.आर.टी. को एक तरफ योजना, कार्यक्रम निर्धारण, आयोजन, संचालन और अनुवीक्षण और दूसरी ओर अकादमिक समर्थन प्राप्त करने का दायित्व सौंपा गया। सॉफ्ट के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :

1. एम.एल.एल. की राष्ट्रीय रिपोर्ट के अनुरूप अध्यापकों में सक्षमता का विकास करना
2. ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड सामग्री के प्रयोगार्थ-सक्षमता का विकास करना।
3. अध्यापकों को अधिगम में बाल केन्द्रित पद्धति को ग्रहण करने के लिए तैयार करना।

विभिन्न स्तरों के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए सोपानिक मॉडल (कासकेड मॉडल) को अपनाया गया। राष्ट्रीय स्तर के प्रमुख प्रशिक्षकों ने राज्य स्तर की नोडल एजेंसियों के प्रमुख व्यक्तियों (के.पी.) को पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिया। ये प्रमुख प्रशिक्षक एन.सी.ई.आर.टी. और अन्य शैक्षिक संस्थानों के विषय-विशेषज्ञ और शिक्षाविद् हैं। राज्य स्तर के मुख्य व्यक्ति संसाधन व्यक्तियों को प्रशिक्षण देते हैं और संस्थान व्यक्ति प्राथमिक अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में उन्हीं व्यक्तियों को प्राथमिकता दी गई जिनकी नियुक्ति ओ.बी. योजना के अन्तर्गत हुई है। राज्य नोडल एजेन्सियों ने प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए। प्रशिक्षण केन्द्रों का चयन भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता के आधार पर किया गया है।

प्रदर्शनकारी कार्य और अध्यापन-अधिगम अभिमुख कौशलों की स्थिति को सोदाहरण स्पष्ट करने के लिए,

विशेषकर प्राथमिक स्तर के लिए विभिन्न संदर्भ शीर्षक और पाठ्यचर्या क्षेत्रों पर आधारित सोलह मॉड्यूलों को लेकर एक विशेष "स्व-अनुदेशी पैकेज" हिन्दी और अंग्रेजी में विकसित किया गया। मुद्रित सामग्री की संप्रेषणीय के संपूरक के रूप में 41 वीडियो कार्यक्रमों का ई.टी.वी. पैकेज और ई.टी.वी. कार्यक्रमों के प्रभावी प्रयोग के लिए प्रयोक्ता संदर्शिका तैयार की गई। स्थानीय अध्यापकों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों ने इन प्रशिक्षण-पैकेजों को अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में रूपांतरित किया।

सॉप्ट अपने कार्यान्वयन के अन्तिम चरण में है। 1993-94 में इसके कार्यान्वयन के आरंभ से लेकर अब तक इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 6,08,262 अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

कक्षा कार्यकलाप प्रक्रिया में सॉप्ट प्रशिक्षण का प्रभाव पर एक अध्ययन कार्य प्रगति पर है। इसके लिए 9 राज्यों से आंकड़े एकत्र किए जा चुके हैं।

अनुक्रियात्मक प्रौद्योगिकी के जरिए अध्यापकों को सेवाकालीन शिक्षा

सॉप्ट योजना के अन्तर्गत अध्यापकों को सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए अनुक्रियात्मक संप्रेषण प्रौद्योगिकी पर एक प्रयोग किया गया। इस टेलीकांफरेंसिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम की प्रणाली में दो तरफ आडियो और एक तरफ वीडियो अनुक्रिया को शामिल किया गया। इस टेलीकांफरेंसिंग कार्यक्रम के तीन अनिवार्य घटक थे।

1. 'टीचिंग एंड' (अध्यापन केंद्र) जो इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नो) नई दिल्ली में स्थित था।
2. 'लर्निंग एंड' अधिगम केन्द्र जो विभिन्न डी.आई.ई.टी. में स्थित थे। टीचिंग एंड से तुरन्त संपर्क स्थापित करने के लिए रिसिविंग सिस्टम (फैक्स और एस.टी.डी.) प्रदान की गई।
3. अध्ययन और अधिगम के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए "स्पेस सिगमेंट" जैसी अपलिंग सुविधा।

यह सुविधा 7 इन्सेट पर ट्रांसपोंडर के जरिए प्रदान की गई। डी.आई.ई.टी. की कक्षा के कमरे में एकत्रित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक का एस.टी.डी. सुविधाओं का प्रयोग करके विशेषज्ञ दलों के साथ सीधे संवाद कर सकते थे। अध्यापकों को फैक्स के जरिए लिखित प्रश्नों को भेजने के लिए भी प्रेरित किया गया।

सॉप्ट स्व-अनुदेशी पैकेज के आधार पर अनुक्रियात्मक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का विकास किया गया। सॉप्ट के अन्तर्गत प्रथम अनुक्रियात्मक सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्रयोग कर्नाटक के 20 प्रशिक्षण केन्द्रों में 850 प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों को शामिल करके 7 से 13 जनवरी तक संचालित किया गया। इस प्रयोग को दुबारा मध्य प्रदेश के 45 प्रशिक्षण केन्द्रों में उपस्थित 1336 प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के लिए 2 से 8 अगस्त, 1996 तक चलाया गया। टेलीकांफरेंसिंग की सफलता से प्रोत्साहित होकर, तीसरा अनुक्रियात्मक "टेली मैथ्स" कार्यक्रम 16 से 21 फरवरी 1997 तक किया गया। इस कार्यक्रम में 20 डी.आई.ई.टी. केंद्रों में 700 प्रतिभागी शामिल हुए।

यह अनुक्रियात्मक सेवाकालीन कार्यक्रम इसरो, इग्नो, मध्य प्रदेश और कर्नाटक के एस.सी.ई.आर.टी. और एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न घटकों —
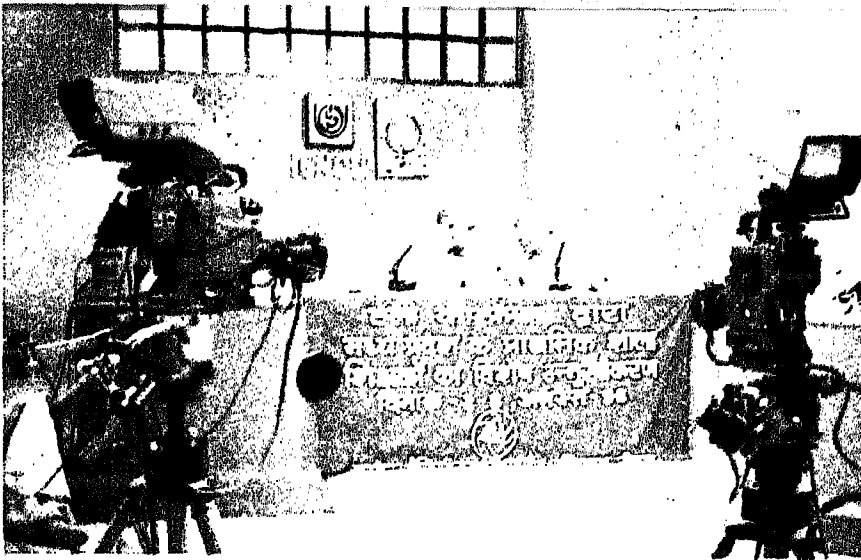
टेलीकांफरेंसिंग कार्यक्रमः एक दृष्य बीच में संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई. आर.टी.

सी.आई.ई.टी., आर.आई.ई., मैसूर और भोपाल तथा एन.आई.ई. के अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग के सक्रिय सहयोग से सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया गया।

अनुक्रियात्मक संप्रेषण प्रौद्योगिकी पर एक प्रयोग, मध्यप्रदेश, अगस्त 1996

विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवाचारों को बढ़ावा

इस परियोजना का उद्देश्य विद्यालय-अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के बीच अनुसंधान और प्रयोग तथा नवाचारी व्यवहारों की भावना विकसित करना है। इसका उद्देश्य व्यावसायिक संवृद्धि को बढ़ावा देने के साथ-साथ विद्यालयी शिक्षा/अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों को संबद्ध करना भी है।

1. *विद्यालयी शिक्षा में नवाचारी प्रयोग और कार्यव्यवहार*
वर्ष 1994-95 की प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर विद्यालय के अध्यापकों के चुने गए नवाचारी आलेखों के मूल्यांकन के लिए समीक्षकों की पैनल बैठक आयोजित की गई। विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक तथा माध्यमिक स्तर के प्रत्येक आलेख का मूल्यांकन तीन समीक्षकों ने किया। विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक स्तर पर 47 आलेखों और माध्यमिक स्तर पर 14 आलेखों को पुरस्कार के लिए चुना गया। 16-17 दिसम्बर, 1996 के दौरान माध्यमिक स्तर के लिए पुरस्कार वितरण समारोह और 26-27 मार्च 1997 के लिए विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा पुरस्कार-विजेताओं की राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई।

विद्यालयी शिक्षा में "नवाचारी पद्धति का प्रयोग और कार्य व्यवहारों (1995-96) के संदर्भ में प्राप्त नवाचारी आलेखों का राज्य स्तरीय मूल्यांकन एन.सी.ई.आर.टी. के आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के क्षेत्र सलाहकारों, क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर के प्राचार्य और सेवाकालीन और विस्तार केन्द्र, बेंगलूर के प्रभारी की मदद से किया गया। 5-8 नवंबर 1996 के दौरान परिषद् मुख्यालय में समीक्षकों की एक पैनल बैठक आयोजित की गई।

विद्यालयी शिक्षा में नवाचार 1996-97 के लिए 220 नवाचारी प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई। प्राप्त आलेखों को वगीकृत करके इनकी छँटाई की गई। इन आलेखों के मूल्यांकन हेतु अपेक्षित कदम उठाए जा रहे हैं।

2. *अध्यापक-शिक्षा में नवाचारी प्रयोग और कार्य व्यवहार*
विभिन्न अध्यापक शिक्षा संस्थानों, विद्यालय-पूर्व अध्यापक शिक्षा संस्थानों से लेकर विश्वविद्यालय में शिक्षा विभागों तक कार्यरत अध्यापक प्रशिक्षकों से अध्यापक शिक्षा शीर्षक से संबंधित नवाचारी आलेख आमन्त्रित किए गए। समीक्षकों की एक पैनल बैठक आयोजित की गई जिसमें तीन समीक्षकों ने आलेखों का मूल्यांकन किया। पुरस्कार के लिए 17 आलेखों (11 विद्यालय-पूर्व एवं प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक शिक्षक और 6 माध्यमिक अध्यापक शिक्षा संस्थान तथा शिक्षा के विश्वविद्यालय विभागों) का चयन किया गया। इन आलेखों का एन.सी.ई.आर.टी. में सम्पादन किया गया। आलेखों के लेखकों को 2 से 4 सितम्बर 1996 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित किया गया। पुरस्कार विजेताओं द्वारा प्रस्तुत आलेखों पर विचार-विमर्श किया गया और आलेखों के सुधार के लिए सुझाव दिए गए। पुरस्कार विजेताओं को प्रमाणपत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए।

वर्ष 1996-97 के दौरान अध्यापक प्रशिक्षकों से 63 नवाचारी आलेख प्राप्त हुए। प्रारंभिक अध्यापक शिंक्षा के 10 आलेख और माध्यमिक अध्यापक शिक्षा के 7 आलेख

चुने गए। 31 मार्च से 2 अप्रैल 1997 तक एन.आई.ई. परिसर, नई दिल्ली में पुरस्कार विजेताओं की एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। एक विशेष पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार विजेताओं को अध्यापक शिक्षा में नवाचार के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए गए।

अध्यापक शिक्षा का अखिल भारतीय सर्वेक्षण

एन.सी.ई.आर.टी. और एन.सी.टी.ई. (राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्) के संयुक्त प्रयास से एक अखिल भारतीय अध्यापक शिक्षा, सर्वेक्षण शुरू किया गया। इस परियोजना के उद्देश्य इस प्रकार हैं।

1. विभिन्न अध्यापक शिक्षा संस्थानों और उनके कार्यक्रमों के बारे में आधार-सामग्री का विकास।
2. देश के विभिन्न भागों में चलाए जा रहे अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संबंध में आंकड़ा आधार का विकास करना।
3. अध्यापक प्रशिक्षकों के विशेषकर उनके शैक्षिक और व्यावसायिक पृष्ठभूमि के संबंध में संक्षिप्त विवरण तैयार करना।
4. विद्यार्थी अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता, लिंग और आयु आदि के संबंध में संक्षिप्त विवरण तैयार करना।
5. अध्यापक शिक्षा संस्थानों में उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में सूचना आधार विकसित करना।
6. विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए निर्धारित योग्यता और चयन प्रक्रिया के संबंध में आधार सामग्री विकसित करना। एन.सी.ई.आर.टी. के परामर्श से आठ प्रश्नावलियों के प्रारूप विकसित किए गए।

अध्यापकों के लिए व्यावसायिक आचार-संहिता

अध्यापकों की बदलती भूमिकाओं के आलोक में अध्यापकों के लिए एक नई व्यावसायिक आचार-संहिता तैयार करने के उद्देश्य से 1988 में विकसित अध्यापक व्यावसायिक आचार-संहिता के प्रारूप की एक राष्ट्रीय कार्यशाला में समीक्षा की गई। अध्यापक के कार्य में शामिल व्यावसायिक कार्यकलापों के पाँच प्रमुख क्षेत्रों को चुना गया। ये क्षेत्र हैं:

1. अध्यापक का विद्यार्थियों से संबंध,
2. अध्यापक का संरक्षकों/अभिभावकों से संबंध,
3. अध्यापक का समाज से संबंध और प्रकृति,
4. अध्यापक का व्यवसाय, सहकर्मियों, व्यावसायिक संगठनों से संबंध, और
5. अध्यापक का प्रबंधन/प्रशासन से संबंध।

इस सभी क्षेत्रों के लिए एक अध्यापक की आचार पद्धति के अनुसार व्यवहार के लिए दिशा-निर्देश के रूप में प्रयोग किए जा सकने वाले कुछ आचार-सिद्धांत चुने गए हैं। अध्यापकों के लिए व्यावसायिक आचार-संहिता को अन्तिम रूप दे दिया गया है।

एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा) कार्यक्रम के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यविवरण

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के लिए एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा) की पाठ्यचर्या और पाठ्यविवरण का एक प्रारूप विकसित किया गया। इस एम.एड. कार्यक्रम का मुख्य प्रयोजन उन व्यावसायिकों का एक संवर्ग विकसित करना है जो अध्यापक प्रशिक्षक, प्रशिक्षणार्थियों शैक्षिक योजनाकारों, पर्यवेक्षकों, पाठ्यचर्या निर्माता और मूल्यांकन विशेषज्ञों के रूप में कार्य कर सके।

निजी विद्यालयों के अध्यापकों की सेवा शर्तें और उनकी शिकायतों का निवारण

निजी विद्यालय के अध्यापकों की सेवा शर्तों की मॉडिल आचार संहिता विकसित करने और प्रशासन तथा प्रवेश नीतियों को पारदर्शी बनाने तथा शिकायतों के निवारण के लिए एक प्रणाली विकसित करने हेतु सुझाव देने के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के शिक्षा विभाग ने एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक की अध्यक्षता में एक कार्य दल गठित किया।

इस कार्य दल ने विभिन्न राज्यों से संबंधित अध्यापकों की सेवा शर्तों का अध्ययन करने और निजी विद्यालयों से संबंधित एक समूह के साथ गहन विचार-विमर्श करने के उपरान्त अपनी रिपोर्ट तैयार की। शिक्षा विभाग शिकायतों के

निवारण आदि की प्रणाली सहित निजी विद्यालयों के प्रशासन से संबंधित अध्यापक सेवा-शर्तों और नीतियों की आचार-सहिता बनाते समय इस रिपोर्ट में दिए गए मार्ग निर्देशों पर विचार कर सकता है। प्रस्तावित सेवा शर्तों की आचार संहिता सभी अध्यापकों अर्थात् राजकीय और गैर-राजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों पर लागू होनी चाहिए।

अनुसंधान अध्ययन

1. *मा.सं.वि. की दशा के विशेष संदर्भ में डी.आई.ई.टी. का अध्ययन*

   इस अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार थे :

   1. सभी डी.आई.ई.टी. में सामूहिक रूप से कार्य करने की भावना का स्तर निम्नतर था।
   2. सम्मान, विश्वास और म.स.वि. के समर्थनकारी पक्षों में कमी थी। 16 डी.आई.ई.टी. में से केवल 7 में म.सं.वि. की दशा औसतन उच्च पाई गई। म. सं.वि. की दशा को प्रभावित करने वाले कुछ अन्य पहलू है — तदर्थ आधार पर प्रधानाचार्यों की तैनाती, अपर्याप्त स्टाफ, रिक्त पद और कुछ शाखाओं में कार्य न होना, विलंब से अनुदान मिलना, आवास की अनुपलब्धता, बुनियादी सुविधाओं की कमी और अकादमिक लोकतांत्रिक संबंध।

2. *हरियाणा और मध्य-प्रदेश के प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों की कार्य की स्थितियों के अध्ययन के अन्तर्गत 20 ग्रामीण और 20 शहरी विद्यालयों से निम्नलिखित साधनों की सहायता से आंकड़े एकत्रित किए गए।*

   1. अध्यापकों का व्यावसायिक चिंता मापक
   2. अध्यापक की कार्य की स्थिति संबंधी प्रश्नावली
   3. विद्यालय पर्यवेक्षण अनुसूची
   4. विद्यालय सूचना अनुसूची
   5. अध्यापकों और प्रधानाचार्यों की साक्षात्कार अनुसूची आंकड़ों के विश्लेषण का कार्य प्रगति पर है।

3. *नवाचारी अध्यापकों का केस अध्ययन*

राजस्थान के आठ प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों से संबंधित आंकड़ों के आधार पर एक आलेख "प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों का अधिकार" चुनिंदा नवाचारी अध्यापकों की एक विवरणिका" तैयार की गयी और इसे क्षे.शि.सं., अजमेर में अध्यापकों के अधिकार और विद्यालय प्रभाविता पर आयोजित क्षेत्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत किया गया।

1996-97 में प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री (डी.टी.ई.ई.)

1. स्टेटस एंड नीड ऑफ नार्थ ईस्ट स्टेटस इन द स्कूल एजूकेशन सेक्टर (मिमियोग्राफ)
2. टीचर सेंटर : ए ब्लयू प्रिंट (मिमियोग्राफ)
3. स्पेशल आरियन्ट प्रोग्राम फार प्राइमरी स्कूल टीचर्स (सॉप्ट)
4. इनोवेटिव एक्सपेरिमेंटस एंड प्रेक्टिसिस इन टीचर एजूकेशन
5. अप्रेजल ऑफ मैटीरियल यूसड इन द इन सर्विस ट्रेनिंग ऑफ टीचर्स इन स्टेटस एंड यू.टी. (मिमियो-ग्राफ)
6. इनोवेटिव एक्सपेरिमेंट एंड प्रेक्टिसिस इन टीचर एजूकेशन (समरिज ऑफ पेपर सलेक्टिड फॉर एवार्ड (मिमियोग्राफ)
7. मोनिटरिंग एंड इवेल्यूएशन ऑफ ट्रेनिंग क्वालिटी ए प्रेसवर्क (मिमियोग्राफ)
8. करीकुलम एंड सलेबी फॉर एम.एड. (एलिमेंट्री एजूकेशन) प्रोग्राम (मिमियोग्राफ)
9. इनोवेटिव एक्सपेरिमेंटस एंड प्रेक्टिसिस इन प्री-प्राइमरी एंड एलिमेंट्री एजूकेशन वाल्यूम-11 (मिमियोग्राफ)
10. इनोवेटिस एक्सपेरिमेंट एंड प्रेक्टिसिस इन टीचर एजूकेशन (मिमियोग्राफ)
11. इनोवेटिव एक्सपेरिमेंट एंड प्रेक्टिसिस इन टीचर एजूकेशन (समराइज ऑफ पेपर) (मिमियोग्राफ)
12. टीचर सर्विस कंडीशन एंड रीड्रसल ऑफ देयर ग्रीवेन्सिस इन प्राइवेट स्कूल।

अध्यापक-शिक्षा के लिए क्षेत्र स्तरीय सहयोग

क्षे.शि.सं., अजमेर ने राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू

और कश्मीर राज्यों के डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए क्रियात्मक अनुसंधान में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर के सहयोग से प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या को संशोधित करके अद्यतन बनाया।

क्षे.शि.सं., भोपाल द्वारा आयोजित कार्यक्रम इस प्रकार हैं: 1. प्रश्नपत्र निर्माण और मूल्यांकन की तकनीक में डी.आई.ई.टी. संकाय को प्रशिक्षण; 2. अनौपचारिक शिक्षा में डी.आई.ई.टी. के डी.आर.यू. संकाय का प्रशिक्षण; 3. डी.पी.ई.पी. और एम.एल.एल. आधारित अध्यापन-अधिगम प्रक्रिया के प्रभावी कार्यान्वयन में प्रखंड और जिला स्तर के पर्यवेक्षण कार्मिकों का प्रशिक्षण; 4. सी.एम.डी., गुजरात में डी.आई.ई.टी. कार्मिकों का प्रशिक्षण; 5. महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा के डी.आई.ई.टी. स्टाफ का क्रियात्मक अनुसंधान प्रस्ताव बनाने के लिए अभिविन्यास; 6. सी.टी.ई. और आई.ए.एस.ई. में मनौवैज्ञानिक प्रयोगशाला के प्रचालन के लिए प्रमुख संसाधन व्यक्तियों का अभिविन्यास; 7. महाराष्ट्र और गोवा में सी.एम.डी.ई. में डी.आई.ई.टी. कार्मिकों का प्रारम्भिक प्रशिक्षण; 8. अनौपचारिक शिक्षा और शैक्षिक प्रौद्योगिकी सहित वैकल्पिक शिक्षा में डी.आई.ई.टी. संकायों/सदस्यों को डी.आर.यू. में प्रशिक्षण; 9. बी.एड. महाविद्यालय स्तर पर विज्ञान में वस्तु/कार्य योजना में प्रमुख संसाधन व्यक्तियों का प्रशिक्षण; 10. प्रारम्भिक शिक्षा में डी.आई.ई.टी. संकाय का अभिविन्यास।

क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर ने राज्यों के विभिन्न संस्थानों में प्रचालित विभिन्न नवाचारी सेवाकालीन प्रशिक्षण संबंधी व्यवहार की स्थिति का पता लगाने, उनका विश्लेषण करने और क्षेत्र परीक्षण के लिए एक कार्यक्रम आरंभ किया।

अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के एक संयुक्त समूह को—1. शारीरिक शिक्षा के महत्व; और 2. प्राथमिक स्तर पर शारीरिक शिक्षा में पाठ्यचर्यात्मक कार्यकलापों के केन्द्रबिन्दु और संरचना की योजना के संबंध में अभिविन्यास किया गया। अध्यापकों की विषय-वस्तु और आधारभूत कार्यप्रणाली के संवर्धन के लिए एक तीन सप्ताह के पाठ्यक्रम के लिए एक प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया गया और इसका परीक्षण किया गया। +2 स्तर पर रसायनविज्ञान की पाठ्य पुस्तक का भी विस्तृत विश्लेषण के उपरान्त इसमें भाषा, रेखाचित्र, प्रस्तुतीकरण, उपचार, उदाहरण, (संकल्पनावार) में कुछ सुधार के लिए सुझाव दिए गए।

क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर ने असम, बिहार और उड़ीसा के डी.आई.ई.टी. के लिए प्राथमिक शिक्षा में विभिन्न विषयों और प्रवृत्तियों पर क्षमता निर्माण के लिए पांच प्रशिक्षण कार्यक्रम आरयोजित किए। कुछ क्षेत्रों में संस्थान द्वारा विकसित मॉड्यलों के प्रयोग किए गए ये क्षेत्र हैं :

1. शून्य लागत आधारित शिक्षण और सामग्री तैयार करना
2. सतत और व्यापक मूल्यांकन
3. क्षमता आधारित अध्यापन
4. रोचक अधिगम के लिए कार्यकलाप आधारित शिक्षण कार्य प्रणाली
5. बहुकक्षीय ढांचा और बड़े आकार की कक्षा में कक्षा अध्यापन का प्रबंधन
6. प्राथमिक विद्यालयों के कार्यों को आशा के अनुकूल बनाने के लिए सहयोग के रूप में परामर्श और मार्गदर्शन
7. प्राथमिक विद्यालयों में समुदाय की प्रतिभागिता की भूमिका
8. निदानात्मक साधनों को विकसित करने हेतु प्रविधियां
9. समता के साथ गुणवत्ता हासिल करने के उद्देश्य के रूप में एम.एल.एल.

क्षे.शि.सं., मैसूर ने संस्थान के संकायों द्वारा विकसित प्रशिक्षण सामग्री की सहायता से डी.आई.ई.टी. के संकायों/सदस्यों को भाषा शिक्षण, गणित शिक्षण, विशेष शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, बहुश्रेणी शिक्षण, मूल्यांकन, क्रियात्मक अनुसंधान और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षित किया। गणित में मंद गति के विद्यार्थियों के लिए उपचारी अनुदेश प्रतिदर्श, सर्वेक्षण विधियों, पर्यावरण अध्ययनों में प्रशिक्षण आधारित सक्षमता और सतत एवं वृहत मूल्यांकन (सी.सी.ई.) पर प्रशिक्षण पैकेज भी विकसित किए गए। क्षे.शि.सं., मैसूर प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित ढांचा, विषयों और समस्याओं पर प्रारंभिक शिक्षा में सेवा-पूर्व पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों को विस्तृत रूप से प्रशिक्षित किया। यह प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापन और अधिगम की गुणवत्ता में सुधार पर केंद्रित था। इस कार्यक्रम के भाग के रूप में एम.एल.एल. संप्राप्ति, क्षमता आधारित शिक्षण, पाठ्यचर्या का अध्यापन और कक्षा में अध्यापन कार्य, अध्यापकों का सेवा-कालीन प्रशिक्षण तथा बच्चों की अधिगम संबंधी कठिनाइयाँ/विसंगतियाँ जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान अध्ययन किए गए।

क्षे.शि.सं., मैसूर ने विशेष रूप से तैयार एक 15 मास का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का डिजाइन विशेष रूप से क्षे.शि. सं., मैसूर ने मालदीव के प्रधानाध्यापकों के लिए विशेष रूप से तैयार एक 15 मास का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया। इसके एक भाग के रूप में स्वर-विज्ञान, मूल भाषा-विज्ञान, व्याकरण और पठन एवं लेखन कौशल में सक्षम बनाने हेतु विशेष प्रशिक्षण देने के लिए अंग्रेजी में एक सेतु पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यापकों की शिक्षा में नियोजन और प्रबन्धन सहित शिक्षाशास्त्र के विभिन्न क्षेत्रों के पाठ्यक्रमों से पूरी तरह अवगत कराया जा रहा है।

क्षे.शि.सं., मैसूर ने गणित के अध्यापकों के प्रशिक्षण के संदर्भ में "एकतरफा दृश्य और दोतरफा श्रव्य" माध्यम से प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों की अनुक्रियात्मक प्रणाली के अंतर्गत समर्थन और शैक्षिक सहायता प्रदान की। सॉफ्ट परियोजना के एकभाग के रूप में कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश राज्यों में "कक्षा पद्धतियों में सॉफ्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रभाव" शीर्षक पर संचालित एक अनुसंधान परियोजना प्रगति पर है।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.) का प्रथम उद्देश्य क्षेत्र में अध्यापक शिक्षा को प्रोन्नत करने के लिए राज्य और जिला स्तर के संस्थानों की क्षमता का विकास करना है। एन.ई.आर.आई.ई. की दीर्घकालीन भूमिका अपने अधीन क्षेत्रों में मानव संसाधन विकास की सुविधा प्रदान करनी होगी। ताकि राज्यों में विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मकता लाने में समर्थ हो सकें। जनांकीय सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक विभिन्नता को ध्यान में रखकर संस्थान का गठन किया गया है। यह संस्थान क्षेत्र में अहर्ताविहीन अप्रशिक्षित अध्यापकों से संबंधी समस्याओं सहित विद्यालय छोड़ने वाले और निम्न स्तरीय संप्राप्ति वाले छात्रों की उच्च दर जैसी विशेष समस्याओं पर ध्यान रखेगा। अन्य बातों के अतिरिक्त यह शैक्षिक प्रौद्योगिकी और विद्यालयी शिक्षा के सुधार के लिए हस्तक्षेप आधारित विकास अनुसंधान को प्रोन्नत करने के लिए उपयुक्त सहायता प्रदान करेगा।

एन.ई.आर.आई.ई. ने शिलॉग में किराए के भवन में अपना कार्य आरम्भ किया है। संस्थान के लिए भूमि लेने और पूर्णत: कार्य करने योग्य बनाने के लिए स्टाफ दिया जा रहा है। एन.ई.आर.आई.ई. शिलॉग राज्यों, मा.सं.वि. मंत्रालय और एन.सी.ई.आर.टी. के अन्य संघटकों से निरंतर संपर्क बनाए हुए हैं। "शिक्षा के ज्वलंत विषय और सरोकार विषयवार एक-एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गयी। इस संगोष्ठी में "मूल्य शिक्षा", "गणित शिक्षा" पर्यावरण शिक्षा, "मार्गदर्शन और परामर्श", "शिक्षा का सार्वजनीकरण" तथा एन.ई.आर.आई.ई. उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों की अपेक्षाएँ विषयों पर सूचना और विचारों का आदान-प्रदान किया गया।

एक विवरणिका—"प्रस्पेक्टिव ऑफ स्कूल एजूकेशन इन नार्थ-ईस्ट स्टेटस विद स्पेशन रेफरेन्स टू मेघालय" जिसमें विद्यालय शिक्षा के विभिन्न आयामों से संबंधित विषय दिए गए हैं, प्रकाशित की गई। मेघालय के प्रमुख व्यक्तियों के लिए गणित में एक कार्यशाला सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

एन.ई.आर.आई.ई. ने राज्यों को अकादमिक और परामर्शकारी सेवाएं प्रदान की। यह केंद्र प्रायोजित योजनाओं के उद्देश्य से योजना प्रस्तावों को तैयार करने के लिए विभिन्न राज्यों से गठित समर्थ और कार्य बल समितियों में प्रतिनिधित्व करता है। राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान के संदर्भ में एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों से अपेक्षित सहायता के लिए अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड त्रिपुरा और सिक्किम राज्य समन्वयन समितियाँ (एस.सी.सी.) गठित की गई हैं।

1996-97 में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के पाठ्यक्रमवार नामांकन

क्रमांक	पाठ्यक्रम	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
1.	बी.एस.सी., बी.एड.				
	प्रथम वर्ष	71	81	96	74
	द्वितीय वर्ष	70	69	72	58
	तृतीय वर्ष	56	52	77	37
	चतुर्थ वर्ष	65	55	70	51

क्रमांक	पाठ्यक्रम	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
2.	बी.ए.बी.एड.				
	तृतीय वर्ष	—	50	63	24
	चतुर्थ वर्ष	—	40	61	39
3.	एम.एड.				
	(प्रारंभिक)	19	13	31	29
	कुल	281	360	470	312

प्रायोगिक विद्यालय (डी.एम.एस.)

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, और मैसूर में स्थित प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) से एक प्रायोगिक विद्यालय संबद्ध होता है। ये प्रायोगिक विद्यालय क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) का एक अभिन्न अंग है और विद्यालय शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा में नवाचारी अभ्यासों का परीक्षण करने के लिए प्रयोगशालाओं के रूप में कार्य करते हैं। आर.आई.ई. द्वारा अध्यापक परीक्षा पाठ्यक्रमों में नामांकित सेवा-पूर्व अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों को प्रायोगिक विद्यालय में व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रायोगिक विद्यालय कक्षा 1 से 12 तक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देते हैं। ये विद्यालय केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) नई दिल्ली से संबद्ध है। इन विद्यालयों में मार्गदर्शन और परामर्शकारी सुविधाएँ भी दी जाती हैं और इनमें +2 स्तर पर अलग प्रकार के व्यावसायिक पाठ्यक्रम होते हैं जैसे—संरचना और निर्माण, बेसिक इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी, कार्यालय-प्रबंध ओर सचिवालय प्रणाली।

प्रायोगिक विद्यालयों में सुशिक्षित और अनुभवी स्टाफ है तथा इनमें उत्कृष्ट प्रयोगशाला और उत्तम पुस्तकालय है। इसके संकाय सामान्य शिक्षण कार्य के अतिरिक्त छात्रों की संप्राप्ति में गुणात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से कक्षा-शिक्षण में नई प्रविधियाँ/कार्यक्रम विकसित करने के लिए प्रयोग और नवाचारी कार्य में व्यस्त रहते हैं। विद्यार्थियों द्वारा न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.) की प्राप्ति को सुनिश्चित करने के लिए ये विद्यालय क्रियात्मक अनुसंधान के जरिए सक्षमता आधारित शिक्षा (सी.बी.टी.) के कार्यक्रम को कार्यान्वित कर रहे हैं।

1996 में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के परीक्षा-परिणाम

उत्तीर्ण प्रतिशत

क्रमांक	पाठ्यक्रम	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
1.	बी.एस.सी./बी.एस.सी.एड.				81.8
	प्रथम वर्ष	95.83	88.46	78.8	
	द्वितीय वर्ष	96.49	96.36	85.8	
	तृतीय वर्ष	98.46	100.00	84.2	
	चतुर्थ वर्ष	100.00	100.00	97.2	
2.	बी.ए.बी.एड/बी.ए.एड.				96.6
	प्रथम वर्ष	—	—	—	
	द्वितीय वर्ष	—	98.03	93.6	
	तृतीय वर्ष	—	100.00	100.00	
	चतुर्थ वर्ष	—	100.00	100.00	
3.	एम.एस.सी.एड.				
	भौतिक विज्ञान	—	—	—	100.00
	रसायन विज्ञान	—	—	—	88.2
	गणित	—	—	—	100.00
	जीव विज्ञान	—	—	—	—
4.	एम.एड.	100	91.67	100	77.7

1996-97 में प्रायोगिक विद्यालयों मे कक्षावार नामांकन

कक्षा	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
1	32	60	68	70
2	32	64	71	70
3	33	78	74	70
4	36	79	71	67
5	32	71	115	66
6	57	95	134	77
7	66	73	127	71
8	60	77	130	61
9	75	76	132	68
10	59	67	117	70
11	44	64	86	44
12	43	62	76	44
कुल	**569**	**866**	**1198**	**778**

1996 में प्रायोगिक विद्यालयों के परीक्षा-परिणाम
उत्तीर्ण प्रतिशत

कक्षा	अजमेर	भोपाल	भुवनेश्वर	मैसूर
दस	75.2	93.9	96.8	100.00
बारह (विज्ञान)	87.5	95.2	89.8	97.00
बारह (कला)	92.0	100.00	76.2	—
बारह (वाणिज्य)	85.5	100.00	72.2	—
बारह (व्यावसायिक)	100.00	100.00	46.7	—
बारह (मानविकी)	—	—	—	100.00
बारह (कार्यालय प्रबंधन और सचिवालय पद्धति)	—	—	—	100.00

1996-97 में क्षे.शि.सं., अजमेर द्वारा प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. कन्टेन्ट इंरिचमेंट ऑन सेलेक्टिड टॉपिक्स ऑफ फिजिक्स +2 लेवल (फोटोप्रति)
2. कन्टेन्ट इंरिचमेंट पैकेज इन सेलेक्टिड टॉपिक्स ऑफ मैथमेटिक्स एट +2 लेवल (फोटोप्रति)
3. ट्रेनिंग पैकेज ऑन टीचिंग सोशल साइंस एट अपर प्राइमरी लेवल (फोटोप्रति)
4. कन्टेन्ट इंरिचमेंट मेटीरियल फॉर +2 लेवल इन केमिस्ट्री फॉर द स्टेट ऑफ राजस्थान (फोटोप्रति)
5. कन्टेन्ट इंरिचमेंट पैकेज इन केमिस्ट्री एट +2 लेवल (फोटोप्रति)

1996-97 में क्षे.शि.सं., भोपाल द्वारा प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. ट्रेनिंग ऑफ डी.आई.ई.टी. फैकल्टी इन द टेक्नीक्स ऑफ राइटिंग क्वेश्चन पेपर एंड इवेल्यूएशन (टंकित और फोटोप्रति)
2. प्राथमिक स्तर पर बहु-कक्षीय शिक्षण प्रयोग एवं परीक्षण (हिन्दी रूपान्तरण) (टंकित एवं फोटोप्रति)
3. केस स्टडी ऑफ डी.आई.ई.टी. ऑफ गुजरात : स्ट्रक्चरल

एंड फक्शनल एनालिसस एंड इवेल्यूएशन (टंकित एवं फोटोप्रति)

4. एनालिस ऑफ आन्सर स्क्रिप्टस ऑफ साइंस एट सैकेंडरी लेवल ऑफ एम.पी. बोर्ड फॉर आईडेनिटफिकेशन ऑफ कॉमन एरर्स (ए रिसर्च एंड डेवलपमेंट प्रोग्राम)
5. कॉमन एरर्स एनालाइस इन सोशल साइंस क्वश्चयन पेपरस एंड आन्सर स्क्रिप्टस (टंकित और फोटोप्रति)
6. आरिएटेंसन ऑफ के.आर.पी. ऑफ महाराष्ट्र एंड गोवा इन कन्टेन्ट मेथेडोलोजी इन साइंस ए बी.एड. कालेज लेवल (टंकित, फोटोप्रति और जिल्दबंद)
7. रिसोंस बुक फॉर टीचिंग फिजिक्स एट सीनियर सेकेंडरी लेवल (टंकित और फोटोप्रति और जिल्दबंद)
8. ट्रेनिंग ऑफ सुपरवाइजरी पर्सनल एंट ब्लाक एंड डिस्ट्रिक्ट लेवल्स इन इफेक्टिव इपिलमेन्टेशन ऑफ डी.पी.ई.पी. एंड एम.एल.एल. बेसड टीचिंग-लर्निंग प्रोसेस (टंकित की जा रही है)
9. ट्रेनिंग ऑफ डी.आर.यू. फकल्टी इन डी.आई.ई.टी. इन अल्ट्रेनेटिव स्कूलिंग इंक्लूडिंग एन.एस.इ.—एंड इ.टी. (टंकित की जा रही है।)
10. ट्रेनिंग ऑफ 5 आर.यू. फैकल्टी इन एन.एफ.ई. (टंकित की जा रही है।)

1996-97 में क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर द्वारा प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. क्लासरूप प्रोसेसिंग लीडिंग टू कोन्नोटेटिव रिलेटिविटी ए जेनरेटिव ऑफ प्राइमरी लेवल पपिल्स आल्ट्रनेटिव काज़ कन्सेप्शंस
2. एसेसमेंट ऑफ कांगनेटिव डेवलपमेंट लेवल ऑफ द प्राइमरी स्टेज पपिल्स विद स्पेशल रेफरेन्स टू सेक्स
3. कॉन्टिन्यूज एंड काम्प्रीहेंसिव इवेल्यूएशन (फोटोप्रति)
4. पोलिसिस, प्रोग्रामस, इम्पलिमेटेंशन ऑफ इन्टरनेशनल एजूकेशन वेल्यू एजूकेशन एट टीचिंग ट्रेनिंग लेवल (फोटोप्रति)
5. इनोवेटिव प्रेक्टिसिस इन प्राइमरी एजूकेशन सेमिनार रिपोर्ट (मिमियोग्राफ)
6. ट्रेनिंग मेटीरियल ऑन इन्वायरनमेंटल आरिएन्टेशन टू स्कूल एजूकेशन फॉर डी.आई.ई.टी. ऑफ ईस्ट्रन रिजन (फोटोप्रति)
7. एनालाइस ऑफ स्लेबी एंड टेक्टसबुक ऑफ सेकेंडरी एंड हायर सेकेंडरी लेवल ऑफ उड़ीसा एंड एडेन्टिफिकेश्यान ऑफ कन्सेप्यस रिलेटिड टू एडोलेन्सस एजूकेशन
8. कंपीटेंसी बेसड टेस्ट फॉर डी.आई.ई.टी. फकल्टी ऑफ ईस्ट्रन रिजन (टंकित)

1996-97 में क्षे.शि.सं., मैसूर द्वारा प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. इवेल्यूएशन ऑफ कंपिटेन्सी बेसड इंस्ट्रक्शनल मेटीरियल:
   - (क) तमिल
   - (ख) मेथमेटिक्स
   - (ग) इन्वायरनमेन्टल स्ट्डीज
   - (घ) टीचर हेंडबुक (कंप्यूटर मुद्रित)
2. इवेल्यूएशन ऑफ कॉपिटेंसी बेसड इस्ट्रक्शनल मेटिरियल डवलप्ड बॉय केरल इन:
   - (क) मलयालम
   - (ख) इन्वायरनमेंट स्टडीज
   - (ग) मेथमेटिक्स

   (कंप्यूटर मुद्रित)
3. इवेल्यूएशन ऑफ इन सर्विस मेटीरियल डवलप्ड बॉय कर्नाटका इन
   - (क) मेथमेटिक्स
   - (ख) इन्वायरनमेंटल स्टडीज
   - (ग) कन्नड़

   (कंप्यूटर मुद्रित)
4. विज्ञानोत्सव—ए केस स्टडी (कंप्यूटर प्रिंट)
5. इवेल्यूएशन ऑफ कंपिटेन्सी बेसड इन्स्ट्रक्शनल मेटिरियल डवलेप्ड बॉय कर्नाटका इन:
   - (क) मेथमेटिक्स
   - (ख) इन्वायरनमेंटल
   - (ग) कन्नड़

   (कंप्यूटर मुद्रित)

6. इन इंवेसटीगेशन इन टू दी एफ ई.ई.एल. ट्रेनिंग प्रोग्राम ए केस स्टडी (कंप्यूटर मुद्रित)
7. वर्कबुक-मेथमेटिक्स : I और 2
8. टीचर्स हैंडबुक—मेथमेटिक्स I
9. टैस्टबुक/वर्कबुक—कन्नड I और 2
10. टीचर्स हैंडबुक—कन्नड I
11. इनरिचमेंट मेटीरियल इन फिजिक्स फॉर सीनियर सेकेन्डरी टीचर्स (कंप्यूटर मुद्रित)
12. एनालीसिस ऑफ कॉमन एरर्स इन केमिस्ट्री कमिटिड बॉय दी स्टूडेंट एट +I लेवल (कंप्यूटर मुद्रित)
13. इन सर्विस ट्रेनिंग प्रेक्टिस इन वॉग इन साउदर्न स्टेटस (कंप्यूटर मुद्रित)
14. इंट्रेक्टिव वीडियो प्रोग्राम (टेली सॉप्ट प्रोग्राम) मेटीरियल (कंप्यूटर मुद्रित)

क्षेत्रीय सेवाएँ

परिषद् ने राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों में विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबद्ध राज्य विभागों के साथ संपर्क रखने के लिए पूरे देश में क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित किए थे। ये क्षेत्रीय कार्यालय परिषद् की संघटक इकाई के कार्यक्रमों और कार्यकलापों के संबंध में राज्यों को आवश्यक सुचनाएँ प्रदान करते हैं। ये कार्यालय अपने क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आने वाले राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों की विशेष आवश्यकताओं से संबंधित सूचना एकत्र करते हैं और उन्हें परिषद् के विभिन्न घटकों को उनके कार्य और कार्यकलापों के आयोजन के लिए प्रदान करते हैं।

1996-97 में राज्यों में क्षेत्र सलाहकारों ने एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न घटकों को राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में आयोजित उनके कुछ कार्यक्रमों में सहायता प्रदान की। परिषद् के विभिन्न संघटकों, मा.स.वि. मंत्रालय संबंधित राज्य शिक्षा विभागों द्वारा लिए गए कार्यकलापों के संबंध में विभिन्न प्रकार के संपर्क कार्य में सहायता प्रदान की जो निम्नलिखित हैं:

— राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परिषद् की सहायता अपेक्षित है। अत: राज्यों की आवश्यकताओं को ये निर्धारित करने के लिए गठित राज्य समन्वय समितियों (एस.सी.सी.) की बैठकों के आयोजन संबंधी मामलों में आर.आई.ई. की सहायता की गई।
— राज्य शिक्षा विभागों/संगठनों एन.सी.ई.आर.टी. और एम.एच.आर.डी. के बीच संपर्क स्थापित करने का कार्य तथा शैक्षिक सूचना का प्रसार कार्य किया गया।
— राज्य शिक्षा विभागों को दी गई सहायता:
   1. राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु अध्यापकों का चयन
   2. अध्यापकों का प्रशिक्षण
   3. व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों का अध्ययन
   4. पाठ्यचर्याओं/अनुदेशी सामग्री का विकास और उनकी समीक्षा
   5. राज्य-स्तरीय खिलौना प्रतियोगिता
   6. नीति प्रतिपादन

मा.सं.वि.मं. को दी गई सहायता के संदर्भ

— राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों में सॉप्ट जैसी केंद्र प्रायोजित योजना के कार्यान्वयन की निगरानी
— स्वैच्छिक अभिकरणों द्वारा प्रस्तुत अनौ. शि. में प्रस्तावों का मंजरी पूर्व-मूल्यांकन
— अनो.शि. केन्द्रों द्वारा चलाई जा रही अनो. शि. स्वैच्छिक अभिकरणों के कार्यों का संयुक्त मूल्यांकन दलों (जे.ई.टी.) के माध्यम से मूल्यांकन

परिषद् के संघटकों/विभागों को दी गई सहायता

— छठा अखिल भारतीय शिक्षा सर्वेक्षण
— राष्ट्रीय प्रतिभा खोज शिक्षा
— व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए स्थानीय अध्ययन
— व्यापक प्रचार
— मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

GUM

व्यवसायिक शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा के सभी चरणों में कार्य-शिक्षा में सुधार करना एन.सी.ई.आर.टी. का एक मुख्य सरोकार रहा है। पंडित सुन्दरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) भोपाल व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास का शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्थान है। यह तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की अंतर्राष्ट्रीय परियोजना के केन्द्रों (यूनीवोक) में से एक है जिनका यूनेस्को संचालन करता है

14

व्यावसायिक शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा के सभी चरणों में कार्य-शिक्षा में सुधार करना एन.सी.ई.आर.टी. का एक मुख्य सरोकार रहा है। पंडित सुन्दरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) भोपाल व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास का शीर्षस्थ राष्ट्रीय संस्थान है। यह तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा की अंतर्राष्ट्रीय परियोजना के केन्द्रों (यूनीवोक) में से एक है जिनका यूनेस्को संचालन करता है। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. का उद्देश्य विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों को अनुसंधान और विकास के माध्यम से तकनीकी सहयोग प्रदान करना है। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल है : 1. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम.एच.आर.डी.), भारत सरकार, राज्य सरकारों और संघ-शासित क्षेत्र के प्रशासनों को व्यावसायिक शिक्षा को कार्यान्वयन और कार्यानुभव कार्यक्रमों (वी.ई.पी. और डब्ल्यू.ई.पी.) में सलाह और सहायता देना; 2. व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों (वी.ई.पी.) और कार्यानुभव कार्यक्रमों (डब्ल्यू.ई.पी.) से संबंधित सभी मामलों में व्यावसायिक शिक्षा की संयुक्त परिषद् और एम.एच.आर.डी. की एक तकनीकी शाखा के रूप में कार्य करना, राष्ट्रीय, राज्य, जिला और सांस्थानिक स्तरों पर व्यावसायिक शिक्षा के लिए व्यापक प्रबंध प्रणाली की स्थापना को बढ़ावा देना, उसकी निगरानी करना और उसका मार्गदर्शन करना, व्यावसायिक शिक्षा और कार्यानुभव के क्षेत्र में औपचारिक और अनौपचारिक दोनों ही पद्धतियों के लिए संपूर्ण संसाधन संस्थान के रूप में कार्य करना। इसके अन्य कार्यों में शामिल हैं: विकास के लिए जनशक्ति तैयार करने के सिलसिले में देश भर की शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन करना तथा निगरानी करना, नवसाक्षरों और अन्य विशेष समूहों के लिए जरूरी व्यावसायिक शिक्षा को विकसित करना, पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के विकास तथा स्टाफ के विकास और प्रशिक्षण का मार्गदर्शन और समन्वयन करना, व्यावसायिक शिक्षा संबंधी साहित्य और अनुसंधान के निष्कर्षों का प्रचार-प्रसार करना, वी.ई.पी. और डब्ल्यू.ई.पी. के क्षेत्र में राज्य सरकार के कार्यक्रमों का अनुवीक्षण और मूल्यांकन करना तथा इनमें सुधार के लिए परामर्श देना, कार्यक्रमों का अनुवीक्षण और मूल्यांकन करना तथा इनमें सुधार के लिए परामर्श देना, राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली की एकरूपता सुनिश्चित करना और शिक्षण के स्तर सहित सभी स्तरों पर गुणवत्ता पर अनुरक्षण करना, देशभर के व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों के सभी स्तरों पर औपचारिक और अनौपचारिक दोनों पद्धतियों में उत्कृष्टता को बढ़ावा देना, वी.ई. और डब्ल्यू.ई. तथा संबंधित और समर्थनकारी क्षेत्रों में अनुसंधान और अन्य अध्ययनों को पोषित करना, गुणवत्ता के लिए पैरामीटर को ध्यान में रखते हुए प्रमाण-पत्रों की समकक्षता को स्थापित करना और व्यावसायिक संस्थानों तथा कार्यक्रम को मान्यता प्रदान करना, संबंधित और अन्य संगठनों के स्वैच्छिक समन्वयन के आधार पर व्यावसायिक शिक्षा सूचना प्रणाली और सेवाओं के राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क को प्रोन्नत करना तथा सूचनाओं की प्रभावशाली पहुंच को सुगम बनाना और व्यावसायिक शिक्षा और मानव संसाधन विकास के अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं का ध्यान रखना।

विकास कार्यक्रम

1. *व्यावसायिक पाठ्यचर्या*

पुस्तकालय और सूचना विज्ञान, विपणन और विक्रयिक, संयत्र और संरक्षण, परिवार के लिए वस्त्र, रेशम उत्पादन, यात्रा और पर्यटन प्रविधि तथा प्लास्टिक प्रौद्योगिकी की पाठ्यचर्याओं को संशोधित किया गया। व्यावसायिक परामर्श और मार्गदर्शन, कृषि-वन उत्पादन प्रक्रियन और जलसंभर प्रबन्धन की नई पाठ्यचर्या विकसित की गई।

2. *व्यावसायिक और व्यवसाय-पूर्व पाठ्यक्रमों, नवसाक्षरों और प्रौढ़ों के लिए अनुदेशी सामग्री*

उद्यम विकास, फसल उत्पादन बेकरी और कंफेक्शनरी, भोजन परिरक्षण मेकेनिकल अभियान्त्रिक प्रौद्योगिकी, स्थलीय मछलीपालन, रेशम उत्पादन और व्यावसायिक मार्गदर्शन और परामर्श के क्षेत्र में अनुदेशी सामग्री विकसित की गई। व्यावसायिक शिक्षा में सतत शिक्षा के एक भाग के रूप में प्रौढ़ों के लिए सामग्री विकसित की जा रही है। नर्सरी वाटिका, मछली-पालन, तम्बाकू प्रौद्योगिकी, जैव उर्वरक, हस्तशिल्प में व्यवसाय पूर्व-पाठ्यक्रमों के लिए अनुदेशी

सामग्री का विकास किया जा रहा है। छोटे बच्चों के वस्त्रों के डिजाइन और सिलाई, परचून व्यवसाय और आशुलिपि के लिए अनुदेशी सामग्री तैयार की गई। कक्षा 11 के लिए मैकेनिक अभियान्त्रिक प्रौद्यागिकी और कक्षा 12 के लिए बागवानी की अनुदेशी सामग्री भी विकसित की गई। वर्ष 1996-97 में निम्नलिखित 31 पाण्डुलिपियां विकसित की गईं। इन पाण्डुलिपियों की अधिक प्रतिलिपियां तैयार करके संबंधित विद्यालयों में वितरण के लिए राज्यों को भेजा गया।

विकसित पाण्डुलिपियों का विवरण

डेरी उद्योग	1
डेरी प्रौद्योगिकी	5
कार्यालय प्रबंधन	1
बैंकिंग	1
व्यावसायिक वस्त्रों का डिजाइन और निर्माण	4
टेक्सटाइल डिजाइनिंग	2
भवन अनुरक्षण	4
ग्रामीण अभियांन्त्रिकी प्रौद्योगिकी	6
बागवानी	5
मुर्गी-पालन	1
बेकरी और कंफेक्शनरी	1

3. *मार्गदर्शी दस्तावेजों का निर्माण/संशोधन*

निम्नलिखित मार्गदर्शी दस्तावेज तैयार/संशोधित किए गए:

— हैंडबुक फार वोकेशनल सर्वे वर्कर्स (संशोधित)

— एक्क्रीडिटेशन ऑफ एन.ओ.जी. एंड प्राइवेट इंस्टीट्यूशंस

— गाईडलाइन्स फार आर्ग्रेनाइजेशन ऑफ इन सर्विस ट्रेनिंग प्रोग्राम फार द वोकेशनल टीचर्स (संशोधित)

4. *वीडियो फिल्म*

कृषि (बागवानी) गृह विज्ञान और सामान्य आधार पाठ्यक्रम के क्षेत्र में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लोकप्रिय बनाने के लिए चार वीडियो फिल्में निर्मित की गईं। इनमें से कुछ फिल्मे दूरदर्शन नेटवर्क पर प्रसारित की गईं।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

व्यावसायिक विद्यालयों में उद्यम विकास, भवन अनुरक्षण, स्थलीय मछली-पालन, बेकरी और कंफेक्शनरी, कंप्यूटर विज्ञान, कार्यालय प्रबंधन, मार्गदर्शन और परामर्श, और लेखाशास्त्र के अनुदेशन कार्य में सुधार लाने के उद्देश्य से अध्यापकों के लिए नौ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। व्यापक व्यासायिक पाठ्यक्रम (जी.वी.सी.) के संसाधन व्यक्तियों/प्रशिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। व्यावसायिक शिक्षा और व्यवसाय पूर्व शिक्षा के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के संबंध में संकल्पनात्मक स्पष्टीकरण के लिए प्रमुख कार्यकर्ताओं के लिए एक अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

विस्तार

कृषि उत्पादन, खाद्य प्रक्रियन और उद्योगों तथा सूचना प्रौद्योगिकी के नियोक्ताओं के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर तीन राष्ट्रीय बैठकें आयोजित की गई। इन बैठकों में विख्यात अकादमिशियनों, उद्योगपतियों वैज्ञानिकों और इन क्षेत्रों के नियोक्ताओं ने भाग लिया। इन राष्ट्रीय बैठकों की रिपोर्ट प्रकाशित की गई। स्वरोजगार सहयोग और नियोजन के लिए प्रशिक्षुता प्रशिक्षण पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी में एम.एच.आर.डी., बी.ओ.ए.टी., डी.जी.ई.टी., राज्य व्यावसायिक शिक्षा निदेशालयों और उद्योगों के विशेषज्ञों ने भाग लिया। प्रशिक्षु प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए मार्गदर्शिका का प्रारूप तैयार किया गया।

व्यावसायिक शिक्षा पर राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों—बिहार, राजस्थान, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, हरियाणा, उड़ीसा और पांडिचेरी से 327 प्रमुख कार्यकर्ताओं के लिए आठ अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। इम्फाल में उत्तर-पूर्वी राज्यों के लिए व्यवसाय-पूर्व शिक्षा पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। व्यवसाय-पूर्व शिक्षा पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम लखनऊ में आयोजित किया गया जिसमें उत्तरी राज्यों के 66 प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

एक छमाही पत्रिका "इंडियन जर्नल आफ वोकेशनल एजुकेशन" का प्रवेशांक प्रकाशित किया गया। इस पत्रिका में देश में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों की संवृद्धि और इस क्षेत्र के किए गए अनुसंधान और विकास कार्यों को प्रकाश में लाया जाता है। त्रिमाही बुलेटिन "वोकेशनल एजुकेशन" के तीन अंक प्रकाशित किए गए और इन्हें संबंधित राज्यों के अधिकारियों और 40,008 विद्यालयों को भेजा गया।

व्यावसायिक शिक्षा के प्रासंगिक विषयों में व्याख्यान देने तथा अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करने के लिए देश के प्रमुख शिक्षाविदों को आमंत्रित किया गया। ये कार्यक्रम संकाय के व्यावसायिक संवर्द्धन के लिए आयोजित किए हैं।

मूल्यांकन

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. को मा.सं.वि. मंत्रालय द्वारा अनुदान प्राप्त करके व्यावसायिक पाठ्यक्रम चलाने वाले स्वैच्छिक संगठनों के मूल्यांकन का कार्य सौंपा गया है। इस प्रयोजन के लिए मा.सं.वि. मंत्रालय द्वारा एक संयुक्त मूल्यांकन दल (जे.ई.टी.) गठित किया गया। जे.ई.टी. ने दिल्ली, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, उड़ीसा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मणिपुर, सिक्किम, हरियाणा, पश्चिमी बंगाल और केरल के गैर-सरकारी संगठनों का दौरा किया। मध्य प्रदेश के गैर-सरकारी संगठनों का मूल्यांकन किया जा रहा है। मा.सं.वि. मंत्रालय को गैर-सरकारी संगठनों के मूल्यांकन की रिपोर्ट प्रेषित कर दी गई।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

विश्व के 100 से भी अधिक देशों में नेटवर्क के लिए यूनीवोक केन्द्र बनाए गए ताकि राष्ट्रीय संस्थाओं और केन्द्रों के साथ प्रत्यक्ष रूप से द्विपक्षीय सहयोग हो सके और प्रणाली विकास, बुनियादी ढांचे और सूचना तथा संचार नेटवर्क जैसे तीन कार्य क्षेत्रों के संबंध में सूचना का आदान-प्रदान किया जा सके। यूनीवोक केन्द्र के रूप में भारत में पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में विशेषकर यूनेस्को के अंतर्गत आने वाले यूनीवोक कार्यकलापों में बहुत सक्रिय है। यूनीवोक केन्द्र बर्लिन द्वारा तैयार यूनीवोक सूची में पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के विभिन्न प्रकाशनों और कार्यकलापों की सूची भी शामिल की गयी है। संस्थान ने बेल्जियम और कोरिया गणराज्य (दक्षिणी कोरिया) के साथ व्यावसायिक शिक्षा के प्रलेखन और सूचना के आदान-प्रदान की प्रक्रिया आरम्भ करके दोनों देशों के बीच हस्ताक्षरित सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (सी.ई.पी.) के अनुबंधों को कार्यान्वित किया है।

व्यावसायिक शिक्षा को क्षेत्र स्तर पर सहायता

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर ने शिक्षा के व्यावसायीकरण के मुद्दों, प्रवत्तियों और कार्यान्वयन की प्रणालियों पर राज्यों के प्रमुख कार्यकर्ताओं के लिए चार दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया।

1996-97 के दौरान प्रकाशित रिपोर्टें और अन्य सामग्री

1. क्वार्टर्ली बुलिटेन ऑफ वोकेशनल एजूकेशन अंक 4 वाल्यूम 11 जनवरी-मार्च 1996
2. क्वार्टर्ली बुलिटेन ऑफ वोकेशनल एजूकेशन अंक 1, वाल्यूम-3 अप्रैल-जून 1996
3. क्वार्टर्ली बुलिटेन ऑफ वोकेशनल एजूकेशन अंक 11 वाल्यूम-3 जुलाई-सितंबर 1996
4. इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजूकेशन अंक 1, वाल्यूम-1
5. अंग्रेजी पोस्टर (6) जॉब ओपरच्यूनिटी इन दी एरिया ऑफ (1) इंजिनियरिंग एंड टेक्नोलोजी (2) होम साइंस (3) एग्रीकल्चर (हिंदी और अंग्रेजी में)
6. ए फ्रेमवर्क आन वोकेशनल गाइडेन्स सर्विसेज इन वोकेशनल स्कूलस अप टू +2 लेवल

पाठ्यचर्या विकास/संशोधन

7. कांपिटेंसिस बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑन डेरी टेक्नोलॉजी
8. कांपिटेंसिस बेस्ड वोकेशनल करीकुलम ऑफ पोल्ट्रीय फार्मिंग
9. करीकुलम इन जेनेटिक वोकेशनल कोर्स
10. करीकुलम इन बेसिक फाइनांस सर्विस
11. करीकुलन इन मार्किटिंग एंड सेल्समेनशिप
12. कांपिटेंसिज बेस्ड करीकुलम ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फोरमेशन साइंस (संशोधित) (फोटोप्रति)
13. कांपिटेंसीज बेस्ड करीकुलम ऑफ मार्किटिंग एंड सेल्समेनशीप (संशोधित) (फोटोप्रति)
14. कांपिटेंसीज बेस्ड करीकुलम ऑन प्रोसेसिंग ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड फॉरेस्ट प्रोडक्शन (फोटोप्रति)
15. कांपिटेंसीज बेस्ड करीकुलन ऑन वाटरशेड मैनेजमेंट (फोटोप्रति)
16. कांपिटेंसीज बेस्ड करीकुलम ऑन प्लांट प्रोटेक्शन (संशोधित) (फोटोप्रति)

17. कांपिटेंसीज बेस्ड करीकुलम ऑन सेरीकल्चर (संशोधित) (फोटोप्रति)

18. कांपिटेंसीज बेस्ड करीकुलम ऑन ट्रेवल एंड टूरिजम टेक्नीक्स (संशोधित) (फोटोप्रति)

राष्ट्रीय बैठकों/संगोष्ठियों पर रिपोर्ट

19. रिपोर्ट ऑन नेशनल मीटिंग ऑन स्टेप्स एंड प्रोसपेक्टस ऑफ वोकेशनल एजूकेशन प्रोग्रेस इन द एरिया आफ बिजनेस एण्ड कॉमर्स (फोटोप्रति)

20. रिपोर्ट ऑन नेशनल मीटिंग ऑन वोकेशनल एजूकेशन फॉर द इम्प्लायर्स ऑफ एग्रीकल्चर प्रोडक्शन (फोटोप्रति)

21. रिपोर्ट ऑन नेशनल मीटिंग आन ह्यूमन रिसोर्सिस फॉर फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्रीज (फोटोप्रति)

22. रिपोर्ट ऑन नेशनल मीटिंग ऑन इंफार्मेशन टेक्नॉलोजी (फोटोप्रति)

23. रिपोर्ट आन नेशनल सेमिनार ऑन अप्रेन्टिसशीप ट्रेनिंग फॉर सेल्फ इम्पलॉयमेंट एंड प्लेसमेंट (फोटोप्रति)

अनुदेश सामग्री : पाठ्यपुस्तकें/अभ्यास नियमावली

24. इंस्ट्रक्शन मेटीरियल फॉर क्लास 11 इन जेनेटिक वोकेशनल कोर्स

25. बेसिक इलेक्ट्रिकल टेकोनोलोजी टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

26. मिल्क प्रोसेसिंग—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

27. डेरी इंजीनियरिंग—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

28. फूड प्रिजर्वेशन-I टेक्नीक्स—प्रैक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

29. फंडामेंटल ऑफ फूड प्रिजर्वेशन—प्रक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

30. एलीमेंट्री टेक्सटाइल—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

31. अपारैल डिजाइन—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

32. कमर्शियल कलोथिंग—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

33. बेसिक डिजाइन टू टेक्सटाइल डिजाइन—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

34. टेक्सटाइल क्राफ्ट—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

35. मेकेनिकल इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी मैनुफैक्चरिंग प्रोसेसिंग—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

36. मैंटिनेंस एंड रिपेयर ऑफ इलेक्ट्रिकल डोमेस्टिक एप्लाऐंसस—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

37. बिल्डिंग मेट्रीरियल—टेक्स्ट बुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

38. आल्टरनेटिव एण्ड माडर्न बिल्डिंग यार्ड प्रैक्टिसिस टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

39. एस्टिमेटिंग एंड कॉस्टिंग—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

40. बिल्डिंग मैट्रीरियल—प्रैक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

41. मैट्रीरियल एप्लीकेशन—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

42. स्वायल एंड वाटर मैनेजमेंट—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

43. स्वायल एंड वाटर मैनेजमेंट—प्रक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

44. एनर्जी एप्लिकेशन-2 टेक्स्टबुक फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

45. फंडामेंटल ऑफ हार्टीक्लचर—प्रैक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

46. फ्रूट प्रोडक्शन—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

47. वेजिटेबल प्रोडक्शन—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

48. डिपोजिट एकाउन्ट्स—प्रैक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

49. बिजनेस कम्यूनिकेशन एंड स्टेटिसटिक्स टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

50. बिजनेस कम्यूनिकेशन एंड स्टेटिसटियस—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

51. ऑडिटिंग थ्यूरी फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

52. एलीमेंट्स ऑफ एकाउन्टिंग : थ्यूरी फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)

53. डेरी प्रोडक्शन एंड क्वालिटी ऑफ मिल्क टेक्स्टबुक—फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)
54. इंस्ट्रक्शनल मेटीरियल फॉर न्यो लिटरेट्स (वर्मीकल्चर)
55. फूड प्रोडक्शन—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11
56. फोरेज प्रोडक्शन एंड कंजर्वेशन टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)
57. फूड प्रीजर्वेशन टेक्नीक्स टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)
58. फंडामेंटल ऑफ फूड प्रीजर्वेशन टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)
59. टेक्सटाइल क्राफ्ट—(ट्रेडिशन एंड क्रिएटिव) टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)
60. अपारैल डिजाइन—प्रेक्टिकल मैनुअल फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)
61. मैनुफेक्चरिंग मैटीरियल एंड टेक्नोलॉजी टेक्स्टबुक फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)
63. वेजिटेबल प्रोडक्शन एंड ब्रीडिंग—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)
64. पोल्ट्री प्रोडक्शन एंड ब्रीडिंग—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 12
65. फाउंडेशन ऑफ फूड साइंस—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)
66. इंजीनियरिंग साइंस एण्ड मेकेनिकल मेजरमेंट—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 12 (फोटोप्रति)
67. इंवायरनमेंट एंड हॉस्पिटल इन्फेक्शन—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)
68. इंस्ट्रक्शनल मैटीरियल फॉर नयो-लिटरेट (सेरीकल्चर) (फोटोप्रति)
69. इनलैंड फिशरिज—टेक्स्टबुक फॉर क्लास 11 (फोटोप्रति)

व्यवसाय-पूर्व अनुकरणीय सामग्री

70. बायॉफिशरी (फोटोप्रति)
71. बी कीपिंग (फोटोप्रति)
72. वर्मीकल्चर (फोटोप्रति)
73. एक्वाकल्चर (फोटोप्रति)
74. डेकोरेटिव टेकनिक्स फॉर चिल्ड्रन वीयर (फोटोप्रति)

शैक्षिक प्रौद्योगिकी
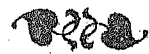
शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रमुख संस्थान के रूप में परिषद् के केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) का मुख्य सरोकार दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों, 16 एम.एम की फिल्मों, अन्य अधिक सामग्री के विकास, शैक्षिक प्रौद्योगिकी में कार्मिकों को प्रशिक्षण, मीडिया नियोजन, आलेख लेखन, कार्यक्रम निर्माण, और तकनीकी प्रचालन से है

15

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के प्रमुख संस्थान के रूप में परिषद् के केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) का मुख्य सरोकार दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों, 16 एम.एम की फिल्मों, अन्य अधिक सामग्री के विकास, शैक्षिक प्रौद्योगिकी में कार्मिकों को प्रशिक्षण, मीडिया नियोजन, आलेख लेखन, कार्यक्रम निर्माण और तकनीकी प्रचालन से है। यह मीडिया नियोजन और निर्माण, प्रलेखन और सूचना तथा सामग्री का प्रसार करने और शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग तथा विकास में परामर्श देने तथा संबंधित विभिन्न पहलुओं के अनुसंधान के संचालन कार्य से संबद्ध है।

सी.आई.ई.टी. "तरंग" शीर्षक के द्वारा दैनिक प्रातः कालीन शैक्षिक दूरदर्शन सेवा के लिए सामग्री जुटाने की जिम्मेदारी निभाता है। यह ई.टी.वी. सेवा प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए हिंदी में प्रसारित होता है। कार्यक्रमों का निर्माण सी.आई.ई.टी. और लखनऊ एवं पटना के एस.आई.ई.टी. में होता है। "तरंग" कार्यक्रम के अंतर्गत इनका प्रसारण किया जाता है। अहमदाबाद, भुवनेश्वर, हैदराबाद और पुणे में स्थित अन्य एस.आई.ई.टी. क्रमशः अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रमों के रूपांतरण की व्यवस्था करते हैं। ई.टी.वी. कार्यक्रम ग्यारह राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों चंडीगढ़ और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में प्रसारित होते हैं। विशेषकर ई.टी.वी. सेवा को सामान्यतया शैक्षिक प्रौद्योगिकी का देशभर में विस्तार के उद्देश्य से नवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत और अधिक एस.आई.ई.टी. स्थापित करने का प्रस्ताव मा.सं.वि.मं. के अधीन विचारणीय है।

आकाशवाणी के साथ हुए ज्ञापन समझौते के हस्ताक्षर के अनुकरण में सी.आई.ई.टी. आकाशवाणी के इलाहाबाद, भोपाल, दिल्ली, इन्दौर, जयपुर, जोधपुर, लखनऊ, पटना, रोहतक और शिमला स्टेशनों के लिए श्रव्य कार्यक्रमों का प्रबन्ध करना है। यह कार्यक्रम प्रत्येक सप्ताह में एक बार "उमंग" शीर्षक से प्रसारित होता है।

डी.डी. 3 पर तरंग

दूरदर्शन के चैनल 3 के लिए सी.आई.ई.टी. वीडियो कार्यक्रम उपलब्ध करा रहा है। शैक्षिक प्रसारण का एक भाग होने के कारण, सी.आई.ई.टी. और अन्य एजेन्सियां जैसे सी.ई.सी. और इग्नो इस प्रसारण के लिए कार्यक्रम उपलब्ध करा रहे हैं।

प्रस्तावित कार्यक्रम का प्रसारण, सप्ताह में प्रति दिन आधे घंटे के लिए किया जाएगा। इसमें 9-11 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए विभिन्न कार्यक्रम शामिल किए जाएंगे। उस आधे घंटे के प्रसारण के अतिरिक्त 10 और 12 कक्षा के विद्यार्थियों के लिए गणित के कार्यक्रमों की एक शृंखला का प्रसारण भी किया जाएगा। गणित के जिन क्षेत्रों में विद्यार्थियों को अधिक कठिनाई होती है, इन क्षेत्रों में विशेषज्ञ अध्यापकों द्वारा अध्यापन विधि के माध्यम से कार्यक्रम प्रसारित करने का प्रस्ताव है। यह तीन महीने प्रायोगिक प्रसारण दूरदर्शन के माध्यम से सीधे शिक्षण के लिए है और सी.आई.ई.टी. के अन्य श्रेणियों और विषयों में भी इस प्रकार के प्रसारण के विस्तार का प्रस्ताव रखा गया है।

शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम से एक स्थिर चित्र

शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम

वर्ष 1996-97 के दौरान संस्थान ने प्राथमिक स्तर के बच्चों और अध्यापकों के लिए 83 नए ई.टी.वी. कार्यक्रम तैयार किए। इसके अलावा शृंखला के लिए 52 कार्यक्रम तैयार किए गए हैं, जिनका प्रयोग "तरंग" कैपसूल में किया जाता है। पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों पर बाह्य पट कथा लेखकों द्वारा आलेख लिखवाए जा रहे हैं। पट-कथा लेखकों के आलेख को अन्तिम रूप देने में मदद करने के लिए ही विषय-वस्तु, मीडिया और निर्माण के विविध पक्षों के विशेषज्ञों को शामिल करके संस्थान की आंतरिक आलेख समिति गठित की गई है। ई.टी.वी.. कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या की अधिगम प्रक्रिया में संपूर्ण शैक्षिक सहयोग देना और विद्यार्थियों को न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल) प्रगति में सहायता करने हेतु बच्चों के लिए पर्यावरण शिक्षा (स्वच्छता और सुव्यवस्था), प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की पाठ्यचर्या में बहुकक्षीय अध्यापन और महिला संबंधी मुद्दों के संयोजन जैसे—कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में ई.टी.वी. कार्यक्रमों का निर्माण शुरू किया गया है। पूर्व-सेवा प्राथमिक अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रयोग के लिए नौ कार्यक्रमों की एक शृंखला का विकास किया जा रहा है।

शैक्षिक ऑडियो कार्यक्रम से एक स्थिर चित्र

यद्यपि, "टर्न-की" के आधार पर बाह्य निर्माण के लिए कार्यक्रमों का आवंटन समाप्त कर दिया गया है, परन्तु साथ ही बाहरी निर्माताओं को सी.आई.ई.टी. की सभी सुविधाओं का प्रयोग करके निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के लिए प्रोत्साहित भी किया गया है। सुनो कहानी और "कला शिक्षा" पर दो शृंखलाएं पूरी हो चुकी हैं और "खोज और अन्वेषण"। शीर्षक से बनाई जा रही शृंखला पूरी होने वाली है।

शैक्षिक ऑडियो कार्यक्रम

3-6 आयु वर्ग के बच्चों के लिए बनाए गए कार्यक्रम "उमंग" के अतिरिक्त शैक्षिक रेडियो प्रभाग ने विभिन्न लक्ष्य वर्ग और विषयों पर श्रव्य कार्यक्रम का निर्माण प्रारंभ किया है। वर्ष 1996-97 के दौरान लगभग 110 ऑडियो कार्यक्रम तैयार किए गए। इनमें महत्वपूर्ण शृंखलाएं हैं : शिक्षा योग्य मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए शृंखला, माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के लिए *प्राचीन भारत का इतिहास, मध्य युगीन भारत पर एक दृष्टि*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के लिए *हर दिन हो किताब का दिन*, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के लिए बच्चों में संस्कृत के शिक्षण को प्रोत्साहित करने हेतु 24 कार्यक्रमों की शृंखला और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान।

शैक्षिक फिल्में

सी.आई.ई.टी. का फिल्म और फोटो प्रभाग 16 एम. एम. की शैक्षिक फिल्में तैयार करता है। वर्ष 1996-97 के दौरान, प्रभाग ने अक्तूबर 1995 के सूर्य ग्रहण पर बनाई गई फिल्म *कोरोनेशन ऑफ द सन* और इसका हिन्दी रूपान्तर *सूरज की ताजपोशी*, अरावली की पर्वत-शृंखलाओं पर आधारित फिल्म *वाइब्रैंट रेंजिज* व इसका हिन्दी रूपान्तर *सवेंदनशील पर्वतमाला*, *ट्राइब्स ऑफ गढ़वाल* और इसका हिन्दी रूपान्तर *गढ़वाल की जनजातियाँ*, लेटन ड्रीम- *मुगल गार्डनस*, और *टेक्नीक ऑफ फोटोग्राफी* नामक फिल्में पूरी की हैं। *वीर भूमि, देव भूमि, कोयम्बटूर प्लेन* और *प्रिंसिस एंड द मून* भी लगभग पूरी होने वाली हैं।

वीडियो उत्पादनों का विपणन

सी.आई.ई.टी. ने निजी एजेंसियों के माध्यम से अपने उत्पादों

(ऑडियो और वीडियो कार्यक्रमों) के विपणन की व्यवस्था की है। वर्ष 1996-97 के दौरान, निजी एजेंसियों ने विपणन के लिए बड़ी मात्रा में दृश्य और श्रव्य कार्यक्रमों का चयन किया।

वीडियो त्यौहार

सी.आई.ई.टी. प्रतिवर्ष "बाल वीडियो त्यौहार" का आयोजन करता है। इस त्यौहार का उद्देश्य निर्माण की गुणवत्ता में सुधार हेतु प्रोत्साहन देने और कार्यक्रमों का आदान-प्रदान करना है। अध्यापकों और 5-8 एवं 9-11 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए वीडियो कार्यक्रम छः एस.आई.ई.टी. और सी.आई.ई.टी. से आमन्त्रित किए जाते हैं। सी.आई.ई.टी. ने अहमदाबाद में 3 से 5 अक्तूबर 1996 में 8वां वीडियो त्यौहार का आयोजन किया। इस त्यौहार में श्रव्य कार्यक्रम भी शामिल किए गए थे।

सी.आई.ई.टी. को एन.एच.के. पुरस्कार

"एक जतन और" नामक शीर्षक से शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम को एन.एच. के द्वारा स्थापित 23वें जापान पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया और विशेष प्रशंसनीय पुरस्कार दिया गया।

अहमदाबाद में अक्तूबर 1996 में आयोजित हुए 8वें वीडियो त्यौहार में "घर" और "केंचुआ" कार्यक्रमों को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
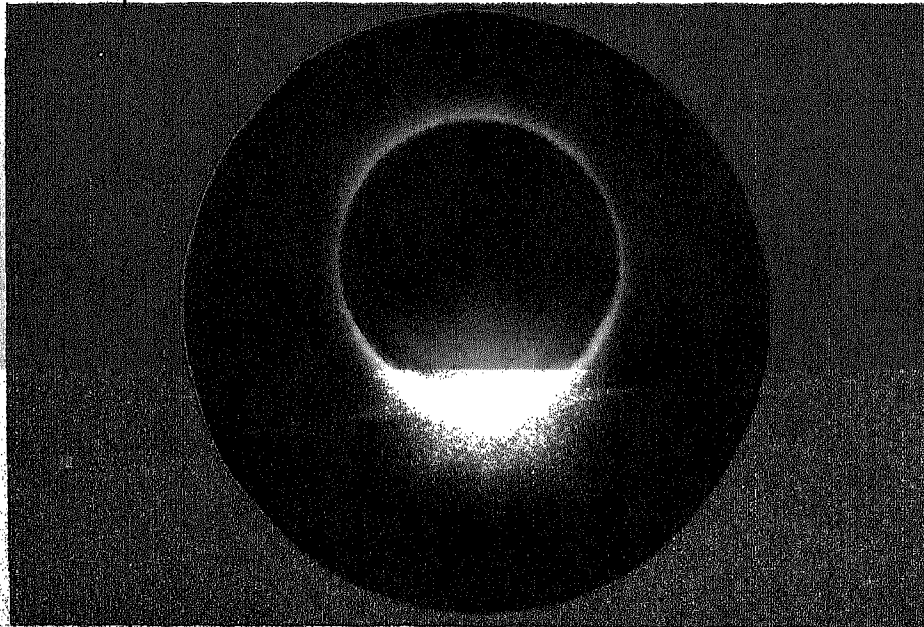
प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5) की पाठ्यचर्या के सभी क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण तैयार कर लिया गया है। अब न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.) पर आधारित गणित, भाषा, पर्यावरण अध्ययन, कला शिक्षा और कार्य अनुभव के कार्यक्रमों के संक्षिप्त विवरण से संबंधित प्रलेख उपलब्ध है। एक प्रमाणित माध्यम पाठ्यचर्या के विकास के लिए अन्य विभिन्न विकासात्मक और अनुसंधान क्रियाकलापों को सम्मिलित करके प्रस्तावित अभ्यास कार्य का विस्तार किया जाना है।

विशेष शिक्षा (शिक्षा योग्य मानसिक रूप से कमजोर) अध्यापक शिक्षा (बहुश्रेणी अध्यापन और महिलाओं के मुद्दों का संयोजन) और पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्रों में भी कार्यक्रम के संक्षिप्त विवरणों और मीडिया कार्यक्रमों (ऑडियो और वीडियो) का भी विकास किया गया है। कार्यक्रमों के आलेखों और कार्यक्रमों के क्षेत्र परीक्षण भी किए गए।

टेलिकान्फ्रेंसिंग प्रयोग

प्राथमिक अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (एस.ओ.पी.टी.) के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों को नवाचारी टेलीकान्फ्रेंसिंग पद्धति द्वारा प्रशिक्षण दिया जाता है। इसमें प्रशिक्षण केन्द्र के एक ओर वीडियो तथा दोनों ओर के लिए श्रव्य माध्यमों—टेलिफोन अथवा फेक्स के माध्यम से जोड़ा जाता है। अगस्त, 1996 के दौरान मध्य प्रदेश राज्य के 45 केन्द्रों में प्राथमिक विद्यालयी अध्यापकों को इस पद्धति के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। 13 लघु दृश्य कार्यक्रमों की शृंखला का भी विकास किया गया। कर्नाटक और मध्य प्रदेश राज्यों की टेलिकान्फ्रेंसिंग कार्यक्रम की मूल्यांकन रिपोर्ट निकाली गई।

नए प्रौद्योगिकीय उपकरण

सी.आई.ई.टी. और एस.आई.ई.टी. के कार्मिकों के लिए नवीनतम बेटाकॉम वीडियो कैसेट रिकार्डरों और सी.सी.डी. कैमरा के बारे में पर्याप्त जानकारी देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

किया गया। इन उपकरणों को खरीदने और सी.आई.ई.टी. एवं एस.आई.ई.टी. में स्थापित करने पर लागत रु.1.3 करोड़ का खर्च आया। सी.आई.ई.टी. नए प्रौद्योगिकी उपकरण जैसे ग्राफिक्स और एनिमेशन स्टेशन, बेटा रिकॉर्डर, नॉन-लीनियर एडिटिंग तंत्र और परीक्षण एवं माप यंत्र के उपकरण भी खरीद रहा है।

शैक्षिक दूरदर्शन प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रम

सी.आई.ई.टी. ने विभिन्न प्रस्तुतकर्ताओं और प्रयुक्तकर्ताओं के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण कार्यक्रम भी प्रारंभ किया है। संस्थान में ही नए संकाय को आलेखन और निर्माण सम्बन्धी प्रशिक्षण देने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। मध्य प्रदेश में डी.आई.ई.टी. के ई.टी. संकाय के लिए "कंप्यूटर के प्रयोग" विषय पर देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इन्दौर के सहयोग से एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। विश्व विद्यालय के शिक्षा विभागों, उच्च शिक्षा अध्ययन संस्थानों (आई.ए.एस.ई.) अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों (सी.टी.ई.) और जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डी.आई.ई.टी.) के संकाय सदस्यों के लिए संकल्पना और शैक्षिक प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। एस.वी. राजकीय पॉलिटेकनीक, भोपाल और देवी अहिल्या बाई विश्वविद्यालय इन्दौर के जन-संचार विभाग के छात्रों को सी.आई.ई.टी. द्वारा कार्यक्रम निर्माण के विभिन्न पक्षों का प्रशिक्षण दिया गया। एस.सी.ई.आर.टी., मिजोरम के ई.टी. प्रकोष्ठ के कार्मिकों के लिए "आलेखन और निर्माण की तकनीकों" विषय पर भी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सी.आई.ई.टी. और एस.आई.ई.टी. के आठ कार्मिकों को उपकरणों के रख-रखाव के विशेष प्रशिक्षण हेतु हांग-कांग भेजा गया।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी में क्षेत्रीय स्तर पर योगदान

आर.आई.ई., मैसूर ने कक्षा 3 और 4 के लिए कन्नड़ और तमिल में श्रव्य कार्यक्रमों के निर्माण का कार्य शुरू किया। इसमें संस्थान ने केंद्रिक पाठ्यचर्या जैसे—"पर्यावरण को संरक्षण", "सामाजिक बंधनों की समाप्ति" भारतीय सांस्कृतिक परम्परा को शामिल किया है। इन विषयों के पांच कैसटों का कर्नाटक राज्य के प्राथमिक विद्यालयों में परीक्षण किया जा रहा है।
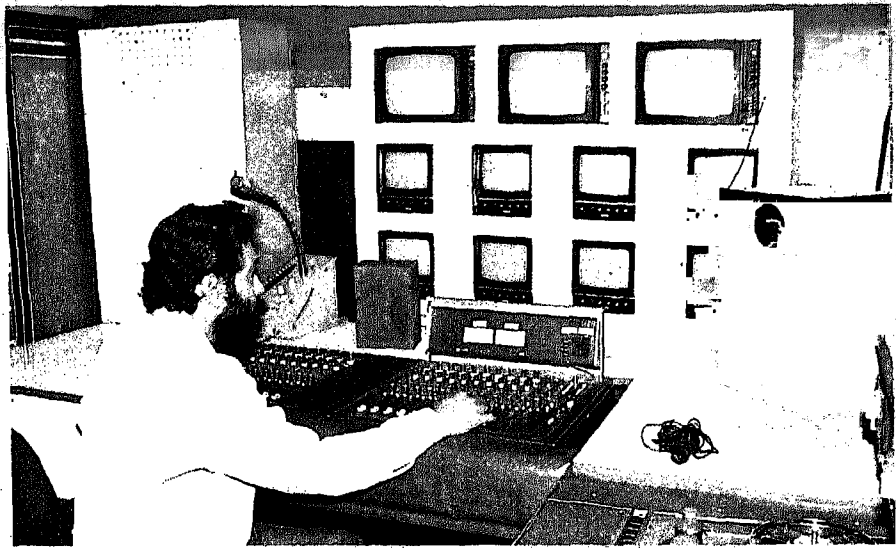
तमिलनाडु और पांडिचेरी के अनुरोध पर आर.आई.ई., मैसूर के कक्षा 3 और 4 में तमिल शिक्षा के लिए क्षमता आधारित श्रव्य कार्यक्रमों के विकास का उत्तरदायित्व लिया है। तमिल में 50 श्रव्य कार्यक्रम और 17 कविताएं रिकार्ड की गई। "कर्नाटक के प्राथमिक विद्यालयों में रेडियो और कैसेट प्लेयर की उपयोगिता" पर मूल्यांकन अध्ययन के लिए संस्थान ने कर्नाटक सरकार को सहयोग दिया। इसके अतिरिक्त मूल्यांकन कार्य के लिए उपकरणों का विकास करने, आंकड़े एकत्रित करने की कार्यनीति, अन्वेषकों को अभिविन्यास, आंकड़ा विश्लेषण और रिपोर्ट तैयार करने में भी सहायता प्रदान की गई।

1996-97 के दौरान सी.आई. ई.टी. द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट और अन्य सामग्री

1. टुवड्र्स ए मीडिया करीकुलम के अन्तर्गत प्राथमिक पाठ्यचर्या पर आधारित शैक्षिक मीडिया कार्यक्रमों का सार संक्षेप कराया गया। पाँच्च पुस्तकों के एक सेट में (कुल 430 पृष्ठ) हिन्दी, गणित, पर्यावरण अध्ययन,

कला शिक्षा के सार संक्षेप संकलित हैं।

2. प्राथमिक स्तर के शिक्षा योग्य मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के लिए ऑडियो पैकेज, सार संक्षेप/ प्रारंभिक नमूना के विकास पर आयोजित कार्यशाला की रिपोर्ट (टंकित)
3. प्राथमिक स्तर के शिक्षा योग्य मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के ऑडियो पैकेज के प्रयोग के लिए अध्यापक पुस्तिका के लगभग दृश्यमान सहायक सामग्री के रूप में 120 फ्लैश कार्ड (प्रकाशनाधीन पांडुलिपि)
4. प्राथमिक अध्यापकों के लिए अंडर स्टैंडिंग चिल्ड्रेन एण्ड हेल्पिंग देम टूलर्न पर तैयार श्रव्य कार्यक्रमों की मूल्यांकन रिपोर्ट (टंकित)
5. प्राचीन भारत का इतिहास
(उपयुक्त ऑडियो शृंखला के उद्देश्य, सार संक्षेप, विषय-वस्तु की रूप-रेखा का प्रलेखन
6. डेवलपमेंट ऑफ सीरीज ऑफ.ई.टी.वी. प्रोग्राम्स आन मल्टीग्रेड-टीचिंग" कार्यक्रमों के उद्देश्य, सार संक्षेप, विषय-वस्तु की रूपरेखा सहित
7. ए सीरीज ऑफ ई.टी.वी. प्रोग्राम्स फॉर 'इंटिग्रेशन ऑफ वूमेन्स इश्यूज इन्टू कुरीकुलम ट्रांसएम्शन'
8. रिपोर्ट ऑफ इवैल्युएशन इन टू यूटिलाइजेशन ऑफ इंटरएक्टिव वीडियो टेकनोलॉजी इन स्पॉट इन कर्नाटका (टंकित)
9. रिपोर्ट ऑफ द फील्ड टेस्टिंग ऑफ ई.टी.वी. प्रोग्राम्स अंडर मैथेमेटिक्स सीरीज (टंकण कार्य चल रहा है)
10. प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यचर्या में शामिल करने के लिए एक व्यापक ई.टी. करीकुलम मॉड्यूल (टंकण कार्य)।

एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न कार्यक्रमों/
गतिविधियों में कंप्यूटर शिक्षा के मुद्दों और
समस्याओं तथा उससे संबंधित आधुनिक
प्रौद्योगिकीय सहायता संचार माध्यम में
अनुसंधान और विकास की ओर ध्यान
दिया जा रहा है।

कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्यागिकीय शिक्षा

16
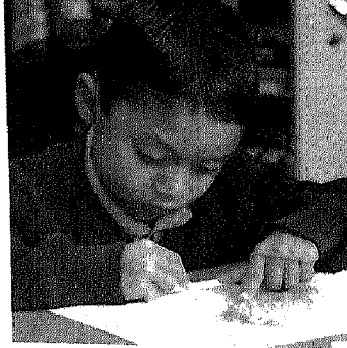
कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता

एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों में कंप्यूटर शिक्षा के मुद्दों और समस्याओं तथा उससे संबंधित आधुनिक प्रौद्योगिकीय सहायता संचार माध्यम में अनुसंधान और विकास की ओर ध्यान दिया जा रहा है।

कंप्यूटर शिक्षा

एन.सी.ई.आर.टी. ने बहु-माध्यमी के प्रयोग, कंप्यूटर शिक्षा की पाठ्यचर्या (कोर्स वेयर), माइक्रो-प्रोसेसर पर आधारित प्रयोग, भारत में कंप्यूटर शिक्षा का सर्वेक्षण, आंकड़ा संकलन यंत्र के रूप में कंप्यूटर का प्रयोग करने के लिए अध्यापकों का प्रशिक्षण, आंकड़ों की पुन: प्राप्ति और विश्लेषण आदि के पाठ्यक्रमों के विकास का उत्तरदायित्व संभाला है। विद्यालयों में कंप्यूटर शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर कंप्यूटर संसाधन केन्द्र (सी.आर.सी.) की स्थापना की जा रही है। तत्वों के पृथकीकरण पर एक सी.ए.एल. पैकेज का विकास किया गया और विद्यालयों में इसकी प्रभाविता का परीक्षण किया गया। मापन पर भी इसी प्रकार का पैकेज विकसित किया जा रहा है। अनुसंधान और विकास के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को पहचानने के लिए "कंप्यूटर और शैक्षिक प्रक्रिया" पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी की सिफारिशें भी प्रकाशित की गई है। परिषद् में वेब सरफिंग (इंटरनेट) की सुविधा प्रदान की गई हैं। एन.सी.ई.आर.टी. का होम पेज (संक्षिप्त विवरणिका) संकलित कर ली गई है और इसका वेब साइट तैयार करने के लिए एन.आई.सी. को भेज दिया गया है। माइक्रो प्रोसेसर पर आधारित प्रयोग कार्य भी प्रारंभ कर दिया गया है और वोल्टता तापमान मापने के लिए उपयुक्त उपकरण का विकास भी कर लिया गया है। कंप्यूटर साक्षरता पर तैयार पुस्तक का परीक्षण किया गया। कंप्यूटर के द्वारा अधिगम असमर्थता की जानकारी पर एक परियोजना शुरू की गई है। रोमानिया के प्रो. क्रिस्ना का सेवरल आरगूमेंट फॉर डिफाइनिंग एन हेरारकिकल कॉगनिटिव मॉडल" पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया।

प्रौद्योगिकीय सहायता

अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा आदर्श प्रायोगिक परीक्षण तैयार करने के लिए विद्यालयों हेतु नई डिजाइन की विज्ञान किटों के अनुसंधान और विकास संबंधी कार्य निरंतर जारी रहा। वर्ष 1969-70 के दौरान देश में पहली बार विद्यालय प्रणाली में विज्ञान किटों का प्रयोग एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा ही शुरू किया गया था। यह कार्य निरंतर जारी रहा और इसके दो डिजाइनों-प्राइमरी साइंस किट और मिनी टूल किट को ऑपरेशन ब्लेकबोर्ड के अंतर्गत प्राथमिक स्तर पर मिलने वाली अनिवार्य सुविधाओं की सूची में शामिल किया गया। उच्च प्राथमिक स्तर की विज्ञान पाठ्यचर्या के अनुसार एकीकृत विज्ञान किट अब आरंभिक शिक्षा के लिए ऑपरेशन ब्लेकबोर्ड का एक भाग है। पिछली विज्ञान किटों की निरंतर समीक्षा की गई और बहुत सी किटों में सुधार किया गया है। कक्षा 6 से 8 के लिए विज्ञान गतिविधियों की अध्यापक पुस्तिकाओं की पाण्डुलिपियों का भी विकास किया गया है। हाइड्रोजन बर्नर के मॉडल का भी विकास किया है। वर्ष 1996-97 के दौरान मांग के अनुसार 186 एकीकृत विज्ञान किटें, 29 प्राइमरी विज्ञान किटें और 9 मिनी टूल किटें विभिन्न राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों को भेजी गई। 700 एकीकृत विज्ञान किटें तैयार किये जा रहे हैं। 1500 प्लास्टिक डिब्बे और अन्य सामग्री विज्ञान किट निर्माणशाला, इलाहाबाद को प्रेषित किए गए।

कंप्यूटर शिक्षा में क्षेत्रीय स्तर पर योगदान

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर में कर्मचारियों और विद्यार्थियों के प्रयोग के लिए केंद्रीकृत सुविधा के रूप "कंप्यूटर

अनुप्रयोग प्रयोगशाला स्थापित की गई है। यह मालद्वीपियन, अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में इस प्रयोगशाला का उपयोग किया जा रहा है।

वर्ष 1996-97 के दौरान प्रकाशित रिपोर्ट और अन्य सामग्री
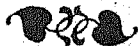
1. कंप्यूटर एण्ड एजूकेशनल प्रासेस (फोटोप्रति)
2. कैन क्लास रूप कोर्सवेयर बी इफेक्टिव विदाउट द टीचर (फोटोप्रति)
3. टेक्नॉलाजी एजुकेशन इन स्कूल करीकुलम (फोटोप्रति)

विशेष कार्यक्रम में शामिल जिलों में विद्यालयी सुलभता, प्रतिधारणा और शिक्षण की गुणवत्ता के द्वारा प्राथमिक शिक्षण का सार्वजनीकरण को प्राप्त करने के साथ-साथ परियोजना की संचालन अवधि के सात वर्षो के दौरान विद्यालीय शिक्षा में किए गए विकास को कायम रखने और इसमें निरंतर संवृद्धि के लिए प्रयाप्त क्षमता का विकास करने का प्रयास है

विशेष कार्यक्रम

17

विशेष कार्यक्रम

जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.)

डी.पी.ई.पी. का प्रारंभ 1994 में हुआ। इसके प्रथम चरण में सात राज्यों (असम, केरल, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, और महाराष्ट्र) के 42 जिलों को शामिल किया गया। प्रथम चरण को डी.पी.ई.पी.-1 कहा जाता है। अब इस कार्यक्रम को अन्य 6 नए राज्यों (उड़ीसा, गुजरात, अरूणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, पश्चिमी बंगाल और उत्तर प्रदेश) में विस्तार किया गया है और 80 जिलों को शामिल किया गया है। द्वितीय चरण को डी.पी.ई.पी.-2 कहा जाता है। इस कार्यक्रम में शामिल जिलों में विद्यालयी सुलभता, प्रतिधारण और शिक्षण की गुणवत्ता के द्वारा यू.पी.ई. की प्राप्ति करने के साथ-साथ परियोजना की संचालन अवधि के सात वर्षों के दौरान विद्यालयी शिक्षा में किए गए विकास को कायम रखने और इसमें निरंतर संवृद्धि के लिए पर्याप्त क्षमता का विकास करने का प्रयास है।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है। इसका मुख्य बल कक्षा में बाल केंद्रित कार्यकलापों पर आधारित शिक्षण अधिगम का शैक्षिक माहौल स्थापित करने पर है।

देश भर में डी.पी.ई.पी. कार्यक्रमों और क्रियाकलापों में योगदान देने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. में निम्नलिखित संसाधन समूहों की स्थापना की गई है:

1. डी.पी.ई.पी. पाठ्यचर्या संसाधन समूह
2. डी.पी.ई.पी. अध्यापक प्रशिक्षण संसाधन समूह
3. डी.पी.ई.पी. अनुसंधान संसाधन समूह
4. डी.पी.ई.पी. केंद्रिक संसाधन समूह

डी.पी.ई.पी. केंद्रिक अनुसंधान समूह डी.पी.ई.पी. के राष्ट्रीय संघटक के कार्यक्रम, प्रभावी समन्वयन, कार्यान्वयन और अनुवीक्षण संबंधी कार्यों को देखता है। डी.पी.ई.पी. की समन्वय समिति की बैठक 1 नवम्बर, 1996 को हुई। इसके बाद 4 नवम्बर 1996 से एन.सी.ई.आर.टी. संकाय के साथ डी.पी.ई.पी. चतुर्थ संयुक्त पर्यवेक्षण मिशन की बैठक हुई। डी.पी.ई.पी. चरण-1 और चरण-2 की आवश्यकताओं की पहचान करने हेतु अपेक्षित कार्रवाई की गई ताकि एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यक्रमों को राज्यों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सके। वर्ष 1996 के दौरान की गई डी.पी.ई.पी. क्रियाकलापों की प्रगति की रिपोर्ट डी.पी.ई.पी. समन्वय समिति को भेज दी गई। योजना बैठक में 1997 के प्रस्तावित कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिया गया। इस बैठक में राज्य परियोजना निदेशकों, डी.पी.ई.पी. ब्यूरो कार्यालय (एम.एच.आर.डी.) के अधिकारियों तथा एडसील, नीपा और एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों ने भाग लिया। 18 मार्च 1997 को पाँचवें डी.पी.ई.पी. संयुक्त पर्यवेक्षण मिशन ने एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों के साथ बैठक की।

डी.पी.ई.पी. केंद्रिक संसाधन समूह ने डी.पी.ई.पी. चरण-2 के राज्यों को सहायता प्रदान की। एन.सी.ई.आर.टी. के योगदानों में शामिल हैं : 1. कक्षाओं के अवलोकन कार्यक्रम को अंतिम रूप देना; 2. गुजरात और उड़ीसा में शैक्षणिक नवीनीकरण प्रक्रियाएँ; 3. बिहार और हिमाचल प्रदेश में आधारभूत मूल्यांकन अध्ययन; और 4. उड़ीसा में कार्यशाला में भागीदारी और प्रशिक्षण की कार्यनीति को अंतिम रूप देना। कार्रवाई योग्य बिन्दुओं की पहचान के लिए डी.पी.ई.पी. अनुसंधान अध्ययनों का विश्लेषण किया जा रहा है। डी.पी.ई.पी. चरण-1 के राज्यों में मध्यावधि मूल्यांकन सर्वेक्षण के लिए एक सलाहकार समिति की स्थापना की गई। मध्यावधि सर्वेक्षण के लिए अनुसंधान की रूपरेखा का विकास किया गया।

1. *डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत पाठ्यचर्या संबंधी कार्यकलाप*

    1. बहुकक्षीय अध्यापक के क्षेत्र में प्रकाशित अनुसंधान लेखों और उपलब्ध रिपोर्टों का संकलन किया गया और मल्टीग्रेड टीचिंग: स्टेटस एण्ड इंप्लिकेशंस" नामक शीर्षक से एक बृहत प्रलेख तैयार किया। "बहुस्तरीय/बहुकक्षीय अध्यापक के क्षेत्र में नवाचारी कार्य व्यवहारों का केस अध्ययन किया गया और नवाचारों कार्यव्यवहारों से संबद्ध संगठनों-दिगांतर, बोध, सिद्ध और ऋषि वैली फाउंडेशन के प्रलेख तैयार किए गए। शुरू के तीन संगठनों के केस अध्ययनों की रिपोर्टों को अंतिम

रूप दिया गया और चौथे की रिपोर्ट तैयार की जा रही है। इसके अलावा बगैर किसी संस्था की व्यावसायिक मदद और संबंधी क्षेत्र की समस्याओं का खुद समाधान करने वाले बहुपक्षीय अध्यापक का केस अध्ययन किया जा रहा है। केस अध्ययन का संकलन दो प्रलेखों—प्रथम, बहु-स्तरीय अध्यापन और द्वितीय बहुकक्षीय अध्यापन के रूप में किया जाएगा।

2. पठन और गणित में किए गए अनुसंधानों और नवाचारों का प्रलेखन किया गया।
3. कक्षा 1 में प्रवेश पाने वाले बच्चों को तैयारी स्तर की पहचान पर अनुसंधान अध्ययन पूरा कर लिया गया। यह अनुसंधान बच्चों में कक्षा 1 की पाठ्यचर्या प्रारंभ करने से पहले विद्यालय तैयारी कार्यक्रम के द्वारा कुछ निश्चित मूल संकल्पनाओं और क्षमताओं को सुदृढ़ करने की आवश्यकताओं को बतलाता है।
4. एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा डी.पी.ई.पी. जिला कार्मिकों के सहयोग से भाषा और गणित में तैयार आदर्श सामग्री का क्षेत्र परीक्षण किया जा रहा है।
5. कक्षा 1 और 2 के लिए गणित में पूरक अधिगम सामग्री का विकास किया गया।
6. पठन और बोधगम्यता में निपुणता को बढ़ाने हेतु सामग्री के विकास के लिए दिशा निर्देशों का विकास किया गया। आर.आई.ई. स्तर पर डी.पी.ई.पी. जिला कार्मिकों के सहयोग से आर.आई.ई. स्तर पर दिशा निर्देशों के अनुसार पठन और बोधगम्यता संवृद्धि (रेस) हेतु एक पैकेज का विकास किया गया। मा.सं.वि.मं. के अनुरोध पर, एन.सी.ई.आर.टी. ने प्रथम चरण में डी.पी.ई.पी. राज्यों द्वारा विकसित अनुदेश सामग्री के मूल्यांकन का कार्य किया। मूल्यांकन रिपोर्टों पर संबंधित डी.पी.ई.पी. राज्यों से परिसंवाद भी किए गए।
7. डी.पी.ई.पी. के कार्मिकों के लिए ई.सी.ई. के मुद्दों और प्राथमिकताओं पर अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया ताकि उन्हें डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत इस क्षेत्र के कार्यान्वयन योजना बनाने में मदद की जा सके।

2. *डी.पी.ई.पी. के अन्तर्गत अध्यापक प्रशिक्षण क्रियाकलाप*

1. सेवा-कालीन प्रशिक्षण के कार्य व्यवहारों के निम्नांकित दो प्रकाशनों के रूप में प्रलेख तैयार किए गए :
   क) भारत में शैक्षिक कार्मिकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण
   ख) प्राथमिक अध्यापकों का सेवाकालीन प्रशिक्षण
2. प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों और अन्य कार्यकताओं के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण की रूप-रेखा विकसित की गयी। इसमें एक संक्षिप्त प्रशिक्षण के स्थान पर, अध्यापकों और उनके प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण की पुनरावृति की योजना पर विचार किया गया है। विभिन्न डी.पी.ई.पी. राज्यों द्वारा विकसित प्रशिक्षण डिजाइनों के मूल्यांकन पर एक अध्ययन पूरा किया गया। विभिन्न राज्यों में उपलब्ध प्रशिक्षण सामग्री के संकलन और मूल्यांकन के लिए कार्रवाई की गई।
3. आदर्श प्रशिक्षण सामग्री का विकास किया गया। प्रशिक्षण पैकेजों का अन्य भाषाओं में अनुवाद किया गया। मुख्य-कार्मिकों को प्रशिक्षण सामग्री के क्षेत्र परीक्षण के लिए प्रशिक्षित किया गया। राज्यों में प्रशिक्षण सामग्री के क्षेत्र परीक्षण के लिए क्षेत्र कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु कार्यशाला आयोजित की गई और राज्यों में प्रशिक्षण सामग्री का क्षेत्र परीक्षण भी प्रारम्भ किया गया। विशेषज्ञों के एक दल द्वारा क्षेत्र परीक्षण की सामग्री की पुनः समीक्षा की गई और उसे अंतिम रूप दिया गया।

4. नवाचारी प्रयोगों की पहचान के लिए क्षेत्रीय परीक्षण हेतु कार्रवाई की गई।
5. प्रशिक्षण की गुणवत्ता के अनुवीक्षण, कक्षा कार्य व्यवहारों के अनुप्रयोग और छात्रों के अधिगम संप्राप्ति के प्रभाव पर अध्ययन प्रारंभ किया गया। प्रशिक्षण की गुणवत्ता के अनुवीक्षण हेतु एक ढाँचे का विकास किया गया। प्रशिक्षण की गुणवत्ता के अनुवीक्षण हेतु उपकरणों—1. भागीदार अनुक्रिया मापन उपकरण; 2. समूह चर्चा के मुख्य बिंदु; 3. अवलोकन कार्यसूची; और 4. संसाधन व्यक्तियों के साक्षात्कार और मागदर्शिका पर एक कार्यशाला

में डी.पी.ई.पी. राज्यों के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा की गई।

6. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों ने डी.पी.ई.पी. राज्यों सहित विभिन्न राज्यों द्वारा विकसित प्रशिक्षण सामग्री का मूल्यांकन (प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों और उनके प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु) किया। इन मूल्यांकन रिपोर्टों के आधार पर प्रशिक्षण सामग्री के मूल्यांकन पर एक राष्ट्रीय रिपोर्ट प्रकाशित की गई।

डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत अनुसंधान कार्य

1. *प्राथमिक स्तर की कक्षा प्रक्रिया और विद्यालय प्रभाविकता पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी*

एन.सी.ई.आर.टी. में 24 से 26 जुलाई 1996 तक प्राथमिक स्तर की प्रक्रियाओं और विद्यालय प्रभाविता पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के लिए कुल 170 आलेख प्राप्त हुए। इनमें से 65 आलेखों को संगोष्ठी में चर्चा हेतु प्रस्तुतीकरण के लिए चुना गया। संगोष्ठी में 140 व्यक्ति उपस्थित थे। इनमें से 10 आलेख डेनमार्क, हांग-कांग, मैक्सिको, यू.के. और यू.एस.ए. के प्रतिनिधित्व कर रहे विदेशी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए। यूरोपियन कमीशन, विश्व बैंक, यू.एन.डी.पी., ओ.डी.ए., डी.पी.ई.पी. ब्यूरो, एन.जी.ओ., भारतीय महाविद्यालयों के प्रतिनिधियों और एन.सी.ई.आर.टी. के वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी के दौरान 13 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए।

विद्यालय कार्यव्यवहारों में सुधार हेतु संगोष्ठी की कुछ महत्वपूर्ण सिफारिशें इस प्रकार हैं।

- शैक्षिक प्रबंध सूचना प्रणाली का प्रयोग
- विकेन्द्रीकरण और व्यष्टि स्तरीय योजना
- समुदाय सहभागिता में गतिशीलता
- उपयुक्त और प्रत्याशित अधिगम परिणामों के लिए पाठ्यचर्या में संशोधन
- सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा में तत्काल अपेक्षित गुणात्मक प्रशिक्षण संबंधी कार्य करना।
- पाठ्य पुस्तकों का पुन: संशोधन
- बहुश्रेणी कक्षा का प्रयोग
- राष्ट्रीय परीक्षण प्रणाली में सुधार करना
- अध्यापकों को प्रोत्साहन देना

संगोष्ठी की कार्यवाही रिपोर्ट तैयार की गई और "अंडरस्टैंडिंग क्लासरूप प्रोसेसेस एट प्राइमरी स्टेज" शीर्षक से प्रकाशित की गई। दूसरे खंड में, संगोष्ठी में प्रस्तुत सभी आलेख संकलित हैं। इस संगोष्ठी से संबंधित दूसरा खंड प्रकाशनाधीन है।

2. *विद्यालय, प्रखंड, संघटन और जिला स्तरों पर अनुसंधान अध्ययनों को प्रारंभ करने के लिए डी.पी.ई.पी. कार्यकत्ताओं में प्रासंगिक क्षमता का विकास करना*

तमिलनाडु में डी.पी.ई.पी. कार्यकर्त्ताओं के लिए उनकी क्षमता में विकास हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश शिक्षा परियोजना के कार्यकर्त्ताओं के लिए एक दूसरी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

3. *प्राथमिक शिक्षा पर अनुसंधान अध्ययन*

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) द्वारा प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न पक्षों से संबंधित 25 अनुसंधान अध्ययनों का उत्तरदायित्व लिया और उन्हें पूरा किया गया।

आर.आई.ई. द्वारा संचालित डी.पी.ई.पी. अध्ययनों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:

आर.आई.ई., अजमेर

1. डी.पी.ई.पी. विद्यालयों में प्रभावशाली कक्षा कार्यसंपादन के लिए प्राथमिक अध्यापकों को सक्षम बनाना;
2. शिक्षण प्रक्रिया का अधिगम के परिणामों पर प्रभाव;
3. विद्यालय प्रबंधन में सामुदायिक सहभागिता के संबंध में हरियाणा के डी.पी.ई.पी. जिलों में वी.ई.सी. सदस्यों की भूमिका के अवबोधन का अध्ययन; और
4. प्रशिक्षण के प्रत्यक्ष लाभों के छीजन के संदर्भ में तीन-स्तरीय और दो-स्तरीय अध्यापक प्रशिक्षण मॉडलों का तुलनात्मक अध्ययन।

आर.आंई.ई., भोपाल

5. कक्षा 1 के विद्यार्थियों के लिए मूल संज्ञानात्मक योग्यताओं (संरक्षण, श्रेणीबद्धता, और वर्गीकरण) को सम्मिलित कर उनके लिए पूर्व तैयारी के कार्यक्रम का विकास और क्षेत्र परीक्षण।

6. बच्चों में तर्कसंगत योग्यताओं का पोषण करने के उद्देश्य से भाषा, गणित और पर्यावरण अध्ययन में कक्षा 1,2 और 3 के लिए स्थान विशिष्ट अध्यापन अधिगम सामग्री की पहचान, अवलोकन और मापन।
7. कक्षा 2 के अंत में अधिगम अक्षमताओं के स्वरूप और विस्तार का अध्ययन और निदानात्मक कार्यनीतियों का विकास।
8. आयु वर्ग 6 से 14 वर्ष के कामकाजी और अनामांकित बच्चों के लिए उपयुक्त वातावरण के विकास के लिए प्रेरणादायक कार्यनीति का विकास।
9. डी.पी.ई.पी. जिला में प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं की पहचान के लिए आवश्यकता मूल्यांकन सर्वेक्षण कार्यसूची का विकास और अनुसमर्थन।
10. डी.पी.ई.पी. अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन (मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र)।
11. दो अध्यापकों वाले प्राथमिक विद्यालयों के लिए उपयुक्त क्षमता पर आधारित अध्यापन अधिगम सामग्री और कार्यनीतियों का विकास और क्षेत्र परीक्षण।

आर.आई.ई., भुवनेश्वर

12. प्राथमिक स्तर पर अध्यापकीय प्रभाविता को प्रोत्साहित करने हेतु प्रेरणात्मक पैकेज का विकास और क्षेत्र परीक्षण किया।
13. गणित शिक्षण की बोधगम्यता के ठोस स्तर से निरपेक्ष स्तर के निर्विघ्न अध्यापन के लिए कक्षा 1 और 2 के विद्यार्थियों के गणित और भाषा की आवश्यकताओं पर अध्ययन।
14. उड़ीसा के गजपति जिला में कक्षा 3 स्तर पर ई.वी.एस. के शिक्षण में विद्यार्थी केंद्रित एम.सी.सी. आधारित शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए विशेष और क्रियाकलाप अभिमुख संसाधन सामग्री का विकास।
15. उड़ीसा के घेंकानल और कालाहांडी के डी.पी.ई.पी. जिलों में प्राथमिक स्तर के अध्यापन अधिगम हेतु सक्षमता आधारित न्यूनतम अधिगम स्तर (एम.एल.एल.) के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक न्यूनतम सहायक सुविधाओं की पहचान करना।
16. प्राथमिक विद्यालय के बच्चों द्वारा अंकगणित (गुणा और भाग के प्रश्न) के प्रश्नों को हल करने की प्रक्रियाओं पर अनुदेशात्मक कार्य नीतियों के प्रभाव का अध्ययन।
17. एक या दो अध्यापकों वाले प्राथमिक विद्यालयों में समकक्ष या वरिष्ठ विद्यार्थियों के प्रयोग से अधिगम व्यवस्था का प्रबंधन।
18. ई.वी.एस.-2 के अध्यापन कुशलता में सुधार के लिए हस्तक्षेपकारी क्षेत्रों की पहचान हेतु नैदानिक उपकरणों का विकास।
19. प्रारम्भिक स्तर पर बड़े आकार की कक्षाओं के प्रभावी प्रबन्धन के लिए हस्तक्षेपकारी कार्यनीतियों का प्रतिपादन।
20. ई.वी.एस.-2 के अध्यापन कुशलता में सुधार के लिए हस्तक्षेपकारी क्षेत्रों की पहचान हेतु नैदानिक उपकरणों का विकास।

आर.आई.ई., मैसूर

21. प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए ई.वी.एस.-2 में प्रशिक्षण पैकेज का विकास किया।

22. मांड्या जिले में प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में आचरण संबंधी समस्याओं और शारीरिक स्वास्थ्य अधिगम का अध्ययन।
23. तमिलनाडु विद्यालयों की कक्षा 1 में गणित में अध्यापक की कठिनाइयों की पहचानशुदा बिंदुओं के आधार पर अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पैकेज का विकास।
24. आंध्र प्रदेश में प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए गणित में प्रशिक्षण पैकेज का विकास।
25. डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए अनुसंधान आंकड़ों का संग्रहण, तैयारी और प्रक्रियन पर प्रशिक्षण पैकेज का विकास करना और उसका परीक्षण करना।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

पाठ्यचर्या और सामग्री का विकास

जनसंख्या शिक्षा पुनः परिमत ढांचें का प्रथम प्रारूप विकसित किया गया। पापुलेशन, एजुकेशन बुलेटिन के दो अंक—जनवरी और जुलाई 1996 प्रकाशित किए गए।

प्रशिक्षण

राज्यों के परियोजना कार्मिकों के लिए गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें भागीदारों को जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों, जनसंख्या शिक्षा के संकल्पनात्मक ढांचों और किशोरावस्था की शिक्षा से संबंधित तथ्यों से अवगत कराया गया। किशारोवस्था की शिक्षा पर बेंगलूर और गुवाहटी में दो क्षेत्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं, जिनमें शिक्षा सचिवों, शिक्षा निदेशकों, राज्य परियोजना कार्मिकों और राज्य विद्यालय शिक्षा बोर्डों के और अन्य एजेन्सियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सह-पाठ्यचर्यात्मक कार्य-कलाप

जनवरी-मार्च 1996 के दौरान "अब हम कहाँ रहते हैं" विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता के राष्ट्रीय संघटक के अंतर्गत पाँच आयु वर्गों में से पाँच सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों का चयन किया गया। इन पाँच प्रविष्टियों को न्यूयार्क विश्व-स्तरीय प्रतियोगिता के लिए भेजा गया। इनमें से एक भारतीय प्रविष्टि को विश्व पुरस्कार भी मिला।

11 जुलाई 1996 को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया गया। इस अवसर पर व्याख्यान आयोजित किया गया और "जनसंख्या नियंत्रण के लिए आवश्यक शर्तें" विषय पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

अध्ययन और मूल्यांकन

चार क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में जनसंख्या शिक्षा कार्य-कलापों का मूल्यांकन अध्ययन किया गया। जनसंख्या शिक्षा के लिए भावी रणनीतियों के विकास के संदर्भ में स्थितिपरक अध्ययन का संचालन किया गया। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं के संकलन के पश्चात्, जनसंख्या शिक्षा में अनुसंधानों के संश्लेषण का कार्य प्रारम्भ किया गया।

जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में तीन अनुसंधान अध्ययनों को प्रायोजित किया गया। इनमें से एक अध्ययन पूरा हो गया है।

1997 के लिए एन.पी.ई.पी. की सभी कार्यान्वियन एजेंसियों की कार्य योजनाओं और बजट अनुमानों को अंतिम रूप दिया गया, और नवम्बर-दिसम्बर 1996 में वार्षिक परियोजना प्रगति समीक्षा (पी.पी.आर.) की आयोजित वार्षिक बैठक में उपर्युक्त कार्य योजनाओं और बजट अनुमानों का अनुमोदन किया गया। जनसंख्या शिक्षा की 16वीं राष्ट्रीय संचालन समिति की बैठक और त्रिपक्षीय प्रगति समीक्षा (टी.पी.आर.) समिति की बैठक का आयोजन किया गया।

राज्यों की त्रैमासिक रिपोर्टों की समीक्षा करके और उन्हें समेकित किया गया तथा सभी संबद्ध एजेंसियों को भेजी गयीं। राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों का दौरा करके परियोजना के कार्यान्वियन संबंधी कार्यकलापों का अनुवीक्षण किया गया।

अंतराष्ट्रीय पोस्टर प्रतियोगिता, एन.पी.ई. कार्यक्रम के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक एक विश्व-स्तरीय पुरस्कार देते हुए

प्रलेखन

एड्स शिक्षा पर एक संदर्शिका तैयार की गई और उसका प्रचार-प्रसार किया गया। जनसंख्या शिक्षा पर सामग्री एकत्रित की गई और इसे विविध संस्थानों और व्यक्तियों को भेजा गया।

जनसंख्या शिक्षा को क्षेत्रीय योगदान

माध्यमिक विद्यालय के बच्चों के लिए किशारोवस्था शिक्षा पर अधिगम सामग्री के प्रदर्शन के लिए आर.आई.ई., भोपाल में कार्यशाला का आयोजन किया।

जनसंख्या शिक्षा से संबंधित

क्रिया-कलापों के आयोजन के संदर्भ में, आर.आई., मैसूर ने राज्य और संघ-शासित क्षेत्रों के प्रयोग के लिए संसाधन सामग्री के विकास का कार्यभार संभाला। आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने जनसंख्या शिक्षा दिवस के उपलक्ष में वाद-विवाद, निबंध-लेखन और चित्रकला प्रतियोगिताओं और विभिन्न क्रिया-कलापों का आयोजन किया और विजेताओं को पुरस्कारों तथा प्रशसनीय प्रमाणपत्रों से सम्मानित भी किया गया। उड़ीसा राज्य के माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर की पाठ्य पुस्तकों के विषय-वस्तु विश्लेषण का कार्य भी पूरा किया गया। उड़ीसा के चुनिंदा जिलों में मानव जनसंख्या के जीवन के भौतिक गुणों की स्थिति और मानदंडों में सर्वेक्षण संबंधी अध्ययन कार्य प्रगति पर है।

मानव संसाधन विकास के लिए क्षेत्रीय गहन शिक्षा परियोजना

क्षेत्रीय गहन शिक्षा परियोजना का उद्देश्य सबके लिए शिक्षा (ई.एफ.ए.) का एक व्यवहार्य और उत्तर सापेक्ष मॉडल विकसित करना है। जो चुने हुए भौगोलिक क्षेत्रों में विद्यालय पूर्व, प्राथमिक, अनौपचारिक और प्रौढ़ शिक्षण में सुधार लाने पर केन्द्रित होने के साथ-साथ इन कार्यक्रमों के संपूरकता भी स्थापित करें। यह एक व्यापक परियोजना है, जो विकास और स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों के सरोकारों से युक्त है।

यह परियोजना नियोजन और प्रबंधन में समुदाय की सहभागिता, लचीलापन, विकेन्द्रीकरण जैसे क्षेत्रीय और समुदायोन्मुखी विशिष्टता को अपनाती है और अत: क्षेत्रीय समन्वय को प्रोत्साहित करती है। 6 राज्यों/संघ-शासित क्षेत्रों (महाराष्ट्र, मिजोरम, उड़ीसा, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश तथा दादरा और नगर हवेली) में प्रत्येक से एक प्रखंड को लेकर कुल छ: प्रखंडों के 542 गांवों को शामिल करके ए. आई.ई.पी. आरम्भ किया गया।

एक चरणबद्ध योजना के अंतर्गत उन्हीं जिलों के 16 प्रखंडों के 1756 गाँवों तक इसका विस्तार किया गया।

परियोजना के परिणाम विभिन्न राज्यों में अलग-अलग हैं किन्तु फिर भी उनमें कुछ समानताएँ हैं जो निम्नलिखित हैं :

1. प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों के नामांकन तथा प्रतिधारण में वृद्धि हुई। वहुत से गाँवों में निर्धारित नामांकन प्रतिशतता का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है।
2. विद्यालय-पूर्व, प्राथमिक, अनौपचारिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षण के बीच संपूरकता की जरूरत महसूस की जा रही है।
3. सामुदायिक संघटन और साझेदारी के लिए बहुत सी कार्यनीतियां उभरकर सामने आयी हैं।
4. विविध स्तरों पर समन्वय समितियों के माध्यम से अंत: क्षेत्रीय समन्वयन की जरूरत है।
5. प्रतिभागिता आधारित व्यष्टि नियोजन के लिए 1756 गाँवों में अनुभवाश्रित परीक्षणों के आधार पर एक मॉडल को विकसित किया गया जिसके परिणामस्वरूप संश्लेषित प्रखंड योजनाओं का विकास हुआ।
6. 1756 गाँवों में स्थापित सामुदायिक शिक्षा और विकास केन्द्र शैक्षिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए केन्द्र बिंदु बन गए हैं।
7. बच्चों द्वारा अधिकाधिक प्रभावपूर्ण ढंग से शीघ्र ही एम.एल.एल. को प्राप्त करने के उद्देश्य से महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश तथा दादरा और नगर हवेली में आनन्ददायक और खेल-खेल में अधिगम आरम्भ किया गया।
8. इस परियोजना के अंतर्गत विकसित व्यष्टि नियोजन, सामुदायिक संघटन आदि जैसे मॉडलों को डी.पी.ई.पी. राज्यों तथा अन्य कार्यक्रमों के लिए अपनाया जा रहा है।
9. परियोजना के मुख्य संकेतकों के अनुवीक्षण के साथ-साथ कार्यकलापों के पर्यवेक्षण की सूची तैयार करने के लिए बहुत आसान उपकरणों और कार्यनीतियों को विकसित किया गया और राज्यों द्वारा अपनाया गया।
10. इस परियोजना का एक प्रमुख नवाचार यह है कि यह वर्तमान राज्य प्रणाली में ही कार्य करता है।

वर्ष 1995-96 के दौरान बी.डी.ओ./बी.ई.ओ. की एक बैठक बुलाई गई और एम.पी.आर.सी. के स्टाफ के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एक प्रलेख पीपल ऑन दी मूव प्रकाशित किया गया और इसका व्यापक प्रचार किया गया। ए.आई.ई.पी. परियोजना के अभ्यास और अनुभव, विशेषकर व्यष्टि नियोजन और कार्यक्रम की तैयारी सामुदायिक सहभागिता, अंत: क्षेत्रीय समन्वय, जनजातीय

शिक्षा और आनन्ददायक शिक्षण आदि डी.पी.ई.पी. और ई. एफ.ए. के कार्यक्रमों के लिए अत्यंत ही प्रासंगिक है।

यूनीसेफ सहायता की समाप्ति के मद्देनज़र सहभागी राज्यों को यह परामर्श दिया गया कि वे अपने शैक्षिक कार्यक्रमों के साथ परियोजना क्रियाकलापों को संघटित करें और उन्हें क्रमबद्ध करने की योजना बनाएँ। प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के संदर्भ में इस कार्यक्रम में निष्कर्षों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए प्रलेख तैयार करने के उद्देश्य से ए.आई.ई.पी. के मूल्यांकन का कार्य शुरू किया गया। केन्द्र और राज्य सरकार के शिक्षा कार्यक्रमों के साथ ए.आई. ई.पी. को मुख्य रूप से एकबद्ध करने हेतु सिफारिश करने पर विचार किया गया। परियोजना की मूल्यांकन रिपोर्ट संबंधित गतिविधियों का सकारात्मक पुनर्निवेशन करती है।

मूल्यांकन रिपोर्ट में यह भी सिफारिश की गई है कि जन-जातीय उत्तर-पूर्वी राज्यों/क्षेत्रों के चुनिंदा क्षेत्रों में "प्राथमिक शिक्षा नवीनीकरण सहयोग (सुपर) कार्यक्रमों के अंतर्गत ए. आई.ई.पी. के अनुभवों को पूर्ण रूप से सामुदायिक अभिसारी कार्य (सी.सी.ए.) के उपागम के रूप में विस्तार किया जाए।

विद्यालय शिक्षा में पर्यावरण अभिविन्यास

एम.एच.आर.डी. द्वारा प्रायोजित योजना—"विद्यालय शिक्षा में पर्यावरण अध्ययन" के अंतर्गत में क्षेत्रीय भाषाओं में क्षेत्र विशेष पर्यावरण शिक्षा की प्रशिक्षण सामग्री के विकास पर विचार किया गया, जो प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए डी.आई.ई.टी. संस्थानों द्वारा प्रयोग की जा सकेगी। इस परियोजना को चलाने के लिए पाँच संसाधन समूह: प्रत्येक आर.आई.ई.—अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, और मैसूर तथा एन.आई.ई., नई दिल्ली में गठित किए गए।

1. *पाठ्यचर्या निर्माताओं के लिए पर्यावरण शिक्षा में प्रशिक्षण*

शिक्षाकर्मियों की क्षमता बनाने के एक भाग के रूप में, पाठ्यचर्या, निर्माताओं हेतु पर्यावरण शिक्षा में प्रशिक्षण के लिए परिषद् विगत तीन वर्षों से निरन्तर कार्य कर रही है। एन.जी.ओ. और राज्यों के माध्यमिक/उच्च विद्यालय शिक्षा बोर्डों के पाठ्यचर्या निर्माताओं को प्रशिक्षण हेतु लक्ष्य समूहों के रूप में पहचान की गई है। एस.सी.ई.आर.टी. और अन्य दूसरी संस्थानों का भी विस्तार किया जा रहा है।

प्रशिक्षण की विषय-वस्तु का लक्ष्य है : 1. पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में आधुनिक विकास से भागीदारों को परिचित कराना; 2. पाठ्यचर्या में पर्यावरण संघटकों के समावेश के लिए नीतियों का निर्धारण; 3. पर्यावरण शिक्षा की अपेक्षाओं और विस्तृत भूमिकाओं से अवगत कराना; और 4. मूल्यांकन सहित पर्यावरण के आयामों के साथ सम्मिलित पाठ्यचर्या के विकास के लिए कार्य विधियाँ और निर्देशिकाओं का विकास।

2. *पर्यावरण शिक्षा के लिए राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र (एन. आर.सी.ई.ई.)*

पर्यावरण शिक्षा विद्यालय पाठ्यचर्या का एक अभिन्न घटक है। विद्यालय स्तर की पाठ्यचर्या और शैक्षिक क्रियाकलापों में पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक विशेषकर विकास से संबंधित सरोकारों का केंद्रीय महत्व बढ़ रहा है। बढ़ती हुई पर्यावरण समस्याएँ, बिगड़ता हुआ पर्यावरण और विकास के विषयों को लेकर बहुत बड़ी संख्या में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ पर्यावरणीय विद्यालय प्रणाली में शिक्षा क्रिया कलापों में शामिल है। इन प्रयासों को सूत्रबद्ध करने हेतु कार्य-कलापों के अनुभवों के परस्पर आदान-प्रदान के लिए एक नेटवर्क बनाने की आवश्यकता है। पर्यावरण शिक्षा के लिए राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र की स्थापना 1996-97 के दौरान विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.), एन.सी.ई.आर.टी. में की गई। इसका उद्देश्य एक ओर विद्यालय प्रणाली, शैक्षिक योजनाकारों, पाठ्यचर्या निर्माताओं और अध्यापक-प्रशिक्षकों में अधिक गहन परिसंवाद को ओर; दूसरी ओर इस क्षेत्र की विशिष्ट संस्थाओं को प्रोत्साहन देना है। केन्द्र का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण शिक्षा सूचना और सामग्री का संकलन, वर्गीकरण और विद्यालय शिक्षा तथा पर्यावरण संबंधी विशेष कार्यकलापों से संबद्ध संस्थानों में इसका व्यापक प्रचार-प्रसार करना है। यह केंद्र पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर पर्यावरण शिक्षा आंकड़ा बैंक का विकास भी कर रहा है।
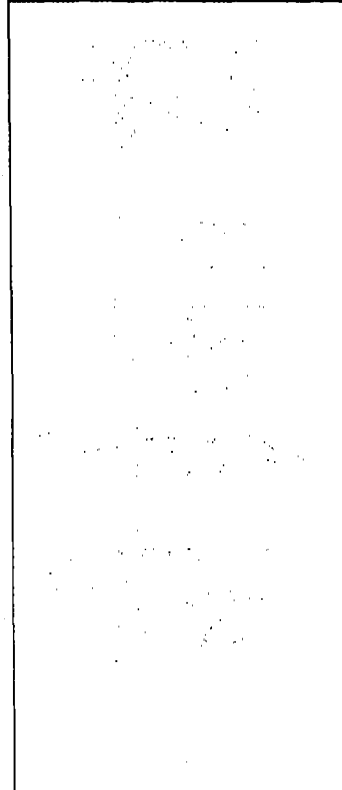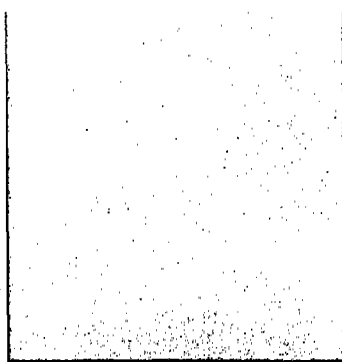
प्रतिभा की खोज और पोषण
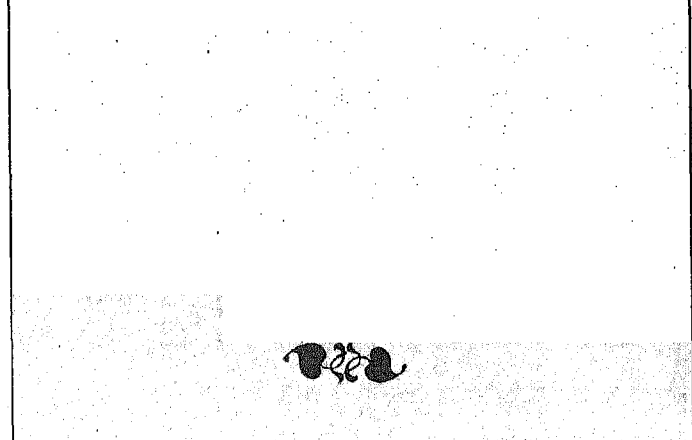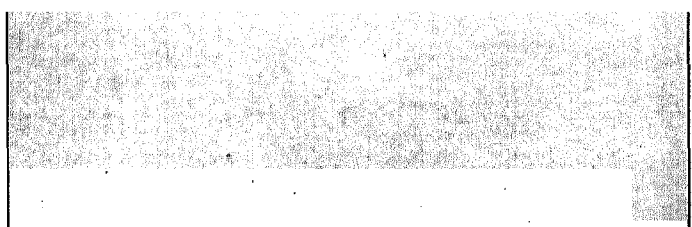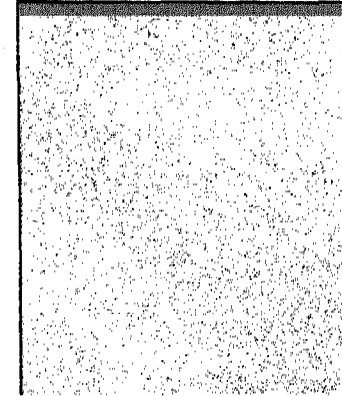
एन.सी.ई.आर.टी. अपनी राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अंतर्गत *अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जन जाति* के लिए 70 छात्रवृत्तियों सहित प्रतिवर्ष 750 छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है

18
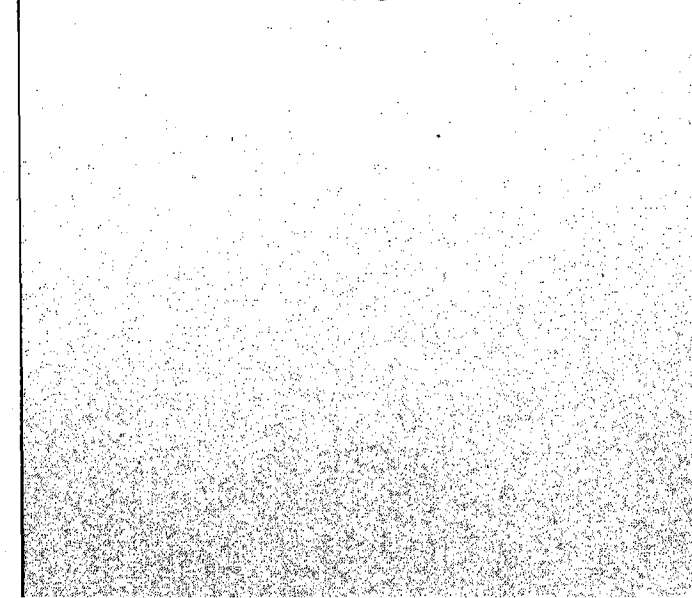
प्रतिभा की खोज और पोषण

प्रतिभा खोज के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. निम्नलिखित मुख्य कार्यक्रम आयोजित करती है—

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

जवाहर नवोदय विद्यालयों को तकनीकी सहयोग

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना

एन.सी.ई.आर.टी. अपनी राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना के अंतर्गत अ.जा./अ.ज.जाति के लिए 70 छात्रवृत्तियों सहित प्रतिवर्ष 750 छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है। इस योजना का उद्देश्य दसवीं कक्षा के अन्त में उत्कृष्ट/मेधावी छात्रों की पहचान करना और उन्हें अच्छी और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है ताकि वे अपनी प्रतिभाओं का विकास कर सकें और अपनी रूचि के विषय में उन्नति करते हुए देश के विकास में सहायक हो सकें।

एन.टी.एस. के अंतर्गत पुरस्कार का चयन दो चरणों में किया जाता है। प्रथम चरण में राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों के द्वारा प्रायः अक्तूबर और दिसम्बर के बीच लिखित परीक्षा के माध्यम से चयन किया जाता है। इस परीक्षा के आधार पर निर्धारित संख्या में चुने गए छात्रों को एन.सी.ई.आर.टी. के अंतर्गत दूसरे स्तर की परीक्षा के लिए संस्तुत किया जाता है। द्वितीय स्तर के चयन परीक्षा में लिखित परीक्षा और साक्षात्कार दोनों ही सम्मिलित हैं। एन.सी.ई.आर.टी. इन छात्रों को न केवल छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती है, बल्कि देश के प्रमुख संस्थानों की सहायता और सहयोग से छात्रों की प्रतिभा को विकसित करने के लिए उपयुक्त ग्रीष्मावकाश संस्थानों की व्यवस्था भी करती है।

वर्ष 1996-97 के दौरान दी गईं एन.टी.एस. छात्रवृत्तियों की संख्या

क्रमांक	राज्य/संघ-शासित क्षेत्र	आबंटित कोटा	दूसरे स्तर की परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	पुरस्कृत छात्रवृत्तियों की संख्या (सामान्य)	अ.जा./अ.ज.जा. वर्गों को दी गईं छात्रवृत्तियाँ
1.	आन्ध्र प्रदेश	195	173	30	05
2.	अरूणाचल प्रदेश	25	21	—	02
3.	असम	90	90	04	02
4.	बिहार	215	209	76	05
5.	दिल्ली	50	50	27	01
6.	गोवा	25	23	03	—
7.	गुजरात	165	131	02	—
8.	हरियाणा	70	70	12	01
9.	हिमाचल प्रदेश	35	34	04	02
10.	जम्मू एवं कश्मीर	25	25	02	—
11.	कर्नाटक	170	166	35	07
12.	केरल	190	189	44	04
13.	मध्य प्रदेश	130	121	26	03
14.	महाराष्ट्र	365	362	162	22
15.	मणिपुर	25	25	—	—

क्रमांक	राज्य/संघ-शासित क्षेत्र	आबंटित कोटा	दूसरे स्तर की परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	पुरस्कृत छात्रवृत्तियों की संख्या (सामान्य)	अ.जा./अ.ज.जा. वर्गों को दी गई छात्रवृत्तियाँ
16.	मेघालय	25	24	—	01
17.	मिजोरम	25	09	—	—
18.	नागालैण्ड	25	21	—	—
19.	उड़ीसा	155	151	27	03
20.	पंजाब	100	99	26	01
21.	राजस्थान	95	92	44	03
22.	सिक्किम	25	19	—	—
23.	तमिलनाडु	245	238	44	—
24.	त्रिपुरा	25	22	01	—
25.	उत्तर प्रदेश	430	414	80	01
26.	पं. बंगाल	265	248	25	07
27.	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	10	09	—	—
28.	चण्डीगढ़	10	09	06	—
29.	दादर और नगर हवेली	10	02	—	—
30.	दमन और दीव	10	—	—	—
31.	लक्षद्वीप	10	—	—	—
32.	पांडिचेरी	10	10	—	—
	कुल योग	**3250**	**3055**	**680**	**70**

वर्ष 1996 में एन.टी.एस. छात्रवृत्तियों की कुल संख्या = 750

वर्ष 1996-97 के दौरान छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की संख्या

+2 स्तर	कक्षा 11	750	
	कक्षा 12	750	1500
अवर स्नातक के अंतर्गत			
विज्ञान		121	
सामाजिक विज्ञान		93	
इंजीनियरिंग/बी.टैक		1581	
मेडीसीन		836	
स्नातकोत्तर स्तर			
विज्ञान		11	
सामाजिक विज्ञान		6	
इंजीनियरिंग/एम.टेक.		2	
मेडीसीन		62	
प्रबंधन		44	
पी.एच.डी.		4	
कुल		**4260**	

1996-97 के दौरान व्यय

1.	छात्रवृत्तियों का वितरण	95,99,650.00
2.	एन.टी.एस. परीक्षा का आयोजन	7,19,643.00
3.	ग्रीष्मावकाश विद्यालय/संलग्न कार्यक्रम	14,439.00
	कुल	**1,03,33,732.00**

जवाहर नवोदय विद्यालय (जे.एन.वी.) चयन परीक्षा

जवाहर नवोदय विद्यालयों (जे.एन.वी.) में कक्षा 6 में छात्रों के प्रवेश हेतु चयन का कार्य एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा ही किया जा रहा है। जे.एन. विद्यालयों की स्थापना: 1. समानता के साथ उत्कृष्टता के उद्देश्य की पूर्ति करने; 2. राष्ट्रीय अखंडता को बढ़ावा देने; 3. प्रतिभावान बच्चों को अपनी क्षमताओं को पूर्ण रूप से विकसित करने के लिए अवसर उपलब्ध करवाने; और 4. विद्यालय सुधार की प्रक्रिया में सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई है। जवाहर नवोदय विद्यालयों में प्रवेश का आधार एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार की गयी चयन परीक्षा है। परीक्षा का माध्यम मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा है।

परीक्षा में चयन के लिए तीन भाग हैं—1. मानसिक योग्यता परीक्षा-60 प्रश्न; 2. अंकगणित परीक्षा-20 प्रश्न; और 3. भाषा परीक्षा-20 प्रश्न। सभी प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकृतिक के हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए चार विकल्प हैं। प्रश्न-पत्र अंग्रेजी में तैयार करके उन्हें अंतिम रूप दिया गया और इसका 17 भाषाओं में अनुवाद करवाया गया (असमिया, बंगाली, बोडो, गारो, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, खासी, मलयालम मणिपुरी, मराठी, मीजो, उड़िया, पंजाबी, तमिल, तेलुगू और उर्दू)

जवाहर नवोदय विद्यालयों में कम से कम अनु. जाति के लिए 15 प्रतिशत और अ.ज.जाति के लिए 7.5 प्रतिशत स्थान आरक्षित रखने का प्रावधान है। लड़कियों में शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से चुने गए विद्यार्थियों में कम से कम एक तिहाई लड़कियां होनी चाहिए। कम से कम 75 प्रतिशत स्थान ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों से आने वाले छात्रों से भरे जाते हैं और शेष स्थान शहरी क्षेत्रों से भरे जाते हैं।

वर्ष 1996-97 के दौरान प्रथम जे.एन.वी.एस.टी. परीक्षा 8 जून 1996 को मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, जम्मू और कश्मीर अरूणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों में आयोजित की गई। परीक्षा के लिए कुल 23,752 छात्रों को पंजीकृत किया गया था। इनमें से 18,629 छात्र विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में बैठे। जे.एन. विद्यालयों में प्रवेश के लिए 1993 छात्रों को चुना गया। इनमें से 725 लड़कियाँ थी। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से चुने गए छात्रों की संख्या क्रमश: 1633 और 360 थी।

दूसरी जे.एन.वी.एस.टी. परीक्षा वर्ष 1996-97 में 23 फरवरी 1997 को आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, उड़ीसा, सिक्किम, पंजाब, राजस्थान, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर राज्यों तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, चंडीगढ़, दादर और नगर हवेली, दमन दीव, लक्ष द्वीप और पांडिचेरी संघ-शासित क्षेत्रों में आयोजित की गई। परीक्षा के लिए कुल 3,69,568 छात्रों को पंजीकृत किया गया था और इनमें से 3,41,632 छात्र विभिन्न परीक्षा केन्द्रों में बैठे। पूरे देश में फैले जे.एन. विद्यालयों में प्रवेश के लिए 22,455 छात्रों को चुना गया। इनमें से 7,758 लड़कियाँ थीं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से चुने गए छात्रों की संख्या क्रमश: 17,147 और 5,308 थी। चुने गए छात्रों की वर्गवार संख्या इस प्रकार है:

वर्ग	**चयनित छात्रों की संख्या**	
	जून 1996 की परीक्षा	**फरवरी 1997 की परीक्षा**
सामान्य वर्ग	751	8,388
अन्य पिछड़े वर्ग	137	5,382
अनुसूचित जाति	241	5,486
अनुसूचित जन जाति	864	3,199
कुल	**1,993**	**22,455**

अनुसंधान में लगे एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों के अतिरिक्त परिषद् की एक स्थायी समिति के रूप में कार्यरत शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) देश में शैक्षिक अनुसंधान के प्रोत्साहन और उसमें सहायता के लिए उत्प्रेरक का कार्य भी करती है

19

शैक्षिक अनुसंधान

विद्यालयी शिक्षा में अनुसंधान और गुणात्मक सुधार के लिए अनुसंधान पर आधारित नीतिगत परिप्रेक्ष्य को बढ़ावा देना एन.सी.ई.आर.टी. के महत्वपूर्ण सरोकार हैं। अन्य बातों के साथ-साथ इस क्षेत्र के मुख्य कार्यों में शामिल हैं :

1. सांस्थानिक अनुसंधान क्षमता को सुदृढ़ करना; 2. शिक्षा विशेषकर विद्यालय से संबंधित पहलुओं पर अनुसंधान आधारित सूचनाओं का प्रलेखन; और 3. शैक्षिक अनुसंधान के निष्कर्षों और उनके पुनर्निर्देशन तथा शिक्षा प्रणाली पर उनके प्रभावों को संबंधित कार्यकर्ताओं और लाभार्थियों तक पहुंचाने के लिए संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों को उपलब्ध करना है। अनुसंधान में लगे एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों के अतिरिक्त परिषद् की एक स्थायी समिति के रूप में कार्यरत शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) देश में शैक्षिक अनुसंधान के प्रोत्साहन और उसमें सहायता के लिए उत्प्रेरक का कार्य भी करती है।

शैक्षिक अनुसंधान का पाँचवां सर्वेक्षण

शैक्षिक अनुसंधान के पाँचवे सर्वेक्षण का उद्देश्य 1988-92 की अवधि में भारत में उत्कृष्ट पी.एच.डी. और एम.फिल शोध प्रबंधों के सार संक्षेप प्रस्तुत करना, जैसाकि सर्वेक्षण रिपोर्ट की प्रस्तावना में बताया गया है, अनुसंधानकर्ताओं को अनुसंधानों के विषय में प्राथमिक स्रोत की सूचनाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उपर्युक्त सर्वेक्षण रिपोर्ट में शैक्षिक अनुसंधानों की संदर्भ सूची प्रकाशित की गई है। सर्वेक्षण में 1800 से अधिक सार संक्षेप हैं, जिनका 38 क्षेत्रों में वर्गीकरण किया गया है। सर्वेक्षण प्रलेख के रूप में दो पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं। प्रथम पुस्तक में प्रवृत्ति मूलक रिपोर्टें हैं और द्वितीय पुस्तक में सार संक्षेप सम्मिलित हैं।

छठे सर्वेक्षण में 1993 के आगे की अवधि के अनुसंधानों को समेटने की योजना है। इस सर्वेक्षण में अध्ययन के पूरे होने और उसमें विस्तृत प्रसार के मध्य समयांतराल कम करने के लिए एक नई कार्य विधि अपनाई गई है। छमाही अनुसंधान पत्रिका "इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्टस" का प्रकाशन शुरू किया गया है। इस पत्रिका के दो अंक प्रकाशित भी हो चुके हैं। पत्रिका के छः अंक निकलने के पश्चात प्रवृत्तिमूलक रिपोर्ट प्रकाशित की जाएगी।

अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान संगोष्ठियाँ

एन.सी.ई.आर.टी. ने नई दिल्ली के अपने परिसर में 24-26 जुलाई 1996 के दौरान विद्यालय प्रभाविकता और कक्षा शिक्षण प्रक्रिया पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। यह संगोष्ठी भारत सरकार के जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.), के अनंसुधान घटक का एक भाग थी। जिसका उद्देश्य 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए अनुसंधान पर आधारित नीतियां तैयार करना था। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में चुनिंदा भारतीय और विदेशी विद्वानों की संगोष्ठी के विषय पर आलेख प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया। संगोष्ठी के लिए 170 आलेख प्राप्त हुए, जिनमें से 65 को संगोष्ठी में प्रस्तुतीकरण और परिचर्चा हेतु चुना गया। इनमें से 10 आलेख विदेशी विद्वानों ने प्रस्तुत किए। ये विद्वान डेनमार्क, हांगकांग, मैक्सिको, नीदरलैण्ड, यू.के. और यू.एस.ए. के प्रतिनिधि थे।

यूरोपियन कमीशन (ई.सी.), विश्व बैंक (डब्ल्यू.बी.), संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यू.एन.डी.पी.); विदेश विकास प्रशासन (ओ.डी.ए.); त्रिभुवन विश्वविद्यालय अनुसंधान और विकास केंन्द्र, नेपाल; भारत सरकार का जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) ब्यूरो; भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र, मुम्बई; गैर-सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ); और भारतीय विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों के प्रतिनिधियों ने उपस्थित होकर चर्चा में शामिल हुए। संगोष्ठी में एन.सी.ई.आर.टी. के वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने भी भाग लिया और परिचर्चा में अपना योगदान दिया। संगोष्ठी के दौरान 13 तकनीकी सत्र आयोजित हुए। संगोष्ठी की कार्रवाई रिपोर्ट "अंडरस्टैंडिंग क्लासरूप प्रासेस एट प्राइमरी स्टेज" नामक शीर्षक से प्रकाशित हुई है। संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए आलेखों का संकलन प्रकाशनाधीन है। प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों के अधिकार और विद्यालय की प्रभाविता पर 1997 की अंतर्राष्ट्रीय

अनुसंधान संगोष्ठी की पूर्व तैयारी के रूप में अध्यापकों के अधिकार" विषय पर क्षेत्रीय संगोष्ठियों के आयोजन का कार्य प्रारंभ किया गया।

पूरी की गई अनुसंधान परियोजनाएं

वर्ष 1996-97 के दौरान (एरिक) से सहायता प्राप्त छः अनुसंधान परियोजनाएं पूरीं हुई।

एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों में किए गए अनुसंधान

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	प्रमुख अन्वेषक
1.	*अध्यापक प्रशिक्षुता में सुधार के लिए कार्यनीति का विकास करने के उद्देश्य से अध्यापन प्रशिक्षुता का अध्ययन*	डा.जी.एन.पी. श्रीवास्तव आर.आई.ई., भोपाल

प्रस्तुत परियोजना के निम्नलिखित उद्देश्य थे :

1. आर.आई.ई., आई.ए.एस.ई. और कुछ अन्य महत्वपूर्ण अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापन कार्यक्रम में अध्यापन अभ्यास और प्रशिक्षुता के मौजूदा मानदंड का अध्ययन करना।
2. अध्यापन कार्यक्रमों में प्रशिक्षुता के विभिन्न भागों का समीक्षात्मक विश्लेषण
3. अध्यापन कार्यक्रमों प्रशिक्षुता और इसके विभिन्न पहलुओं का पुनर्गठन करना और अच्छी तरह परिस्कृत करने के लिए मार्गदर्शिका और अन्य सामग्री तैयार करना अध्यापक शिक्षा प्रणाली में समयक सुधार के लिए की गईं सिफारिशों और अध्ययन में निष्कर्षों को शामिल करके अध्ययन प्रशिक्षुता पर एक पुस्तक प्रकाशित की गई।

2.	*अन्य संस्थाओं में किए गए अनुसंधान*	
	पूर्व-प्राथमिक शिक्षा (ई.सी.ई.) ओर प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण में उसकी आवश्यकता	प्रो.जे. मोहन्ती, सम्बलपुर

इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे:

प्रबन्धन और प्रशासन, पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यर्चात्मक कार्यक्रमों का आयोजन, अध्यापन की पद्धति, अधिगम सामग्री और माध्यम का प्रयोग, कक्षा का आयोजन और तकनीक के बारे में ई.सी.ई. केन्द्रों का सर्वेक्षण करना; 2. इन कार्यक्रमों के विभिन्न आयामों की प्रासंगिकता का पता लगाना; 3. यू.ई.ई. के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इनके योगदान का पता लगाना; 4. प्रबंधन की क्षमताओं और कमियों की पहचान करना; 5. यू.ई.ई. के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु ई.सी.सी. को समर्थ बनाने के लिए उपायों का सुझाव देना। 200 ई.सी.ई. केन्द्रों से संकलित आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर, इस स्तर की शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करने और सुधार के लिए अनेक सिफारिशें की गई।

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	प्रमुख अन्वेषक
3.	*शैक्षिक विकास में संरचनात्मक बाधाएं :* बिहार के आदिवासियों में शैक्षिक पिछड़ेपन का अध्ययन अनुसंधान में परीक्षित किया गया कि, क्या शिक्षा के अवसर पर्याप्त थे और आदिवासी छात्रों को सुलभ थे ? उनकी सामाजिक आर्थिक और अन्य प्रवृत्तियों का ध्यान न रखते हुए, क्या सभी आदिवासी छात्रों ने चुनिंदा और प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्शों के लिए इसका समान रूप से प्रयोग किया ? आदिवासी छात्रों के महाविद्यालय और घरों में ऐसे घटकों का पता लगाने के प्रयास किए गए जो उन्हें शिक्षा के लिए प्रेरित करते है या उनकी शिक्षा में बाधक हैं। रिपोर्ट में अनुसूचित जाति की स्थिति पर छात्रों का दृष्टिकोण, स्थिति के आधार पर उपलब्ध सुविधाएं, नौकरियों में आरक्षण, छात्रवृत्ति योजना और आरक्षण की नीति शामिल हैं। इसमें आदिवासी छात्रों के संबंध में विशेष रूप से: 1. आदिवासी छात्रों को उपलब्ध सुविधाएं; 2. आदिवासी छात्रों को पढ़ाते समय आने वाली कठिनाइयों के बारे में कालेज अध्यापकों के विचार, आने वाली कठिनाईयों को दूर करने के तरीके और माध्यम का सुझाव देना भी सम्मिलित है।	डा. आर.पी. सिन्हा पटना
4.	*विद्यालयी-पूर्व बच्चों के लिए मूल्यांकन परीक्षण सूची का मानकीकरण:* लेखकों ने कुल 750 बच्चों (450 शहरी क्षेत्र से और 300 ग्रामीण क्षेत्र से) के नमूने पर आधारित विद्यालयी बच्चों के लिए मूल्यांकन परीक्षण सूची का मानकीकरण किया। परीक्षण सूची में विकास के पाँच मुख्य क्षेत्रों को दर्शाया गया है। ये क्षेत्र हैं—1. सकल मोटर कौशल; 2. उत्तम मोटर कौशल; 3. संकल्पनात्मक और तत्परता प्रवीणता; 4. भाषा कौशल; और 5. वैयक्तिक सामाजिक प्रवीणता	प्रो. वीणा मिस्त्री, वड़ोदरा
5.	*साक्षरता अर्जन के स्तरों और प्रगति का विकासजन्य अन्वेषण:* अनुदेशात्मक प्रक्रियाओं में इसके निहितार्थ प्रस्तुत अध्ययन, अनुदैर्ध्य अध्ययन था, जिसमें तीन शैक्षिक वर्ष शामिल हैं। इसके उद्देश्य निम्नलिखित थे: 1. प्रिय मॉडल की रूपरेखा स्तर क्रम में साक्षरता अर्जन की प्रक्रिया का अध्ययन करना; 2. साक्षरता के चरणों की पहचान करना: (क) वर्तनी विषयक, प्रवृत्तियों और साक्षरता अर्जन का पारस्परिक प्रभाव; (ख) अनुदेशात्मक पद्धति और साक्षरता अर्जन के सापेक्ष शिक्षा प्रणाली पर इसके निहितार्थों का पता लगाना। इस विषय पर अन्वेषण के लिए मैसूर के दो विभिन्न विद्यालयों के प्रवर 4-5 वर्ष के आयु वर्ग के बालविहार के बच्चे थे। अध्ययन के परिणाम से पता चला है कि जब बच्चे कन्नड़ भाषा पढ़ना सीख रहे थे, तब वे विभिन्न चरणों की शृंखला में प्रगति की ओर बढ़ रहे थे। मगर ये चरण, पश्चिमी मॉडल विशेषकर फ्रिथ मॉडल (1985) की भांति नहीं थे। लिपियों को पढ़ना और लिखना सीखने और अनुदेशात्मक प्रक्रिया के विकास दोनों ही में अध्ययन के निहितार्थों को उजागर किया गया। पढ़ना सीखने में असमर्थ बच्चों के निदानात्मक उपायों के साथ-साथ प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रमों में भी इस अध्ययन के निष्कर्षों के निहितार्थ बताए गए हैं।	डा.पी. कारंथ, मैसूर

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	प्रमुख अन्वेषक
6.	*पाठयचर्या योजना के द्वारा किशोरों में नैतिक शिक्षा का विकास: एक नैतिक क्रियात्मक प्रारूप:* आधुनिक समाज के लिए नैतिक प्रवर्तकों और नैतिक कार्यकर्ताओं की व्यापक मांग हैं ताकि भावी पीढ़ी सौहार्दपूर्ण अप्रदूषित मानवीय और प्राकृतिक वातावरण में रह सके। शिक्षा स्वयं को केवल सूचना तक ही सीमित नहीं करती बल्कि मानव के जीवन को नैतिक मूल्यों से भर कर स्वयं को उजागर करती है। अनुसंधानकर्ता की यह मान्यता है कि सी.डी.आर.एफ.आई.एस.एच.ई.आर. से युक्त प्रतिपादित नैतिक क्रियात्मक मॉडल शिक्षा के क्षेत्र में लाभप्रद और उपयोगी है तथा नैतिक क्रियात्मक मॉडल में विद्यालयों के वातावरण के अनुसार सुधार और संवर्द्धन किया जा सकता है।	*डा. आर.आर.सिंह संगारिया*

अनुसंधान पत्रिकाएँ

एन.सी.ई.आर.टी. शैक्षिक अनुसंधान की तीन पत्रिकाएं प्रकाशित कर रही हैं। ये पत्रिकाएं हैं : 1. जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन; 2. भारतीय आधुनिक शिक्षा; 3. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू। जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन और भारतीय आधुनिक शिक्षा क्रमशः अंग्रेजी और हिन्दी में त्रैमासिक पत्रिका है। दोनों पत्रिकाओं का मुख्य उद्देश्य अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों और अनुसंधानकर्ताओं के नवाचारी विचारों के प्रचार-प्रसार को प्रकाशित करके लाभदायक और निरन्तर परिसंवाद के लिए एक खुला मंच प्रदान करना है। ये प्रत्रिकाएं पाठकों को शिक्षा में नवीनतम प्रगति से अवगत कराने के साथ-साथ विद्यालयी शिक्षा के सभी पक्षों पर नवीनतम विचारों का प्रचार-प्रसार करती है। इंडियन एजुकेशनल रिव्यू में अनुसंधान पत्र प्रकाशित होते हैं। प्रकाशन से पूर्व अनुसंधान पत्रों की विशेषज्ञों द्वारा समीक्षा की जाती हैं।

जारी अनुसंधान परियोजनाएं

रिपोर्ट की अवधि के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों द्वारा 5 अनुसंधान परियोजनाओं और बाहरी अनुसंधान संस्थानों द्वारा शुरू की गई 38 अनुसंधान परियोजनाएं जारी रही। अनुसंधान परियोजनाओं की सूची नीचे दी गई है।

वर्ष 1996-97 के दौरान जारी अनुसंधान परियोजनाएं

क्र. सं.	अध्ययन का विषय	प्रमुख अन्वेषक
विभागीय		
1.	माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान अध्यापन के लिए विज्ञान प्रौद्योगिकी सोसायटी (एस.टी.एस) माध्यम का विकास और चुनिंदा विद्यालयों में इसकी प्रभाविता का परीक्षण	प्रो. एस.सी. बनर्जी आर.आई.ई., अजमेर
2.	मध्य प्रदेश में आश्रम विद्यालयों का मूल्यांकन	डा. के. आर. शर्मा आर.आई.ई., भोपाल
3.	भौतिकी में +2 स्तर पर छात्रों की अवधारणा विहीनता पूर्ण धारणा और गलत अवधारणा	डा.एच.सी. जैन आर.आई.ई., अजमेर

क्र. सं.	अध्ययन का विषय	प्रमुख अन्वेषक
4.	कंप्यूटरों के अनुप्रयोग से वर्गीकृत तर्क के विकास का अध्ययन	डा. एस.सी. जैन आर.आई.ई., अजमेर
5.	अध्यापक प्रबोधकों के संदर्शी अन्वेषन में उनके सामाजिक उद्गम, प्राथमिकता और वृत्तिक उत्पादकता	प्रो. वी.के. रैना डी.टी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी.
एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रायोजित अध्ययन		
1.	विद्यालय स्तर पर अंग्रेजी भाषा परीक्षा का विकास	डा. रमा मैथ्यू, हैदराबाद
2.	हाई स्कूल के छात्रों में जीवन-वृत्ति के चयन का मानसिक सामाजिक सह-संबंध	डा. जी. मोहन कुमार बैंगलूर
3.	क्रियात्मक अनुसंधान कार्य प्रणाली के द्वारा सेवा पूर्व छात्र अध्यापकों के अवसर में मनोवृत्तिक परिवर्तन का अध्ययन	प्रोफेसर बी. द्विवेदी वाराणसी
4.	भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों के नवोदय विद्यालयों के कार्यकलापों और प्रबंधन का मूल्यांकन	डा. वी.पी. गोकुलनाथन शिलाँग
5.	विशेष शिक्षा आवयकताओं का प्रभाव क्षेत्र और मूल्यांकन	डा. श्रीमती सी. पाण्डियन मद्रास
6.	शान्ति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इसके लिए +2 स्तर पर शिक्षा में शांति पाठ्यचर्या के विकास को ध्यान में रखते हुए सामाजिक पाठ्यचर्या का अध्ययन	प्रो. सुशीला मान नई दिल्ली
7.	शैक्षिक रूप से पिछड़े बच्चों के सुधारात्मक अध्ययन और गृह कार्य व्यवहारों से संबद्ध अभिभावक परीक्षण तकनीकों का व्यावहारिक विश्लेषण और परिमार्जन	डा. एस.एस. कौशिक वाराणसी
8.	वाराणसी में मिडिल विद्यालय के छात्रों के वैज्ञानिक स्वभावों का अध्ययन	प्रो. वी.के दूबे वाराणसी
9.	भारत में विद्यालयी अध्यापकों के वृत्तिक विकास के लिए कार्यरत नवाचारी संस्थाएं और उनके कार्यक्रम	प्रो. मोहम्मद मियां नई दिल्ली
10.	शिक्षा महाविद्यालयों के परीक्षण संबंधी परिणामों पर पड़ने वाले मुख सांस्थानिक और अनुदेशी चरों के प्रभावों का अध्ययन	डा. अरूण के. गुप्ता जम्मू

क्र. सं.	अध्ययन का विषय	प्रमुख अन्वेषक
11.	कुछ आदिवासी समूहों के बच्चों के लिए शिक्षा, सांस्कृतिक अनुकूलन और संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं	डा. आर.सी. मित्र वाराणसी
12.	11-19 वर्ष के दृष्टिहीन बच्चों के लिए उपयुक्त स्पर्श बुद्धि, मौखिक और अमौखिक परीक्षण का विकास और मानवीकरण	डा. सुनीता शर्मा अलीगढ़
13.	आंध्र प्रदेश के चितूर जिले में बच्चों (9-14) की शिक्षा कोट विशेष संदर्भ में संपूर्ण साक्षरता कार्यक्रम (अक्षर तापसमान) के कुछ पक्षों का मूल्यांकन	डा. पी. आदि नारायण चितूर
14.	बिहार में एकीकृत शिक्षा प्रणाली विकलांग छात्रों के सामंजस्य का अध्ययन	डा. शशी प्रभा पटना
15.	उच्च माध्यमिक विद्यालयों में नवयुवकों में नशीली दवाइयों का दुरूपयोग और उनकी स्वाभाविक भावनाओं में हेर-फेर करके नशीली दवाइयों के व्यसन को रोकने के लिए कुछ तकनीकों द्वारा हस्तक्षेत्र के अनुप्रयोग	डा. (श्रीमती) एस. बनर्जी वाराणसी
16.	विशेष शिक्षा अध्यापकों के निष्पादन की भूमिका	डा. जी.एल. रेड्डी अलगप्पा
17.	पश्चिम बंगाल में माध्यमिक स्तर पर गणित अध्यापन में निपुण अधिगम कार्यविधि के प्रभाव का अध्ययन	प्रो. एम.एम. चेल पश्चिम बंगाल
18.	अध्यापिकाओं में उत्प्रेरणा का कम होना	डा. (श्रीमती) एन. मिश्रा लखनऊ
19.	उड़ीसा में आश्रम विद्यालयों और सामान्य विद्यालयों में अनु.जा. और अ.ज.जा. तथा सामान्य वर्ग के छात्रों के व्यक्तित्व और अकादमिक सफलताओं का तुलनात्मक अध्ययन	प्रो. बी.सी. मिश्रा उड़ीसा
20.	दृष्टिहीन बच्चों में मापन से संबंधित संकल्पनाओं का विकास	डा. देवयानी सेन गुप्ता कलकत्ता
21.	मानसिक रूप से विकलांग बच्चों के लिए बाल-केन्द्रित पाठ्यचर्या का विकास और मूल्यांकन	डा. (श्रीमती) आर. मल्होत्रा नई दिल्ली

क्र. सं.	अध्ययन का विषय	प्रमुख अन्वेषक
22.	कम लागत के कार्यात्मक निर्धारण किट (लोकास्ट) का विकास और कमजोर दृष्टिवाले बच्चों के दृष्टि दोष और दृष्टि क्षमता के बीच के संबंध का अध्ययन	डा. एम.एन.जी. मानी कोयम्बतूर
23.	ग्रामीण हाई स्कूल छात्रों, अभिभावकों, अध्यापकों और विधायकों में आबादी से समाजीकरण	डा. टी.पी. अग्रवाल कुरूक्षेत्र
24.	उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर प्राणी विज्ञान की शिक्षा में स्थानीय संसाधनों का प्रभाव	डा. जी.एस. पालीवाल गढ़वाल
25.	हाई स्कूल स्तर पर बधिर बच्चों में पठन कौशल विकसित करने के लिए कार्यनीतियां	डा. वी. विमला देवी तिरूपती
26.	भारतीय विद्यालयों में अध्यापकों से अपेक्षाएं उनकी अध्यापन प्रक्रिया और छात्रों के परिणामों पर प्रभाव	डा. एन.सी. ठौंडियाल अल्मोड़ा
27.	महिला महाविद्यालय/विश्वविद्यालय छात्राओं के साथ प्रयोग के लिए जीवन वृत्तिका की परिपक्वता सूची का विकास	डा. (श्रीमती) अ. शुक्ला लखनऊ
28.	महिला स्वास्थ्य कर्मियों के ग्रामीण समुदाय के महिला शिक्षा कार्यक्रमों में शामिल होने के औचित्य का अध्ययन	डा. (श्रीमती) पी. माथुर दिल्ली
29.	6-8 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को संज्ञानात्मक विकास पर घरेलू वातावरण का प्रभाव	डा. सुधा भोगले बैंगलूर
30.	अध्यापकों में उत्प्रेरणात्मक संलक्षणों पर कार्य अनुभव का प्रभाव	डा. उमा रंजन, हैदराबाद
31.	प्राथमिक कक्षाओं में प्रायोगिक शिक्षण की अंतर्विषयी विधियां	श्रीमती के राजलक्ष्मी तादेपालीगुडन
32.	नवाचार शिक्षण सामग्री का अनौपचारिक शिक्षा की प्रगति पर प्रभाव	डा. एन.पी. नारायण पटना
33.	दृष्टिहीन बच्चों के लिए हस्त और कार्य प्रशिक्षण की जरूरतें	डा. मिरियम इत्तियेराह दिल्ली
34.	आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के आदिवासी क्षेत्रों में आश्रम विद्यालयों के प्रकार्यो पर अध्ययन	डा. पी.एस. रेड्डी तिरूपति
35.	शैशवकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन और परिप्रेक्ष्यों का सुझाव	श्री एस.पी. मल्होत्रा कुरूक्षेत्र

क्र. सं.	अध्ययन का विषय	प्रमुख अन्वेषक
36.	उड़ीसा में मेटा-सादृश्यमूलक पर अनुसंधान इसकी भाषिकी संज्ञानात्मक और शैक्षिक विविता	डा. नंदिता बाहु भुवनेश्वर
37.	प्राथमिक स्तर के बच्चों में पठनीय अक्षमताएं और संज्ञानात्मक सूचना प्रक्रियाएं	डा. एम.के. पानी
38.	विद्यालयी बच्चों में शैक्षिक अनुपालन का समाकलित मध्यस्थता के प्रभाव पर अध्ययन	डा. (सुश्री) आई. महापात्रा नई दिल्ली

प्रकाशन अनुसंधान

एरिक से आंशिक सहायता से प्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध:

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम
1.	डेवलपमेंट ऑफ लैंगुएज क्रिएटिवेटी	डा. सुचेता, कुरूक्षेत्र
2.	रीडेबिलिटी फॉर्मूला फॉर कन्नड़ लैंगुएज	डा. डी. नानजप्पा, बैंगलूर
3.	द इमपेक्ट ऑफ एजुकेशनल वीडियो फिल्म एंड टेप-चार्ट प्रोग्राम ऑन स्टूडेन्टस लरनिंग	डा. ए.एम. कापाड़िया सूरत
4.	टीचर्स मोटीवेशन टू वर्क	डा. जे.पी. मित्तल एन.सी.ई.आर.टी.
5.	बिहेवियर प्रॉब्लम्स इन चिल्ड्रन	डा. नीलम सूद, दिल्ली

निम्नलिखित आठ पी.एच.डी. शोध प्रबन्धों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा स्वीकृत प्रकाशन अनुदान

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम
1.	स्टडी इनटू द कम्पीटंस ऑफ प्रिंसिपल्स फॉर एफिशयन्ट मेनेजमेंट ऑफ सीनियर सेकन्डरी स्कूलस	डा. (सुश्री) अल्का कालरा नई दिल्ली
2.	एफेक्ट ऑफ ट्रेनिंग इन क्रिएटिव थिंकिंग आन क्रिएटिविटी एंड एचिवमेन्ट ऑफ सैकन्डरी स्कूल प्यूपिल्स	डा. बसन्ती प्रधान नई दिल्ली
3.	द कंसप्ट ऑफ सिक्यूलेरिस्म एंड इटस एजुकेशनल इम्पलीकेशन्स	डा. (श्रीमती) एस. रघुवंशी इलाहाबाद
4.	फैक्टरस अंडरलाईंग सेमानटिक एबिलिटीस एस प्रिडिक्टर्स ऑफ ऐचिवमेन्ट इन साइंस मैथेमेटिक्स, सोशल स्टडीज एंड लैंगुएज एट क्लास 10 लेवल	डा. (कुमारी) एस. रघुवंशी बुदायूँ

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम
5.	ए स्टडी ऑफ रिलेटिव ऐफक्टिवनेस ऑफ सम इनफॉर्मेशन प्रोसेसिंग मॉडलस ऑफ टीचिंग ऑन मेंटल प्रोसेसासिस एंड एटिच्यूड टुवार्डस साइंस	डा. नरेश कुमार गुप्ता दिल्ली
6.	एच बर्गसन एंड जे. कृष्णामूर्ति (ए क्रिटीकल एंड कम्पेरेटिव स्टडी)	डा. (श्रीमती) ए. वाई. सरदेसी पूणे
7.	बीहेवियरल प्रॉब्लमस अमंग चिल्ड्रन एट 6-11 इयर्स: ए साइक्लोजीकल स्टडी	डा. नीलम सूद नई दिल्ली
8.	ए बॉओग्राफिक्ल स्टडी ऑफ द करेक्टरिसटिक्स ऑफ द नेशनल एर्वाडी टीचर्स विद स्पेशल रेफरेन्स टू पर्सनल, सोशल एंड प्रोफेशनल वैरिएबलस	डा. एन.डी. जैन आर.आई.ई., भोपाल

नीतिगत अनुसंधान

नीति से संबंधित मुद्दों पर तीन अध्ययन: 1. मूल्यांकन प्रक्रिया में पारदर्शिता को बढ़ावा देने हेतु बोर्ड की परीक्षाओं के पश्चात् परीक्षार्थियों को उत्तर पुस्तिकाएं लौटाना; 2. पंचायती राज संस्थानों के द्वारा विद्यालय के प्रबंध पर पंचायती राज से संबंधित 73वाँ और 74वाँ संवैधानिक संशोधन के बारे में अध्यापकों के दृष्टिकोण; और 3. द्विभाषी माता-पिता के छात्रों के कार्यनिष्पादन और उनका व्यक्तित्व पूरे किए गए और उनकी रिपोर्टें संगोष्ठियों में प्रस्तुत की गईं।

एरिक की बैठकें और संगोष्ठियां

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) जो परिषद् की एक स्थायी समिति है, विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अनुसंधान को प्रारंभ करने और सहायता देने के लिए उत्तरदायी है। अनुसंधान में सहायता देने का मूल प्रयोजन विभिन्न प्रकार के विद्यालय प्रतिवेश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करना, नीति और कार्यक्रम तैयार करने के लिए आंकड़े उपलब्ध कराना, अभिभावक के मूल्यांकन में सहयोग देना जिससे शिक्षा की सुलभता को बढ़ावा मिले तथा शिक्षा और अधिक प्रासंगिक एवं सार्थक बन सके। एरिक सदस्यों में शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिष्ठित अनुसंधानकर्ता, विश्वविद्यालय के अनुसंधान संस्थानों के शिक्षा विशेष से संबंधित तथा राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शै.अ.प्र.प. के प्रतिनिधि आदि शामिल हैं। समिति विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा की सभी शाखाओं में अनुसंधान को प्रोत्साहन और समन्वयन के लिए कार्य करती है। परिषद् के संघटकों में अनुसंधान कार्य करने के अतिरिक्त, एरिक, बाहरी संस्थाओं को शैक्षिक अनुसंधान के लिए वित्तीय सहायता भी प्रदान करती है।

नीतिगत मामलों की समीक्षा करने और वित्तीय सहायता देने के लिए अनुसंधान प्रस्तावों और अनुसंधान से संबंधित अन्य निश्चित विषयों पर विचार करने के लिए एरिक की 29वीं बैठक 28 अक्तूबर 1996 को हुई।

एरिक द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त परियोजनाओं की प्रगति के अनुवीक्षण के लिए अनुसंधानकर्ताओं की एक संगोष्ठी 8-10 मई 1996 को क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में आयोजित की गई।

वित्तीय सहायता के लिए प्राप्त नए अनुसंधान प्रस्तावों की समीक्षा के लिए 20-22 जुलाई 1996 के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर में विशेषज्ञ दल की बैठक आयोजित की गई।

प्राथमिक विद्यालयी अध्यापकों का सम्मेलन

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर में 26-28 दिसम्बर 1996 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. के प्रयोगिक विद्यालयों की प्राथमिक शाखा के अध्यापकों का द्वितीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें एन.सी.ई.आर.टी. के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की व्याख्यानमाला

वर्ष 1996-97 के दौरान व्याख्यान आयोजित

क्र.सं.	विषय	तिथि	अतिथि वक्ता का नाम
1.	आधुनिक भारत में श्री अरविंद और महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन और उनमें भेद	11 अक्तूबर 1996	प्रो. किशोर गांधी नई दिल्ली
2.	समुदाय शिक्षा परियोजना और गांवों के पिछड़े समुदायों में सबके लिए शिक्षा पहुँचाने हेतु गांधी की अहिंसावादी पद्धति के प्रयोग की संभावना	29 अक्तूबर 1996	प्रो. एम.आर. अचुतन न्यूयार्क
3.	परिर्वतन के लिए पूर्व-अभियांत्रिकी शिक्षा यूनेस्को सम्मेलन के विमर्श	10 जनवरी 1996	प्रो. ए.एन. माहेश्वरी एन.सी.ई.आर.टी.

अनुसंधान अध्ययन कार्य कर रहे प्रयोगिक विद्यालयों के अध्यापकों ने भाग लिया।

उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए सांस्थानिक अनुसंधान क्षमता का विकास/सुदृढ़ीकरण

राज्य, जिला, उप-जिला स्तर के प्राथमिक स्तर के कार्यकर्ताओं को विद्यालयों के प्रकार्य में सुधार करने के उद्देश्य हेतु उन्हें क्रियात्मक अनुसंधान अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश राज्यों को इन कार्यशालाओं से लाभ पहुँचा।

स्वयं अधिगम अनुदेशी मॉड्यूल तैयार किए गए और विद्यालय कार्यकर्ताओं के प्रयोग के लिए क्षेत्र परीक्षण किया गया। अब क्रियात्मक अनुसंधान और कार्यक्रम मूल्यांकन अनुसंधान पर भी माड्यूल उपलब्ध हैं।

छठा अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण

छठा अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण (ए.आई.ई.एस.) 1993 में प्रारम्भ किया गया था। यह सर्वेक्षण एन.सी.ई.आर.टी. और एन.आई.सी. तथा राज्यों और संघ-शासित क्षेत्रों की सरकारों द्वारा 30 सितम्बर 1993 को आधार तिथि मानकर संयुक्त रूप से किया जा रहा है। संयुक्त शिक्षा सचिव की अध्यक्षता में गठित संचालन समिति सर्वेक्षण की प्रगति का अनुवीक्षण करती है और शैक्षिक योगदान तथा तकनीकी निर्देशन के लिए सलाहकार समिति उत्तरदायी है। छठे ए.आई.ई.एस. में जिला से राज्य और राज्य से राष्ट्रीय स्तर पर सर्वेक्षण की प्रगति का अनुवीक्षण करने के लिए कंप्यूटर संचार नेटवर्क पर आधारित उपग्रह "निकनेट" का प्रयोग किया जाता है। इस सुविधा का प्रयोग त्वरित आंकड़ा प्रक्रियन, आंकड़ों का सारणीयन और सूचनाओं के प्रसार हेतु भी किया जाता है। इसके अतिरिक्त सर्वेक्षण के अधीन आंकड़ों के संकलन में प्रतिदर्श प्रणाली के साथ-साथ जनगणना की कार्यविधि का भी प्रयोग किया जाता है।

छठे ए.आई.ई.एस. की शैक्षिक सांख्यिकी रिपोर्ट दिसम्बर 1995 में प्रकाशित की गई। इस रिपोर्ट में ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाओं, विभिन्न स्तरों के विद्यालयों की संख्या, कुल कक्षाएँ और लिंगवार तथा कक्षावार कुल नामांकन एवं अध्यापकों की संख्या से संबंधित आंकड़े दिए गए हैं। ये आंकड़ें राज्य स्तर तक प्रकाशित रूप में उपलब्ध हैं और ब्लाक/नगर के समुदाय विकास स्तर तक मैगनेटिक माध्यम पर उपलब्ध है। 26 जनवरी 1996 को दोपहर का भोजन कार्यक्रम शुरू किया गया जिसके नियोजन में इन आंकड़ों का प्रयोग आधारभूत आंकड़ा प्रणाली के रूप में किया गया है। इन आंकड़ों के अतिरिक्त, कुछ महत्वपूर्ण चरों के आधार पर प्रत्येक राज्य के लिए कुल 24 तालिकाएं तैयार की गई। इन तालिकाओं में ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध शैक्षिक सुविधाएं, अध्यापक और विद्यालय भवन के प्रकार के बारे में पर्याप्त जानकारी दी गई है। ये तालिकाएं शिक्षा की नवीं

पंचवर्षीय योजना बनाते समय प्रयोग के लिए मा.सं.वि.मं. भारत सरकार को प्रस्तुत की गई।

राज्य सर्वेक्षण अधिकारियों और राज्य सूचना अधिकारियों को आंड़ों की छानबीन सारणी का और राज्य सर्वेक्षण की तैयारी संबंधी कार्यों में अभिविन्यास किया गया।

छठे ए.आई.ई.एस. की सलाहकार समिति की उप-समिति ने सर्वेक्षण के आंकड़ों के प्रमाणीकरण की कार्यनीति को अंतिम रूप दिया है। 10 राज्यों में विद्यालयी सूचना के सारणी फार्म-1 महाविद्यालय सूचना फार्म (एस.आई. एफ-1/सी.आई.एफ.) की योजना को अन्तिम रूप दिया गया। इसके अतिरिक्त, अध्यापक सूचना फार्म (टी.आई. एफ.) योजना के सॉफ्टवेयर को अंतिम रूप दिया गया।

विद्यालयी सूचना फार्म-2 और शिक्षा वित्त फार्म (एस. आई.एफ.-2 और ई.एफ.एफ.) योजनाओं के सॉफ्टवेयर को अंतिम रूप देने के लिए जाँच और परीक्षण कार्य किया जा रहा है।

अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण कार्यक्रम एक सतत कार्यक्रम है। वर्ष 1997-98 के दौरान किए जाने वाले मुख्य कार्य इस प्रकार हैं—1. सभी राज्यों में वी.आई.एफ./ यू.आई.एफ. के सारणीयन को अंतिम रूप देना; 2. सभी राज्यों में एस.आई.एफ-1/सी.आई.एफ. सारणीयन को अंतिम रूप देना; 3. वी.आई.एफ./यू.आई.एफ. और एस.आई.एफ-1 तथा सी.आई.एफ. योजनाओं पर आधारित राष्ट्रीय तालिकाओं को तैयार करना; 4. वी.आई.एफ./यू.आई.एफ. और एस.आई. एफ.-1 योजनाओं पर आधारित राष्ट्रीय संक्षिप्त रिपोर्ट का प्रकाशन; 5. एस.आई.एफ-2 और ई.एफ. योजनाओं के सॉफ्टवेयर को अंतिम रूप देना; 6. छठे ए.आई.ई.एस. की सभी योजनाओं पर आधारित मुख्य व्यापक रिपोर्ट को लिखना, अंतिम रूप देना और प्रकाशित करना और छठे ए.आई.ई. एस. आंकड़ों पर आधारित 15 विषयक रिपोर्ट को लिखना और उन्हें अंतिम रूप देना।

कंप्यूटर संसाधन केन्द्र

एन.सी.ई.आर.टी. मुख्यालय में स्थापित कंप्यूटर संसाधन केन्द्र एन.सी.ई.आर.टी. संघटकों की परियोजनाओं के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है। वर्ष 1996-97 के दौरान अन्य विषयों के साथ-साथ इस केन्द्र के क्रियाकलापों में शामिल है—1. 1996 के एन.टी.एस. परिणामों का प्रक्रियन; 2. आर.आई.ई. के सभी निदर्शन विद्यालयों के लिए कक्षा 1 की प्रवेश परीक्षा में परिणामों को अंतिम रूप देना; 3. प्राथमिक स्तर पर एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यपुस्तकों की पठनीयता परियोजना का सांख्यिकीय विश्लेषण; 4. एन.सी.ई.आर.टी. के शैक्षिक स्टाफ के लिए कार्मिक सूचना प्रणाली का विकास; 5. एस.पी.एस.एस. के प्रयोग से परिमाणात्मक अनुसंधान प्रविधि का आधार पाठ्यक्रमसंचालित करने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. संकाय को प्रशिक्षण कार्यक्रम की पाठ्यचर्या को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला आयोजित की गई। एन.सी.ई.आर.टी. (डी. एल.डी.आई.) के पुस्तकालय और सूचना प्रभाग के एक लाख से अधिक प्रलेखनों हेतु आंकड़ों का आधार तैयार करने के लिए आंकड़ों की प्रविष्टि कार्य चल रहा है।

एनसीईआरटी

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में यूनेस्को, एपिड, यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं और कार्यक्रमों का संचालन करती है तथा विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए अन्य देशों के शिष्टमंडलों/विशेषज्ञों के साथ कार्यक्रम आयोजित करती है। यह यूनेस्को, यू.एन.डी पी., यूनीसेफ आदि के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, विचार-विमर्श, बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि में भागीदारी के लिए अपने संकाय सदस्यों को प्रायोजित करती है

20

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

भारत सरकार ने एन.सी.ई.आर.टी. को विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में विदेशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों (सी.ई.पी.) के प्रावधानों को लागू करने वाले एक अभिकरण के रूप में कार्य करने का दायित्व सौंपा है। एन.सी.ईआर.टी. विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में यूनेस्को, एपिड, यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रायोजित परियोजनाओं और कार्यक्रमों का संचालन करती है तथा विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए अन्य देशों के शिष्टमंडलों/विशेषज्ञों के साथ कार्यक्रम आयोजित करती है। यह यूनेस्को, यू.एन.डी.पी, यूनीसेफ आदि के तत्वाधान में अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, विचार-विमर्श, बैठकों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों आदि में भागीदारी के लिए अपने संकाय सदस्यों को प्रायोजित करती है। अन्य बातों के साथ-साथ एन.सी.ई.आर.टी. विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में विदेशी नागरिकों के लिए अल्पकालीन सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करती है। यह विभिन्न देशों, संगठनों और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों को भारत की विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न पक्षों पर सूचनाएं भी उपलब्ध कराती है।
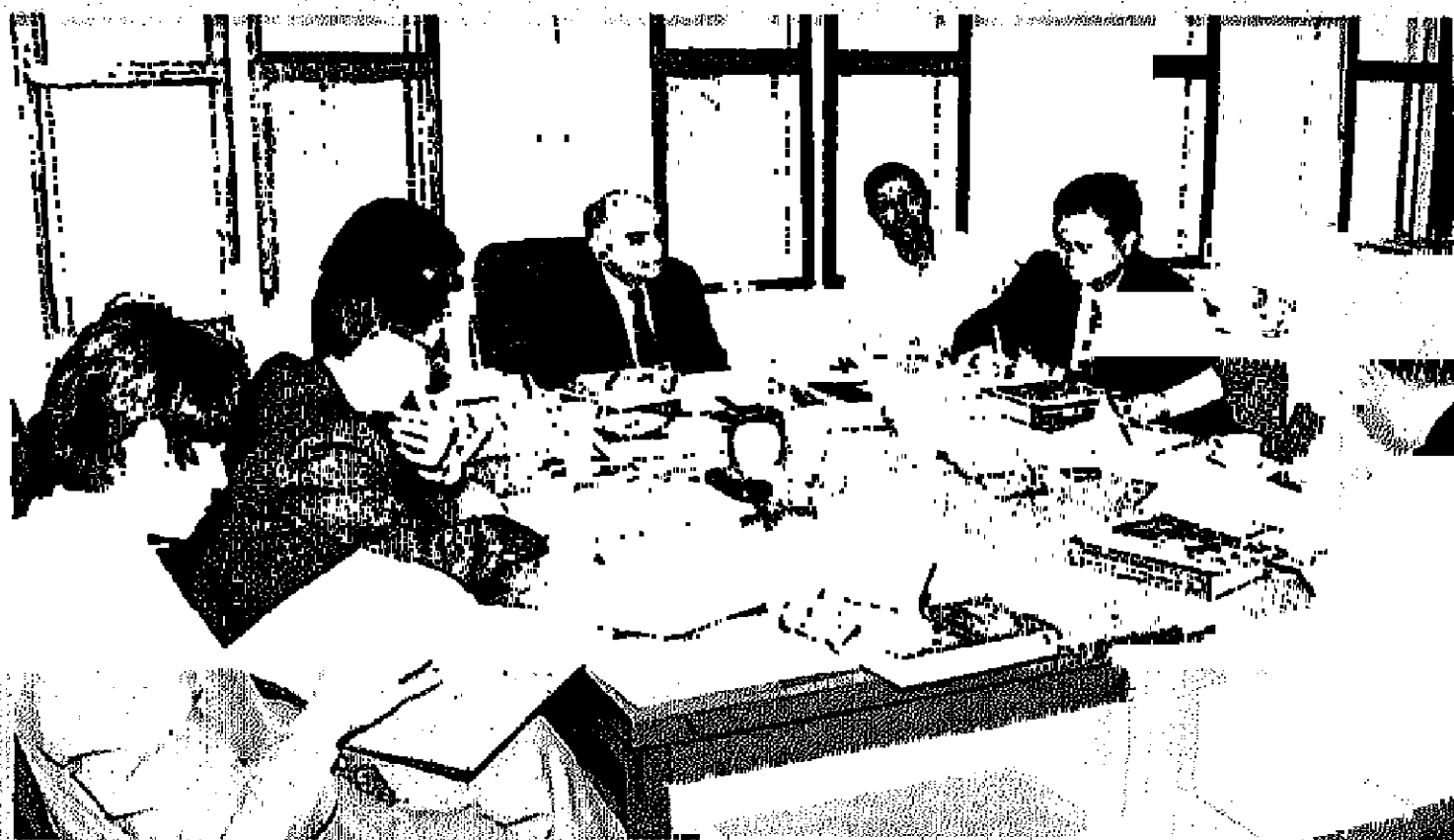
एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक चीन के प्रतिनिधियों के साथ

द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम

विभिन्न देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय सांस्कृतिक आदान प्रदान कार्यक्रम के तहत मॉरिशस, क्यूबा, फिनलैंड, तुर्की, सुडान, चीन, और संघीय जर्मन गणराज्य की सरकारों को शैक्षिक सामग्री/सूचनाओं की आपूर्ति की गई। इस प्रकार सी.ई.पी. कार्यक्रमों के अंतर्गत तुर्की और संघीय जर्मन गणराज्य की सरकारों से शैक्षिक सामग्री/प्रलेख/रिपोर्ट प्राप्त हुई। सी.ई.पी. कार्यक्रमों के अंतर्गत प्राप्त इन सामग्री को एन.सी.ई.आर.टी. के पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना प्रभाग के अंतर्राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र में प्रदर्शित किया गया है।

सी.ई.पी. के अंतर्गत विशेषज्ञों का आदान-प्रदान

— सी.ई.पी. 1994-96 के अंतर्गत परीक्षा और गणित शिक्षा के संबंध में सीरिया के दो शिक्षाविद्, श्री रेसाल हरान और श्री एम. घासन बाबिली ने 16-20 सितम्बर 1996 के दौरान एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उन्होंने डी.ई.एम.ई. और डी.ई.एस.एम. विभागों के संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया तथा राष्ट्रीय खुला विद्यालय और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का भी दौरा किया।

— सी.ई.पी. 1994-96 के अंतर्गत "प्रतिभाशाली बच्चों की शिक्षा" के संबंध में प्रो. एम. के रैना, अध्यक्ष, डी.ई.पी.एफ.ई. (एन.आई.ई.) और डा. जी.एन.पी. श्रीवास्तव, रीडर, क्षे.शि.सं., भोपाल ने 17 से 22 दिसम्बर 1996 तक इसराईल का दौरा किया।

— अंग्रेजी भाषा में विद्यालयी पुस्तकों और अध्यापन सहायता के विकास तथा वितरण के अनुभवों के आदान-प्रदान हेतु, डा. नसीरूद्दीन खान, रीडर, डी.ई.एस.एस.एच. (एन.आई.ई.) और डा. वी.के. सनवानी, रीडर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

ने सी.ई.पी. 1994-96 के अंतर्गत 12-25 दिसंबर 1996 के दौरान सीरिया का दौरा किया।

एन.सी.ई.आर.टी. में विदेशी अतिथि/आगुन्तक

वर्ष 1996-97 के दौरान विभिन्न देशों के निम्नलिखित शिक्षाविद्/विशेषज्ञ/शिष्टमंडल एन.सी.ई.आर.टी. में पधारे :

— ईथोपिया के श्रीमती एच.ई. जीनेट जिऊडिक, शिक्षा मंत्री और कुछ अन्य मंत्रियों ने 26 जून 1996 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और निदेशक तथा कुछ अन्य वरिष्ठ कार्यकर्ताओं से चर्चा की।

— डा. हाबना मोरगेनधालार अफदर मेयर, जूरिच ने 7 जनवरी 1997 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उन्हें एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यों और क्रियाकलापों से अवगत कराया गया। उन्होंने डी.टी.ई.ई. और डी.ई.आर.पी.पी., एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों से भी विचार-विमर्श किया।

— श्री लंका के उच्च विद्यालयों के प्रधानाचार्यों के एक समूह (नीपा में शैक्षिक प्रबंध पर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं) ने 1 अक्तूबर 1996 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उन्हें एन.सी.ई.आर.टी. के कार्यों और क्रियाकलापों से अवगत कराया गया।

— नेपाल से आए सरकारी अधिकारी और एन.जी.ओ. के 12 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 12 दिसम्बर 1996 को डी.डब्ल्यू.एस., एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। जहां उन्हें "महिलाओं के अध्ययन" पर विभिन्न क्रियाकलापों और कार्यक्रमों से परिचित कराया गया।

— यूनेस्को/ए.एस.पी. सांस्कृतिक आदान कार्यक्रम के अंतर्गत नीदरुड नीटेरंगसेनडे सकोले, नार्वे के संकाय के 15 विद्यार्थियों ने 9 से 14 फरवरी, 1997 तक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर का दौरा किया।

— बांगलादेश के आठ सदस्यीय शिष्टमंडल ने 16 से 21 सितम्बर 1996 तक एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उन्होंने उच्चतर माध्यमिक शिक्षा में सुधार और कार्यान्वयन सम्बन्धी मामलों पर विचार-विमर्श किया।

— बांगलादेश के शिक्षा मंत्रालय से आए 13 सदस्यीय अध्ययन दल ने 7-21 अक्तूबर 1996 तक "शिक्षा के प्रबंध" विषय पर कार्यक्रम में भाग लिया।

— बांगलादेश के प्राथमिक शिक्षा निदेशालय से चार सदस्यीय शिष्टमंडल ने 29 अक्तूबर 1996 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। शिष्टमंडल को एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों के कार्यों और क्रियाकलापों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई गई। उन्होंने डी.डब्ल्यू.एस. और डी.पी.एस.ई.ई. के संकाय सदस्यों के साथ चर्चा भी की।

— आस्ट्रेलिया से आए तीन सदस्यीय शिष्टमंडल ने 5 नवम्बर 1996 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उन्होंने एन.सी.ई.आर.टी. के संघटकों के कार्यों और क्रियाकलापों पर चर्चा की।

— नेपाल के बूधानीलकन्टा पब्लिक स्कूल, काठमांडू के चार सदस्यीय शिष्टमंडल ने 14 जून 1996 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। शिष्टमंडल ने भारत में पाठ्यचर्या नियोजन और विकास के क्षेत्र में एन.सी.ई.आर.टी. के डी.ई.एस.एम./डी.ई.एस.एस.एच., डी.ई.एम.ई., और डी.पी.एस.ई.ई. के वरिष्ठ संकाय सदस्यों से चर्चा की।

— नीपा में छः मास के अंतराष्ट्रीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षुओं के एक समूह ने 12 नवम्बर 1996 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उन्हें एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकार्यों एवं क्रियाकलापों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई गई। प्रशिक्षुओं ने सी.आई.ई.टी., डी.एल.डी.आइ, प्रकाशन प्रभाग और डी.सी.ई.टी.ए. का दौरा किया और वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ चर्चा भी की।

— एशिया एजूकेशन फाउंडेशन आस्ट्रेलिया के 12 प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के शिष्टमंडल ने 6 जनवरी 1997 को एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया। उन्होंने विद्यालयी शिक्षा से संबंधित विभिन्न विषयों पर एन.आई.ई. के संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया। उन्हें प्राथमिक-विद्यालय शिक्षा में अध्यापन अधिगम कार्यनीतियों में आधुनिक विकास अनौपचारिक शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, प्रारंभिक शिक्षा, सामाजिक विज्ञान आदि के बारे में उन्हें अवगत कराया गया।

— श्री एम.ए. कुरेशी, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा, विशेषज्ञ एसिड, यूनेस्को—प्रोप, बैंकाक ने 26 और 28 सितम्बर 1996 तक भारत का दौरा किया और यूनीवोक

के क्रियाकलापों से संबंधित अधिकारियों और पी.एस.एस.सी.आई.वी. के संकाय सदस्यों से विचार-विमर्श किया।

— बांगलादेश से आए जूनियर हाई स्कूल के मुख्य अध्यापकों और उप-प्रधानाचार्यों के 15 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 6 फरवरी 1996 को डी.टी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और भारत में अध्यापक शिक्षा से संबंधित विषयों पर विचार-विर्मश किया।

— बांगलादेश के शिक्षा विभाग से आए वरिष्ठ शैक्षिक अधिकारियों के 13 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 29 अक्तूबर 1996 को डी.टी.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों से संबंधित विषयों पर संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।

— नेपाल के चार सदस्यीय शिष्टमंडल ने 14 नवम्बर 1996 को डी.ई.एस.एम., एन.सी.ई.आर.टी. का दौरा किया और भारत में पाठ्यचर्या नियोजन और विकास से संबंधित विषयों पर चर्चा की।

एन.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों की अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में प्रतिभागिता

— प्रो. ए.के. शर्मा, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने काठमांडू, नेपाल में 6 से 8 जुलाई, 1996 तक माध्यमिक शिक्षा समिति के सम्मेलन में भाग लिया।

— प्रो. ए.के. शर्मा, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने जेनेवा में 30 सितम्बर से 15 अक्टूबर 1996 तक अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन के 45वें सत्र में भाग लिया। सम्मेलन का विषय था "परिवर्तनशील संसार में अध्यापकों की भूमिका का सुदृढ़ीकरण"।

— प्रो. ए.के. शर्मा, निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने इस्लामाबाद, पाकिस्तान में 24 से 28 फरवरी 1997 तक विद्यालयों के लिए "ड्रग विरोध पाठ्यचर्या के विकास" पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

— प्रो. ए.एन. माहेश्वरी, संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. ने पेरिस में 9 से 16 जून 1996 तक यूनेस्को की सहायता से, अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक योजना संस्थान द्वारा आयोजित परिवर्तनशील संसार में दूरस्थ शिक्षा की योजना की रूप-रेखा और प्रबंध पर आयोजित कार्यशाला में भाग लिया।

— प्रो. एन.ए. माहेश्वरी, संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. "परिवर्तन के लिए पुन:—इंजीनियरी शिक्षा पर द्वितीय यूनेस्को-एसिड अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी: विकास के लिए शैक्षिक नवाचार" और संबंधित केन्द्रों के लिए एपिड नेटवर्क पर क्षेत्रीय कार्यशाला: भावी दिशाएं विषय पर बैंकाक में 8 से 15 दिसम्बर 1996 तक भाग लिया।

एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक न्यूजीलैण्ड के प्रतिनिधियों के साथ

— प्रो. अरूण के. मिश्र., संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., एन.सी.ई.आर.टी. ने इस्लामाबाद, पाकिस्तान में 13 से 17 अक्तूबर 1996 तक टी.वी.ई. (तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा) अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या का विकास और अनुकूलन पर आयोजित यूनीवोक तकनीकी कार्य प्रणाली समूह की बैठक में भाग लिया।

— प्रो. अरूण के. मिश्र, संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., एन.सी.ई.आर.टी. ने एशिया और पैसिफिक के अल्प विकसित देशों में विज्ञान, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा में "लड़कियों और महिलाओं के
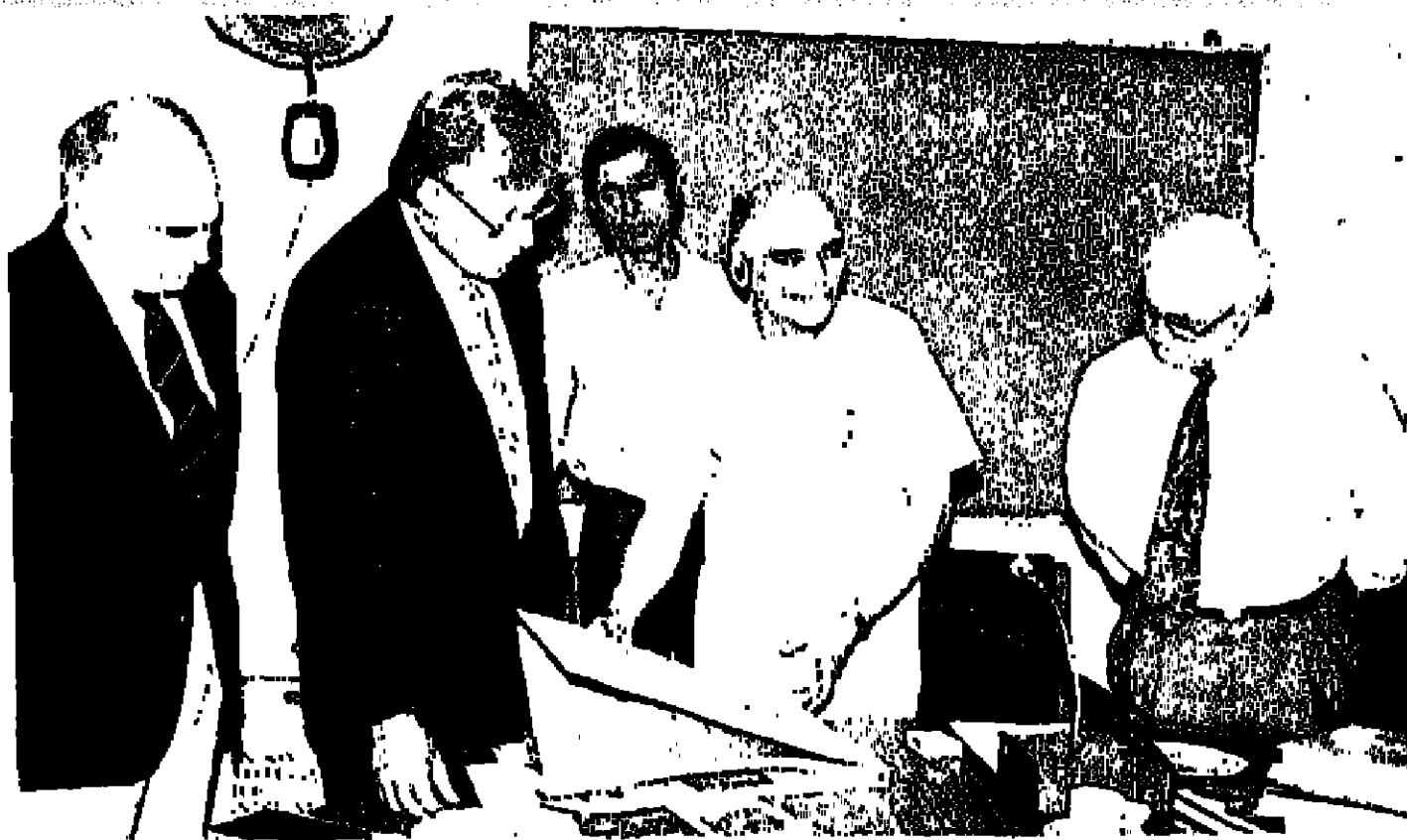
प्रवेश में सुधार" विषय पर ढाका, बांगलादेश में 16 से 24 दिसम्बर 1996 तक विशेषज्ञों के समूह की बैठक में भाग लिया।

— डा. ए.के. सचेती, प्रोफेसर, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., एन.सी.ई.आर.टी. ने ग्रामीण विकास के लिए ओटावा, कनाडा में 14 से 20 सितम्बर 1996 तक तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण (टी.वी.ई.टी.) पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

— डा. ए.के. सचेती, प्रोफेसर, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., एन.सी.ई.आर.टी. ने फनोम पीनह— कम्बोडिया में 24 से 30 जुलाई तक टी.वी.ई. के लिए अवसंरचना विकास पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।

— डा. (सुश्री) पुनम अग्रवाल, प्रोफेसर, पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई., एन.सी.ई.आर.टी. ने बैंकॉक में 20 से 24 मई 1996 तक व्यावसायिक शिक्षा और कार्यस्थल साक्षरता की प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पर डी.ई.ई.टी./ युनेस्को—प्रोप परियोजना की बैठक में भाग लिया।

— डा. डी.पी. सिंह, रीडर, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., एन. सी.ई.आर.टी. ने मन्नहेइम, जर्मनी में 17 जून से 26 जून 1996 तक दस्तकारी व्यवसायों के लिए प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी में पर्यावरण सुरक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

— डा. जी.एल. अरोरा, अध्यक्ष डी.टी.ई.ई. ने प्रारंभिक शिक्षा के साधारणीकरण पर 1996 एपिड क्षेत्रीय संगोष्ठी: "एशिया-पैसिफिक क्षेत्र में अध्यापकों के कार्य और व्यावसायिक क्षमता को शक्ति और बढ़ावा देकर प्राथमिक शिक्षा की प्रभावी क्षमता और गुणवत्ता में सुधार में हिरोशिमा, जापान में 22 से 31 जुलाई 1996 तक भाग लिया।

— डा. जी.एल. अरोरा, अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई. ने कोलालाम्पूर, मलेशिया में 19 से 28 अगस्त 1996 तक "विकास के लिए निरन्तर शिक्षा" पर तृतीय क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।

— डा. ए.के. श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रवक्ता, डी.ई.पी.एफ.ई., ने शेरब्रूके, कनाडा में 22 से 25 अगस्त 1996 तक आयोजित अग्रिम अनुसंधान प्रशिक्षण संगोष्ठी, (आर्द्र) 1996 में भाग लिया। इस संगोष्ठी में, ई.सी.सी.ई. 'कार्यक्रम जिसे "मिस्क" अतिसंवेदनशील मेधावी छात्र/सुग्राही देख-रेख कर्ता के लिए मध्यस्थता कहा गया, पर चर्चा की।

— डा. (श्रीमती) संध्या परांजये, वरिष्ठ प्रवक्ता, डी.पी.ई. पी.सी.आर.जी., एन.सी.ई.आर.टी. ने योकोसूकू, जापान में 11 से 16 नवम्बर 1996 तक सेन सहित बच्चों का समुदाय में परिवर्तन विषय पर 16 एपिड क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

— डा. एस.के. सिंह गौतम, रीडर, डी.पी.ई.पी.सी.आर.जी, एन.सी.ई.आर.टी. ने लंदन में 11 जनवरी से 14 मार्च 1997 तक "शैक्षिक प्रबंध एवं सूचना तंत्र (ई.एम.आई. एस.) का विकास" विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम ब्रिटिश परिषद् द्वारा ओ.डी.ए. से प्रायोजित किया गया।

— श्रीमती पुष्पलता कुमार, सहायक अभियन्ता, सी.आई.ई. टी. ने हांगकांग में 24 फरवरी से 7 मार्च 1997 तक सी.सी.डी. कैमरा और बेटाकॉम रिर्काडर के रख-रखाव पर अग्रिम प्रशिक्षण प्राप्त किया।

— श्री वी.के. शाह, सहायक अभियन्ता, सी.आई.ई.टी. ने हांगकांग में 24 फरवरी से 7 मार्च 1997 तक सी.सी. डी. कैमरा और बेटाकॉम रिकार्डर के रख-रखाव पर अग्रिम प्रशिक्षण प्राप्त किया।

— श्री मनोज शुक्ला, प्रोड्यूसर, सी.आई.ई.टी. ने मनीला, फिलिपाइन्स में 24 से 25 फरवरी 1997 तक "शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों" विषय पर चौथा एशियाई कार्यशाला में भाग लिया और ई.टी.वी. कार्यक्रमों के निर्माण और ई.टी.वी. में विशिष्टता लाने के लिए अनुभवों का आदान-प्रदान किया।

— डा. एस.एस. पांडे, प्रवक्ता, क्षे.शि.सं., अजमेर ने पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्रों में यू.के. में 18 मई से 7 जून 1996 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

— डा. वी.वी. आनन्द, रीडर, क्षे.शि.सं., मैसूर ने पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में 18 मार्च से 7 जून 1996 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

— डा. (श्रीमती) रीता शर्मा, प्रवक्ता, क्षे.शि.सं., भोपाल ने पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में 18 मार्च से 7 जून 1996 तक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

— डा. के. डोरास्वामी, रीडर, क्षे.शि.सं., मैसूर ने "शिक्षा नीति विश्लेषण और नियोजन" विषय पर 18 जून से

19 जुलाई 1996 तक हारवर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल डैवलपमेंट, मस्सासूसेटस, यू.एस.ए. द्वारा संचालित वार्षिक कार्यशाला में भाग लिया।

— डा. एस. के. गोयल, रीडर क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर ने हेलसिनकी (फिनलैंड) में 8 से 13 जुलाई 1996 तक आई.ए.एस.एस.आई.डी. के दसवें विश्व कांग्रेस में भाग लिया।

— जी.एस. हाटी, रीडर, क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर ने मालाका (मलेशिया) में 1 से 5 जुलाई 1996 तक एपनीय विशेषज्ञों के समह की बैठक में भाग लिया।

— डा. डी.के. भट्टाचारजी, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर और नार्वे के नाडररुड महाविद्यालय के बीच में यूनेस्को/ए.एस.पी. विद्यालय के मैत्रीपूर्ण आदान-प्रदान एवं सहयोग के अंतर्गत कार्यक्रम में भाग लिया।

— प्रो. अर्जुन देव, अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच. ने कोलेरायने उत्तरी आयरलैंड स्टाक राकफोर्ड, इंग्लैंड में 28 मई से 2 जून 1996 तक मानवाधिकार पर "अल्पवयस्कों की समझ" विषय पर राष्ट्रमंडल परियोजना की परिचालन समिति की बैठक और मानवाधिकार पर राष्ट्रमंडल अध्यापकों के सम्मेलन में भाग लिया।

— प्रो. अर्जुन देव, अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच. ने मनीला, फिलिपाइन्स में 14 से 18 अक्तूबर 1996 तक "कौन सी नागरिकता के लिए कौन सी शिक्षा" विषय पर यूनेस्को—आई.बी.ई. परियोजना के राष्ट्रीय संयोजकों की बैठक में भाग लिया।

— प्रो. अर्जुन देव, अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच. ने गेबोरोने, बॉटसवाला में 18 से 20 मार्च 1997 तक "मानवाधिकार पर अल्पसंख्यकों की समझ" विषय पर राष्ट्रमंडल परियोजना की परिचालन समिति की बैठक में भाग लिया।

— डा. (श्रीमती) अनुपम आहुजा, वरिष्ठ प्रवक्ता, डी.ई.जी. एस.एन. ने ताशकंद, उजबेकिस्तान गणराज्य में 18 से 22 नवम्बर 1996 तक यूनेस्को ग्रोप हेतु परामर्शदाता के रूप में विशेष शिक्षा में एपिड मोबाईल प्रशिक्षण दल में ताशकंद, अजबेकिस्तान में कार्य किया।

— डा. (श्रीमती) अनुपम आहुजा, वरिष्ठ प्रवक्ता, डी.ई.जी. एस.एन. ने विंडहोस्क नामिबिया में 7 से 19 नवम्बर 1996 तक यूनेस्को के लिए परामर्शदाता के रूप में कार्य किया।

— प्रो. उषा नैय्यर, अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस. ने सिडनी, आस्ट्रेलिया में 1 से 6 जुलाई 1997 तक तुलनात्मक शिक्षा विषय पर नवें विश्व कांग्रेस में भाग लिया और "भारत में लड़कियों की शिक्षा" नामक आलेख भी प्रस्तुत किया।

— डा. एस. जयरथ, वरिष्ठ प्रवक्ता, डी.डब्ल्यू.एस. ने सिडनी, आस्ट्रेलिया में 1 से 6 जुलाई, 1997 तक तुलनात्मक शिक्षा विषय पर नवें विश्व कांग्रेस में भाग लिया और "भारत में लड़कियों का छट जाना" नामक आलेख प्रस्तुत किया।

— प्रो. विनीता कौल, अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई. ने इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, लंदन में जुलाई 1996 में "स्वास्थ्य शिक्षा तक बच्चों की पहुँच" शीर्षक से आयोजित छः सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

— डा. दलजीत गुप्ता, रीडर, डी.पी.एस.ई.ई. ने कोलंबिया में 22 सितम्बर से 3 अक्तूबर 1996 तक "इसक्यूला न्यूवा" स्ट्रेटजी अध्यापकों द्वारा बहुश्रेणियों को संचालन के लिए अपनाई गई कार्यनीति के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

— डा. वी.पी. गुप्ता रीडर, डी.पी.एस.ई.ई. ने "शिक्षा नीति विश्लेषण और नीति नियोजन" विषय पर हारवर्ड इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल डेवलपमेंट, यू.एस.ए. द्वारा संचालित 16 जून से 19 जुलाई 1996 तक पाँच-सप्ताह के पाठ्यक्रम में भाग लिया।

— श्री पी.के. दास, प्रवक्ता, क्षे.शि.सं., भुवनेश्वर ने नार्वे में 23 अक्तूबर से 7 नवम्बर 1996 तक यूनेस्को/ए.एस. पी. सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम में भाग लिया।

हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन

राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों, निर्देशों और राजभाषा नियमों के समुचित अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए परिषद् के हिंदी प्रकोष्ठ ने बहुत से उपाय किए। इसके कार्यकलापों का मुख्य केन्द्र एन.सी.ई.आर.टी. के प्रशासनिक और शैक्षिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना और प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध करवाना है

21

हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन

राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा अनेक कदम उठाए गए। राजभाषा विभाग, गृहमंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी आदेशों, निर्देशों और राजभाषा नियमों के समुचित अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिए परिषद् के हिंदी प्रकोष्ठ ने बहुत से उपाय किए। इसके कार्यकलापों का मुख्य केन्द्र एन.सी.ई.आर.टी. के प्रशासनिक और शैक्षिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना और प्रशिक्षण सुविधाएं उपलब्ध करवाना है। इस उद्देश्य से हिंदी प्रकोष्ठ ने संकल्पनात्मक साहित्य तैयार किए। राजभाषा कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने हेतु एन.सी.ई.आर.टी. के कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए, भावी योजनाएं तैयार की गईं और एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटकों में हिंदी के प्रयोग की प्रगति का निरीक्षण किया गया और त्रैमासिक प्रगति का मूल्यांकन किया गया। हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देने हेतु किए गए मुख्य कार्यक्रम निम्नलिखित हैं:

हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए साहित्य

दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हिंदी प्रकोष्ठ ने संगत साहित्य का निर्माण किया। हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा तैयार *हिंदी प्रयोग सहायिका* (भाग 1 और 2) मुद्रणाधीन है। एन.सी.ई.आर.टी. के कर्मचारियों के प्रयोग के लिए हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा एक फोल्डर विकसित किया जा रहा है, जिसमें राजभाषा नीति, नियम व अधिनियम, अधिकारियों के राजभाषा संबंधी दायित्व तथा राजभाषा संबंधी अन्य सभी उपयोगी बातें दी गई हैं।

पिछले कुछ समय से टिप्पणियों, वाक्यों व सामान्य प्रशासनिक अंग्रेजी शब्दों के हिंदी रूपान्तर की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इस हेतु, हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा लगभग 57 द्विभाषी लघु टिप्पणियाँ, वाक्य तथा 100 शब्द सूचीबद्ध किए गए, जिन्हें सभी फाइल कवर के पृष्ठों पर छपवाने की योजना है। इससे परिषद् के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने में सुविधा होगी।

बैठकें

हिंदी के प्रगामी प्रयोग को अधिकाधिक बढ़ावा देने और राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा के लिए 1996-97 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन बैठकें आयोजित की गईं।

हिंदी पखवाड़ा, 6-20 सितंबर 1996

हिंदी पखवाड़ा

6 से 20 सितम्बर 1996 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। इस पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं :

1. हिंदी टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता
2. हिंदी निबंध प्रतियोगिता
3. हिंदी टंकण प्रतियोगिता
4. हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता
5. हिंदी कविता प्रतियोगिता

इन प्रतियोगिताओं में 17 व्यक्तियों को विजेता घोषित किया गया। हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण कार्यक्रम के
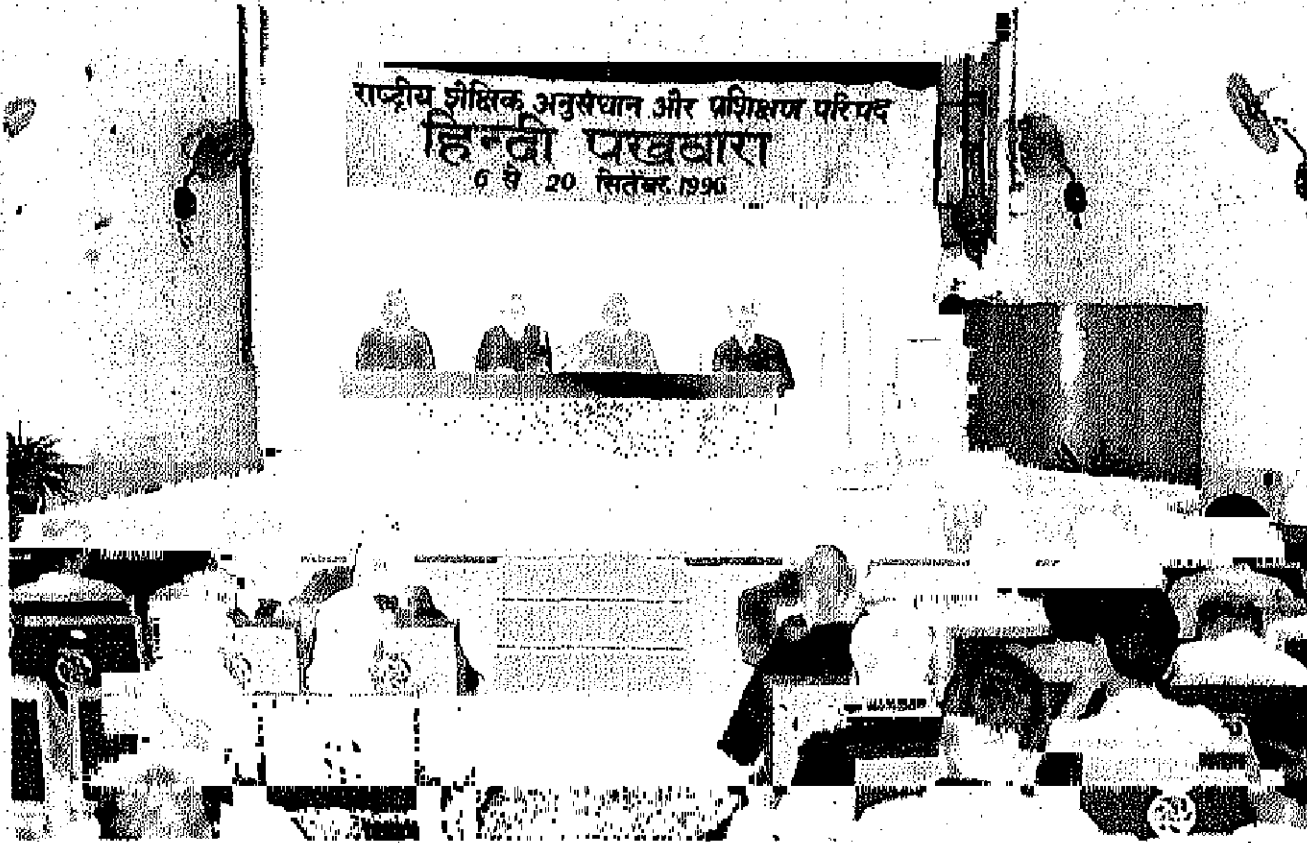
दौरान इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले विजेता प्रतियोगियों को क्रमशः रु.400.00; रु.300.00; तथा रु.200.00 के नकद पुरस्कार तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। इसी दौरान परिषद् में प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा विज्ञान गृह मंत्रालय द्वारा प्रकाशित पोस्टर व चार्ट परिषद् के संघटकों/विभागों/अनुभागों में वितरित किए गए।

हिंदी कंप्यूटर प्रदर्शनी

हिंदी कंप्यूटर प्रदर्शनी

परिषद् के अधिकारियों व कर्मचारियों को हिंदी में उपलब्ध न्यूनतम तकनीकी सुविधाओं का परिचय देने के लिए हिंदी प्रकोष्ठ ने 17-18 सितम्बर 1996 के दौरान राजभाषा विभाग के तकनीकी कक्ष के सहयोग से हिंदी कंप्यूटर प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी में चार प्रसिद्ध हिंदी सॉफ्टवेयर निर्माता कंपनियों ने भाग लिया। परिषद् के अधिकारियों व कर्मचारियों के अतिरिक्त अन्य संस्थानों/संस्थाओं के कर्मचारियों को भी इस कार्यक्रम से लाभ पहुँचा।

हिंदी टंकण और आशुलिपि प्रशिक्षण कार्यक्रम

एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न अनुभागों के 8 कर्मचारियों को 1 अगस्त 1996 से 31 जनवरी 1997 तक हिंदी टंकण का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त, हिंदी आशुलिपि प्रशिक्षण के पुनश्चर्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत परिषद् के 8 कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। जुलाई [illegible] में राजभाषा विभाग के केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित परीक्षा के लिए इन कर्मचारियों को भेजा जाएगा।

अनुवाद कार्य

एन.सी.ई.आर.टी. के विभिन्न संघटकों/विभागों/अनुभागों से प्राप्त प्रशासनिक कागज पत्रों का अनुवाद करने में हिंदी प्रकोष्ठ सहायता उपलब्ध करवाता रहा है। लेखा परीक्षा रिपोर्ट के अनुवाद और पुनरीक्षण से संबंधित कार्य भी किया गया।

कार्यान्वयन का निरीक्षण और अनुवीक्षण

हिंदी के प्रयोग के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा के लिए कुछ विभागों/अनुभागों का निरीक्षण किया गया। अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में हिंदी के प्रयोग के कार्यान्वयन के दौरान [illegible] किए गए।

परिशिष्ट

वार्षिक रिपोर्ट
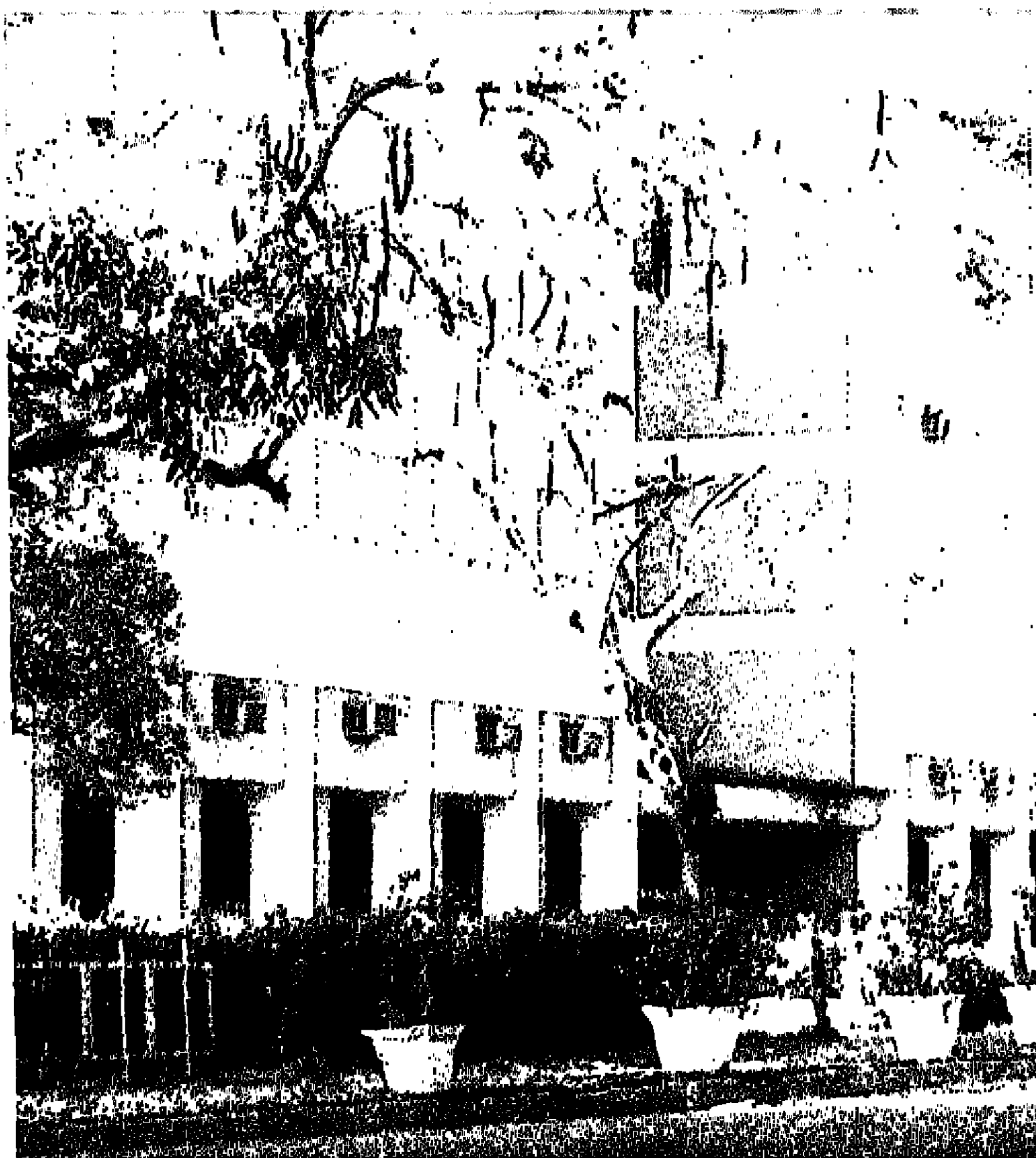
एन सी ई आर टी

1996 - 97

परिशिष्ट-1

वर्ष 1996-97 के लिए परिषद् की समितियाँ

एन.सी.ई.आर.टी. का सामान्य निकाय

(परिषद् की नियमावली के नियम 3 के अंतर्गत)

(29.12.1999 तक मान्य)

1.	मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय पदेन अध्यक्ष	1.	श्री एस.आर. बोम्मई मानव संसाधन विकास मंत्री मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
2.	अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग पदेन	2.	प्रो. (कु.) अरमैती देसाई अध्यक्ष विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग नई दिल्ली 110 002
3.	सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) पदेन	3.	श्री आर.पी. दास गुप्ता मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110 001
4.	भारत सरकार द्वारा नामित विश्वविद्यालय के चार कुलपति (प्रत्येक क्षेत्र से एक)	4.	(i) श्री एम.टी. गाबा कुलपति नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर 440 001 (28.12.96 तक) (ii) प्रो. के.एस. पाठक कुलपति तेजपुर विश्वविद्यालय तेजपुर 784 001
		5.	(i) प्रो. टी.एन. कपूर कुलपति पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ 160 014 (28.12.96 तक)

(ii) श्रीमती पद्मा रामचन्द्रन
कुलपति
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय
बड़ोदरा 390 002

6. (i) श्री एन.के. चौधरी
कुलपति
गुवाहाटी विश्वविद्यालय
गुवाहाटी 781 014
(28.12.96 तक)

(ii) प्रो. सी.एल. कुंडू
कुलपति
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला 171 005

7. (i) प्रो. मदइमा
कुलपति
मैसूर विश्वविद्यालय,
क्रेफोर्ड हिल
मैसूर 570 005
(28.12.96 तक)

(ii) प्रो. आर. राममूर्ति
कुलपति
श्रीवेंक्टेश्वर विश्वविद्यालय
तिरुपति 517 502

5. प्रत्येक राज्य सरकार और विधानसभा से युक्त संघ-शासित क्षेत्र का एक-एक प्रतिनिधि जो राज्य/संघ-शासित क्षेत्र का शिक्षामंत्री (अथवा उसका प्रतिनिधि)

8. विद्यालय शिक्षा मंत्री
आंध्र प्रदेश सरकार
सचिवालय भवन, हैदराबाद 500 022

9. विद्यालय शिक्षा मंत्री
अरूणाचल प्रदेश सरकार
इटानगर 791 111

10. विद्यालय शिक्षा मंत्री
असम सरकार
जनता भवन
दिसपुर 781 006

11. विद्यालय शिक्षा मंत्री
बिहार सरकार
नया सचिवालय भवन
पटना 800 015

12. विद्यालय शिक्षा मंत्री
गोवा सरकार
गोवा सचिवालय
पणाजी 403 001

13. विद्यालय शिक्षा मंत्री
गुजरात सरकार
ब्लाक नं. 1 सचिवालय
गांधी नगर 382 010

14. विद्यालय शिक्षा मंत्री
हरियाणा सरकार
हरियाणा सिविल सचिवालय
चण्डीगढ़ 160 001

15. विद्यालय शिक्षा मंत्री
हिमाचल प्रदेश सरकार
शिमला 170 002

16. विद्यालय शिक्षा मंत्री
जम्मू और कश्मीर सरकार
श्रीनगर 180 001

17. विद्यालय शिक्षा मंत्री
कर्नाटक सरकार
विधान सौंधा
बैंगलूर 560 001

18. विद्यालय शिक्षा मंत्री
केरल सरकार
अशोक नंथनकोड
तिरूवनंतपुरम 695 001

19. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मध्य प्रदेश सरकार
भोपाल 462 001

20. विद्यालय शिक्षा मंत्री
महाराष्ट्र सरकार
मंत्रालय मुख्य
मुंबई 400 032

21. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मणिपुर सरकार
मणिपुर सचिवालय
इंफाल 795 001

22. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मेघालय सरकार
मेघालय सचिवालय
शिलाँग 793 001

23. विद्यालय शिक्षा मंत्री
नागालैंड सरकार
कोहिमा 797 001

24. विद्यालय शिक्षा मंत्री
मिजोरम सरकार
आइजोल 796 001

25. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उड़ीसा सरकार
उड़ीसा सचिवालय
भुवनेश्वर 751 001

26. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पंजाब सरकार
चण्डीगढ़ 160 017

27. विद्यालय शिक्षा मंत्री
राजस्थान सरकार
सरकारी सचिवालय
जयपुर 302 001

28. विद्यालय शिक्षा मंत्री
सिक्किम सरकार,
सिक्किम सचिवालय
ताशिलिंग
गंगटोक 737 101

29. विद्यालय शिक्षा मंत्री
तमिलनाडु सरकार
फोर्ट सेंट जार्ज, चेन्नई 500 009

30. विद्यालय शिक्षा मंत्री
त्रिपुरा सरकार
सिविल सचिवालय
अगरतला 799 001

31. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पश्चिम बंगाल सरकार
राइटर्स बिल्डिंग
कलकत्ता 700 001

32. विद्यालय शिक्षा मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ 226 001

33. विद्यालय शिक्षा मंत्री
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय
दिल्ली 110 054

34. विद्यालय शिक्षा मंत्री
पांडिचेरी सरकार
विधानसभा सचिवालय
विक्टर सिमोनल स्ट्रीट
पांडिचेरी 605 001

6. कार्यकारिणी समिति के वे सदस्य जो ऊपर दी गई सूची में सम्मिलित नहीं है

35. श्री मुही राम सैकिया
शिक्षा राज्य मंत्री
मानव संसाधन विकास मंत्रालय

36. शिक्षा उपमंत्री
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(शिक्षा विभाग)
शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110 001

37. प्रो. ए.के. शर्मा
निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

46. श्री आर.एस. पांडेय
संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा)
(शिक्षा विभाग)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001
(30.9.1996 तक)

47. डा. पी.एच.एस. राव
संयुक्त शिक्षा सलाहकार
(शिक्षा विभाग)
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली 110 001

48. श्री एस. सत्यमूर्ति
वित्तीय सलाहकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(शिक्षा विभाग)
नई दिल्ली 110 011

7. क. अध्यक्ष
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
दिल्ली

49. अध्यक्ष
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र
2 कम्युनिटी सेंटर
प्रीत विहार
दिल्ली-110 092

ख. आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नई दिल्ली
पदेन

50. आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
18 इंस्टीच्यूशनल एरिया
शहीद जीत सिंह मार्ग
नई दिल्ली 110 016

ग. निदेशक
केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो
(डी.जी.एच.एस.)
नई दिल्ली
पदेन

51. निदेशक
केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो
(डी.जी.एच.एस.)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
कोटला रोड़
नई दिल्ली 110 002

घ.	उप महानिदेशक प्रभारी, कृषि शिक्षा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् कृषि मंत्रालय नई दिल्ली पदेन	52.	उप-महानिदेशक प्रभारी कृषि शिक्षा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् कृषि मंत्रालय डा. राजेन्द्र प्रसाद रोड नई दिल्ली 110 001
ड.	प्रशिक्षण निदेशक प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय नई दिल्ली पदेन	53.	प्रशिक्षण निदेशक प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय श्रम शक्ति भवन नई दिल्ली 110 001
च.	प्रतिनिधि शिक्षा प्रभाग योजना आयोग नई दिल्ली पदेन	54.	शिक्षा सलाहकार योजना आयोग योजना भवन संसद मार्ग नई दिल्ली 110 001
8.	भारत सरकार द्वारा मनोनीत छः व्यक्ति, (जिनमें कम से कम चार विद्यालय अध्यापक हों)	55. (i)	प्रो. वी.जी. कुलकर्णी निदेशक होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान मुंबई 400 005 (28.12.96 तक)
		(ii)	श्री के.आर. सिद्धधा एम.ए.एम.एड. सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक डी/2 विद्यालय नगर [illegible] 5[illegible] 005
		56 (i)	[illegible] प्रधानाध्यापक दिल्ली पब्लिक स्कूल से. 12, आर.के. पुरम नई दिल्ली 110 022 (28.12.1996 तक)
		(ii)	श्री [illegible] प्रधानाध्यापक केन्द्रीय विद्यालय [illegible] देहरादून 248 006

विशेष आमंत्रित

61. सचिव
भारतीय स्कूल प्रमाण-पत्र, परीक्षा परिषद्
प्रगति हाउस, तीसरी मंजिल
47, नेहरू प्लेस
नई दिल्ली 110 019

संयोजक

62. श्री पी.एन. चावला
कार्यवाहक सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

8. श्री जी.एस.[illegible]. शर्मा
प्रबंध न्यासी
एल.एस.बी.के. ट्रस्ट
493/सी आठवां क्रास
77वां ब्लाक
पश्चिम जया नगर
बैंगलूर 560 082

9. श्री क्रिस्टोफर एंटनी ब्राउन
फ्रैंकएंटनी पब्लिक स्कूल
13 कैंब्रिज रोड़
अल्सूर
बैंगलूर 560 008

10. डा. श्रीमती रीता खन्ना
7-ई, हुडको प्लेस
एन्ड्रयूज गंज
नई दिल्ली

परिषद् के संयुक्त निदेशक

11. डा. ए.एन. माहेश्वरी
संयुक्त निदेशक
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, परिषद् के संकाय के तीन सदस्य, जिनमें कम से कम दो सदस्य प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्षों के स्तर के हों

12. श्रीमती कुसुम नांगिया
संयुक्त निदेशक
सी.आई.ई.टी.
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

13. डा.ए.के. मिश्र
संयुक्त निदेशक
[illegible] एस.सी.आई.वी.ई
131, जोन 2
एम.पी. नगर
भोपाल 462 011

14. प्रो. पी.के. [illegible]
प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल 462 013

मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	15. (i)	डा. आर.एस. पांडेय संयुक्त सचिव (शिक्षा विभाग) मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
	(ii)	श्री सेतुमाधव राव संयुक्त शिक्षा सलाहकार (शिक्षा विभाग) मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा	16.	श्री एस. सत्यमूर्ति वित्तीय सलाहकार एन.सी.ई.आर.टी. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
सचिव एन.सी.ई.आर.टी. संयोजक	17.	श्री पी.एन. चावला कार्यवाहक सचिव एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016

वित्त समिति

(परिषद् के नियम 62 के अंतर्गत)

(25.10.1998 तक मान्य)

निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. पदेन	1.		प्रो. ए.के. शर्मा निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
वित्तीय सलाहकार पदेन	2.		श्री एस. सत्यमूर्ति वित्तीय सलाहकार एन.सी.ई.आर.टी. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
संयुक्त सचिव (स्कूल) मानव संसाधन विकास मंत्रालय	3.	(i)	श्री आर.एस. पांडेय संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
	3.	(ii)	श्री सेतुमाधव राव संयुक्त शिक्षा सलाहकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
	4		श्री अनिल सिन्हा संयुक्त निदेशक नीपा नई दिल्ली 110 016

4. सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
सदस्य-संयोजक

5. डॉ. बी.पी. खंडेलवाल
अध्यक्ष
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा केन्द्र, 2-कम्युनिटी सेंटर
प्रीत विहार
दिल्ली 110 092

6. श्री पी.एन. चावला
कार्यवाहक सचिव
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

स्थापना समिति

(परिषद् के विनियम 10 के अंतर्गत)

(26 दिसंबर 1999 तक मान्य)

पद	क्रम		सदस्य
निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. अध्यक्ष	1.		प्रो. ए.के. शर्मा निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी.	2.		डा. ए.एन. माहेश्वरी संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
परिषद् के अध्यक्ष द्वारा मनोनीत मानव संसाधन विकास मंत्रालय	3.	(i)	श्री आर.एस. पांडेय संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001 (30.9.1996 तक)
(शिक्षा विभाग) भारत सरकार के नामित व्यक्ति	3.	(ii)	डा. पी.एच.एस. राव संयुक्त शिक्षा सलाहकार (विद्यालय शिक्षा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
अध्यक्ष द्वारा मनोनीत चार शिक्षाविद् जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4.	(i)	श्री जोखन सिंह प्रोफेसर एवं अध्यक्ष सांख्यिकी अध्ययन विद्यालय विज्ञान संकाय विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन 456 010 (26.12.96 तक)

(ii) प्रो. सी.एल. आनन्द
पूर्व-कुलपति
अरूणाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
विजिटिंग प्रोफेसर
पंजाब विश्वविद्यालय
एफ-87
विकासपुरी
नई दिल्ली 110 018

5. (i) यापा एस. यांगदा
नेतुक हाउस
तिब्बत रोड़
गंगतोक
सिक्किम
(26.12.96 तक)

5. (ii) प्रो. पी. वेकटरमय्या
कुलपति
कुवेम्पु विश्वविद्यालय
ज्ञान सहेद्री, शंकरघटा
जिला शिमोगा 577 115

6. (i) डा. ई. अन्नामलाई
निदेशक
सी.आई.आई.एल.
मानस गंगोत्री
मैसूर 570 006
(26.12.96 तक)

6. (ii) डा. एस.एस. सालगांवकर
निदेशक
भारतीय शिक्षा संस्थान
128/2
जे.पी. नायक मार्ग
कोथर्ड
पुणे 411 029

7. (i) डा. के.के. मंडल
भूतपूर्व कुलपति
बिहार और मगध विश्वविद्यालय
अध्यक्ष
एस.पी. मंडल ग्रामीण
विकास एवं समाजिक परिवर्तन
अध्ययन संस्थान
एस.के. नगर, पोस्ट किदवईपुरी,
पटना 800 001 (26.12.96 तक)

7. (ii) कु. नरगिस पंचपकसन
प्रोफेसर
केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
दिल्ली विश्वविद्यालय
33 छात्रा मार्ग
दिल्ली 110 007

अध्यक्ष द्वारा मनोनीत क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि

8. (i) प्रो. एस.टी.वी.जी. आचार्युलु
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर 570 006 (26.12.96 तक)

8. (ii) प्रो. डी.के.भट्टाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर 570 006

अध्यक्ष द्वारा मनोनीत राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (नई दिल्ली) से एक प्रतिनिधि

9. (i) डा. श्रीमती सविता सिन्हा
प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस.एच.
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016 (26.12.96 तक)

9 (ii) प्रो. श्रीमती ऊषा नायर
अध्यक्ष
महिला शिक्षा संस्थान
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

परिषद् के शैक्षिक तथा गैर-शैक्षिक नियमित स्टॉफ, प्रत्येक में से एक-एक प्रतिनिधि जिनका चयन परिशिष्ट में इस संबंध में निर्धारित विनियम के अनुसार किया गया हो

10 डा. एस.के. यादव
वरिष्ठ प्राध्यापक
डी.टी.ई.ई.,
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

	11.	श्री वेद प्रकाश वैयक्तिक सहायक डी.ई.एस.एम. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
वित्तीय सलाहकार	12.	श्री एस. सत्यमूर्ति वित्तीय सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
सचिव एन.सी.ई.आर.टी. सदस्य-संयोजक	13.	श्री पी.एन. चावला कार्यवाहक सचिव एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
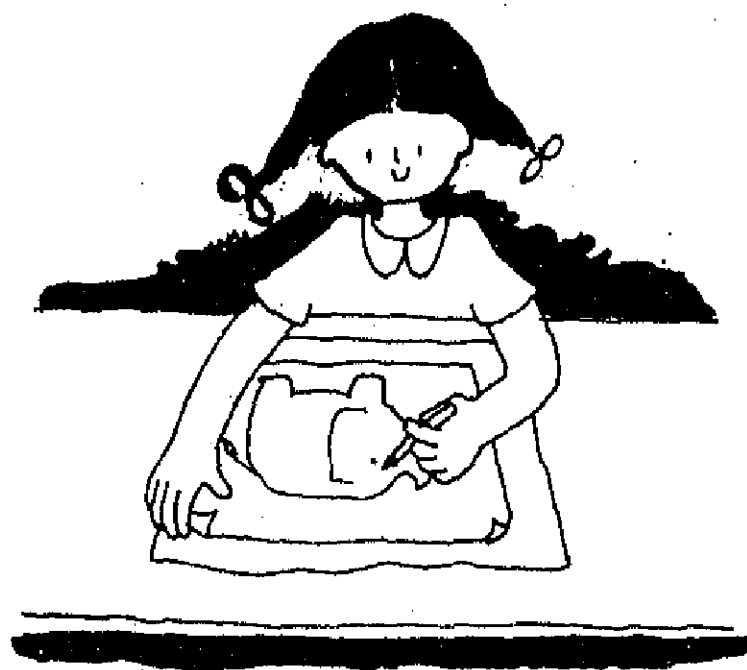
भवन एवं निर्माण समिति

(26 दिसंबर 1999 तक मान्य)

निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. अध्यक्ष पदेन	1.	प्रो. ए.के. शर्मा निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. उपाध्यक्ष, पदेन	2.	डा.ए.एन. माहेश्वरी संयुक्त निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016
मुख्य अभियंता, सी.पी.डब्ल्यू.डी. या उनका प्रतिनिधि	3.	श्री महेश चन्द्र मुख्य अभियंता सी.पी.डब्ल्यू.डी. एन.डी. जेड-3 सेवा भवन आर.के. पुरम नई दिल्ली 110 022
वित्त मंत्रालय (निर्माण) का एक प्रतिनिधि	4.	श्री डी.वी. भट्ट सहायक वित्त सलाहकार (निर्माण) शहरी विकास मंत्रालय निर्माण भवन नई दिल्ली 110 001
एन.सी.ई.आर.टी. परामर्शदाता वास्तुकार	5.	श्री दीना नाथ वरिष्ठ वास्तुकार, सी.पी.डब्ल्यू.डी. सेवा भवन आर.के. पुरम, नई दिल्ली 110 022
परिषद् के वित्तीय सलाहकार या उनका प्रतिनिधि	6.	श्री एस. सत्यमूर्ति वित्तीय सलाहकार एन.सी.ई.आर.टी. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001 (30.9.96 तक)

7. मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधि	7. (i) श्री आर.एस. पांडेय संयुक्त सचिव (विद्यालय शिक्षा) (शिक्षा विभाग) मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
	7. (ii) श्री सेतुमाधव राव संयुक्त शिक्षा सलाहकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा विभाग, शास्त्री भवन नई दिल्ली 110 001
एक स्थायी सिविल इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	8. (i) प्रो. टी. राम मूर्ति सिविल इंजीनियर सिविल इंजीनियरिंग विभाग भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान हौज खास नई दिल्ली 110 016 (6.12.96 तक)
	8. (ii) श्री के.के. गुलाटी वास्तुकार व अभियन्ता सी-2 सी, पॉकेट-2 फ्लेट सं. 9, जनकपुरी नई दिल्ली 110 058
एक स्थायी विद्युत अभियंता (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	9. श्री एस.एन. गीरोत्रा (आवासी विद्युत अभियंता) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान हौज खास नई दिल्ली 110 016
कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	10. प्रो. जे.एस. राजपूत अध्यक्ष एन.सी.टी.ई., आई.पी. एस्टेट नई दिल्ली 110 002
सचिव, एन.सी.ई.आर.टी. सदस्य-सचिव	11. श्री पी.एन. चावला कार्यवाहक सचिव एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली 110 016

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) एन.सी.ई.आर.टी. के विभागों के विभागीय सलाहकार बोर्ड (डी.ए.बी.)

1. *विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)*

1. अध्यक्ष विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग — *संयोजक*
2. डा. (श्रीमती) दलजीत गुप्ता रीडर, डी.पी.एस.ई.ई.
3. डा. जी.सी. उपाध्याय, लेक्चरर, डी.पी.एस.ई.ई.
4. अध्यक्ष, डी.ई.एन.एफ.,ए.एस.
5. अध्यक्ष, डी.ई.जी.एस.एन.
6. अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस.
7. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई.
8. अध्यक्ष डी.ई.एस.एम.
9. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच.
10. अध्यक्ष, डी.ई.पी.एफ.ई.
11. अध्यक्ष, डी.ई.एम.ई.
12. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती
13. श्रीमती अनीता रामफल
एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल 462 016
14. सुश्री आदर्श शर्मा,
निपसेड, एशियाड विलेज रोड़,
नई दिल्ली 110 016
15. प्रो. श्याम मेनन,
निदेशक, विद्यालय शिक्षा
आई.जी.एन.ओ.यू.
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली 110 030
16. श्रीमती जाकिया कुरियन
संयुक्त निदेशक
सेन्टर फार लर्निंग रिसोर्सिस,
8 दक्कन कॉलेज रोड़,
बी.पी. अपार्टमेन्ट के पीछे, पोरवाडा
पुणे 411 001

2. अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण विभाग (डी.ई.एन.एफ.एस.)

1. अध्यक्ष, डी.ई.एन.एफ.एस. — *संयोजक*
2. डा.पी., दासगुप्ता, रीडर, डी.ई.एन.एफ.एस.
3. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.
4. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई.
5. अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस.
6. अध्यक्ष, डी.ई.जी.एस.एन.
7. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती
8. डा.एस.एन. सिन्हा
निदेशक, सामाजिक नीति अनुसंधान संस्थान,
इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
ई-42, सैक्टर-13,
मालवीय नगर
जयपुर 302 017
9. डा.पी.एन. दवे
76 क्षितिज, प्रीतम सोसायटी-1
भरूच 292 002

10. श्री रोहित धनकर
समन्वयक, दिगान्तर
गांव रोड़ी रामजानीपुरा
पी.ओ. जगतपुर
जयपुर 302 017
11. डा. सुमन कारनदिकर
आई.आई.ई.,
जे.पी. नायक पथ,
कार्वे रोड़, 128/2, कोथर्ड
पुणे 411 029
12. श्री डी. मणीरत्नम,
आन.ए.एस.एस.
तिरूपति

3. विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

1. अध्यक्ष, डी.ई.जी.एस.एन. — *संयोजक*
2. डा. (श्रीमती) जनक वर्मा, रीडर, डी.ई.जी.एस.एन.

3. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.

4. अध्यक्ष, डी.ई.एन.एफ.ए.एस.

5. संयुक्त निदेशक सी.आई.ई.टी. का नामिती

6. डा. वीणा मिस्त्री
डीन
मानव संसाधन विकास विभाग
एम.एम. विश्वविद्यालय
वड़ोदरा 390 002

7. डा. एम.एन.जी. मणी
निदेशक
संसाधन और विकास केन्द्र
श्री रामकृष्ण मिशन विद्यालय
कोयम्बतूर 641 020

8. प्रो. सेईद हामिद
सचिव
हमदर्द एजूकेशन सोसायटी
तालिमकद, संगम विहार
नई दिल्ली 110 062

9. प्रो. फ्रांसिस एक्का
निदेशक
सी.आई.आई.एल.
मानसगंगोत्री
मैसूर 570 006

10. प्रो. नन्दूराम
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली 110 067

4. *महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)*

1. अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस. — *संयोजक*

2. डा. (सुश्री) ऊषा दत्ता, रीडर, डी.डब्ल्यू.एस.

3. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम.

4. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच.

5. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई.

6. अध्यक्ष, डी.ई.पी.एफ.ई.

7. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.

8. अध्यक्ष, डी.ई.एन.एफ.ए.एस.

9. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती

10. श्रीमती विभा पार्थसारथी
प्रधानाचार्य
सरदार पटेल विद्यालय
नई दिल्ली

11. प्रो. करूणा चानना
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली 110 067

12. प्रो. सरोजिनी बिसारिया
ए-59/1 एस.एफ.एस.
डी.डी.ए. फ्लेट्स, साकेत
नई दिल्ली 110 017

13. डा. सुनन्दा इमानदार
संयुक्त निदेशक
एम.एस.सी.ई.आर.टी.
1034, सदाशिव पथ
पुणे

14. डा. शारदा जैन
संधान
जयपुर

5. सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)

1. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच — *संयोजक*

2. डा. एम. साबरीन, रीडर, डी.ई.एस.एस.एच.

3. डा. (श्रीमती) एस.बी. यादव, रीडर, डी.ई.एस.एस.एच.

4. सुश्री सुप्ता दास, लेक्चरर, डी.ई.एस.एस.एच.

5. डा. (श्रीमती) मीनू नन्दराजोग, लेक्चरर, डी.ई.एस.एस.एच.

6. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.

7. अध्यक्ष, डी.ई.एम.ई.

8. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम.

9. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई.

10. अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस.

11. अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग

12. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती

13. डा. डी.एन. झा
इतिहास विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली 110 007

14. डा. एस.आर. किदवई
भाषा विद्यालय
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली 110 067

15. डा. महाबीर सरल जैन
निदेशक
केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
आगरा

16. डा. आर.के. बहल
पूर्व-निदेशक
एस.आई.ई.
चण्डीगढ़

17. डा. सुदेश नांगिया
सामाजिक विज्ञान विद्यालय
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली 110 067

6. *विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)*

1. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम. — *संयोजक*
2. प्रो. आर.एन. माथुर, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.
3. प्रो. एम. चन्द्रा, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.
4. प्रो. एस.सी. दास, डी.ई.एस.एम.
5. डा. के.वी. गुप्ता, रीडर, डी.ई.एस.एम.
6. अध्यक्ष, डी.ई.एम.ई.
7. अध्यक्ष, डी.ई.एस.डी.पी.
8. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई.
9. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.

10. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच.

11. अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग

12. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती

13. प्रो. एल.एस. कोठारी
71 वैशाली, पीतमपुरा,
दिल्ली 110 034

14. डा. एन.के. सहगल
संयुक्त सलाहकार और अध्यक्ष
राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद्
डी.एस.टी.
न्यू महरोली रोड, नई दिल्ली

15. प्रो. रमेश कपूर
डिपार्टमेन्ट ऑफ कैमिस्ट्री एण्ड
सैन्टर फार एडवान्स स्टडीज़ इन कैमिस्ट्री
पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़ 160 014

16. प्रो. बी.वी. कृष्णामूर्ति
एन.बी.एच.एम.
दिल्ली

17. प्रो. एच.वाई. मोहन राम
वनस्पति विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली 110 067

7. *शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)*

1. अध्यक्ष, डी.ई.एम.ई — *संयोजक*
2. श्री वी.एस. श्रीवास्तव, रीडर, डी.ई.एम.ई.
3. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच.
4. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.
5. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई.
6. अध्यक्ष, डी.ई.एन.एफ.ए.एस.
7. अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस.
8. अध्यक्ष, नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ

9. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती

10. श्री. एच.के. गुयान
अध्यक्ष
असम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिषद्
बमुनी मैदान
गुवाहाटी (असम)

11. प्रो. बी.पी. खण्डेलवाल
अध्यक्ष
सी.बी.एस.ई.
प्रीत विहार
नई दिल्ली 110 092

12. प्रो. वाई.पी. अग्रवाल
शिक्षा संकाय
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

13. डा. जैकव थारू
सी.आई.ई.एफ.एल.
हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)

14. प्रो. एम. मैनन
निदेशक
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय
नई दिल्ली

8. *शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा प्रक्रियन विभाग (डी.ई.एस.एड.डी.पी.)*

1. अध्यक्ष, डी.ई.एस.डी.पी. *संयोजक*
2. डा. सतवीर सिंह, रीडर, डी.ई.एस.डी.पी.
3. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.
4. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई.
5. अध्यक्ष, डी.ई.पी.एफ.ई.
6. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम.
7. अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस.
8. अध्यक्ष, डी.ई.आर.पी.पी.
9. अध्यक्ष, डी.ई.एम.ई.

10. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती

11. डा पदम सिंह
निदेशक
आई.आर.एम.एस.
आई.सी.एम.आर.,
नई दिल्ली 110 029

12. डा. ए.के. निगम
निदेशक
अनुप्रयुक्त सांख्यिकी और विकास अध्ययन संस्थान
लखनऊ

13. श्री वी.वी. राव
तकनीकी निदेशक
राष्ट्रीय सूचना केन्द्र
सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स
ए ब्लॉक
लोधी रोड़
नई दिल्ली 110 003

14. प्रो. एम.एस. यादव
सेन्टर फार एडवान्स स्टडीज इन एजूकेशन
एम.एस. विश्वविद्यालय
वड़ोदरा

15. डा. के एस. नटराजन
संयुक्त निदेशक
पॉपुलेशन फाउन्डेशन आफ इण्डिया
तारा क्रिसेंट
बी/28, इन्स्टीट्यूशन एरिया
नई दिल्ली 110 016

9. अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)

1. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई. — *संयोजक*
2. प्रो. वी.के. रैना, डी.टी.ई.ई.
3. डा. के. एम. गुप्ता, रीडर डी.टी.ई.ई.
4. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम.
5. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस.एच.
6. अध्यक्ष, डी.सी.ई.टी.ए.

7. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.

8. अध्यक्ष, डी.ई.एम.ई.

9. अध्यक्ष, डी.ई.आर.पी.पी.

10. अध्यक्ष, डी.डब्ल्यू.एस.

11. अध्यक्ष, डी.ई.जी.एस.एन.

12. अध्यक्ष, डी.ई.एस.डी.पी.

13. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती

14. प्रो. वी.के. सभरवाल
डीन
शिक्षा संकाय
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली 110 007

15. प्रो. लोकेश कौल
डीन, शिक्षा संकाय
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय
शिमला

16. प्रो. (सुश्री) सुदेश गाखर
डीन, शिक्षा संकाय
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

17. प्रो. के.के. शर्मा
अध्यक्ष एवं डीन, शिक्षा विभाग
एन.एच.ई.डब्ल्यू कैम्पस
कोहिमा

18. प्रो. बी.के. पासी
उपाध्यक्ष
एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली

10. *शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)*

1. अध्यक्ष, डी.ई.पी.एफ.ई. *संयोजक*

2. प्रो. ए. भटनागर, डी.ई.पी.एफ.ई.

3. डा. एन. गुप्ता, रीडर, डी.ई.पी.एफ.ई.

4. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.

5. अध्यक्ष, डी.ई.एम.ई.

6. अध्यक्ष, डी.टी.ई.ई.

7. अध्यक्ष, डी.ई.जी.एस.एन.

8. अध्यक्ष, डी.ई.आर.पी.पी.

9. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती

10. प्रो. ए.के. सेन
मनोविज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली 110 007

11. प्रो. जनक पाण्डेय
मनोविज्ञान विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद 211 002

12. प्रो. बी.एन. पुहान
मनोविज्ञान विभाग
उत्कल विश्वविद्यालय
भूवनेश्वर 751 004

13. डा. (श्रीमती) आदिति घोष
मनोविज्ञान विभाग
यूनिवर्सिटी कालेज आफ साइंस,
कलकत्ता विश्वविद्यालय,
92, आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रोड़
कलकत्ता 700 009

14. प्रो. जे.एन. जोशी
पंजाब विश्वविद्यालय
चण्डीगढ़

11. *कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग (डी.सी.ई.टी.ए.)*

1. अध्यक्ष, डी.सी.ई.टी.ए. *संयोजक*
2. डा. (श्रीमती) के. मित्तल, रीडर, डी.सी.ई.टी.ए.
3. अध्यक्ष, डी.पी.एस.ई.ई.
4. अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम.
5. अध्यक्ष, डी.ई.एम.ई.
6. अध्यक्ष, डी.ई.जी.एस.एन.

7. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. का नामिती

8. प्रो. एन.के. तिवारी
   मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग
   आई.आई.टी.
   नई दिल्ली 110 016

9. श्री पी.के. भौमिक
   निदेशक
   राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र
   प्रगति मैदान
   गेट नं. 1 के पास
   नई दिल्ली

10. डा. वाई. के. शर्मा
    वरिष्ठ तकनीकी निदेशक
    राष्ट्रीय सूचना केन्द्र
    सी.जी.ओ. कॉम्प्लेक्स
    लोधी रोड़
    नई दिल्ली 110 003

11. प्रो. एम. राधाकृष्णन
    टी.टी.टी.आई., चण्डीगढ़

12. प्रो. जे.आर. इज़ाक
    एन.आई.आई.टी. लिमिटेड
    8 बालाजी एस्टेट
    कालकाजी एक्सटेन्शन
    नई दिल्ली 110 019

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की शैक्षिक समिति

(14 अगस्त, 1999 तक मान्य)

1. डीन (शैक्षिक), एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. अध्यक्ष, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
3. अध्यक्ष, अनौपचारिक शिक्षा और वैकल्पिक शिक्षण विभाग (डी.ई.एन.एफ.ए.एस.)
4. अध्यक्ष, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग, (डी.ई.जी.एस.एन.)
5. अध्यक्ष, महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)
6. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
7. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
8. अध्यक्ष, कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग (डी.सी.ई.टी.ए.)
9. अध्यक्ष, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)
10. अध्यक्ष, शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा प्रक्रियण विभाग (डी.ई.एस.डी.पी.)
11. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)
12. अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)
13. अध्यक्ष, शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग (डी.ई.आर.पी.पी.)
14. अध्यक्ष, पुस्तकालय प्रलेखन एवं सूचना प्रभाग (डी.एल.डी.आई.)
15. अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)
16. अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग, (पी.डी.)
17. अध्यक्ष, योजना प्रोग्रामिंग, अनुवीक्षण और मूल्यांकन प्रभाग (पी.पी.एम.ई.डी.)
18. प्रोफेसर एम. सावरीन, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
19. प्रोफेसर एम. चन्द्रा, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
20. श्री वी.एस. श्रीवास्तव, रीडर, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)
21. डा. (श्रीमती) दलजीत गुप्ता, रीडर, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
22. प्रो. ए. भटनागर, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)
23. प्रो. वी.के. रैना, अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)
24. डा. पी.एन. दवे, 76 क्षितिज, प्रीतम सोसायटी-1, भरूच 392 002
25. प्रो. एच.वाई. मोहन राम, 38/4, प्रॉविन मार्ग, दिल्ली 110 007
26. प्रो. बी.पी. खंडेलवाल, अध्यक्ष, सी.बी.एस.ई., प्रीत विहार, नई दिल्ली 110 092
27. डा. सुदेश नांगिया, सामाजिक विज्ञान विद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली 110 067
28. श्री पी.के. भौमिक, निदेशक, राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का सलाहकार बोर्ड

1. संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं. — *अध्यक्ष*
2. श्रीमती मधुबाला जुल्का, प्रोफेसर, के.शै.प्रौ.सं. -
3. डा. हरमेश लाल, रीडर, के.शै.प्रौ.सं.
4. डा. आर.एल. पुटेला, रीडर, के.शै.प्रौ.सं.
5. डा. राजाराम शर्मा, रीडर, के.शै.प्रौ.सं.
6. श्री एम. बाहमाजी, अधीक्षक अभियन्ता
7. एन.आई.ई. के सभी विभागों के अध्यक्ष
8. ~~महानिदेशक, दूरदर्शन, नई दिल्ली~~
9. प्रो. के.एल. कुमार
अध्यक्ष
केन्द्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी
आई.आई.टी.
नई दिल्ली 110 016
10. प्रो. हबीब किदवई
निदेशक, एम.सी.आर.सी.
जामिया मिलिया
नई दिल्ली
11. श्री बी.एस. भाटिया
निदेशक, डी.ई.सी.यू. आई.एस.आर.ओ.
अहमदाबाद
12. श्री किरन कार्तिक
डिस्कवरी चेनल
नई दिल्ली

पंडित सुन्दरलाल शर्मा केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान का सलाहकार बोर्ड

1. संयुक्त निदेशक — *अध्यक्ष*
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
   भोपाल

2. डीन (अकादमिक एवं अनुसंधान)
   पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.

3. पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के सभी प्रभागों के अध्यक्ष (60)

4. पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के प्रत्येक प्रभाग का एक सदस्य

5. व्यावसायिक शिक्षा से संबद्ध नौ राज्यों से निदेशक स्तर के प्रतिनिधि (गुजरात, गोवा, तमिलनाडु, उड़ीसा, हरियाणा, मणिपुर, पश्चिमी बंगाल, आंध्र प्रदेश, और मध्य प्रदेश)

6. राज्य शिक्षा संस्थान के एक प्राचार्य (चक्रानुक्रम)
   प्रो. एस.टी.सी.वी.जी. आचार्युलु
   क्षे.शि.सं., मैसूर

7. डा. पी.एन. मिश्रा
   निदेशक
   उद्यम विकास संस्थान
   भोपाल

8. श्री एस.पी.एस. राठौर
   निदेशक, बीजम उद्यम प्रशिक्षण बोर्ड (डब्ल्यू.आर.)
   ए.टी.आई परिसर, वी.एन. पूर्व मार्ग
   एस.आई.ओ.एन.
   मुम्बई 400 012

9. डा. ए.एन. शुक्ल
   सहायक महानिदेशक (के.पी.आर.)
   अनुसंधान भवन (आई.सी.ए.आर.)
   भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
   नई दिल्ली 110 012

10. डा. अनिल गुप्ता
    प्रोफेसर
    भारतीय प्रबंध संस्थान
    अहमदाबाद 380 015

11. डा. वी.के. बनसाली
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
विद्युत अभियांत्रिक विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जौधपुर 342 011

12. डा. एस.के. भार्गव
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
रेडियोलोजी विभाग
आयुर्विज्ञान महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय गुरु तेग बहादुर अस्पताल
दिल्ली 110 095

13. कुमारी एम.एस. ऊषा
डीन
गृहविज्ञान महाविद्यालय
गोविन्द वल्लभ पंत
कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
पंतनगर 263 145

14. अध्यक्ष
राष्ट्रीय खुला विद्यालय
नई दिल्ली

15. अध्यक्ष
केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
नई दिल्ली

16. अध्यक्ष
बिहार इंटरमीडिएट शिक्षा परिषद्
किदवई पुरा
पटना 800 001

17. अध्यक्ष
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
16, इन्द्रप्रस्थ स्टेट
भारत स्काऊट और माइडस भवन
महात्मा गांधी मार्ग
रिंग रोड़
नई दिल्ली 110 002

18. सचिव
माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
अजमेर

19. श्री शेखर एच. भादसवले
फिश फार्मर
सागुना बाग, पो.आ. निराल
जिला रायगढ़ 410 101

20. डा. शिव प्रसाद
मांइक्रो प्लांट लिमिटेड
407, डालमिया चैम्बर्स
29, न्यू मान्ने लेन
मुंबई

21. टी.टी.टी.आई. से एक प्राचार्य
(चक्रानुक्रम पर)

22. एक एफ.आई.सी.सी.आई. का एक प्रतिनिधि
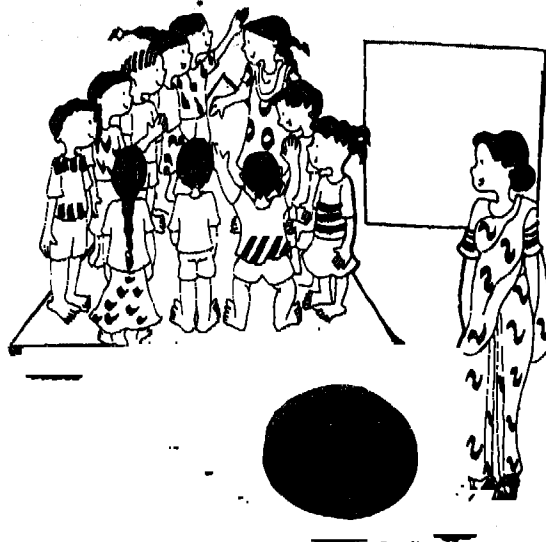
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियाँ

1. *क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर की प्रबंध समिति*

1. उप-कुलपति *अध्यक्ष*
   एम.डी.एस. विश्वविद्यालय
   अजमेर

2. प्राचार्य *उपाध्यक्ष*
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   अजमेर

क्षेत्र में प्रत्येक राज्य और संघ-शासित क्षेत्र के शिक्षा विभाग का एक-एक नामिती:

3. श्रीमती विद्यावती
   पी.ई.एस.-1
   निदेशक
   राज्य शैक्षिक अनुसंधन और प्रशिक्षण परिषद्
   चंडीगढ़

4. निदेशक
   माध्यमिक शिक्षा
   हरियाणा, चंडीगढ़

5. निदेशक
   राज्य शिक्षा संस्थान
   सैक्टर-12
   चंडीगढ़ प्रशासन, चंडीगढ़

6. शिक्षा निदेशक (माध्यमिक)
   हिमाचल प्रदेश सरकार
   शिमला 171 001

7. श्री एन.एस. टोलिया
   अपर शिक्षा निदेशक (विद्यालय)
   शिक्षा निदेशालय
   राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार
   पुराना सचिवालय
   दिल्ली 110 054

8. डा. (श्रीमती) एन.वी. बाछिवाल
   प्राचार्य
   आई.ए.एस.ई., भीरहली रोड़
   अजमेर

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ:

9. श्रीमती एस. संधीर
   निदेशक
   एस.सी.ई.आर.टी. गुड़गांव (हरियाणा)

10. डा. शारदा चन्द्र पुरोहित
    निदेशक
    एस.सी.ई.आर.टी. उदयपुर 313 001

निदेशक द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के दो विभागाध्यक्ष:

11. विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    अजमेर

12. विभागाध्यक्ष
    विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    अजमेर

(क) *निदेशक एन.सी.ई.आर. के एक नामिती:*

13. डीन (परिषद्)
    एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

उन विश्वविद्यालयों से अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध है:

14. डा. एस.डी. मिश्रा
    ओ.एस.डी.
    उप-कुलपति सचिवालय
    एम.डी.एच. विश्वविद्यालय
    अजमेर

15. प्रशासन अधिकारी — *सचिव*
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

16. क्षेत्र के क्षेत्र सलाहकार — *विशेष आमंत्रित*

2. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल की प्रबन्ध समिति

1. उप-कुलपति — *अध्यक्ष*
   बरकतुल्ला विश्वविद्यालय
   भोपाल

2. प्राचार्य — *उपाध्यक्ष*
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
   भोपाल

क्षेत्र के प्रत्येक राज्य और संघ-शासित क्षेत्र के शिक्षा विभाग का एक-एक नामिती:

3. श्री सुमित बोस
   सचिव
   शिक्षा विभाग, भोपाल

4. श्री एम.वी. जोशी
   निदेशक
   राज्य शिक्षा संस्थान
   गोवा

5. श्री आर.के. चौधरी
   निदेशक
   एस.सी.ई.आर.टी.
   अहमदाबाद

6. निदेशक
   एस.सी.ई.आर.टी.
   पुणे

7. सचिव (शिक्षा)
   दादर और नगर हवेली
   संघ-शासित क्षेत्र शिक्षा विभाग
   सिल्वासा

8. सहायक शिक्षा निदेशक
   संघ-शासित क्षेत्र दमन और दीव

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ:

9. प्रो. वी.जी. भिडे
   पूर्व उप-कुलपति
   पुणे विश्वविद्यालय
   भौतिकी विभाग
   पुणे-311007

10. प्रो. (श्रीमती) स्नेहाबेन जोशी
    प्रशासन और प्रबन्धन विभाग
    शिक्षा और मनोविज्ञान संकाय
    एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ोदरा

निदेशक द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के दो अध्यक्ष:

11. विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    भोपाल
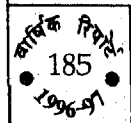
12. विभागाध्यक्ष
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. का नामिती:

13. डीन (परिषद्)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली-110016

उन विश्वविद्यालयों के अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध है :

14. डा. एच.के. गोस्वामी
प्रोफेसर आनुवंशिक एवं विभागाध्यक्ष
विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग
बरकतुल्ला विश्वविद्यालय
भोपाल

15. डा. एस.के. कुलश्रेष्ठ
प्राचार्य
हमीदिया राजकीय महाविद्यालय
भोपाल

16. प्रशासन अधिकारी — *सचिव*
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

17. क्षेत्रों के क्षेत्र सलाहकार — *विशेष आमंत्रित*

3. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर की प्रबन्ध समिति

1. उप-कुलपति — *अध्यक्ष*
उत्कल विश्वविद्यालय
भुवनेश्वर

2. प्राचार्य — *उपाध्यक्ष*
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर

क्षेत्र में सभी राज्यों और संघ-शासित क्षेत्र के शिक्षा विभागों का एक-एक नामिती:

3. श्री बी.सी. स्वेन
संयुक्त सचिव
उड़ीसा सरकार
शिक्षा विभाग
उड़ीसा सचिवालय
भुवनेश्वर

4. श्री एस. सोम
संयुक्त सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग
विकास भवन (पाँचवा तल)
सॉल्ट लेक
कलकत्ता 110 091

5. निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी., महेन्दु
पटना

6. श्री एन. दास
शिक्षा निदेशक
ए और एन प्रशासन

अध्यक्ष एन.सी.ई.आर. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ:

7. प्रो. डी.एन. राय
विश्व भारती
शांति निकेतन
जिला बिरभूम (प.बं.)

8. श्री प्रावन्त सामन्तराय
35, मीना बाजार
नई दिल्ली 110 016

निदेशक द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों से दो अध्यक्ष:

9. विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर

10. विभागाध्यक्ष
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

निदेशक एन.सी.ई.आर.टी. का एक-एक नामिती:

11. डीन (परिषद्)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

उन विश्वविद्यालयों से अन्य सदस्य जिनसे क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान संबद्ध हैं :

12. प्रो. डी.सी. मिश्रा
सेवानिवृत डी.पी.आई.
जगन्नाथ लेन, बादामबाड़ी, कटक
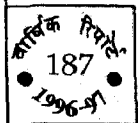
13. प्रशासन अधिकारी — सचिव
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर

14. क्षेत्र के क्षेत्र सलाहकार — *विशेष आमंत्रित*

4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर की प्रबन्ध समिति

1. उप-कुलपति — *अध्यक्ष*
मैसूर विश्वविद्यालय
मैसूर

2. प्राचार्य — *उपाध्यक्ष*
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर

क्षेत्र में राज्यों और संघ शासित क्षेत्र के शिक्षा विभागों का एक-एक नामिती

3. श्री वी. कृष्णामार्चायुलु
निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी. हैदराबाद
आंध्र प्रदेश सरकार
आलिया भवन
लाल बहादुर स्टेडियन के सामने
हैदराबाद 500 001

4. निदेशक
डी.एस.ई.आर.टी.
बी.पी. वाडिया रोड़
बसाबनगुडी
बैंगलूर 560 004

5. श्री के जयकुमार
सरकार के सचिव
सामान्य शिक्षा विभाग
केरल सरकार
तिरूवनन्तपुरम 695 001

6. निदेशक
डी.टी.ई.आर.टी., कालेज रोड़
मद्रास 600 006

7. श्री एस. हेमचन्द्रन
सचिव (शिक्षा) सह-शिक्षा निदेशक
पांडिचेरी सरकार, पांडिचेरी 605 001

8. श्री पी.बी. मुथुकोया
शिक्षा अधिकारी
शिक्षा निदेशालय
लक्षद्वीप प्रशासन
लक्षद्वीप संघ-शासित क्षेत्र
कर्वाट्टे (वाया) कोच्चि

अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित दो विशेषज्ञ:

9. डा. मल्लादी श्री रामामूर्थि
प्रो. एवं डीन, शिक्षा संकाय
उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद

10. डा. जी. श्रीवरूडरप्पा
पूर्व डीन, शिक्षा संकाय
कर्नाटक विश्वविद्यालय
वीरभद्र हाऊसिंग बोर्ड कालोनी रोड़
आर.टी. नगर, पी.डी. आदित्य नगर
बैंगलूर 560 032

निदेशक द्वारा नामित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के विभाग के दो अध्यक्ष:

11. अध्यक्ष
शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर

12. अध्यक्ष
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. का नामिती:

13. डीन (परिषद्)

14. प्रशासन अधिकारी — *सचिव*
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मैसूर

15. क्षेत्र का क्षेत्र सलाहकार — *विशेष आमंत्रित*

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति

(15 दिसम्बर, 1999 तक मान्य)

एन.सी.ई.आर.टी. से:

1. डीन (अनुसंधान) अध्यक्ष
2. डीन (शैक्षिक)
3. डीन (समन्वय)
4. एन.सी.ई.आर.टी. के सभी संघटकों के अध्यक्ष:
    1. संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
    2. संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल
    3. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर
    4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
    5. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर
    6. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर
    7. विशेष कार्य अधिकारी, उत्तर-पूर्व क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलाँग
    8. एन.आई.ई. के सभी विभागाध्यक्ष
    9. सदस्य-सचिव (एरिक)
5. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित राज्य शिक्षा संस्थान के दो व्यक्ति:
    1. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद महाराष्ट्र, 708 आर.डी. कामथेकर मार्ग, महाशिव पथ, पुणे-411030
    2. निदेशक राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् जे.पी.आई.सी. परिसर, निशंत गंज, लखनऊ-228007

विशेषज्ञ/शिक्षाविद्/शोधकर्ता

6. अध्यक्ष, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित विश्वविद्यालयों/अनुसंधान संस्थानों अथवा अन्य उपयुक्त एजेंसियों से आठ व्यक्ति
    1. श्रीमती वीना मिस्त्री
प्रो.-उप-कुलपति
एम.एम. विश्वविद्यालय, वड़ोदरा
वड़ोदरा

2. प्रो. सरोजनी बी. शिन्त्री
   पूर्व डीन, कला संकाय
   कर्नाटक विश्वविद्यालय
   वर्तमान प्राचार्य
   वत्या साई महिला महाविद्यालय
   सप्तपुर, धारवाड़ (कर्नाटक)

3. प्रो. के.डी. बूटा
   मनोविज्ञान विभाग
   दिल्ली विश्वविद्यालय
   दिल्ली 110 007

4. प्रो. डी.के. सामन्तरे
   एन-1, 62-ए, आई.आर.सी. गाँव
   भुवनेश्वर, उड़ीसा

5. डा. विनय भारद्वाज
   रीडर
   भारती महिला कालेज
   लिंक रोड़, नई दिल्ली 110 005

6. डा. नीलम नीलकमल
   रीडर
   अंग्रेजी विभाग
   एम.डी.डी.एच. कालेज
   बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर
   बिहार विश्वविद्यालय
   मुजफ्फरपुर, बिहार

7. डा. बी.पी. खण्डेलवाल
   अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
   शिक्षा केन्द्र, 2 सामूदायिक केन्द्र
   प्रीत विहार, नई दिल्ली 110 092

8. प्रो. शाम हनफ़ी
   उर्दू विभाग
   जामिया मिलिया इस्लामिया

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आमंत्रित विशेष/स्थाई

1. डा. वी.के. रैना
   अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग
   (डी.टी.ई.ई.)
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

2. प्रो. आर.एन. माथुर
विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एम.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

3. प्रो. (श्रीमती) एस. सिन्हा
सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
(डी.ई.एस.एस.एच.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

4. प्रो. (श्रीमती) आशा भटनागर
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग
(डी.ई.पी.एफ.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

5. प्रो. वेदप्रकाश
शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
(डी.ई.एम.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

6. प्रो. यू. मलिक
कंप्यूटर शिक्षा और प्रौद्योगिकीय सहायता विभाग
(डी.सी.ई.टी.ए.)

7. प्रो. मधुबाला जुल्का
केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
(सी.आई.ई.टी.)
एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली

8. प्रो. जी.के. लेहरी
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
अजमेर

9. प्रो. जी. रवीन्द्र
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भोपाल

10. प्रो. सोमनाथ दत्ता
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    भुवनेश्वर

11. प्रो. एस.एन. प्रसाद
    क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    मैसूर

12. प्रो. ए.के. सचेती
    पंडित सुन्दरलाल शर्मा
    केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान
    भोपाल
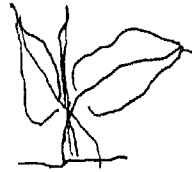
कार्यक्रम सलाहकार समिति

(परिषद् के नियम 48 के अधीन)

(14 अगस्त, 1999 तक मान्य)

1. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *उपाध्यक्ष*
3. संयुक्त निदेशक, पंडित सुंदरलाल शर्मा
   केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल 462 011
4. संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
   (सी.आई.ई.टी.) नई दिल्ली 110 016
5. सचिव, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016 — संयोजक
6. डा. ए.के. सचेती, प्रोफेसर, पंडित सुंदरलाल शर्मा
   केन्द्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल 462 011
7. श्रीमती मधुबाला जुल्का, प्रोफेसर,
   केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी.
   नई दिल्ली 110 016

8. अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग
   (डी.ई.एस.एस.एच.), एन.सी.ई.आर.टी.
   नई दिल्ली 110 016
9. प्रो. आर.के. दीक्षित
   सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
   एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016
10. अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
    (डी.ई.एस.एम.) एन.सी.ई.आर.टी.,
    नई दिल्ली 110 016
11. डा. आर.एन. माथुर, प्रोफेसर, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
    (डी.ई.एस.एम.), एन.सी.ई.आर.टी.
    नई दिल्ली 110 016
12. अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग
    डी.ई.पी.एफ.ई.) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016
13. प्रो. आशा भटनागर
    शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग, (डी.ई.पी.एफ.ई.)
    एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

14. अध्यक्ष, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग
(डी.पी.एस.ई.ई.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

15. डा. वी.पी. गुप्ता, रीडर
विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एम.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

16. अध्यक्ष, अनौपचारिक शिक्षा एवं वैकल्पिक शिक्षण विभाग
(डी.ई.एन.एफ.ए.एस.), एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

17. डा. एच.एल. शर्मा, रीडर
अनौपचारिक शिक्षा एवं वैकल्पिक शिक्षण विभाग (डी.ई.एन.एफ.ए.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

18. अध्यक्ष, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग (डी.ई.एम.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

19. डा. इकबाल मुहम्मद, रीडर, शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
(डी.ई.एम.ई.) एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली 110 016

20. अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग (डी.टी.ई.ई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

21. डा. वी.के. रैना, प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा और विस्तार शिक्षा विभाग
(डी.टी.ई.ई.) एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली 110 016

22. अध्यक्ष, महिला अध्ययन विभाग (डी.डब्ल्यू.एस.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

23. डा. (श्रीमती) सुषमा जयरथ, रीडर, महिला अध्ययन विभाग
(डी.डब्ल्यू.एस.) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

24. अध्यक्ष, पुस्तकालय, प्रलेखन एवं सूचना प्रभाग (डी.एल.डी.आई.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

25. अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

26. अध्यक्ष, कंप्यूटर शिक्षा और तकनीकी सहायता विभाग
(डी.सी.ई.टी.ए.) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

27. डा. (श्रीमती) कमलेश मित्तल, रीडर
कंप्यूटर शिक्षा और तकनीकी सहायता विभाग
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

28. अध्यक्ष, नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ,
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

29. अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग
(आई.आर.डी.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

30. अध्यक्ष, योजना, प्रोग्रामिंग, अनुवीक्षण एवं मूल्यांकन प्रभाग
(पी.पी.एम.ई.डी.), एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

31. डा. जे.डी. शर्मा, रीडर, योजना प्रोग्रामिंग, अनुवीक्षण एवं मूल्यांकन प्रभाग,
(पी.पी.एम.ई.डी.) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

32. अध्यक्ष, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

33. डा. (श्रीमती) जनक वर्मा, रीडर, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग
(डी.ई.जी.एस.एन.) एन.सी.ई.आर.टी.,
नई दिल्ली 110 016

34. अध्यक्ष, शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श विभाग
(डी.ई.आर.पी.पी.) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

35. प्रो. बी.आर. गोयल, शैक्षिक अनुसंधान और नीतिगत संदर्श
(डी.ई.आर.पी.पी.) एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

36. अध्यक्ष, शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग
डी.ई.एस.डी.पी., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

37. श्री एस.सी. मित्तल, रीडर, शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन विभाग
(डी.ई.एस.डी.पी.), एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

38. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, (राजस्थान)

39. प्रोफेसर जी.के. लेहरी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर, (राजस्थान)

40. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, श्यामला हिल्स, भोपाल (मध्य प्रदेश)

41. प्रो. जी. रवीन्द्रन, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, श्यामला हिल्स भोपाल (मध्य प्रदेश)

42. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर 751 007 (उड़ीसा)

43. प्रो. सोमनाथ दत्ता, डीन (अनुदेश), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
भुवनेश्वर 571 007 (उड़ीसा)

44. प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर (कर्नाटक)

45. प्रो. एस.एन. प्रसाद, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर (कर्नाटक)

46. विशेष कार्य अधिकारी (ओ.एस.डी.) उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलाँग (असम)

47. श्री बी.सी. भट्ट, मुख्य लेखाधिकारी एवं आंतरिक वित्तीय सलाहकार
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

48. क्षेत्र सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी., 260 पटेल नगर,
तालाब टिल्लु, लेन सं.-1, जम्मू 180 002

49. क्षेत्र सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी. 128/2 कोथरूड कर्वे रोड़, पूणे 411 029

50. क्षेत्र सलाहकार, एन.सी.ई.आर.टी. सं. 64, 4 एवेन्यू,
अशोक नगर, मद्रास 600 083

51. क्षेत्र सलाहकार, एन.सी.ई.आर.डी., बर्नचाल, पो.ओ. बामुनीमैदान, गुवाहाटी 781 001

52. श्री टी.एस शर्मा, जनसंपर्क अधिकारी
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

अध्यक्ष एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नामित सदस्य

53. प्रो. वीना मिस्त्री, प्रो. उप-कुलपति एम.एस. विश्वविद्यालय वड़ोदरा

54. प्रो. के.आर. शिवान्ना, वनस्पति विज्ञान विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

55. प्रो. एम.एन. कर्णा, समाजशास्त्र
विभाग उत्तर-पूर्वी पर्वत विश्वविद्यालय, शिलांग

56. प्रो. एम. मुनीम्मा, उप-कुलपति गुलबर्गा विश्वविद्यालय, गुलबर्गा, कर्नाटक

57. डा. अरविंद कुमार, विज्ञान शिक्षा हॉमी भाभा केन्द्र,
टी.आई. एफ आर., मुंबई

58. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.) असम, गुवाहाटी

59. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.) मणिपुर, इम्फाल

60. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.) पश्चिम बंगाल, कलकत्ता

61. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.) पंजाब, चंडीगढ़

62. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.) केरल, तिरुवनंतपुरम

एन.सी.ई.आर.टी. की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों की सूची 1996-97

(क) *परिषद् मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति*

1. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *उपाध्यक्ष*
3. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई..टी.
4. सचिव
5. संयुक्त सचिव
6. सभी विभागों/प्रभागों के अध्यक्ष
7. सभी उप-सचिव
8. मुख्य लेखा अधिकारी
9. सतर्कता एवम् सुरक्षा अधिकारी
10. जन संपर्क अधिकारी
11. निदेशक राजभाषा
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
12. निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
13. प्रभारी अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ) — *सदस्य-सचिव*
14. हिंदी अधिकारी

(ख) *परिषद् की राजभाषा कार्यान्वयन समिति*

1. निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. — *उपाध्यक्ष*
3. संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी.
4. संयुक्त निदेशक, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
5. सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.
6. संयुक्त सचिव, एन.सी.ई.आर.टी.
7. सभी विभागाध्यक्ष/प्रभागाध्यक्ष
8. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के प्राचार्य

9. विशेष कार्य अधिकारी (ओ.एस.डी.)
   उत्तरी-पूर्वी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलाँग

10. सभी क्षेत्र सलाहकार

11. सभी उप-सचिव

12. मुख्य लेखा अधिकारी

13. सतर्कता एवं सुरक्षा अधिकारी

14. जन सम्पर्क अधिकारी

15. प्रभारी अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ) — *सदस्य सचिव*

16. हिंदी अधिकारी

परिशिष्ट-2
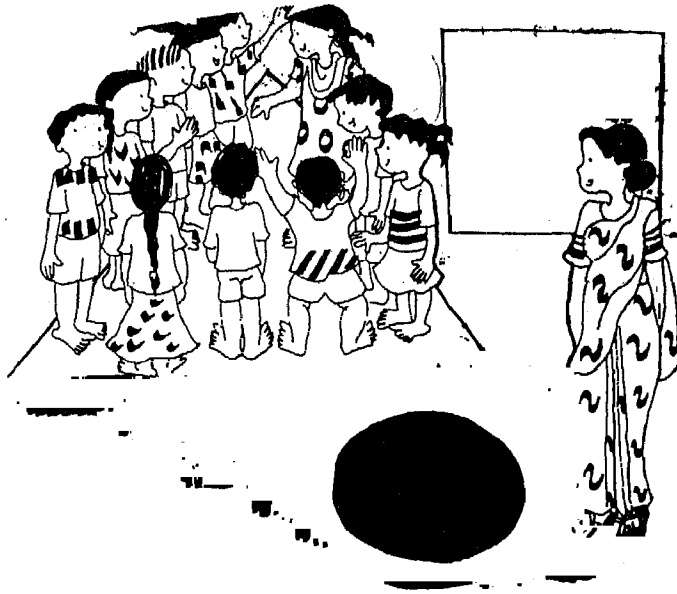
स्वीकृत स्टाफ की स्थिति

31.3.1997 को एन.सी.ई.आर.टी. में वर्गवार स्वीकृत स्टाफ की स्थिति

क्र. सं	घटकों के नाम	शैक्षिक संकाय			गैर-शैक्षिक (सचिवालयी)			गैर-शैक्षिक (तकनीकी)			समूह डी	योग
		ए	बी	सी	ए	बी	सी	ए	बी	सी		
1.	परिषद् मुख्यालय, दिल्ली	207	01	02	24	85	419	45	47	147	282	1259*
2.	सी.आई.ई.टी., नई दिल्ली	25	—	—	03	11	45	30	34	74	24	246
3.	आर.आई.ई., अजमेर	55	24	35	01	06	41	04	03	41	85	295
4.	आर.आई.ई., भोपाल	58	24	42	01	06	40	03	03	32	86	295
5.	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	81	27	55	01	06	40	04	04	44	92	354
6.	आर.आई.ई., मैसूर	80	19	44	01	06	41	05	04	36	75	311
7.	क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय*	25	—	—	—	—	43	—	—	13	26	107
8.	प्रकाशन प्रभाग के क्षेत्रीय उत्पादन-वितरण केन्द्र	—	—	—	—	—	15	06	06	06	06	39
9.	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल	35	—	—	04	04	13	05	12	04	05	82
10.	आर.आई.ई., शिलाँग	24	—	—	—	01	—	—	—	03	02	30
	कुल	590	95	178	35	125	697	102	113	400	683	3018**

* पच्चीस पद (12 और 13 क्रमशः समूह ग और घ) एम.एच.आर.डी. द्वारा अनुमोदित किए गए हैं और अनुकम्पा के आधार पर परिषद् द्वारा सृजित किए गए हैं जो निकट भविष्य में समायोजित कर लिए जाएंगे।

** इन 3018 पदों के अतिरिक्त कैंटीन कर्मचारियों के 12 पदो (क्रमशः 3 समूह ग और 90 समूह घ) को दिनांक 1.10.91 से परिषद् कर्मचारी मान लिया गया है। 29 दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को अस्थायी पद दिए गए हैं, इनमें से 15 व्यक्तियों को नियमित आधार पर किया गया और 14 व्यक्ति परिषद् में अभी भी अस्थायी रूप से कार्यरत हैं

परिशिष्ठ-3

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
वर्ष 1996-97 का प्राप्ति और भुगतान का लेखा

प्राप्तियां	राशि (रु.)		भुगतान	राशि (रु.)	
आदि शेष			**बजट खर्च**		
नकद बकाया और बैंक में जमा	20,67,25,196		*अधिकारियों का वेतन*		
मार्गस्थ निधि	20,80,260		गैर-योजना	3,39,15,628	
खाता सं. टी-39 में शेष	2,96,263	20,91,01,119	योजना	6,69,336	3,45,84,964
			स्थापना का वेतन		
			गैर-योजना	3,83,48,471	
			योजना	1,57,476	3,85,05,949
मानव संसाधन विकास मंत्रालय से बजट खर्च के लिए प्राप्त अनुदान			*भत्ते तथा मानदेय*		
गैर-योजना	20,04,60,000		गैर-योजना	13,72,25,111	
योजना	4,11,00,000	24,15,60,000	योजना	44,66,566	13,86,91,677
विशेष परियोजनाओं से संबंधित अनुदान (अनुसूची "एच")		14,94,41,756	*यात्रा भत्ता*		
			गैर-योजना	30,19,425	
			योजना	2,81,143	33,00,568
परिषद् की प्राप्ति (खंड-5)			*अन्य प्रभार*		
परिषद् भवन का किराया	30,57,284		गैर-योजना	5,54,66,844	
			योजना	13,54,506	5,68,21,350
ऋणों और अग्रिमों पर ब्याज	16,14,184		*छात्रवृतियाँ एवं अध्येतावृत्तियाँ*		
सावधि जमा पर ब्याज	3,05,01,173		गैर-योजना	8,69,987	
			योजना	—	8,69,987
सामान्य भविष्य निधि पर ब्याज	2,27,10,277				
			कार्यक्रम		
अधिक भुगतान की वसूली	11,31,178		गैर-योजना	16,27,00,181	
			योजना	1,71,63,891	17,98,64,072
विज्ञान किटों की विक्री	7,31,001				
शुल्क और प्रभार	21,71,607				
			उपकरण और फर्नीचर		
			गैर-योजना	5,69,947	
			योजना	19,00,338	24,70,285

वर्ष 1996-97 का प्राप्ति और भुगतान का लेखा (जारी)

प्राप्तियां	राशि (रु.)		भुगतान	राशि (रु.)	
पुस्तकों और पत्रिकाओं की बिक्री	30,34,28,626		*भूमि और भवन*		
			गैर-योजना	1,58,47,349	
छुट्टी वेतन और पेंशन अंशदान	1,30,695		योजना	1,48,71,084	3,07,18,433
सी.जी.एच.एस.	2,96,882		विशेष परियोजनाओं पर भुगतान	34,61,43,410	34,61,43,410
विविध प्राप्तियाँ	73,64,445	37,31,39,357	(अनुसूची "एच")		
			विविध भुगतान (खंड 2)		
			परिषद् भवन का किराया	12,06,200	
			सी.जी.एच.एस.	31,51,921	
			पेंशन अंशदान	4,30,432	
			अंशदायी भविष्य निधि पर)		
			ब्याज और परिषद् का अंश	7,14,174	
			सा.भ.नि. पर ब्याज	2,43,09,694	
			पेंशन और डी.सी.आर.जी.	3,71,78,553	
			लेखा परीक्षा फीस	3,63,110	
			विज्ञापन	14,13,329	
			जमा आधारित बीमा योजना	79,567	
			विविध/अदृष्ट	2,86,040	6,93,93,020

ऋण, जमा और प्रेषण

प्राप्तियां	राशि (रु.)		भुगतान	राशि (रु.)	
ऋण और अग्रिम (ब्याज सहित)			**ऋण और अग्रिम (ब्याज सहित)**		
खंड 4 (3) (1) के अंतर्गत			मोटर कार/स्कूटर	8,27,491	
मोटर कार/स्कूटर	13,85,854		अन्य वाहन (साइकिल)	66,700	
अन्य वाहन (साईकिल)	55,534		गृह निर्माण अग्रिम	29,62,675	
गृह निर्माण अग्रिम	32,23,504		पंखा अग्रिम	14,800	33,71,666
पंखा अग्रिम	18,880	46,84,772			
			स्थायी अग्रिम	15,200	
खंड 4 (3) (2) (ब्याज रहित)			कार्यक्रम/विविध अग्रिम ऋण	1,44,123	1,59,323
बाढ़ अग्रिम	(—)8,900	(—)8900	सा.भ.नि.		5,88,59,478
विभागीय अग्रिम खंड 4 (5)			अ.भ.नि.		9,20,488
स्थायी अग्रिम	5,300				
स्थायी अग्रिम कार्यक्रम और विविध अग्रिम	2,46,930	2,52,230	*बचत बैंक खाते में अंतरण*		2,96,263
			भविष्य निधि (दीर्घकालीन)	2,70,64,000	

वर्ष 1996-97 का प्राप्ति और भुगतान का लेखा (जारी)

प्राप्तियां	राशि (रु.)		भुगतान	राशि (रु.)	
खंड 4 (1) ऋण			परिषद् निवेश (अल्पकालीन	23,45,75,000	26,16,39,000
सा.भ.नि.	5,22,58,062				
सा.भ.नि. पर ब्याज	2,42,64,122	7,65,22,184	परिषद् से (अल्पकालीन) निवेश	48,63,269	
अ.भ.नि.	10,10,435		बकाया धन और प्रतिभूमि जमा	70,308	
ब्याज और परिषद् का अंश	7,14,174	17,24,609	अवधान राशि	6,28,066	
टी-39 से प्राप्ति		2,96,263	*अन्य*		
			अन्य जमा (विज्ञान किट)	7,85,857	63,47,530
			निवेश		
निवेश खंड 4 (4)			*प्रेषित धन*		
दीर्घकालीन	1,20,00,000		सा.भ.नि./अ.भ.नि.	4,21,740	
अल्पकालीन निवेश	28,78,16,713	29,98,16,713	डाक जीवन बीमा/जीवन बीमा निगम	1,73,439	
जमा			जी.एल.आई.एस.	26,52,594	
खंड 4 (2)			आयकर	42,01,229	
बयाना धन और प्रतिभूति	7,89,750				
जमा अवधान राशि	57,414		मृत्यु राहत निधि	2,92,997	
अन्य	4,56,514	25,76,659	टी.सी.एम.	7,73,538	
अन्य जमा (विज्ञान किट)	12,72,981		विविध	16,61,675	
			उप-कार्यालय प्रेषण	89,89,110	
			आवधिक प्रेषण	18,31,94,271	
			बिक्री कर	66,511	
			प्रधानमंत्री राहत कोष	2,655	20,24,22,709
			अंत शेष (अनुसूची सी) रोकड़ बकाया तथा बैंक में जमा	12,65,36,056	
			बचत खाता (टी-39) में जमा मार्गस्थ निधि	7,47,000	12,72,83,056
प्रेषित धन खंड 4 (7)					
सा.भ.नि./अ.भ.नि.	4,56,602				
डाक जीवन बीमा/जीवन बीमा निगम	1,73,085				
जी.एल.आई.एस.	26,92,940				
आयकर	41,74,564				
मृत्यु राहत निधि	2,01,126				
टी.सी.एस.	7,90,253				
विविध	16,24,520				
उप कार्यालय प्रेषण	1,02,01,424				

वर्ष 1996-97 का प्राप्ति और भुगतान का लेखा (जारी)

प्राप्तियां	राशि (रु.)		भुगतान	राशि (रु.)
अवधि प्रेषण	18,31,87,271			
बिक्री कर	54,881			
प्रधानमंत्री राहत कोष	200	20,35,56,866		
कुल योग		1,56,26,63,228		1,56,26,63,228

मुख्य लेखाअधिकारी
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली 110 016

सचिव
एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली-110016

परिशिष्ठ-4

1996-97 के प्रकाशन

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
पहली कक्षा			
1.	लेटअस लर्न इंग्लिश बुक 1 (एस.एस.)	जनवरी 1997	4,00,000
2.	वर्कबुक फॉर लेटअस लर्न इंग्लिश बुक 1 (एस.एस.)	अप्रैल 1996	2,95,000
3.	वर्कबुक फॉर लेटअस लर्न इंग्लिश बुक 1 (एस.एस.)	फरवरी 1997	1,40,000
4.	लेटअस लर्न मैथेमैटिक्स बुक 1	फरवरी 1997	3,25,000
दूसरी कक्षा			
5.	लेटअस लर्न इंग्लिश 2 (एस.एस.)	फरवरी 1997	4,25,000
6.	वर्कबुक फॉर लेटअस लर्न इंग्लिश बुक 2	फरवरी 1997	2,60,000
7.	लेटअस लर्न मैथेमैटिक्स बुक 2	जनवरी 1997	3,80,000
तीसरी कक्षा			
8.	बाल भारती भाग 3	फरवरी 1997	3,30,000
9.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग 3	फरवरी 1997	2,45,000
10.	वर्कबुक फॉर लेट अस लर्न इंग्लिश बुक 3	जनवरी 1997	3,90,000
11.	आओ गणित सीखें पुस्तक 3	फरवरी 1997	8,000
12.	एक्सप्लोरिंग एनवायरमेंट बुक 1 (साइंस)	फरवरी 1997	3,25,000
13.	परिवेश अन्वेषण भाग 1 (विज्ञान)	फरवरी 1997	5,000
14.	वीई एंड अवर कंट्री (सोशन साइंस)	फरवरी 1997	2,25,000
15.	हम और हमारा देश (सामाजिक विज्ञान)	फरवरी 1997	1,35,000
चौथी कक्षा			
16.	इंग्लिश रीडर बुक 1 (एस.एस.)	मार्च 1997	3,00,000
17.	वर्कबुक फॉर इंग्लिश रीडर बुक 1 (एस.एस.)	फरवरी 1997	2,10,000
18.	लेटअस लर्न मैथेमैटिक्स बुक 4	फरवरी 1997	3,75,000
19.	हमारा देश भारत (सामाजिक अध्ययन)	अप्रैल 1996	95,000
20.	हमारा देश भारत (सामाजिक अध्ययन)	मार्च 1997	57,000
21.	इक्सप्लोरिंग इनवायरमेंट बुक 2 (विज्ञान)	फरवरी 1997	2,75,000
22.	परिवेश अन्वेषण भाग 2 (विज्ञान)	फरवरी 1997	5,000

क्र सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
पाँचवीं कक्षा			
23.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग 5	फरवरी 1997	2,15,000
24.	स्वस्ति भाग 1 (संस्कृत)	फरवरी 1997	1,45,000
25.	इंग्लिश रीडर बुक 2 (एस.एस.)	फरवरी 1997	2,85,000
26.	वर्कबुक फॉर इंग्लिश रीडर बुक 2 (एस.एस.)	मार्च 1997	1,50,000
27.	लेटअस लर्न मैथेमैटिक्स बुक 5	मार्च 1997	3,75,000
28.	आओ गणित सीखें पुस्तक 5	मार्च 1997	10,000
29.	अवर कंटरी एण्ड द वर्ल्ड (सोशन स्टडीन)	अप्रैल 1996	70,000
30.	हमारा देश और संसार (सामाजिक अध्ययन)	मार्च 1997	90,000
31.	एक्सप्लोरिंग इनवायरनमेंट बुक 3 (साईंस)	फरवरी 1997	250,000
छठी कक्षा			
32.	संक्षिप्त रामायण	अप्रैल 1996	40,000
33.	स्वस्ति भाग 3 (संस्कृत)	अप्रैल 1996	1,10,000
34.	स्वस्ति भाग 3 (संस्कृत)	फरवरी 1997	1,15,000
35.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग 2	अप्रैल 1996	55,000
36.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग 2	फरवरी 1997	90,000
37.	इंग्लिश रीडर बुक 3 (एस.एस.)	मार्च 1997	2,75,000
38.	वर्कबुक फॉर इंग्लिश रीडर बुक 3 (एस.एस.)	अप्रैल 1997	1,20,000
39.	मैथेमैटिक्स बुक 1	फरवरी 1997	3,25,000
40.	गणित पुस्तक 1	अप्रैल 1996	15,000
41.	गणित पुस्तक 1	मार्च 1997	12,500
42.	इनशियंट इंडिया (हिस्ट्री)	मार्च 1997	12,0,000
43.	लैंडस एंड पीपलस पार्ट 1 (ज्योग्राफी)	मार्च 1997	2,15,000
44.	साइंस बुक 1	फरवरी 1997	3,25,000
45.	विज्ञान पुस्तक 1	अप्रैल 1996	15,000
46.	विज्ञान पुस्तक 1	मार्च 1997	12,000
47.	साइंस ए वर्क बुक फॉर क्लास 6	फरवरी 1997	20,000
48.	हिन्दी व्याकरण और रचना (कक्षा 6 से 8)	अप्रैल 1996	20,000
49.	हिन्दी व्याकरण और रचना (कक्षा 6 से 8)	मार्च 1997	30,000

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
सातवीं कक्षा			
50.	किशोर भारती भाग 2	मार्च 1997	20,0000
51.	संक्षिप्त महाभारत	मार्च 1997	50,000
52.	इंग्लिश रीडर बुक 4 (एस.एस.)	मार्च 1997	1,80,000
53.	रीड फॉर प्लेजर 4 (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर फॉर क्लास 7)	फरवरी 1997	1,05,000
54.	मैथेमैटिक्स बुक 2 पार्ट 1	मार्च 1997	2,15,000
55.	मैथेमैटिक्स बुक 2 पार्ट 2	मार्च 1997	2,50,000
56.	गणित	अप्रैल 1996	15,000
57.	हाऊ वी गवर्न अवर सेलव्स (सिविक्स)	अप्रैल 1996	90,000
58.	हम अपना शासन कैसे चलाते हैं (नागरिक शास्त्र)	अप्रैल 1996	50,000
59.	मीडिवल इंडिया (हिस्ट्री)	फरवरी 1997	1,65,000
60.	मध्यकालीन भारत (इतिहास)	अप्रैल 1996	60,000
61.	मध्यकालीन भारत (इतिहास)	फरवरी 1997	75,000
62.	साइंस बुक 2	फरवरी 1997	2,50,000
63.	देश और उनके निवासी भाग 2 (भूगोल)	मार्च 1997	1,05,000
आठवीं कक्षा			
64.	किशोर भारती भाग 3	मार्च 1997	1,80,000
65.	स्वस्ति भाग 4 (संस्कृत)	फरवरी 1997	80,000
66.	अभ्यास पुस्तिक स्वस्ति भाग 4	फरवरी 1997	45,000
67.	मैथेमैटिक्स बुक 3 पार्ट 2	अप्रैल 1996	1,60,000
68.	मैथेमैटिक्स बुक 3 पार्ट 1	फरवरी 1997	2,50,000
69.	मैथेमैटिक्स बुक 3 पार्ट 2	मार्च 1997	2,50,000
70.	गणित पुस्तक 3 भाग 2	फरवरी 1997	10,000
71.	अवर कंटरी टुडे प्रॉब्लम्स एण्ड चैलेंजिस (सिविक्स)	अप्रैल 1996	70,000
72.	अवर कंटरी टुडे प्रॉब्लम एण्ड चैलेंजिस (सिविक्स)	फरवरी 1997	1,65,000
73.	हमारा भारत—आज की समस्याएं और चुनौतियां (नागरिक शास्त्र)	मई 1996	55,000
74.	आधुनिक भारत (इतिहास)	अप्रैल 1996	60,000
75.	लैंडस एण्ड पीपलस पार्ट 3 (ज्योग्राफी)	जनवरी 1997	1,50,000
76.	देश और उनके निवासी भाग 3 (भूगोल)	अप्रैल 1996	80,000

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
77.	देश ओर उनके निवासी भाग 3 (भूगोल 3)	फरवरी 1997	25,000
78.	साईंस बुक 3	मार्च 1997	2,50,000
79.	प्रॉब्लम बुक आफ मैथमैटिक्स (सप्लीमेंटरी रीडर इन मैथमैटिक्स)	मार्च 1997	1,50,00
नवीं कक्षा			
80.	लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर 1 इंग्लिश रीडर	अप्रैल 1996	75,000
81.	लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर 1 वर्क बुक टू इंग्लिश रीडर	मार्च 1997	55,000
82.	लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर 1 (सप्लीमेंटरी रीडर)	मार्च 1997	70,000
83.	स्वस्ति भाग 1	मार्च 1997	1,40,000
84.	पराग भाग 1	फरवरी 1997	1,30,000
85.	विज्ञान भाग 1	फरवरी 1997	50,000
86.	मैथेमैटिक्स	अप्रैल 1996	1,60,000
87.	मैथेमैटिक्स	मार्च 1997	2,25,000
88.	गणित भाग 1	फरवरी 1997	50,000
89.	गणित भाग 2	अप्रैल 1996	30,000
90.	दि स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन वोल्यूम 1	फरवरी 1997	2,00,000
91.	सभ्यता की कहानी भाग 1 (इतिहास)	मई 1996	50,000
92.	सभ्यता की कहानी भाग 1 (इतिहास)	फरवरी 1997	85,000
93.	अंडरस्टेंडिग एनवायरमेंट (ज्योग्राफी)	मई 1996	1,25,000
94.	अंडरस्टैंडिग एनवायरमेंट (ज्योग्राफी)	फरवरी 1997	1,40,000
95.	पर्यावरण बोध (भूगोल)	मार्च 1997	95,000
96.	संययिका भाग 1	फरवरी 1997	55,000
97.	मानसी भाग 1	मार्च 1997	55,000
98.	अवर इकोनॉमी: एन इंट्रोडक्शन	मार्च 1997	2,20,000
99.	हमारी अर्थव्यवस्था: एक परिचय	मई 1996	70,000
100.	हमारी अर्थव्यवस्था: एक परिचय	फरवरी 1997	1,15,000
दसवीं कक्षा			
101.	लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर 2 इंग्लिश रीडर	जनवरी 1997	95,000
102.	लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर 2 वर्कबुक टू इंग्लिश रीडर	मार्च 1997	70,000
103.	लैंग्वेज थ्रू लिटरेचर 2 (सप्लीमेंटरी रीडर)	जनवरी 1997	75,000

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
104.	स्वाति भाग 2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक)	जनवरी 1997	1,60,000
105.	पराग भाग 2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक)	जनवरी 1997	1,20,000
106.	साईंस	अप्रैल 1996	1,85,000
107.	साईंस	फरवरी 1997	2,25,000
108.	मैथेमैटिक्स	फरवरी 1997	2,75,000
109.	विज्ञान भाग 1	अप्रैल 1996	50,000
110.	विज्ञान भाग 1	फरवरी 1997	50,000
111.	विज्ञान भाग 2	फरवरी 1997	62,000
112.	गणित भाग 1	फरवरी 1997	70,000
113.	गणित भाग 2	फरवरी 1997	65,000
114.	इण्डिया—इकॉनामिक ज्योग्राफी (ज्योग्राफी)	फरवरी 1997	1,10,000
115.	भारत—आर्थिक भूगोल	अप्रैल 1996	55,000
116.	भारत—आर्थिक भूगोल	फरवरी 1997	60,000
117.	संचयिका भाग 2 (हिंदी पाठ्यपुस्तक "बी" कोर्स)	फरवरी 1997	40,000
118.	दि स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन वोल्यूम 2 (हिस्ट्री)	फरवरी 1997	60,000
119.	सभ्यता की कहानी भाग 2 (इतिहास)	फरवरी 1997	45,000
120.	अवर गवर्नमेंट हाउ इट फंकशन्स (सिविक्स)	अप्रैल 1996	1,80,000
121.	अवर गवर्नमेंट हाउ इट फंक्शन्स (सिविक्स)	जनरवरी 1997	80,000
122.	हमारा शासन कैसे चलता है (नागरिक शास्त्र)	जनवरी 1997	60,000
ग्यारहवीं कक्षा			
123.	नीहारिका भाग 1 (हिन्दी काव्य केन्द्रिक)	मई 1996	32,000
124.	पल्लव भाग 1 (हिन्दी गद्य)	मई 1996	25,000
125.	मन्दाकिनी भाग 1 (हिन्दी काव्य वैकल्पिक)	जून 1996	26,000
126	प्रवाल भाग 1 (हिन्दी गद्य वैकल्पिक)	मई 1996	21,000
127.	साहित्य का स्वरूप	मई 1996	27,000
128.	आइ एम द पीपल (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर (कोर)	मई 1996	1,50,000
129.	स्टोरी, प्लैस एण्ड टेल्स ऑफ एडवेंचर (इंग्लिश सप्लीमेंट्री रीडर) कोर	मई 1996	1,50,000
130.	आरगन्स ऑफ गवर्नमेंट (ए टेक्स्ट बुक इन पोलिटिकल साईंस)	मई 1996	10,000

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
131.	सरकार के अंग (राजनीति विज्ञान की पाठ्यपुस्तक)	मई 1996	7,000
132.	एनशियट इण्डिया (हिस्ट्री)	अगस्त 1996	40,000
133.	प्राचीन भारत (इतिहास)	अक्तूबर 1996	27,000
134.	प्रिंसीपल्स ऑफ ज्योग्राफी पार्ट 1	जून 1996	22,000
135.	भूगोल के सिद्धान्त भाग 2	जुलाई 1996	18,000
136.	प्रिंसीपल्स ऑफ ज्योग्राफी पार्ट 2	मई 1996	10,000
137.	भूगोल के सिद्धान्त भाग 2	जून 1996	15,000
138.	सोसियोलोजी: इन इंट्रोडक्शन	जून 1996	4,500
139.	समाजशास्त्र: एक परिचय	मई 1996	4,000
140.	मीडिवल इण्डिया (हिस्ट्री)	मई 1996	27,000
141.	एलीमेंट्री स्ट्रेटस्टिक्स (इकॉनामिक्स)	मई 1996	20,000
142.	प्रारंभिक सांख्यिकी (अर्थशास्त्र)	मई 1996	7,000
143.	एकाउंटिंग बुक 2	जून 1996	10,000
144.	बिजनेस स्टडीज	मई 1996	15,000
145.	फिजिक्स पार्ट 1	जून 1996	45,000
146.	फिजिक्स पार्ट 2	जून 1996	35,000
147.	भौतिकी भाग 1	मई 1996	2,000
148.	कैमिस्ट्री पार्ट 1	जून 1996	35,000
149.	कैमिस्ट्री पार्ट 2	अगस्त 1996	45,000
150.	बायोलॉजी पार्ट 1	अगस्त 1996	35,000
151.	बायोलॉजी पार्ट 2	मई 1996	35,000
152.	सोसायटी, स्टेट एण्ड गवर्नमेंट	जून 1996	18,000
153.	इवोल्यूशन ऑफ दि इंडियन इकोनॉमी	जून 1996	35,000
154.	भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास	अप्रैल 1996	15,000
155.	फील्डवर्क एण्ड लेबोरेटरी टेक्नीक्स इन ज्योग्रॉफी	जून 1996	5,500
156.	भूगोल में क्षेत्रीय कार्य एवं प्रयोगशाला प्रविधियाँ	फरवरी 1997	3,000
बारहवीं कक्षा			
157.	नीहारिका भाग 1 (हिन्दी काव्य केन्द्रिक)	फरवरी 1997	46,000
158.	पल्लव भाग 2 (हिन्दी गद्य केन्द्रिक)	मार्च 1997	42,000

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
159.	मन्दाकिनी भाग 2 (हिन्दी काव्य वैकल्पिक)	फरवरी 1997	44,000
160.	प्रवाल भाग 2 (हिन्दी गद्य वैकल्पिक)	अप्रैल 1996	19,000
161.	हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	फरवरी 1997	20,000
162.	ए कोर्स इन रिटिन इंग्लिश (कोर)	मार्च 1997	60,000
163.	संस्कृत गद्य मन्दाकिनी	फरवरी 1997	2,500
164.	संस्कृत कविता कादंबिनी	मार्च 1997	2,500
165.	बायोलॉजी पार्ट 1	मार्च 1997	42,000
166.	बायोलॉजी पार्ट 2	अप्रैल 1996	52,000
167.	बायोलॉजी पार्ट 2	मार्च 1997	42,000
168.	कैमिस्ट्री पार्ट 1	अप्रैल 1996	55,000
169.	कैमिस्ट्री पार्ट 2	मई 1996	45,000
170.	रसायन विज्ञान भाग 1	फरवरी 1997	1,000
171.	राजनीति विज्ञान की प्रमुख अवधारणाएं (पॉलिटिकल साईंस)	फरवरी 1997	10,000
172.	मार्डन इण्डिया (हिस्ट्री)	अप्रैल 1996	40,000
173.	आधुनिक भारत (हिस्ट्री)	अप्रैल 1996	30,000
174.	आधुनिक भारत (हिस्ट्री)	मार्च 1997	30,000
175.	इण्डिया—जनरल ज्योग्रॉफी (ज्योग्रॉफी)	अप्रैल 1996	10,000
176.	इण्डिया—जनरल ज्योग्रॉफी (ज्योग्रॉफी)	फरवरी 1997	10,000
177.	भारत—सामान्य भूगोल	फरवरी 1997	10,000
178.	भारतीय संसाधन और प्रादेशिक विकास	अप्रैल 1996	16,000
179.	भारतीय संसाधन और प्रादेशिक विकास	फरवरी 1997	20,000
180.	एकाउंटिंग बुक 1	अप्रैल 1996	17,000
181.	एकाउंटिंग बुक 2 फाइनेंशियल स्टेटमेंट एनलिसिस	अप्रैल 1996	18,000
182.	एकाउंटिक बुक 2 फाइनेंसियल स्टेटमेंट एनलिसिस	मार्च 1997	18,000
183.	नेशनल इनकम एकाउंटिंग	अप्रैल 1996	10,000
184.	नेशनल इनकम एकाउंटिंग	फरवरी 1997	37,500
185.	राष्ट्रीय आय लेखा पद्धति	अप्रैल 1996	10,000
186.	राष्ट्रीय आय लेखा पद्धति	मार्च 1997	12,000
187.	एन इन्ट्रोडक्शन टू इकॉनामिक थ्योरी	अप्रैल 1996	22,000

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
188.	एन इन्ट्रोडक्शन टू इकॉनामिक थ्योरी	जनवरी 1997	45,000
189.	आर्थिक सिद्धान्त का परिचय	अप्रैल 1996	15,000
190.	आर्थिक सिद्धान्त का परिचय	मार्च 1997	12,000
191.	इंडियन सोसायटी	मार्च 1997	9,000
192.	भारतीय समाज	फरवरी 1997	5,000
193.	साइकोलॉजी फॉर बेटर लिविंग	मार्च 1997	2,000
194.	सोशल चेंज	फरवरी 1997	4,000
195.	कास्ट एकाउंटिंग	फरवरी 1997	3,500
196.	बेहतर जीवन के लिए मनोविज्ञान	मार्च 1997	2,500
197.	कंटेंप्रेरी वर्ल्ड हिस्ट्री पार्ट 2 (न्यू बुक)	फरवरी 1997	25,000
198.	डेमोक्रेसी इन इंडिया (पोलिटिकल साईंस)	मई 1996	12,000
199.	फिजिक्स पार्ट 2	अप्रैल 1996	50,000
200.	बिजनेस स्टडीज पार्ट 1 (न्यू बुक)	जून 1996	50,000
201.	बिजनेस स्टडीज पार्ट 2 (न्यू बुक)	फरवरी 1997	27,000
	उर्दू पाठ्यपुस्तकें		
	पहली कक्षा		
202.	आओ हिसाब सीखें बुक 1 (लेट अस लर्न मैथेमैटिक्स बुक 1)	अप्रैल 1996	12,000
	तीसरी कक्षा		
203.	हम और हमारा देश (वी एण्ड अवर कन्ट्री) (न्यू बुक)	जुलाई 1996	3,000
	पांचवीं कक्षा		
204.	हमारा मुल्क और दुनिया (अवर कन्ट्री एण्ड द वर्ल्ड)	मई 1996	1,500
205.	उर्दू की नई किताब	अप्रैल 1996	9,000
	छठीं कक्षा		
206.	हिसाब बुक 1 (मैथेमैटिक्स बुक 1)	अप्रैल 1996	4,000
207.	हमारी शहरी जिंदगी (अवर सिविक लाइफ)	मई 1996	2,000
	सातवीं कक्षा		
208.	मुमालिक और उनके वाशिंदे पार्ट 2 (लैण्डस एण्ड पीपल्स पार्ट 2)	जून 1996	4,000
	आठवीं कक्षा		
209.	मुमालिक ओर उनके बाशिंदे पार्ट 3 (लैण्डस एण्ड पीपल्स पार्ट 3)	मई 1996	1,500

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
210.	उर्दू की नई किताब	अप्रैल 1996	12,000
	नवीं कक्षा		
211.	साईंस	अप्रैल 1996	1,000
212.	माहोल शानासी (अन्डर स्टेण्डिग इनवायरमेंट)	अप्रैल 1996	1,000
213.	हमारी माशियत का एक नया तारूफ (अवर इकोनॉमिक इन इन्ट्रोडक्शन)	अप्रैल 1996	3,000
	दसवीं कक्षा		
214.	साईंस	अप्रैल 1996	1,000
215.	रियाजी (मैथेमैटिक्स) पार्ट 1	मई 1996	1,000
216.	रियाजी (मैथेमैटिक्स) पार्ट 2	जून 1996	1,000
217.	हिन्दुस्तान का माशी जुगराफिया (इंडिया इकोनॉमिक ज्योग्रॉफी)	अप्रैल 1996	1,000
	ग्यारहवीं कक्षा		
218.	समाज, रियासत और सरकार (सोसायटी, स्टेट एण्ड गर्वनमेंट)	मई 1996	2,600
219.	हिन्दुस्तानी मईशत का ईतका (इवोल्यूशन ऑफ इंडियन इकानॉमी)	सितम्बर 1996	1,000
220.	जुगराफिया में मैदानी व तजुर्बागाही टैक्नीक्स (फील्ड वर्क एण्ड लैबोरेटी टैक्नीक्स इन ज्योग्राफी)	सितम्बर 1996	1,000
221.	इल्म-ए-हैतियात बायोलॉजी पार्ट 2 (न्यू बुक)	अक्तूबर 1996	1,000
222.	रियाजी (मैथेमैटिक्स) पार्ट 2 (न्यू बुक)	जुलाई 1996	1,000
223.	उर्दू की नई किताब	मई 1996	1,000
	बारहवीं कक्षा		
224.	सियासत के खालिदी तस्ववूरात (मेजर कन्सैप्टस इन पॉलिटिकल साइंस) (न्यू बुक)	जुलाई 1996	1,000
225.	हिसाबदारी (एकाउंटिंग वुक 1 (न्यू बुक)	मई 1996	1,000
226.	दफ्तरी नज्म-ओ-नश्क (आफिस एंड मिनिस्ट्रेशन) (न्यू बुक)	जनवरी 1997	1,000
	अरुणाचल प्रदेश के लिए पाठ्यपुस्तकें		
227.	अरूण भारती भाग 5	नवम्बर 1996	20,000
228.	अभ्यास पुस्तिका अरूण भारती भाग 5	नवम्बर 1996	20,000
229.	न्यू डान रीडर्स 1 फॉर क्लास 1	अप्रैल 1996	14,000
230.	वर्कबुक फॉर न्यू डान रीडर्स 1 फॉर क्लास 1	जुलाई 1996	14,000
231.	वर्कबुक फॉर न्यू डान रीडर्स 2 फॉर क्लास 1	मई 1996	6,000

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
232.	न्यू डान रीडर्स 3 फॉर क्लास 3	जुलाई 1996	20,000
	नवोदय विद्यालय के लिए पाठ्यपुस्तकें		
	छठी कक्षा		
233.	वर्कबुक फॉर माई फेमिली एंड फ्रैंड्स	मई 1996	7,000
234.	हमारी हिन्दी भाग 1	मई 1996	4,000
235.	अभ्यास पुस्तिका हमारी हिंदी भाग 1	जून 1996	5,000
	सातवीं कक्षा		
236.	माई स्माल वर्ल्ड	मई 1996	5,000
237.	वर्कबुक फॉर माई स्माल वर्ल्ड	मई 1996	9,000
238.	सप्लीमेंटरी रीडर फॉर स्माल वर्ल्ड	अप्रैल 1996	4,000
239.	हमारी हिन्दी भाग 2	मई 1996	4,000
	आठवीं कक्षा		
240.	वर्कबुक फॉर दि वर्ल्ड अराउंड मी	मई 1996	4,000
241.	हमारी हिन्दी भाग 3	मई 1996	4,000
242.	अभ्यास पुस्तिका हमारी हिंदी भाग 3	जून 1996	7,000
	तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी की पाठ्यपुस्तकें		
	कक्षा नवीं		
243.	कथा भारती (तृतीय भाषा के रूप में) (न्यू बुक)	जनवरी 1997	5,000
	शिक्षक संदर्शिकाएं		
244.	प्रैक्टिकलस इन कैमिस्ट्री क्लास 11 12	सितम्बर 1996	5,000
245.	शिक्षक संदर्शिकाएं	सितम्बर 1996	2,000
246.	हिन्दी शिक्षण पाठयोजनाएं कक्षा 6 8 (न्यू बुक)	फरवरी 1997	2,000
	पूरक पुस्तकें		
1.	सुभाष चन्द्र बोस : ए बायोग्राफी (इंग्लिश)	फरवरी 1997	15,000
2.	भारत की खोज (संक्षिप्त संस्करण)	जुलाई 1996	15,000
3.	हमारी मदद कौन करेगा	दिसम्बर 1996	60,000
4.	पतंग के पेंच	दिसम्बर 1996	60,000
5.	तोता और बिल्ली	दिसम्बर 1996	60,000
6.	चिड़िया घर की सैर	दिसम्बर 1996	60,000
7.	कौवे का बच्चा	दिसम्बर 1996	60,000

8.	मेरा घर	दिसम्बर 1996	60,000
क्र. सं.	**शीर्षक**	**प्रकाशन का महीना**	**प्रकाशित प्रतियों की संख्या**
9.	चलो सरकस चलें	दिसम्बर 1996	60,000
10.	प्यारे न्यारे बोल	दिसम्बर 1996	60,000
11.	भारी कौन	दिसम्बर 1996	60,000
12.	रसोई घर	दिसम्बर 1996	60,000
13.	घर की खोज़	दिसम्बर 1996	60,000
14.	सतरंगी गेंद	दिसम्बर 1996	60,000
15.	सावन का मेला	दिसम्बर 1996	60,000
16.	बहादुर दोस्त	दिसम्बर 1996	60,000
	अनुसंधान मोनोग्राफ और अन्य प्रकाशन		
1.	39वां नेशनल प्राइज कंपिटीशन फॉर चिल्ड्रन लिटरेचर (द्विभाषी)	मई 1996	10,000
2.	एन.सी.ई.आर.टी. का वार्षिक लेखा 1993 94	जुलाई 1996	350
3.	एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशनों की सूची	जुलाई 1996	25,000
4.	नेशनल काउन्सिल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग ए प्रोफाईल	अगस्त 1996	—
5.	एनूअल एकाउन्ट ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. 1994 95	सितम्बर 1996	500
6.	एनूअल एकाउन्ट ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. 1994 95	सितम्बर 1996	350
7.	एस.ओ.पी.टी प्राथमिक विद्यालयों के सेवारत अध्यापकों के विशेष अभिविन्यास हेतु स्वाध्याय आधारित पैकेज	नवंबर 1996	2,500
8.	स्कूल एफिक्टिवनेस एंड लर्नर एचीवमेंट एट द प्राइमरी स्टेज	नवंबर 1996	—
9.	रिपोर्ट ऑफ द ग्रुप टू एक्सामिन द रिकमनडेशन्स ऑफ द नेशनल एडवाइसरी कमेटी	नवंबर 1996	1,000
10.	लर्निंग विदाउट बर्डन	नवंबर 1996	1,000
11.	एन.सी.ई.आर.टी. एनूअल रिपोर्ट 1995 96	दिसंबर 1996	1,000
12.	एन.सी.ई.आर.टी. वार्षिक रिपोर्ट 1995-96	दिसंबर 1996	500
13.	अंडरस्टैंडिंग क्लासरूप प्रोसेस एट प्राइमरी स्टेज	दिसंबर 1996	1,000
14.	मिनिमम स्पेसिफिकेशन्स फॉर प्री स्कूल	दिसम्वर 1996	3,000
15.	वूमनस इक्वेलिटी एंड एमपावरमेंट थ्रू करीकुलम ए हैंडबुक फॉर टीचर्स एट प्राइमरी स्टेज	दिसंबर 1996	5,000
16.	डी.पी.ई.पी. गाइडलाइनज	जनवरी 1997	5,000

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
17.	वूमनस इक्वेलिटी एंड एमपावरमेंट थ्रू करीकुलम ए हैंडबुक फॉर टीचर्स एट अपर प्राइमरी स्टेज	—	—
18.	अध्यापक प्रशिक्षण और संदर्भ अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु ई.टी.वी. कार्यक्रमों के प्रयोग पर निर्देश पुस्तिका (एस.ओ.पी.टी. वीडियो पैकेज)	—	—
19.	शैक्षिक दर्पण	अप्रैल 1996	
20.	एन.सी.ई.आर.टी. न्यूज लेटर	जुलाई 1996	
21.	गिलमपसिस	जून 1996 अंक	
22.	गिलमपसिस	दिसंबर 1996	
23.	गिलमपसिस	जनवरी 1997 अंक	
	शैक्षिक पत्रिकाएं		
1.	द प्राइमरी टीचर, अक्टूबर 1995	अप्रैल 1996	
2.	जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, नवम्बर 1995	मई 1996	
3.	द प्राइमरी टीचर, जनवरी 1996	जुलाई 1996	
4.	स्कूल साईंस, दिसंबर 1995	जुलाई 1996	
5.	जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन फरवरी 1996	जुलाई 1996	
6.	प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल 1994	अगस्त 1996	
7.	भारतीय आधुनिक शिक्षा, अक्टूबर 1995	अगस्त 1996	
8.	प्राइमरी शिक्षक, अक्टूबर 1994	अगस्त 1996	
9.	भारतीय आधुनिक शिक्षा, जनवरी 1996	सितंबर 1996	
10.	इंडियन एजुकेशनल रिव्यू जनवरी 1996	सितंबर 1996	
11.	स्कूल साईंस, मार्च 1996	सितंबर 1996	
12.	प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल 1995	सितंबर 1996	
13.	भारतीय आधुनिक शिक्षा, अप्रैल 1996	सितंबर 1996	
14.	स्कूल साईंस, जून 1996	अक्टूबर 1996	
15.	जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, मई 1996	अक्टूबर 1996	
16.	स्कूल साईंस, सितम्बर 1996	अक्टूबर 1996	
17.	प्राइमरी शिक्षक, जुलाई-अक्टूबर	अक्टूबर 1996	
18.	प्राइमरी टीचर, अप्रैल 1996	नवंबर 1996	
19.	प्राइमरी शिक्षक, जनवरी 1996	नवंबर 1996	

क्र. सं.	शीर्षक	प्रकाशन का महीना	प्रकाशित प्रतियों की संख्या
20.	प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल 1996	नवंबर 1996	
21.	प्राइमरी टीचर, जुलाई 1996	दिसंबर 1996	
22.	जर्नल ऑफ इंडियन एजूकेशन, नवंबर 1996	फरवरी 1997	
23.	इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, जुलाई 1996	मार्च 1997	
24.	जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, नवंबर 1996	मार्च 1997	
25.	प्राइमरी शिक्षक, जुलाई 1996	मार्च 1997	
26.	स्कूल साईंस, मार्च 1997	मार्च 1997	
27.	भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाई 1996	मार्च 1997	
28.	प्राइमरी टीचर, जनवरी 1997	मार्च 1997	
29.	जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, फरवरी 1997	मार्च 1997	
30.	इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्टस: जुलाई 1996	जुलाई 1996	5,000
31.	इंडियन एजुकेशनल एब्सट्रेक्टस: जनवरी 1997	जनवरी 1997	5,000

परिशिष्ट-5

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के क्षेत्रीय उत्पादन व वितरण केन्द्र

क्रमांक	केन्द्रों के नाम	राज्य/संघ-शासित क्षेत्र
1.	क्षेत्रीय उत्पादन व वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग एन.सी.ई.आर.टी. मार्फ़त नवजीवन ट्रस्ट पी.ओ. नवजीवन, अहमदाबाद 380 014 दूरभाष : 405446	गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और गोवा
2.	क्षेत्रीय उत्पादन व वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग एन.सी.ई.आर.टी. 108, 100 फीट रोड़ होसदाकरे हाल एक्सटेंशन बनाशंकरी 111 स्टेज बैंगलूर 560 085 दूरभाष : 6692740	तमिलनाडु, पांडिचेरी, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, लक्षदीप, मिनीकॉय और अमिनदिवी द्वीप समूह
3.	क्षेत्रीय उत्पादन व वितरण केन्द्र प्रकाशन प्रभाग एन.सी.ई.आर.टी. 32, बी.टी. रोड सुखचर, 24 परगना कलकत्ता 743 179 दूरभाष : 5530454	पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर-पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशनों के थोक विक्रेताओं के नाम और पते

आंध्र प्रदेश

1. मैसर्स गुप्ता ब्रदर्स बुक्स
   मेन रोड़
   47-13-10/1 द्वारका नगर
   विशाखापटनम 530 001
   दूरभाष : 548412
2. मैसर्स हिमालय बुक डिपो
   5-7-561, दरगाह यूसूफेन रोड़
   नामपल्ली बाजार
   हैदराबाद 500 001
   दूरभाष : 226379, 225649
3. मैसर्स सेन्टर बुक शॉप
   5-9-186, चेपल रोड़
   हैदराबाद 500 001
   दूरभाष : 202980

बिहार

1. मैसर्स चिल्ड्रन बुक सेंटर (प्रा.) लि.
   माहुआटोली
   पटना 800 004
   दूरभाष : 650362, 660662
2. मैसर्स पुस्तक मंदिर
   पुस्तक पथ, अपर बाजार
   रांची 834 001
   दूरभाष : 203273, 313249
3. मैसर्स पुस्तक सदन
   रमा पथ, ईस्ट ओवर ब्रिज
   रांची 834 001
   दूरभाष : 307515, 204364
4. मैसर्स आइडियल बुक स्टोर
   निकट रतन टाकीज
   मेन रोड़, रांची 834 001
   दूरभाष : 203629, 311523

चंडीगढ़

1. मैसर्स मनचंदा ट्रेडर्स एण्ड सप्लायर्स
   एस.सी.एफ. सं- 1, सैक्टर 19 सी, पोस्ट बाक्स 705
   चंडीगढ़ 160 019
   दूरभाष : 775216, 775769
2. मैसर्स मनचंदा डिपार्टमेंटल स्टोर
   एस.सी.एफ. सं 2, सेक्टर 19 सी
   चंडीगढ़ 160 019
   दूरभाष : 775012

दिल्ली

1. मैसर्स गीता पब्लिशिंग हाउस
   टी/565, प्रगति काम्प्लैक्स
   ईदगाह चौक,
   दिल्ली 110 006
   दूरभाष : 7775482
2. मैसर्स गुप्ता बुक सेलर
   994/66 त्रिनगर
   दिल्ली'110 035
   दूरभाष : 7432941, 7235318
3. मैसर्स राज पुस्तक भण्डार
   54, सेन्ट्रल मार्किट
   लाजपत नगर
   नई दिल्ली 110 024
   दूरभाष : 6832627, 6849198
4. मैसर्स प्रकाश ब्रदर्स
   46, भगत सिंह मार्किट
   नई दिल्ली 110 001
   दूरभाष : 3362615, 3364758
5. मैसर्स चावला बुक डिपो
   दुकान नं-6, सेक्टर 3
   आर.के. पुरम, नई दिल्ली 110 022
   दूरभाष : 6174783

6. मैसर्स विश्व भारती प्रकाशन
   4071, नई सड़क
   दिल्ली 110 006
   दूरभाष : 2916973

7. मैसर्स दीपक स्टेशनर्स
   709/1 जी.टी. रोड़
   (पानी की टंकी के सामने)
   शाहदरा, दिल्ली 110 032
   दूरभाष : 2285327

8. मैसर्स संजय ब्रदर्स
   2590, नई सड़क, दिल्ली 110 006
   दूरभाष : 3261916

9. मैसर्स शिवदास एण्ड संस
   9655, इस्लामगंज
   लाइब्रेरी रोड़, आजाद मार्किट,
   दिल्ली 110 006
   दूरभाष : 7514886, 7777366

10. मैसर्स नेशनल बुक हाउस
    8/18, कालकाजी एक्सटेंशन
    नई दिल्ली 110 019
    दूरभाष : 6437249, 6452714

11. मैसर्स सुभाष ब्रदर्स
    2606, नई सड़क
    दिल्ली 110 006
    दूरभाष : 3261011

12. मैसर्स राजेश पुस्तक भण्डार
    4ए/3, ज्वालाहेड़ी,
    पश्चिम विहार
    नई दिल्ली 110 063
    दूरभाष : 5580992, 5584826

गुजरात

1. मैसर्स ग्रंथ सहयोग सहकारी मंडल लि,
   ग्रंथ सहयोग, 1156/1, तल्ला स्ट्रीट,
   सिटी वाल साइड खादिया सारंगपुर,
   अहमदाबाद 380 001
   दूरभाष : 2140462

2. मैसर्स न्यू तुषार बुक डिपो
   27, पंकज सोसायटी
   बालक कॉम्पलेक्स के पीछे
   भट्टा पाल्डी
   अहमदाबाद
   दूरभाष : 410259

हरियाणा

1. मैसर्स शर्मा ब्रदर्स
   बी.डी. हाई स्कूल के निकट
   अम्बाला कैंट 133 001
   दूरभाष : 640525

2. मैसर्स दीपक बुक डिपो
   हॉस्पिटल रोड़,
   अम्बाला कैंट 133 001
   दूरभाष : 642076, 642476

3. मैसर्स चिल्ड्रन बुक डिपो
   4329, बी.डी. वरिष्ठ माध्यमिक के निकट
   अम्बाला कैंट 133 001
   दूरभाष : 642585

जम्मू और कशमीर

1. मैसर्स हरनाम दास एण्ड ब्रदर्स
   पक्का डांगा
   जम्मू तवी 180 001
   दूरभाष : 542175

2. मैसर्स साहित्य संगम
   कच्ची छावनी
   जम्मू 180 001
   दूरभाष : 59593, 549049

कर्नाटक

1. मैसर्स दामा स्टोर नं. 1 और 2
   बालाजी थियेटर काम्पलैक्स,
   वेनोरपिट विवेक नगर (पी.ओ.)
   बैंगलूर 560 047
   दूरभाष : 5575110

केरल

1. मैसर्स एकेडेमिक बुक हाउस
   पुलिमूद् जंक्शन
   तिरूअनंतपुरम 695 001
   दूरभाष : 331878, 331879

2. मैसर्स टी.वी.एस. पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
   टी.बी.एस. बिल्डिंग
   जी.एच. रोड़
   कालिकट 673 001
   दूरभाष : 60085, 60086, 64025

मध्य प्रदेश

1. मैसर्स प्रियंक बुक एण्ड स्टेशनरी सेंटर
   2, मारवाड़ी रोड़
   भोपाल 462 001
   दूरभाष : 544079, 540356

2. मैसर्स पी.के स्टेशनर्स
   द्वारा प्रेम बुक डिपो, सदर बाजार
   हबलपूर कैंट 482 001
   दूरभाष : 320840

3. मैसर्स एम.पी. टैक्सटबुक कार्पोरेशन
   शिवाजी नगर
   भोपाल 462 021
   दूरभाष : 550727, 553094

महाराष्ट्र

1. मैसर्स ए.एच. हीलर एण्ड कंपनी
   25, आर.बी.के. बाला रोड़
   दादर (पश्चिम), मुंबई 400 028
   दूरभाष : 2613915, 2618103

2. मैसर्स एस. चांद एण्ड कंपनी लि.
   3, गांधी नगर पूर्वी
   नागपुर 440 002
   दूरभाष : 723901

उत्तर-पूर्वी राज्य

1. मैसर्स बानी मंदिर
   रानी बाड़ी, पान बाजार,
   गुवाहाटी 781 001
   दूरभाष : 520241

2. मैसर्स युनाइटेड पब्लिशर्स
   मेन रोड़, पान बाजार
   गुवाहाटी 781 001
   दूरभाष : 544791

3. मैसर्स पेपर एण्ड स्टेशनरी स्टोर्स
   पोआना बाजार (इम्फाल)
   मणीपूर 795 001
   दूरभाष : 221109

4. मैसर्स मॉड्र्न बुक डिपो
   जी.एस. रोड़
   होटल मानसून बिल्डिंग
   शिलाँग
   दूरभाष : 223476, 223810

उड़ीसा

1. मैसर्स ज्ञान भारती
   50, खर्वलानगर यूनिट 3
   भुवनेश्वर 751 001
   दूरभाष : 408736

पंजाब

1. मैसर्स नीलम पब्लिशर्स
   अड्डा टांडा,
   जालंधर 144 008
   दूरभाष : 56899

2. मैसर्स मल्होत्रा बुक डिपो
   रेलवे रोड़, एम.बी.डी. हाऊस
   जालंधर शहर (पंजाब)
   दूरभाष : 57160, 58388

राजस्थान

1. मैसर्स मनोहर बुक डिपो
   स्टेशन के निकट, सदर बाजार
   जयपूर 302 006
   दूरभाष : 376486, 516056

तमिलनाडु

1. मैसर्स न्यू सेंचुरी बुक (प्रा.) लि.
   136, अन्ना सलाई
   मद्रास 600 002
   दूरभाष : 849563

2. मैसर्स न्यू सेंचुरी बुक (प्रा.) लि.
   79-80 वेस्ट टावर स्ट्रीट
   मदुरई 625 001
   दूरभाष : 25106

उत्तर प्रदेश

1. मैसर्स चाचा बुक स्टोर
   121, सदर बाजार
   लखनऊ 226 002
   दूरभाष : 451835, 451882

2. मैसर्स नेशनल बुक हाऊस
   हिस्पेंसरी रोड़,
   देहरादून 248 001
   दूरभाष : 659430

3. मैसर्स यूनिवर्सल बुक कंपनी
   20, महात्मा गांधी मार्ग
   इलाहाबाद 211 001
   दूरभाष : 623467, 624953

4. मैसर्स उत्तम पुस्तक भंडार
   1, अखाड़ा बाजार, देहरादून 247 001
   दूरभाष : 624820

पश्चिम बंगाल

1. मैसर्स देव साहित्य कुटीर (प्रा.) लि.
   21, झामापूकर लेन
   कलकत्ता 700 009
   दूरभाष : 350294, 3504295

2. मैसर्स जे.एन. घोष एण्ड संस
   6, बंकिम चटर्जी स्ट्रीट
   कलकत्ता 700 073
   दूरभाष : 3164470

उर्दू प्रकाशनों के वितरक

उर्दू अकादमी दिल्ली (रा.रा.क्षे. दिल्ली)
घटा मस्जिद रोड, दरिया गंज
नई दिल्ली 110 002
फोन : 3276211, 3263448

टिप्पणी : उर्दू की पुस्तकें बिक्री काउंटर प्रकाशन प्रभाग, एन.सी.ई.आर.टी. श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 में भी उपलबध है।